अब्राहम लिंकन



अमेरिका की धरती से
गुलामी प्रथा को खत्म कराने
वाला विश्व का महानायक!

ravi

अमेरिकी दासों के मुक्तिदाता

अब्राहम लिंकन



- अब्राहम लिंकन उस हस्ती का नाम है जिसने लट्ठों की झोंपड़ी में जन्म लिया। अपनी योग्यता और कर्मठता के बल पर अमेरिकी राष्ट्रपति बनकर व्हाइट हाउस की शोभ: बढ़ाई। अमेरिका से दास प्रथा समाप्त कर वे दासों के मुक्तिदाता कहलाए।
- लिंकन के झोंपड़ी से व्हाइट हाउस तक के सफर की सम्पूर्ण

r a v i

प्रकाशक

रवि पॉकेट बुक्स

33, हरी नगर , मेरठ शहर—250 002

मूल्य : ₹ 20 (बीस रुपये केवल)

- पुस्तक — अब्राहम लिंकन
- प्रस्तुति — मुदित रस्तौगी
- प्रकाशक — रवि पॉकेट बुक्स
  33, हरी नगर, मेरठ–250002 (उ०प्र०)
  फोन : (0121) 2531011; फैक्स : (0121) 2521067
- लेजर टाइप सैटिंग : हिना कम्प्यूटर्स, मेरठ।
- मुद्रक : न्यू ऋषभ ऑफसैट प्रिन्टर्स, मेरठ।

दो शब्द

अब्राहम लिंकन (जन्म 12 फरवरी, 1809 व निधन 15 अप्रैल, 1865 ई०) विश्व इतिहास में ऐसी हस्ती हैं, जिन्हें अमेरिका के 16वें राष्ट्रपति बनने का गौरव प्राप्त है। अमेरिकी सत्ता के शीर्ष पर पहुंचकर उन्होंने दास-प्रथा के विरुद्ध कानून पास कराया। दास-प्रथा उन्मूलन की बात सामने आते ही अमेरिका में भूचाल-सा आ गया। दक्षिणी राज्यों ने इस बात को सिरे से नकार दिया कि वे दास-प्रथा उन्मूलन कानून को मानेंगे। दक्षिण वालों ने गृह-युद्ध छेड़ दिया, जो तीन वर्षों तक चलता रहा। अपनी सूझबूझ और सैनिक क्षमता के बल पर अब्राहम लिंकन ने युद्ध जीता। अमेरिका को खंडित होने से बचाया। साथ ही दोबारा चुनाव लड़कर राष्ट्रपति पद पर विजयी होकर उन्होंने साबित कर दिया कि सत्य की हमेशा जीत होती है।

अब्राहम लिंकन की उम्र जब 6-7 वर्ष की थी तो उनके पिता सपरिवार बेहतर ढंग से गुज़र-बसर के लिए इण्डियाना आ गये। जहां कड़ाके की ठंड पड़ा करती थी। लोग वहां बसना पसन्द नहीं करते थे। वहां थामस को जमीन का पट्टा आसानी से मिल गया।

इण्डियाना में थामस बैपटिस्ट चर्च के सदस्य बने। वे नियम से चर्च जाने लगे। बैपटिस्ट चर्च के लोग दास प्रथा के विरोधी थे। थामस ने दास विरोधी विचारधारा अपनायी। पिता के विचारों की नक्काशी अब्राहम लिंकन के मन-मस्तिष्क में बाल्यकाल से ही अंकित हो गयी थी। उन्होंने बाल्यकाल में ही ठान लिया था कि वे अमेरिका की धरती से दास प्रथा को मिटाकर रहेंगे।

साढ़े नौ वर्ष की उम्र में मां का निधन हो गया। उसके बाद अब्राहम लिंकन ने पढ़ने-लिखने की ओर ध्यान दिया। बड़ी उम्र में उन्होंने स्कूली शिक्षा पानी शुरू की। उन्होंने पड़ोसियों से किताबें मांग-मांग कर पढ़नी आरम्भ कीं। 'लाइफ ऑफ वाशिंगटन' पहली किताब थी, जो उन्होंने पढ़ी।

वे अद्भुत व्यक्तित्व के मालिक साबित हुए। वकील बने, वकालत को चमकाकर दिखा दिया। किताबों के अध्ययन से राजनीति की सोच परिपक्व हो चुकी थी। उन्होंने अपना पहला राजनैतिक भाषण डेकाटर में दिया और उस भाषण को सुनकर जनता मंत्र-मुग्ध हो उठी।

सन् 1836 में लिंकन ने संगमोन नामक स्थान से विधान सभा का चुनाव जीतकर अपनी राजनैतिक पहचान दी। उसके बाद तो उनका राजनैतिक सफर आगे-ही-आगे बढ़ता चला गया। उनके भाषण देने की लोकप्रियता राजनैतिक पार्टी की जान बन गई, और अन्ततः वे उस मुकाम पर पहुंच गये जहां पहुंचना संसार में सिर्फ एक व्यक्ति को चार साल में एक बार हासिल होता है—अमेरिका का राष्ट्रपति। अमेरिकी राष्ट्रपति बनकर उन्होंने अपने जीवन का मिशन पूरा किया—दास प्रथा का अमेरिका से उन्मूलन किया।

विश्व इतिहास के अध्याय में, एक अलग ही विषय में अपना नाम अंकित करा, अगले वर्ष ही उन्होंने इस संसार से 15 अप्रैल 1865 में इस नश्वर संसार को अलविदा कह दिया।

शुभकामनाओं सहित! — प्रकाशक

अनुक्रमणिका



अब्राहम लिंकन : पृष्ठभूमि

अब्राहम लिंकन विश्व इतिहास में एक ऐसा नाम है जिसे युग निर्माता और अमेरिकनों का भाग्य विधाता कहा जा सकता है। संयुक्त राज्य अमेरिका आज जो कुछ भी है (विश्व महाशक्ति) या जो कुछ भी बन पाया है (विश्व राष्ट्रों का मुखिया), उसे ऐसा बनाने के पीछे या तो जार्ज वाशिंगटन को श्रेय जाता है या फिर अब्राहम लिंकन को। जार्ज वाशिंगटन ने अमेरिका को आजाद कराया। अब्राहम लिंकन ने अमेरिका से गुलामी प्रथा मिटाकर राष्ट्र को मजबूत किया।



12 फरवरी 2009 को अब्राहम लिंकन की 200वीं जयंती तक कोई दशक ऐसा नहीं बीता जब कि उनके प्रभाव को पूरे विश्व में महसूस न किया गया हो।

अब्राहम लिंकन का इतिहास सीधा सपाट और रेखीय रूप में चलने वाला आख्यान नहीं, विवाद और पुनरावलोकन से भरा एक बहुमुखी जीवन वृत्त है। अलग-अलग विचारधाराओं के लोगों ने अब्राहम लिंकन के जीवन-चरित्र को नये-नये रूपों में देखा और महसूस किया है।

उत्तर वाले और दक्षिण वाले, अश्वेत और श्वेत, ईस्ट कोस्ट के अभिजात और पश्चिमी प्रेयरी के रहने वाले, उदारवादी और अनुदार, धार्मिक और धर्म निरपेक्ष, विद्वान और लोकप्रिय लेखक हर किसी ने एकदम ही अलग लिंकन को देखा और प्रस्तुत किया है।

अब्राहम लिंकन का जन्म एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। उस परिवार में या उस परिवार से सम्बन्धित लोगों में से कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं था जिसने कभी किसी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया हो।

लिंकन एक इंग्लिश नाम है। इस नाम का परिवार 1638 ई० में 'हिंगाम' में आकर आबाद हुआ था। इस परिवार का सम्बन्ध ईसाई समाज से था। इससे पूर्व यदि हम उनके पूर्वजों के विषय में जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करें तो हम पायेंगे कि उनके पूर्वज 'बर्क्स काउन्टी वा' से वहाँ आकर बसे थे। इस बात की भी सम्भावना है कि उनके पूर्वज इंग्लैंड से वहाँ आकर बसे हों। लेकिन अधिकतर सम्भावना यही है कि वे 'हिंगाम' से वहाँ आकर आबाद हुए थे।

'हिंगाम' और 'बर्क्स काउन्टी वा' में आपस में बहुत अधिक समानताएं हैं। यहाँ तक कि दोनों स्थानों पर निवास करने वाले लोगों के नाम भी एक समान ही होते हैं; जैसे अब्राहम, थामस और मोरदेसाई इत्यादि नामों की यह समानता सामान्य घटना हो सकती है।

'बक्र्स काउन्टी वा' में आबाद होने वाले अधिकतर परिवार उन लोगों पर आधारित थे जो 'रोकिंघम काउन्टी वा' के भूकम्पों से पीड़ित होकर, वहाँ आकर आबाद हुए थे। ये काउन्टी 1769 में डेनियल बुक नाम के व्यक्ति ने केंटुकी राज्य में स्थापित की थी, जो कि वर्जिनिया का एक भाग थी।

सन् 1781 में बारह वर्ष के बाद अब्राहम लिंकन के दादा बर्जिनिया से केंटुकी आकर रहने लगे थे। जब वो वहाँ से आये थे तो लोग उनसे हंसी मजाक में पूछा करते थे कि वो 'शेनान डोह' जैसे अत्याधिक सुन्दर नगर को छोड़कर यहाँ आकर क्यों रहने लगे?

उनके पास इसका उत्तर होता था—"ओहियो वैली भी उतनी ही सुन्दर है जितनी की शेनान डोह वैली। बल्कि यहाँ का मौसम अप्रैल के महीने से ही बसंत ऋतु के आने से और अधिक सुहावना हो जाता है।"

अभी उस परिवार को वहाँ रहते एक या दो वर्ष ही हुए थे कि उनके परिवार के मुखिया को एक छिपे हुए अमेरिकन ने मार डाला। साथ ही उस व्यक्ति ने उस परिवार के छोटे बेटे थामस लिंकन का अपहरण भी कर लिया था। इन घटनाओं से क्रोधित होकर मोर देसाई, जो थामस लिंकन का बड़ा भाई था, ने तुरन्त एक गन सम्भाली और उस अमेरिकन को तलाश करके उसका वध कर डाला। इस प्रकार न केवल उसने अपने पिता की हत्या का बदला चुका लिया, बल्कि उसने अपने छोटे भाई थामस लिंकन को उस अपराधी के चंगुल से छुड़ा लिया।

थामस नाम का यही लड़का आगे चल कर राष्ट्रपति का पिता बना। जिसके बारे में कुछ लोगों का विचार था कि वह बिल्कुल ही साधनहीन और अशिक्षित व्यक्ति था। लेकिन थामस के अशिक्षित होने में उसका कोई दोष नहीं था। उस समय की परिस्थितियाँ ही कुछ ऐसी थीं। न वहाँ कोई स्कूल था जो वह वहाँ पढ़ने जाता और ना ही कोई वहाँ पढ़ाने वाला था। फिर भी उसने अपने परिवार का लालन-पालन करने के लिये विभिन्न प्रकार के कार्य किये। वे एक दिहाड़ी मजदूर थे। उनका जीवन एकाकी, उपेक्षित और नीरस था। मगर थामस हिरण का शिकार करने में लाजवाब थे। कभी उन्होंने मछलियाँ पकड़ीं, कभी कुछ अन्य कार्य किया, कभी सड़कों पर काम किया। पुराने रिकार्ड बताते हैं कि थामस लिंकन ने तीन बार कैदियों की निगरानी का काम भी किया और अपने परिवार को आगे बढ़ाया।

लेकिन शादी के बाद उसने पढ़ाई-लिखाई पर विशेष रूप से ध्यान दिया। परन्तु घुमक्कड़ स्वभाव का होने के कारण वह अपने इस आचरण पर स्थिर न रह सका। फिर भी वह एक आशावादी व्यक्ति था। इसी कारण वह बेहतर भविष्य के लिये इधर-उधर घूमता रहता था। वह वहाँ से इंडियाना चला गया। क्योंकि उसका विचार था कि इंडियाना, केंटुकी के मुकाबले में ज्यादा सुन्दर और साधन सम्पन्न प्रदेश था।

थामस लिंकन एक बेहतरीन कारपेंटर (बढ़ई) था। उसने अपने मकान को लकड़ी से बना रखा था। उसके उस लकड़ी के घर में यूं तो सुख-सुविधाओं

की सभी वस्तुएं उपलब्ध थीं, लेकिन फिर भी उसमें पुस्तकालय का अभाव था। इसके मुख्य रूप से दो कारण थे। पहला कारण थामस लिंकन का अशिक्षित होना और दूसरा कारण यह कि उसका घर एक जंगल में बना हुआ था।

सन् 1806 ई० में थामस लिंकन ने वर्जिनिया में रहने वाली एक लड़की से विवाह कर लिया। उसकी पत्नी का नाम नैन्सी हैक्स था। नैन्सी हैक्स कुशाग्र बुद्धि महिला थी। उनका बचपन अपने चाचा-चाची के साथ बीता था। उन्होंने ही उसे बड़ा किया था। नैन्सी कभी स्कूल नहीं गयी। हालात भी ऐसे थे कि उनका कभी स्कूल जाना हुआ ही नहीं। उन्हें निरक्षर कहा जा सकता है। जिस समय नैन्सी हैक्स का थामस लिंकन से विवाह हुआ, उस समय उनकी आयु सत्तरह वर्ष थी। वे घर का सारा काम सुचारू रूप से करती थीं तथा खेती-बाड़ी के कार्यों में अपने पति को सहयोग दिया करती थीं।

नैन्सी हैक्स में कोई अतिरिक्त गुण नहीं था। निःसंदेह वो भी उन हजारों औरतों में एक थीं जिनका जीवन सामान्य स्थिति में गुजरा था। उन्हें महत्वपूर्ण बनाया उनके बेटे ने, राष्ट्रपति बनकर। नैन्सी हैक्स स्वयं पढ़ी-लिखी नहीं थीं, लेकिन वह अपने पति को हर समय पढ़ने-लिखने के लिये प्रोत्साहित किया करती थीं।

यही कारण था कि नैन्सी हैक्स ने अपने बच्चों की पढ़ाई-लिखाई पर भी विशेष ध्यान दिया। उसकी मृत्यु के आधी शताब्दी के बाद राष्ट्रपति पद पर आसीन लिंकन ने अपनी माता को श्रद्धांजली अर्पित करते हुए कहा—

"मैं जो कुछ भी आज हूँ या आगे चल कर होने वाला हूँ, इसमें मेरी माता जी की दुआएं शामिल हैं। मैं अपनी देवी स्वरूप माता का आभार प्रकट करता हूँ।"

मिस्टर लिंकन को कभी अपनी पारिवारिक वंशावली में अधिक रुचि नहीं रही। यहीं कारण था कि उन्होंने कभी इसका विस्तृत रूप से वर्णन नहीं किया। हां, बस एक बार कुछ लोगों की मांग पर उन्होंने अपने परिवार का संक्षिप्त सा ब्यौरा दिया था। उनका कहना था कि, "हमारा परिवार सादगी और अप्रसारित साधनों का एक छोटा सा इतिहास है।"

वह सरल स्वभाव के थे। उनका स्वभाव संकोची था। उन्होंने आम आदमी से सांत्वना पाने की कभी कोशिश नहीं की।

❑



अब्राहम लिंकन का बाल्यकाल



लकड़ी की झोंपड़ी जहां अब्राहम लिंकन का जन्म हुआ

अब्राहम लिंकन का जन्म 12 फरवरी 1809 ई० में केंटुकी के हार्डिन काउन्टी नामक स्थान पर हुआ था। इसे संयोग ही कहा जाएगा कि चार्ल्स डार्विन का जन्म भी इसी तिथि में हुआ था। अब्राहम लिंकन ने जहां जन्म लिया था, वह एक लकड़ी का केबिन था, जोकि एक फार्म हाउस में स्थित था। यह फार्म हाउस नोलिन क्रीक से पांच किलोमीटर के फासले पर स्थित था।

उनकी माता का नाम नैन्सी हैक्स तथा पिता का नाम थामस लिंकन था। थामस लिंकन को अपने पिता से अत्यधिक प्रेम था; जिनकी एक अमेरिकन ने हत्या कर दी थी। उनका नाम भी अब्राहम लिंकन था। जब थामस के घर में बेटे ने जन्म लिया तो उसने अपने बेटे का नाम अपने पिता के नाम पर अब्राहम लिंकन रख दिया।

लिंकन के माता-पिता

अब्राहम लिंकन के माता-पिता दोनों ही अनपढ़ थे। जब लिंकन सात वर्ष का हुआ तो उसके पिता कैन्टनी और ओहियो नदी पार करके स्पेंसर काउन्टी की ओर चले गये। वहाँ उन्होंने पार्टटाइम जॉब कर लिया। स्पेंसर काउन्टी में आने का उनका मुख्य कारण यही था कि वहां केन्टुकी में उनका गुजारा बड़ी मुश्किल से हो पा रहा था। उनकी माली हालत इतनी खराब थी कि एक समय पत्नी नैन्सी हैक्स को अपनी पोशाक बबूल के कांटों में बिंधी हुई पहननी पड़ी। आर्थिक समस्याओं और घरेलू परेशानियों से तंग आकर उन्होंने इंडियाना छोड़ दिया और सिंगमोन नदी पार मेकॉन काउन्टी पर सरकारी जमीन पर घर बना कर रहने लगे।



लिंकन के माता-पिता

थामस लिंकन ने नैन्सी हैक्स से विवाह के बाद एलिजाबेथ टाउन में रहना आरम्भ किया, जहाँ उनकी पहली संतान सराह ने जन्म लिया। उसकी पैदाइश के तुरन्त बाद ही मिस्टर थामस ने खेती-बाड़ी और बढ़ईगिरी दोनों कामों को करने का निश्चय किया और इसके लिये उन्होंने अपना घर छोड़ दिया और वहां से पन्द्रह मील की दूरी पर 'काराउन

काउन्टी' में चले आये। वहाँ नैन्सी हैंक्स ने 12 फरवरी 1809 को एक लड़के को जन्म दिया; जिसका नाम उसके दादा के नाम पर अब्राहम लिंकन रखा गया। जहाँ इस बच्चे ने जन्म लिया, वह एक लकड़ी का केबिन था, ये केबिन एक वर्गाकार में बना हुआ था जिसमें केवल एक दरवाजा था। उसका फर्श कच्ची जमीन का था तथा उसमें कोई खिड़की नहीं थी।

थामस लिंकन वहाँ अपने परिवार के साथ लगभग चार साल तक रहे, उसके बाद वह दक्षिण-पूर्व की ओर चले गये, जो कि उस स्थान से पन्द्रह मील दूर था।

एक-दो वर्ष वहाँ रहकर थामस लिंकन अपने परिवार को लेकर केन्टुकी से चले आये। लेकिन उसका यह घुमक्कड़पन उसके परिवार और खुद उसके लिये घाटे का सौदा साबित हुआ। उसने अपने जीविकोपार्जन के लिये बढ़ईगिरी को अपनाना चाहा; लेकिन यह प्रकृति को मंजूर नहीं हुआ। उन्हें काम मिला, लेकिन उनके लगाए कारीगर लकड़ी को चाहे गये अनुपात में नहीं काट पाये। नतीजतन उन्हें उनके परिश्रम का मूल्य नहीं मिला। मालिक ने पैसे देने से इंकार कर दिया। उसके बाद थामस का मन उचाट हो गया। उन्हें लगा कि वापस लौट जाना चाहिये।

तब उन्होंने क्षतिपूर्ति के लिये अपने मकान का सौदा अपने एक पड़ौसी से कर लिया, जोकि एक सभ्य व्यक्ति था।

सन् 1816 ई० में थामस ने इंडियाना में बसने की सोची। वे केंटुकी में प्रचलित दास प्रथा को पसंद नहीं करते थे। वे खेत में स्वयं व परिवार के सदस्यों के साथ काम करते थे। केन्टुकी में दास प्रथा के अलावा उन्हें दूसरी परेशानी जमीन का पट्टा लिखवाने की थी। थामस धार्मिक कारणों से दास प्रथा के विरुद्ध थे। वे बेपटिस्ट चर्च के सदस्य बन गये, जिसके सदस्य विभिन्न व्यभिचारों से दूर रहते थे तथा दास प्रथा के विरोधी थे। अब्राहम लिंकन इस सम्बन्ध में अपने पिता से पूर्ण सहमत थे। इस प्रकार उनके खून में दास प्रथा के विरुद्ध भावनाएं प्रबल थीं, जिनका बीजारोपंण बाल्य-काल में ही हो गया था।

इंडियाना में बसने के लिये थामस लिंकन ने अपने फार्म को बेच दिया। बदले में 300 डालर में सौदा तय कर लिया। सौदे के अनुसार 20 डालर थामस को कैश के रूप में मिले शेष राशि दस बैरल व्हिस्की के रूप में मिली, जो कि उस समय की प्रचलित राशि थी। तब उन्होंने अपना सामान एक चौरस नाव में लादा और उसे रोलिंग फोक्र की साल्ट क्रेक में लेकर चल दिये; जोकि तब ओहियो नदी कहलाती थी। अपने घरेलू सामान के साथ-साथ उन्होंने कुछ अतिरिक्त सामान भी लाद लिया था।

जब चौरस नाव नदी के पानी के बीच मंझधार में पहुँची तो वह उस अतिरिक्त भार को सहन न कर सकी और पानी में डूबने लगी। थामस किसी प्रकार से अपने परिवार और कुछ सामान को बचाने में सफल हो गये। उस समय थामस लिंकन ने उस सामान को अपने दोस्त के हवाले किया और अपने परिवार में लौट आये। वह अपने परिवार को लेकर पड़ौसी

राज्य इंडियाना में पहुँच गये।

तब अब्राहम लिंकन की आयु मात्र सात वर्ष थी, जब पहली बार उसका मौसम की बर्फबारी से सामना हुआ। इंडियाना का जंगल इतना घना था कि चलते हुए आस-पास की उलझी और लटकी हुई लताओं, शाखाओं को काटना होता था। जैसे-तैसे थामस ने अपने परिवार के लिये एक 'शैड' तैयार किया। न वहाँ फर्श था, न दरवाजे, न दरी थी। तीन ओर तो ठीक ठाक सा साया था, लेकिन एक ओर से बिल्कुल खुला था। बर्फीली हवायें सीधे अन्दर आती थीं।

लेकिन थामस को लगा कि यह उनके और उनके परिवार के गुजर-बसर के लिये पर्याप्त जगह है। सन् 1816-17 की ठंड इतिहास की कड़ाके की ठंड घोषित की गयी। उसका साक्षी थामस का परिवार रहा। ऐसे ही मौसम में थामस के साथ बालक अब्राहम काम करता था। वहाँ दास प्रथा थी— घनघोर गरीबी से उपजी सामाजिक बीमारी। थामस आरम्भ से ही दास प्रथा के खिलाफ थे। हालांकि इसकी वजह थामस का बेपटिस्ट चर्च का सदस्य होना था। चर्च उन दिनों दास प्रथा के विरुद्ध था। चर्च का सदस्य होने के कारण थामस भी इस प्रथा के खिलाफ थे। इसके अलावा वह अन्य दुर्गुणों से दूर थे; जो उस समय समाज का हिस्सा बन गये थे।

इंडियाना में पहुँच कर थामस लिंकन को जमीन का पट्टा हासिल करने में कोई ज्यादा दिक्कत नहीं पेश आयी। एक तो चर्च की मदद, दूसरे वह इलाका ऐसा था जहाँ ज्यादातर लोग आना नहीं चाहते थे।

यहाँ ठंड बहुत अधिक पड़ती थी और जंगली जानवरों, जैसे भालू आदि का बहुत डर रहता था। यहाँ पर बसने वाले लोग भालू और हिरण का शिकार बहुत अधिक मात्रा में करते थे और इन्हीं जानवरों का मांस खाकर अपने शरीर को गर्म रखने का प्रयास करते थे। परन्तु बालक अब्राहम को जानवरों को मार कर उनका मांस खाना पसन्द नहीं आया।

लिंकन के हाथों में कुल्हाड़ी

इधर थामस को जमीन तो मिल गयी थी, परन्तु अब समस्या यह थी कि उस जमीन पर स्थित पेड़ों को काटकर उसे खेती योग्य कैसे बनाया जाए, ताकि उस पर मक्के की खेती की जा सके। थामस और उसके बेटे अब्राहम, जो कि उस समय केवल आठ वर्ष का था, ने अपने पिता के साथ कुल्हाड़ी को उठाया और इस कार्य में जुट गया। उसके बाद अब्राहम के हाथों में यह कुल्हाड़ी 23 वर्ष तक रही। फसल बोने और काटने से जब भी उन्हें फुर्सत मिलती, वे पेड़ काटने या लकड़ी काटने का कार्य करते थे। जिस क्षेत्र में थामस व अन्य किसानों के खेत थे, उसका नाम 'छोटा कबूतर झरना' था।

थामस और अब्राहम की मेहनत और ईमानदारी ने अपना रंग दिखाया। थामस ने खेती बाड़ी करके इतना धन अर्जित कर लिया था कि उन्होंने आस पास की जमीन भी अपने नाम करा ली थी। इंडियाना के इसी फार्म

में अब्राहम जवान हुए और अपने पिता के कार्य में पूर्ण सहयोग करने लगे। उन्होंने खेती के सब गुर सीख लिये थे।

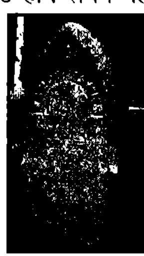
परन्तु इस दौरान उनके परिवार पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा। अब्राहम को अपने जीवन का पहला आघात तब लगा जब उसका पिता बाहर गया हुआ था और उसकी अनुपस्थिति में उसकी माँ ने एक बच्चे को जन्म दिया। लेकिन उस बच्चे के जन्म के कुछ देर बाद ही उसका उस केबिन में निधन हो गया। उस बच्चे के अंतिम संस्कार का सारा कार्य भार बालक अब्राहम को निभाना पड़ा था। ऐसे ही एक बार अब्राहम पनचक्की से मक्के का आटा पिसवाकर जब अपनी घोड़ी से घर लौट रहे थे तो तब वे घोड़ी से गिर पड़े और उनके माथे पर घोड़ी का पैर पड़ गया। उनके सिर से खून बहने लगा और वह बेहोश हो गये।

पहले तो लोगों को अब्राहम की हालत देखकर लगा कि मर गये हैं। तुरन्त ही अब्राहम के पिता को बुलाया गया। घंटों तक प्रयास करने पर अब्राहम बोल नहीं पाये। लोग उनके जीवन के प्रति निराश होने लगे। तभी उनकी चेतना वापस लौट आयी और वे बच गये।

परिवार को एक अन्य झटका तब लगा जब कि 'छोटा कबूतर झरना' में एक महामारी फैल गयी। यह बीमारी 'दूध की बीमारी' के नाम से फैली हुई थी। यह मवेशियों, घोड़ों, भेड़ों आदि से फैलती थी। इस बीमारी के फैलने का मुख्य कारण वहाँ किसी विशेष पेड़ की पत्तियां थीं, जिन्हें जानवरों के खाने से उनके दूध में विषाक्त कण आ जाते थे। यह बीमारी उन जहरीली पत्तियां खाने वाले जानवरों के दूध से होती थी। इस बीमारी के प्रमुख लक्षणों में पहले मितली होती थी, फिर पेट में दर्द और मरोड़ हो जाता था, उसके बाद यह बीमारी मौत का रूप धारण कर लेती थी।

अब्राहम की मां का निधन

सन् 1818 में अब्राहम की मां नैन्सी हैक्स, पीटर ब्रूनर के काम में मदद करने के लिये अपने घर से आधा मील चल कर जाती थी। ब्रूनर की अचानक मृत्यु हो गयी और नैन्सी भी बीमार पड़ गयी। नैन्सी के पेट में दर्द होने लगा और उल्टियां आरम्भ हो गयीं। उसके हाथ-पैर ठंडे होने लगे। वह बार-बार पानी मांगती। थामस लिंकन की शकुन-अपशकुन में गहरी आस्था थी। तभी उसे कमरे के बाहर कुत्ते के रोने की आवाज आयी तो उसे पक्का विश्वास हो गया कि अब नैन्सी नहीं बचेगी। नैन्सी बोलने का प्रयास कर रही थी, लेकिन उसके लिये फुसफुसा कर बोलना भी सम्भव नहीं हो पा रहा था। पक्षाघात और मूर्च्छा से जूझते हुए अपनी बीमारी के सातवें दिन 5 अक्टूबर 1818 को अब्राहम की माँ नैन्सी हैक्स चल बसी।



लिंकन की मां का समाधि स्थल

जिस समय अब्राहम की माँ का निधन हुआ, उनकी आयु केवल साढ़े नौ वर्ष थी। इस छोटी सी आयु में माँ

के देहान्त से अब्राहम इतने भावुक हुए कि वे अहिंसावादी बन गये। वे अपने साथियों को जानवरों के प्रति की जाने वाली निर्दयता के विरुद्ध शिक्षा देने लगे। उनका हृदय और भी भावुक हो गया था, क्योंकि इस बीमारी में उन्होंने न केवल अपनी माँ को खोया था, बल्कि अन्य रिश्तेदारों, दोस्तों तथा पड़ोसियों को भी गंवा दिया था।

अब्राहम लिंकन के राष्ट्रपति बन जाने के बाद इतिहासकारों ने उनकी माँ के बारे में जानकारी हासिल करने के प्रयास किये थे। लेकिन उनकी माँ के सम्बन्ध में कुछ ज्यादा पता नहीं चला। वो केवल इतना ही जान पाये कि नैन्सी ने अपने अन्तिम दिन जंगलों में दुख- तकलीफ सहते हुए गुजारे थे। अलग- अलग जीवनीकार इस बात पर भी एकमत नहीं हो सके कि नैन्सी हैक्स देखने में कैसी लगती थीं। उनके बालों और आंखों के रंग पर भी लोगों की अलग-अलग राय थी। उन्हें उनके चाचा-चाची के पास दफनाया था। लेकिन आज तक कोई यह नहीं बता सका कि उन तीनों में से कौन सी कब्र में अब्राहम लिंकन की मां चिर-निन्द्रा में है।

अब्राहम लिंकन को पढ़ने-लिखने का बहुत शौक था। लेकिन वहां के विद्यालय में अच्छी पुस्तकों का अभाव था।

पढ़ने का शौक और क्षतिपूर्ति

पूर्व में अब्राहम लिंकन ने अपने एक पड़ोसी जौसेफ क्राफोर्ड से वीमजंस की 'लाइफ ऑफ वाशिंगटन' नाम की किताब उधार ली। एक रात को किताब का अध्ययन करने के बाद उसने किताब को एक झरोखे में रख दिया और आकर अपने कमरे में सो गया। रात को जोरदार बारिश हुई और पूरी किताब पानी में भीग कर खराब हो गयी। सुबह जब अब्राहम की आंख खुली तो उसने किताब का बुरा हाल देखा। वह इतनी खराब हो चुकी थी कि उसको दोबारा ठीक करना सम्भव नहीं था। तब अब्राहम उस किताब के स्वामी के पास गया और उससे उस किताब की कीमत पूछी।

किताब के स्वामी ने जो किताब की कीमत बतायी, उतने रुपये लिंकन के पास नहीं थे। क्योंकि उसने किताब के बदले में पिछहत्तर सेंट देने की बात की थी।

लिंकन ने उससे पूछा कि क्या ये किताब की पूरी कीमत है या उस किताब की क्षति की भरपाई करने का मूल्य है? इस पर पुस्तक देने वाले ने केवल इतना कहा— "तुम मुझे केवल पिछहत्तर सेंट दे दो, उसके बाद किताब मुझे दो या न दो, मुझे उससे कोई अन्तर नहीं पड़ता है।"

"लेकिन मेरे पास तो इस समय पिछहत्तर सेंट हैं नहीं!" लिंकन ने उससे कहा।

"तब तुम्हें तीन दिन तक मेरे पास काम करना होगा। 25 सेंट प्रतिदिन के हिसाब से तीन दिन में तुम्हारे पैसे पूरे हो जायेंगे।" किताब के स्वामी ने कहा।

उसकी बात सुनकर लिंकन खुशी-खुशी तीन दिन तक उसके साथ काम

करने के लिये तैयार हो गये।

बाद में लिंकन ने हैनरी क्ले की जीवनी को अपनाया। जिसकी कि वह पूजा की हद तक मान-सम्मान किया करते थे। उसका प्रिय कवि बर्न्स था। जिसे वह दिल से चाहते थे। लेकिन उसने बर्न्स का नम्बर शेक्सपियर के बाद रखा था।

अपनी धार्मिक आस्था के कारण वह ईश्वर की स्तुति करना पसंद करते थे। लेकिन अपनी शेक्सपियर रुचि के लिये, वह कहा करते थे कि वह प्रभु यीशु का एक सिपाही है।

कुछ समय बाद ही श्रीमती थामस लिंकन की मृत्यु हो गयी और इस प्रकार भविष्य में होने वाले राष्ट्रपति को पहली बार किसी जबरदस्त आघात का सामना करना पड़ा था।

अपनी पत्नी के निधन के बाद विधुर थामस लिंकन ने अपनी पत्नी के अंतिम संस्कार के लिये लकड़ी के तख्तों को चीर कर कोफिन बनाना आरम्भ किया, ताकि वह अपनी पत्नी को उसमें रख कर उसकी अन्तिम क्रियाकर्म को अंजाम दे सके। वहाँ न कोई पादरी था और न ही कोई अंत्येष्टि करने वाला। उसने उसकी कब्र पर लकड़ी की सलीब लगा दी, जोकि 1879 के बाद के वर्षों में पत्थर की सलीब में परिवर्तित कर दिया गया।

उन दिनों एक चलता-फिरता उपदेश देने वाला था, जो कि पादरी एल्फिन के नाम से जाना जाता था, जो कि अकसर लिंकन के पड़ोसियों को केंटुकी में उपदेश दिया करता था। तब तक अब्राहम लिंकन जवान हो चुका था। पढ़ना-लिखना सीख चुका था। उसने पादरी को एक पत्र लिखा, ताकि वह वहाँ आ सके और उसकी माता की अंत्येष्टि कर सके। उस पादरी को उस पत्र को पाने में कितना समय लगा, इसकी हमें जानकारी नहीं है। लेकिन वह पादरी वहाँ आया और उसने अब्राहम लिंकन की माता की अंत्येष्टि में भाग लिया। हालांकि इसके लिये उसे कठिन और लम्बी यात्रा तय करनी पड़ी। परन्तु वह पत्र के बाद, पहला अवसर मिलते ही यहाँ चला आया और यह अवसर उसे अगले साल मिला।

वहाँ कोई गिरजाघर नहीं था, जो इस काम को अंजाम दे सके। अब्राहम लिंकन ने अपने बड़े होने तक वहाँ कोई चर्च नहीं देखा था। लेकिन उसके पड़ोसी जिनकी संख्या उस समय लगभग दो सौ के आस पास थी, वो पूजा अर्चना करने के लिये वहाँ पादरी को पेड़ों के नीचे बुला लिया करते थे, ताकि वो प्रार्थना कर सकें।

अब्राहम लिंकन की माँ की मृत्यु पर लोगों ने उसे सांत्वना देते हुए कहा कि उसने संसार में बहुत कम लेकिन अच्छा जीवन व्यतीत किया। यह और बात है कि उसका जीवन गरीबी और कठोर परिश्रम से परिपूर्ण था। लेकिन तब यह कोई नहीं जानता था कि उसका नाम युगों-युगों तक लोगों को याद रहेगा। वह एक ईमानद्रार, बहादुर और खुशमिजाज महिला थी। उसने अपने कर्तव्य का पालन पूरी ईमानदारी के साथ किया था।

❑



इंडियाना में

पत्नी की मृत्यु के बाद मिस्टर थामस लिंकन तीन बच्चों के लालन पालन की ओर से लापरवाह हो गये थे। तब उनकी बड़ी बेटी ग्यारह वर्ष की थी तथा बेटा अब्राहम लिंकन दस वर्ष का था। एक तीसरा मिस्टर एंड मिसेज स्पैरो का बेटा था। उनकी मृत्यु के बाद नैन्सी हैक्स ने उनके इकलौते बेटे डेनिस हैक्स को अपना बेटा बना कर अपना लिया था।

अब्राहम का पिता घर में औरतों वाले काम करने में अयोग्य था। जबकि उसकी माता अपने जीवन में मर्दों वाले काम करने में सक्षम थी। पिता की इस अयोग्यता के कारण घर की हालत अत्यन्त दयनीय थी। माँ की ममता से वंचित तीन बच्चे और विधुर पति के लिये जाड़ों की यह ऋतु बहुत उदास थी। जब बसंत का मौसम आया तो उसने अपना जीवन संवारने के लिये लकड़ी और मैदानों में स्वयं को श्रम करने में लगा दिया। इस प्रकार फिर से जाड़ों का मौसम आरम्भ हो गया।

पिता द्वारा दूसरा विवाह

दिसम्बर 1819 के आरम्भ में थामस लिंकन एलिजाबेथ टाउन (Elizabeth town) में लौट आया और वहाँ उसने एक विधवा महिला से विवाह का प्रस्ताव रखा। जिसका नाम सराह बुश जानसन था। वह उस विधवा महिला को पहले से जानते थे। सराह बुश जानसन तीन बच्चों की माँ थी और उसे भी पति की आवश्यकता थी।


सराह बुश जानसन

मिस्टर लिंकन ने बुश से विवाह का प्रस्ताव सीधे-सीधे रखा था इसलिये उसको प्रस्ताव को मान लेने में कोई हिचक नहीं हुई। अगली सुबह वो दोनों विवाह बंधन में, बिना किसी समारोह के बंध गये। थामस ने सराह बुश के उधार को चुकता कर दिया। सराह अपने सामान तथा बच्चों के साथ इंडियाना में थामस के घर आ गयी।

सराह अपने साथ तीन बच्चों को लेकर आयी थी, जो कि विभिन्न आयु के थे। उसके बच्चों की आयु आठ से तेरह वर्ष की थी। वहाँ का मकान छोटा था। माता-पिता और बच्चे एक चार घोड़ों वाली बग्गी में अपने सामान के साथ सवार होकर जंगलों और मैदानों से होते हुए वापस इंडियाना आ गये। मिसेज सराह बुश के साथ, घर में तरह-तरह से काम आने वाला फर्नीचर भी था।

सराह बुश एक कुशल गृहणी थी। उसने आते ही पूरे घर की काया पलट दी। घर में परिवर्तन लाने में सराह बुश के फर्नीचर ने मुख्य भूमिका अदा

की। घर के लिये जो कुछ भी सामान महत्वपूर्ण था, वह उसके पति ने उसके लिये उपलब्ध कर रखा था। उसने उस सामान से न केवल मिस्टर थामस के घर को सजाया, बल्कि अपने कुशल नेतृत्व से सभी बच्चों को भी संभाला। उसकी प्रेरणा से थामस और बच्चों ने कच्चे फर्श को लकड़ी के फर्श में बदल दिया, छत ठीक कर दी, कमरे का बकायदा दरवाजा बनाया गया। लकड़ी की दीवार में एक जगह से काट कर खिड़की बनायी गयी। जिसे घास के कागज से ढक दिया गया।

कमरे के ऊपर एक और खण्ड बनाकर उस पर तीनों लड़कों डेनिस, अब्राहम और जान के लिये शयन कक्ष बनाया गया। सराह साफ-सफाई पर अब विशेष ध्यान देती थी। वह बच्चों के लिये एक प्यार करने वाली माँ थी। उसकी देखरेख में बच्चे पहले से अधिक साफ सुथरे लगते थे। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह थी कि सराह ने अपने कुशल नेतृत्व से दोनों परिवारों को एकता और प्रेम के बंधन में बांध दिया था। अब उस घर में बच्चों की संख्या छः हो गयी थी। वो सभी अपनों को तरसे हुए बच्चे थे, इसीलिये जल्दी ही एक-दूसरे से घुल-मिल गये थे। वह बच्चों के आलसीपन पर रहम खाने वाली नहीं थी। बल्कि उसने अपनी बुद्धिमानी से न केवल उनको सम्भाला, बल्कि उनको बुरी आदतों से भी दूर रखा था। वह उन्हें बहुत दुलार और अनुराग से पाल रही थी।

दूसरी मां का अच्छा प्यार

सराह थामस तथा अपने बच्चों में किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं रखती थी। वह सबको समान स्नेह और प्रेम का दान देती थी। यही कारण था कि सारे बच्चे उसकी आज्ञा का पालन करते थे। अब्राहम उन बच्चों में सर्वोपरि था, जोकि सदैव अपनी माँ की आज्ञा का पालन करता था और उनका आदर-सत्कार भी करता था।

सराह की प्रेरणा से थामस ने अपने बच्चों को पास के क्राफोर्ड स्कूल में भर्ती करा दिया जो कि उनके घर से मात्र एक मील की दूरी पर स्थित था।

अब्राहम लिंकन पढ़ने-लिखने की कला को धीरे धीरे सीखते थे। परन्तु जो वो पढ़ते या सुनते थे, उसे ठीक प्रकार से याद कर लेते थे। वे एक बार जो याद कर लेते उसे भूलते नहीं थे। लिंकन के बच्चे इस स्कूल में मात्र तीन माह ही पढ़ पाये थे कि क्राफोर्ड ने यह स्कूल बंद करा दिया। फिर एक वर्ष तक ये बच्चे किसी स्कूल में न जा सके।

एक वर्ष बाद उस क्षेत्र में एक और स्कूल खुला, जो कि उनके घर से चार मील की दूरी पर था। थामस लिंकन के सभी बच्चे उस स्कूल में भर्ती हो गये। लेकिन अब्राहम स्कूल कभी कभार ही जा पाते थे क्योंकि खेती का कार्य भी देखना होता था। अगले वर्ष क्राफोर्ड के खाली केबिन में फिर से स्कूल खोल दिया। यहाँ अब्राहम लगभग छः माह ही पढ़ पाये। यह उनके लिये आखिरी स्कूल था।

इस प्रकार पन्द्रह वर्ष की आयु में अब्राहम की स्कूली शिक्षा समाप्त हो गयी। वे चार टुकड़ों में लगभग एक वर्ष तक स्कूल गये और दूसरी कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की; फिर भी उनकी यह खंडित शिक्षा पूर्णतः व्यर्थ नहीं गयी। क्योंकि इसने बाद में उनकी स्वशिक्षा के लिये मार्ग प्रशस्त किया।

इंडियाना से पलायन

1830 के प्रारम्भ में वे अपने पिता को यह समझाने में सफल हो गये कि उन्हें इंडियाना की स्पेन्सर काउन्टी को छोड़कर इंडियाना की पैकन काउण्टी में बस जाना चाहिये। बेटे की बात मानकर पिता अपनी जमीन, जानवर और मक्का बेचकर सपरिवार इंडियाना के लिये बैल गाड़ी के द्वारा रवाना हो गये। बर्फ पिघलने के कारण रास्ते में उन्हें वाबाय नदी उफान पर मिली। सड़क पर आधे मील तक नदी का पानी भरा हुआ था। ऐसे में लिंकन का कुत्ता गाड़ी से बाहर कूद गया और पानी में डूबने लगा।

लिंकन को अपने कुत्ते से बेहद प्यार था। वह उसका डूबना देख न सके और कमर तक आते बर्फीले पानी में कूद पड़े और डूबते कुत्ते को पकड़ कर बाहर निकाल ले आये। अंत में सब लोग नदी पार करते हुए डेकाटर गाँव में पहुँचे। वहाँ की धरती उनके लिये बाहें पसारे खड़ी थी।

लिंकन जब सोलह वर्ष का था, तब उसका सामना एक अत्याधिक बोलने वाले से हुआ। उसने एक अदालत में, जो कि बार्न वैली में वार किक काउन्टी में था, एक शिष्ट मनुष्य को केंटुकी के प्रतिनिधि का बचाव करते देखा था। तब उस व्यक्ति की बोलने की कला ने उस छोटे से लड़के पर अत्याधिक प्रभाव डाला। तब परिणामस्वरूप इस गंदी ड्रेस और भद्दे लेकिन विनीत से उत्साही लड़के ने उसके वक्तव्य पर उस व्यक्ति को बधाई दी। लेकिन उस व्यक्ति ने हाथ नहीं मिलाया। बाद में सालों बाद में, वह आदमी उन्हें वाशिंगटन के व्हाइट हाउस में मिला, तब राष्ट्रपति ने उसे पिछली घटना को याद दिलाया।

लिंकन जब उन्नीस वर्ष का था तो उसने पहली बार ओहियो और मिसीसिसी नदियों की यात्रा की। उस यात्रा में उसके साथ दो घटनाएँ घटीं। नीव औरलेंस में उसको अपना मकसद हासिल हुआ। वहाँ उसने फ्लैट बोट हासिल करने के लिये टेंडर भरा।

बैटन के निकट उनकी बोट को तलाशी के नाम पर रोका गया। उस रात नीग्रो लुटेरों बदमाशों के द्वारा उनके बोट के सामान को लूटने के लिये रोका गया था। लिंकन उन बदमाशों से जरा न डरा, उसने उन्हें ललकारा—"कौन है वहाँ?"

जब उसे कोई जवाब नहीं मिला तो उसने एक नोकीले हथियार को हाथ में थामा और पहले एक पर वार किया और उसके बाद दूसरे पर। उसके बाद तो वह लगातार वार करता ही चला गया। उसने तीसरे-चौथे को भी मार गिराया। उसका साहस देखकर और अपने साथियों की हालत देखकर शेष तीनों नीग्रो बदमाश अपनी जान बचाकर भाग खड़े हुए। उसने उन तीनों का पीछा कर उनमें से एक को और मार गिराया, जबकि शेष दो

भागने में सफल हो गये। इस प्रकार उसने अपनी फ्लैट बोट को और अपने सामान को लुटने से बचा लिया।

यह उसकी पहली यात्रा थी जब लिंकन ने अपने जीवन में पहली बार एक डालर कमाया था। बाद में वह विलियन एच सेवार्ड से सम्बन्धित हो गया था।

एक बार उसकी बोट नदी में जा रही थी। जहाँ कहीं कभी उसकी बोट नदी में कस्टम पर रुकता था, यदि वहाँ कोई यात्री होता था तो वो उसे बोट की ऊपरी छत पर सवार करा लेते थे। दो आदमी अपने ट्रंकों के साथ, जिनमें कि कुछ सामान भरा हुआ था, विभिन्न बोटों की ओर देख रहे थे। लिंकन का स्टीमर कस्टम पर रुका तो एक आदमी उसके पास आया और उससे पूछा—

"इस बोट का स्वामी कौन है?"

लिंकन ने जवाब देते हुए कहा—"मैं हूँ।"

"क्या तुम इस ट्रंक को स्टीमर पर लाद सकते हो?"

"निश्चय ही।"

लिंकन का उत्तर सुनकर उसने संतुष्टि की सांस ली। तब लिंकन ने दोनों ट्रंकों को बोट पर रख दिया और वे दोनों उस पर बैठ गये। लिंकन ने उनसे नाव के डंडों से दूर बैठने को कहा। वो नाव की छत पर चले गये। लिंकन ने ट्रंक को उठाया और उसे ले जाकर डेक पर रख दिया। जब बोट दोबारा चलने वाली थी तो लिंकन ने उनसे कहा—"तुम लोग शायद मुझे भाड़ा देना भूल गये हो?"

उन दोनों में से हर एक ने अपनी पाकेट में हाथ डालकर आधा डाल. का सिक्का निकाला और उसे बोट के तल पर फेंक दिया। लिंकन को अपनी आंखों पर विश्वास न हुआ कि उसने एक डालर कमा लिया है। किसी और के लिये यह शायद साधारण सी बात हो, लेकिन लिंकन के लिये उन दिनों यह बड़ी बात थी। उस गरीब ने एक दिन में एक डालर की कमाई की थी। उस समय वह स्वयं को बहुत उत्साहित और प्रसन्न महसूस कर रहा था।

नीव और लेंरा में सारे सामान को ले जाकर बेच दिया गया और स्टीम बोट वापसी के लिये चल दी।

❑



महामारी का एक और सामना

1830 ई० में मिल्क सिक (दूध की बीमारी) की महामारी ने एक बार फिर इंडियाना पर हमला कर दिया। तब थामस लिंकन ने उस जगह को छोड़ने का निश्चय किया। उन्होंने रहने के लिये इलिनोइस नामक स्थान का चयन किया। उसने अपने घर के सारे सामान को बेच डाला और नई जगह की तलाश में चल दिया। उसके साथ उसका परिवार था, जबकि घर का सारा सामान चार बैलों वाली गाड़ी पर रखा था और लिंकन उसे हांक रहा था।

वह मैकान काउन्टी में आकर बस गये, जोकि डिकेटर के निकट था। वहाँ लिंकन ने पूरी तन्मयता के साथ अपने परिवार को स्थापित करने के लिये अपने पिता का साथ दिया। तब तक वह इक्कीस वर्ष का हो चुका था। बचपन से जवानी का फासला वह तय कर चुका था और अब पुरुषों की श्रेणी में शामिल हो रहा था। लेकिन उसके यहाँ तक पहुँचने में उसकी सौतेली माँ का बहुत बड़ा हाथ था। उसका अब्राहम के बारे में कहना था—

"अबे (अब्राहम) वास्तव में एक अच्छा लड़का है। एक औरत और एक माँ होने के नाते से मैं हजारों में कह सकती हूँ कि अबे ने न कभी मुझे तिरछी नजरों से देखा और न ही मेरी किसी बात का बुरा माना और न मुझे कोई उल्टा जवाब ही दिया। उसने मेरे किसी काम को मना नहीं किया, चाहे मैंने उसे कुछ भी करने को कहा। मैंने भी उसको भरपूर स्नेह दिया। मैंने अपनी पूरी जिंदगी में इतना आज्ञाकारी बेटा नहीं देखा। मेरा विचार है कि वह मुझसे बहुत स्नेह रखता है। मेरा एक बेटा है, जिसका नाम जॉन है, जोकि अबे के साथ ही बड़ा हुआ है। दोनों ही लड़के अच्छे हैं, लेकिन मैं यह कहना चाहूँगी कि अबे एक बहुत ही अच्छा लड़का है। मैंने शायद ही इतना अच्छा लड़का देखा हो।"

ये शब्द अब्राहम लिंकन के लिये उसकी माँ ने कहे हैं, जोकि एक सौतेले बेटे के लिये सम्मान की बात है।

'दूध की बीमारी' नामक महामारी के कारण जब उन्होंने इंडियाना को छोड़ा तो थामस लिंकन ने अपना खेत 200 डालर में, कुछ सुअर और अन्न बेचा और कुछ अपने साथ की यात्रा के लिये रख लिया। एक भारी भरकम बोझा तैयार किया। वे इलिनॉय की घाटी की ओर रवाना हुए, जिसे 'संगायॅ।न' कहा जाता था। अर्थात ऐसी जगह जहाँ पर्याप्त भोजन हो। कुल जमा वह एक बैलगाड़ी थी जिस पर जरूरत से ज्यादा बोझा लदा था। करीब दो सप्ताह तक धीमे-धीमे चुरर-चूं करती गाड़ी पहाड़ी के हिस्से के एकदम सुनसान इलाके में विलाप करती हुई टूट गयी। आस पास का वातावरण बेहद कड़ा और रूखा था। हर्नडन ने इस बारे में लिखा है कि एक बार

लिंकन ने खुद उसे इस भयानक यात्रा का वर्णन सुनाया था। उसके अपने शब्दों में—

"वह एक उबाऊ, थकाऊ और दर्दनाक यात्रा थी। दिन का थोड़ा हिस्सा ही बरदाश्त होता था। बाद में हाड़ कंपकपा देने वाली सर्दी होती थी। रास्ते में बर्फ पिघल चुकी थी। उन्हें बाबाय नदी मिली। ऐसे में उनका एक कुत्ता गाड़ी से कूद गया, वह डूबने लगा। उसे डूबता देख कर लिंकन से रहा न गया और वे उस बर्फीले पानी में उसे बचाने के लिये कूद पड़े और उसे बचा कर वापस गाड़ी में ले आये। जैसे तैसे सभी लोग नदी पार करके डेकाटर गाँव में पहुँचे। डेकाटर जैसे उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। वहाँ अब्राहम को काफी कुछ करने और स्वयं को साबित करने का मौका मिला।"

राजनीतिक सोच की ओर

अब्राहम लिंकन ने अपने जीवन का पहला राजनैतिक भाषण डेकाटर में ही दिया। संयोग वश सही, मगर पहली बार यहीं पर लिंकन ने अपने प्रवाहपूर्ण ओजस्वी भाषण से जनता को मंत्रमुग्ध कर दिया और डेकाटर की धरती इसकी साक्षी बनी। इससे पहले वहां की जनता दो राजनीतिक सोच के बोझिल भाषणों से ऊब चुकी थी।

यह सब लिंकन के पुस्तकों तथा पत्रिकाओं से ज्ञानार्जन का प्रताप था, जो कि इतना ओजस्वी भाषण उनके कंठ से निकला। उनके लिये यह एक आसान सी बात थी। क्योंकि अभी तक वे अपने दोस्तों को चुटकुले और कहानियाँ सुनाया करते थे। परन्तु अब उन्होंने राजनीतिक भाषण देकर यह साबित कर दिया कि वे अपने समय के औसत आदमियों से कितने अधिक ज्ञानी, ओजपूर्ण, दृढ़निश्चयी, तर्कपूर्ण और दूरदृष्टि से पूर्ण इंसान हैं। वहाँ उपस्थित सभी श्रोताओं ने यह महसूस किया कि अब्राहम लिंकन उनके भविष्य के नेता बन सकते हैं। उन्होंने अपने भाषण में इलिनॉय की तस्वीर पेश की थी।

डेकाटर में इस प्रकार से लिंकन का थोड़ा सा जीवन व्यवस्थित हुआ। मगर अब्राहम और उनके पिता के बीच विचारों का मदभेद था। उसके कारण वह अपने पिता से असहमत होते जा रहे थे। उसके पिता सदा से ही शिक्षा के प्रति उदासीन रहे। यही उपेक्षा लिंकन के लिये उनके पिता के विरुद्ध ले गयी। इक्कीस वर्ष की आयु होने पर लिंकन ने हमेशा के लिये अपने पिता का घर छोड़ दिया। सर्वप्रथम वे संगामों शहर गये और वहाँ उन्होंने एक नाव बनायी, ताकि वे व्यापारी का माल लेकर न्यूआरलींस जाकर उसे बेचने में उसकी मदद कर सकें।

अपने पिता का घर छोड़ने के बाद बहुत समय तक तो लिंकन यही निश्चय नहीं कर पाये थे कि उन्हें भविष्य में करना क्या है। उनका शक्तिशाली शरीर तथा उनकी शारीरिक क्षमता ने उन्हें खेती करने के योग्य बनाया था। लेकिन अब वे खेती-बाड़ी के पेशे को बिल्कुल अपनाना नहीं चाहते थ। अतः उन्होंने बीच-बीच में कई कामों को करने का प्रयास किया; जैसे

बढ़ईगिरी, नदी में नाव चलाने का कार्य, स्टोर की क्लर्की, सिपाही, व्यापारी, पोस्ट मास्टर, लोहार सर्वेक्षक, वकील और अन्त में राजनीतिज्ञ बने। एक-एक करके उन्होंने अन्य कार्य छोड़ दिये और अन्त में वकील और राजनीतिज्ञ के रूप में अपने भविष्य को संजोने लगे।

एक बार वे संगमोन नदी पार कर रहे थे, उनके पास डोंगी थी। उसका संतुलन बिगड़ गया और वे बर्फीले पानी में गिर गये। एक परिचित के घर पहुँचने से पहले ही उनके पैर ठन्ड के कारण अकड़ गये। उस परिचित का नाम था मेजर वार्निक। अब्राहम लिंकन लगभग एक महीने तक अपने पैरों से चल भी नहीं पाये। वे एक महीने तक वहीं रहे। इस बीच मेजर की बेटी ने उनकी बहुत देखभाल की और वे उसकी सेवा सुश्रूषा देखकर उस पर मोहित हो गये। लिंकन ने अपने मन की बात को मन में रखना नहीं सीखा था। यही वजह थी कि उन्होंने अपने मन की बात को मेजर की बेटी से कह ही दिया।

उन्होंने घुमा-फिरा के बात करने के बजाय सीधे-सीधे मेजर की बेटी से विवाह का प्रस्ताव रख दिया। मेजर की बेटी ने यही बात अपने पिता को बता दी। यूँ तो मेजर वार्निक लिंकन की प्रतिभा से काफी प्रभावित थे, मगर जब उन्होंने अपनी बेटी की बात सुनी तो उन्हें यह बात रास नहीं आयी। उनकी त्यौरियां चढ़ गयीं कि मेजर की बेटी उस कुरूप, मूर्ख और अशिक्षित आदमी से विवाह करेगी! उसके पास न धन है न सम्पत्ति, और न ही कोई भविष्य। खेतों में दो दशक बिताने के बाद भी उसके पास बित्ते भर जमीन नहीं थी। इस तरह उस समय बात नहीं बनी।

संगामों शहर में अब्राहम डोंगी चलाते थे। वहाँ से वे एक व्यापारी का माल लेकर न्यू आर्लियन्स में बिकवाने में मदद करते। इससे पहले वे बढ़ईगिरी, क्लर्की कर चुके थे। मगर धीरे- धीरे वे अपने संकल्प को पुष्ट करने में जुट गये। उन्होंने कानून पढ़ते हुए एक बेहतर राजनीतिज्ञ के रूप में जीवन को बनाने का संकल्प किया।

अप्रैल 1831 में जब एक व्यापारी का माल लाद कर लिंकन न्यू आरलियन्स जा रहे थे, तभी उनकी नाव न्यू सलेम गाँव के सामने जाकर रुक गयी। वहाँ एक बांध बना हुआ था। नाव में गेहूँ, मक्का व सुअर का मांस लदा हुआ था, वजन इतना अधिक था कि नाव आगे नहीं बढ़ पा रही थी। बांध पर नाव रुकी तो उसमें पानी भरने लगा। लिंकन और उसके दो साथी नाव को बांध पार कराने में जुट गये।

पूरा गाँव उनके इस साहसिक कार्य को देखने के लिये नदी के किनारे आकर एकत्रित हो गया। उन लोगों में उत्तेजना फैल गयी। कौतूहल था कि लिंकन और उसके साथी उस नाव को सामान के साथ कैसे पार पहुँचायेंगे। लिंकन ने अपने जूते, हैट, जैकेट उतार दिये और अपनी पैंट को घुटनों तक चढ़ा लिया। उनकी कमीज पसीने से तर हो गयी। वे लगातार अपने बालों को उंगलियों से पीछे कर रहे थे। ऐसे में लिंकन को एक तरकीब सूझी। वे पानी में उतर गये और उन्होंने आगे के सामान को पीछे की ओर

धकेलना आरम्भ कर दिया।

इससे पीछे का हिस्सा नीचा हो गया और नाव का आगे का भाग ऊपर को उठ गया। फिर नाव को धकेल कर उन्होंने उसे नदी के बांध के पार पहुँचा दिया।

न्यू सलेम के लोग लिंकन की इस बुद्धिमत्ता को देखकर अत्याधिक प्रभावित हुए। उनमें ऑफिट नाम का एक व्यक्ति भी था, जो लिंकन के इस कारनामे को देख रहा था। दरअसल वह मिसीसिसी नदी से न्यू आर्लियन्स की यात्रा कर रहा था। वह लिंकन के पास आया और कहने लगा–

"मैं तुमसे अत्यधिक प्रभावित हूँ। तुम जैसे कर्मठ और परिश्रमी व्यक्ति को एक दिन अपनी मंजिल जरूर मिलेगी। मैं लौट कर आऊँगा तो यहाँ एक स्टोर खोलूंगा और मैं तुम्हें उसका मैनेजर बनाऊँगा।"

लिंकन जुलाई में वापस आया तो उसने देखा कि ऑफिट ने तब तक कोई स्टोर नहीं खोला था। उसने केवल सैंट लुडरा से कुछ माल मंगाने का आर्डर दे रखा था। इसलिये स्टोर खुलने की आस में वहीं इंतजार करना था। वह एक कस्बे की भांति विकसित हो रहा था। इस बीच लिंकन को अपना जीविकोपार्जन चलाने के लिये तरह-तरह के काम करने पड़े। ऐसे काम, जिनमें ताकत लगती थी। अपने व्यक्तित्व से लिंकन ने वहाँ के लोगों को अपनी ओर आकृष्ट किया। वे लोगों को किस्से कहानियाँ और घटनायें बड़े दिलचस्प अंदाज में सुनाते थे। लोग उन्हें बड़े चाव से सुनते थे, क्योंकि लिंकन घटनाओं का सजीव चित्रण करते थे।

आखिरकार लिंकन का धैर्य काम आया और ऑफिट ने सितम्बर के अन्त में अपना वादा निभाते हुए स्टोर को खोल लिया। उसने लिंकन को अपने स्टोर का प्रबंधक नियुक्त कर दिया। कुछ दिनों में ही न्यू सलेम पूरे क्षेत्र का व्यापारिक केन्द्र बन गया। वहाँ की पनचक्की में किसान अपने मक्के का आटा पिसवाते थे। वहाँ लकड़ी को चीरने वाला एक आराघर भी था। वह भी पनचक्की की भांति नदी में बहने वाले पानी की ताकत से चलता था।

न्यू सलेम में इसके अतिरिक्त भी विभिन्न काम करने वाले रहते थे। जैसे– वहाँ एक लोहार था, एक बढ़ई का काम करने वाला था, एक हैट बनाने वाला था तथा कई जनरल स्टोर थें। वहाँ एक रैस्ट्राँ भी था। स्टोर में काम करते हुये लिंकन को तरह तरह के लोगों से वास्ता पड़ने लगा। अपने स्टोर की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिये ऑफिट अपने नये मैनेजर लिंकन की प्रशंसा किया करता था। आखिर उसको स्टोर जो चलाना था! कई बार तो उसकी प्रशंसा अतिश्योक्ति में बदल जाती थी। वह लिंकन को न्यू सलेम का सबसे होशियार और सबसे शक्तिशाली व्यक्ति बताता था। वह उसकी शारीरिक क्षमता का ढिंढोरा यहाँ-वहाँ हर जगह पीटता रहता था। स्पर्धा के दौर में इस प्रकार की बातें दूसरे समूह को रास नहीं आती हैं। पास के कैटीग्रूव गाँव के लड़कों को ऑफिट की यह डींग बिल्कुल नहीं भाती थी! वहाँ जैक आर्मस्ट्रांग नाम का एक व्यक्ति रहता था जोकि एक

मजबूत कठ-काठी वाला बलशाली पहलवान आदमी था। कैटीग्रूव गाँव वाले आर्मस्ट्रांग को अपना हीरो मानते थे, उनका कहना था कि आर्मस्ट्रांग से शक्तिशाली वहाँ कोई दूसरा व्यक्ति है ही नहीं। उसके प्रशंसक इस बात से खिन्न रहते थे कि ऑफट बिना वजह ही लिंकन की ताकत का गुण गाता है। उन्होंने शर्त लगा ली कि यदि लिंकन में ताकत है तो वह आर्मस्ट्रांग के साथ कुश्ती लड़कर दिखाये।

लिंकन को उन लोगों की यह चुनौती बिल्कुल स्वीकार नहीं थी, क्योंकि लिंकन को कुश्ती जैसी चीजों में कोई रुचि नहीं थी। लेकिन अपने मालिक के आग्रह तथा विरोधियों के तानों के कारण उसे यह चुनौती स्वीकार करनी ही पड़ी। हालांकि लिंकन अपनी ताकत और मानसिक मजबूती का प्रयोग गुलाम प्रथा के विरुद्ध करना चाहते थे।

दोनों के बीच मल्लयुद्ध आरम्भ हुआ। लिंकन हर बार उससे प्रभावी रहे। लेकिन अनुचित हथकंडे अपनाकर आर्मस्ट्रांग ने यह मुकाबला जीत लिया। परन्तु लिंकन ने जिस प्रकार से उसका मुकाबला किया, उसकी ताकत का लोहा विरोधियों तक ने स्वीकार किया। उसने सबका मन जीत लिया।

लिंकन ने इसके बाद फिर कभी अपनी शारीरिक क्षमता का प्रदर्शन नहीं किया, न ही उसने कभी इस क्षेत्र में आगे बढ़ने का प्रयास किया। उसने अपनी दोस्ती का दायरा पहलवानों के बजाय शिक्षित और बौद्धिक लोगों की ओर बढ़ाया। वहाँ वे वाद-विवाद के सदस्य भी बन गये, वहाँ श्रोता उसके तर्कपूर्ण और ओजपूर्ण वक्तव्यों से अत्यन्त प्रभावित हो जाते थे।

क्लब का नियम यही था कि वहाँ निरन्तर गतिविधियाँ होती रहती थीं और प्रत्येक को अपना क्रम आने पर कुछ न कुछ बोलना होता था। लिंकन की विषय के प्रति समझ थी, उसने अपने भाषा प्रवाह भाषणों से श्रोताओं का मन मोह लिया। सभी का यह विचार था कि इस नौजवान की प्रतिभा एक दिन अवश्य ही रंग लायेगी। सभी इस बात पर सहमत थे कि लिंकन की वाक पटुता उन्हें शीर्ष पद तक ले जायेगी।

इधर ऑफट अपना काम बढ़ाता जा रहा था। वह जो भी नया काम बढ़ाता, उसकी जिम्मेदारी लिंकन के सिर पर डाल देता। स्टोर के साथ-साथ लिंकन अब ऑफट की चक्की और आरामघर का काम भी सम्भालने लगे। वे तीनों जगह का बाकायदा हिसाब रखते थे। लिंकन की ईमानदारी, हिसाब-किताब रखने की क्षमता, ग्राहकों तथा दूसरे लोगों के साथ विनम्र व्यवहार ने अनेक लोगों को लिंकन का प्रशंसक बना दिया।

वे अपना सारा काम ईमानदारी से करते थे। वे सामाजिक कार्यों में दिलचस्पी लेने के साथ साथ स्थानीय कोर्ट की कार्यवाही में भी समान रुचि रखते थे। इसके चलते उनकी अधिक रुचि कानून में बढ़ी और धीरे-धीरे वे कानून का भी अध्ययन करने लगे।

कानून में उनकी प्रवीणता का इससे बड़ा उदाहरण क्या हो सकता है कि वे जल्दी ही कानूनी दास्तावेजों को तैयार करने लगे और लोगों को कानूनी सलाह भी देने लगे। इतना ही नहीं, क्षेत्रीय विकास में भी उनकी

दिलचस्पी बढ़ने लगी।

पानी में काम करने का उनके पास एक योग्य नाविक का अनुभव था। इसी कारण उन्होंने सोचा कि संगमोन नदी का प्रयोग नौकायन के लिये कैसे किया जाये। इसके लिये उन्होंने एक योज़ना का निर्माण किया और इस योजना को एक लेख का रूप देकर एक स्थानीय अखबार में छपवा दिया। लेखन की दृष्टि से देखा जाये तो वह लेख एक बचकाना था। फिर भी उसमें उनकी योजना का तर्कपूर्ण विवरण और आगामी विधायिका के चुनाव में खुद के खड़े होने की घोषणा शामिल थी।

प्रान्तीय विधान सभा के चुनाव का सुझाव वाद-विवाद क्लब के सदस्यों तथा अनेक दूसरे शुभचिंतकों ने लिंकन को दिया था। ये लोग चाहते थे कि उनका एक शक्तिशाली प्रतिनिधि विधान सभा में पहुँचकर न्यू सलेम की उपेक्षा को समाप्त कर उसे विकास की राह पर ले जाये। अपने मित्रों के आग्रह पर मार्च 1832 में लिंकन ने विधान सभा का चुनाव लड़ने की घोषणा दी।

प्रान्तीय विधान सभा के चुनाव में राष्ट्रीय राजनीति के बजाय स्थानीय मुद्दे अधिक हावी रहते थे। न्यू सलेम का स्थानीय मुद्दा यह था कि संगामो नदी का विकास कर उसे जलमार्ग के रूप में अधिक प्रयोग करने के योग्य बनाया जाये। इससे यहाँ स्थानीय उद्योग-धंधों तथा व्यापार का अधिक से अधिक विकास होगा। इसके लिये जरूरी था कि नदी को वाष्प नावों के आवागमन हेतु उपयुक्त बनाया जाये। इससे न्यू सलेम इलिनाय राज्य का व्यापारिक केन्द्र बन सकता था, क्योंकि वह संगमोन नदी के मुहाने पर बसा हुआ था।

परन्तु लिंकन का चुनाव जीतना आसान न था। क्योंकि वे अपने थोड़े मित्रों के बल पर चुनाव लड़ रहे थे, जबकि विरोधी तो अपने पक्ष में राष्ट्रीय नेताओं को लाकर खड़ा कर सकते थे। लिंकन ने अपने चुनाव के समर्थन में एक सारगर्भित पर्चा निकाला, जिसमें उन्होंने रेल योजना पर व्यय होने की तुलना में उसके लाभ को कम बताया। उन्होंने संगामो नदी के विकास पर बल दिया ताकि कम खर्च में अधिक उपयोगी योजना क्रियान्वित हो सके। उन्होंने न्यू सलेम के लोगों के लिये अनेक लाभकारी योजनाओं को क्रियान्वित करने की अपील भी की। इसके साथ ही साथ उन्होंने शिक्षा पर भी बल दिया। अन्त में उन्होंने अपने बारे में कहा कि वे एक नम्र इंसान हैं, यदि वे जीत जाते हैं तो वे जनहित के लिये कार्य करेंगे। लेकिन यदि वह हार भी जाते हैं, तब भी उन्हें अधिक मलाल नहीं होगा, क्योंकि वे इसके पहले से अभ्यस्त हैं।

लिंकन की संगमोन नदी के सम्बन्ध में की गयी घोषणा बहुत ही सामयिक साबित हुई। क्योंकि शीघ्र ही पता चला कि 'तिलिस्मान' नाम का एक स्टीमर सिनसिनाटी से चल चुका है। इसका उद्देश्य संगमोन नदी पर स्टीमरों के प्रयोग की सम्भावनाओं को तलाशना था। तिलिस्मान को ओहियो नदी से नीचे आकर फिर मिसीसिपी और इलियाना नदियो से होते हुए संगमोन

नदी पर आना था और फिर न्यू सलेम और स्प्रिंगफील्ड से छः मील पर पोर्टलैंड लैंडिंग तक जाना था। लिंकन स्प्रिंगफील्ड और न्यू सलेम के वासियों के साथ बर्ड्स टाउन पहुँच गये, जहाँ से स्टीमर को संगमोन नदी को पकड़नी थी।

बर्ड्स टाउन से लिंकन ने स्टीमर का चार्ज खुद सम्भाल लिया। क्योंकि इस सम्बन्ध में वह पहले ही कह चुके थे कि संग्रमोन नदी के बारे में वे दूसरे से बेहतर जानते हैं। 24 मार्च 1832 को लिंकन स्टीमर को पोर्टलैण्ड लैण्डिग तक लाने में सफल हुए। उनकी इस सफलता से पूरे क्षेत्र में खुशी की लहर दौड़ गयी। लिंकन रातों रात पूरे क्षेत्र के हीरो बन गये। दो दिन बाद स्प्रिंगफील्ड में इस सफलता का जमकर जश्न मनाया गया।

तिलिस्मान की इस यात्रा से इस भ्रम का अन्त हो गया कि संगमोन नदी का जल स्तर तेजी से गिर रहा है और यहाँ स्टीमर नहीं चल सकते। एक सप्ताह रुक कर तिलिस्मान ने वापसी की यात्रा तेजी से करके यह साबित कर दिया कि नदी पर सब कुछ ठीक ठाक है! केवल कुछ सुधार करके उसे जलमार्ग के लिये प्रयुक्त किया जा सकता है।

लिंकन को शीघ्र ही एक गहरा आघात लगा। उसके मालिक ऑफट का व्यापार चौपट हो गया और वे दीवालिया हो गये। लिंकन की नौकरी समाप्त हो गयी। लेकिन लिंकन की किस्मत में बेरोजगार होना नहीं लिखा था। इलियाना एक अच्छा राज्य था। उसके पश्चिम में मिसीसिपी नदी के पार रेड इन्डियन आदिवासियों का क्षेत्र था। मिसीसिपी दोनों जातियों की सीमा रेखा थी। दोनों के बीच संधि हुई थी कि वे एक दूसरे के क्षेत्र में नहीं घुसेंगे। परन्तु रेड इंडियनों के एक नेता ब्लैक हाक ने सन्धि तोड़ दी और इलियाना पर हमला बोल दिया।

अमेरिकियों के लिये यह राष्ट्रीय संकट था। हमले का मुकाबला करने के लिये सेना में नई भर्ती आरम्भ हुई। लिंकन को जब इसका पता चला तो वह भी पीछे नहीं रहे। वे अपने अन्य साथियों के साथ 21 अप्रैल, 1832 को एक स्वयंसेवक के रूप में सेना में भर्ती हो गये।

परम्परा के अनुसार इन स्वयंसेवकों को अपना नेता चुनना था। उन्होंने भारी बहुमत से लिंकन को अपना नेता चुन लिया। इससे लिंकन को पर्याप्त संतोष मिला। उन्हें लगा कि उनके परिश्रम और प्रतिबद्धता की पहचान हो गयी है। उनका अन्तःकरण प्रफुल्लित हो गया। लोग अब उन्हें उनके ध्येय, निष्ठा और समर्पण के कारण पहचानने लगे हैं। उनके संतोष का एक कारण और यह भी था कि जैक आर्मस्ट्रांग उनका पहला साथी बना। लिंकन किसी हद तक अपनी कम्पनी में अनुशासन बनाये रखने में सफल हुए। इस प्रकार लिंकन ने अप्रैल से 10 जुलाई तक अपनी सेवायें स्वयं सेवक के रूप में दी। इस ढाई माह की सेवा ने लिंकन को मिलिटरी जीवन का अनुभव कराया। यहाँ उन्हें अनेक मित्र भी मिले, जो बाद में उनके जीवन से जुड़े रहे। इसी के बाद लिंकन न्यू सलेम पहुँचे, जहाँ के लोग अपनी घोषणा के अनुसार लिंकन के चुनाव लड़ने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

वैसे चुनाव लड़ना लिंकन जैसे की वश की बात नहीं थी। विधान सभा के चुनाव छः अगस्त को होने वाले थे। लिंकन जानते थे कि केवल कुछ दोस्तों और शुभचिंतकों के बल पर चुनाव नहीं जीते जाते। पर लिंकन ने हिम्मत नहीं हारी और हौसला नहीं खोया। इस चुनाव में लिंकन के अलावा कई प्रत्याशी थे। सभी ने पूरे संगामोन जिले का दौरा करके अपना परिचय लोगों को दिया और वोट मांगे।

लिंकन ने भी ऐसा ही किया। उसका कद छः फीट चार इंच, सिर पर किसानो जैसी सरकंडों की हैट, अपने शरीर से छोटे कपड़े और धूप में तपने के कारण भूरा हो गया गेहुँआ रंग। वह अपना भूरा हो गया बदन लेकर लोगों के पास गये।

वे अपने समर्थकों के प्रति समर्पित थे। वे सभी उनके स्पन्दन का हिस्सा थे। एक बार वह कहीं सभा कर रहे थे कि विरोधियों में से किसी ने उनके एक समर्थक को पीट दिया। लिंकन ने जब अपने समर्थक को पिटते देखा तो उनसे सहन न हुआ। उन्होंने अपने भाषण को बीच में छोड़ा और मंच से कूद कर नीचे आये और पीटने वाले को पकड़ कर पूरी ताकत से फेंका। वह लगभग 12 फीट की दूरी पर जा कर गिरा। उसके बाद लिंकन फिर मंच पर पहुँचे और अपने भाषण को फिर वहीं से आरम्भ किया, जहाँ से छोड़कर वह मंच से नीचे कूदे थे।

भारी कोशिशों के बाद भी लिंकन यह चुनाव हार गये। पराजय के दंश से उन्हें आघात लगा। परन्तु वे न तो निराश ही हुए और न ही टूटे। बल्कि और दृढ़ता व मजबूत इरादों के साथ उन्होंने अपनी प्रतिबद्धतायें दोहराईं तथा काम में लग गये।

चुनाव खत्म होने के बाद लिंकन के सामने बेरोजगारी की समस्या आकर खड़ी हो गयी। वे कुछ न कुछ करने की सोच रहे थे। तभी न्यू सलेम में अपना स्टोर चला रहे दो भाई स्टोर से उकता कर उसे बेचने का विचार कर रहे थे। लिंकन को जब स्टोर के बिकने का पता चला तो वह स्टोर मालिक के पास पहुँच गये। स्टोर मालिक ने अपनी दुकान का एक हिस्सा अपने एक दोस्त 'बेरी' के हाथों बेच दिया और दूसरे ने अपना हिस्सा लिंकन को दे दिया।

लिंकन को अपना हिस्सा ईमानदारी और दूसरी वजहों से मिला। इसमें पैसे का लेन-देन नहीं हुआ। जनवरी 1839 में दोनों ने मिलकर 'लिंकन एण्ड बेरी' के नाम से स्टोर को चालू कर दिया। छोटी जगह होने के कारण ग्राहक कम थे, अतः लिंकन को पढ़ने के लिये काफी समय मिल जाता था। पुस्तक प्रेमी होने के नाते वे पैदल चल कर जाते थे, ताकि अच्छी पुस्तकों का अध्ययन कर सकें। शेक्सपियर के अनेकों नाटक वे कंठस्थ कर चुके थे। यहीं उन्होंने सेलिंस की लिखी किताब "दुनिया का इतिहास" पढ़ी।

लिंकन को कविताएं ज्यादा पसंद थीं। जब भी वे किसी की कविता को पढ़ते थे, बाद में जब वे लोगों को उन कविताओं को सुनाते तो वे समझते थे कि ये उन्हीं की लिखी हुई हैं। लिंकन इस बात के इच्छुक थे कि वे

सही-सही और प्रभावशाली भाषा लिखने में सक्षम हो जायें। इसके लिये उन्होंने अंग्रेजी व्याकरण का अध्ययन किया।

इलियाना के लोग धार्मिक रूप से रुढ़िवादी थे। यहाँ के मौलिक लोगों की संख्या न होने के बराबर थी। यहाँ बसने वालों में अधिकतर बाटिस्ट, मेथाडिस्ट तथा प्रेस बाईटेरियस ईसाई लोग थे। ये लोग अपने-अपने सम्प्रदाय को बेहतर साबित करने के लिये खूब बहस किया करते थे। लिंकन को ऐसे साम्प्रदायिक तनाव से घुटन होती थी। उनका मानना था कि नैतिकता ही सबसे बड़ा धर्म है। इस सम्बन्ध में वह अपने विचारों का खुलेआम प्रचार किया करते थे।

उनके विरोधियों ने लिंकन की इस उदारता का लाभ उठाने का प्रयास किया और से यह अफवाह फैली दी कि लिंकन ईसाई मत का मजाक उड़ाते हैं। बाद में 1846 के चुनाव में तो उन्हें इस सम्बन्ध में अपनी सफाई तक देनी पड़ी।

'लिंकन एन्ड बैरी' स्टोर सफल नहीं हो सका। अव्वल तो इस कस्बे में सीमित आमदनी वाले लोग रहते थे। फिर भी स्टोर थोड़ा बहुत चलता तो वह लोग शुद्ध व्यापारी की तरह व्यवहार नहीं कर पाते थे। वहाँ सबसे ज्यादा शराब की बिक्री होती थी। इसी से प्रेरित होकर बैरी ने शराब की बिक्री का लाइसेंस बनवा लिया। लाइसेंस 'लिंकन एन्ड बैरी' के नाम से मिला, फिर भी उनका स्टोर बच न सका। उन्हें उसे बंद करना पड़ा। इस बीच शराब बेचते-पीते बेरी भी उनका साथ छोड़ गया और शेष छोड़ गया उन पर ढेर सारा कर्ज, जिसे उतारने में लगभग डेढ़ दशक लगा।

लिंकन पुनः बेरोजगार हो गये थे। उनके पास कोई पूंजी नहीं थी। उन्होंने एक बार फिर मजदूरी की। उन्होंने न्यायालयों में भी काम किया, क्लर्की की और चुनाव का भी कार्य किया। इन सब अस्थाई कार्यों से काम नहीं चला तो उन्हें लगा कि उन्हें न्यू सलेम छोड़ना पड़ेगा। परन्तु उनके शुभचिंतक इतनी आसानी से उन्हें छोड़ने वाले नहीं थे। 7 मई 1834 को उनके लिये ग्रामीण पोस्ट मास्टर का काम तलाश कर लिया गया।

इस पद पर कार्य करने से लिंकन को दोहरा लाभ मिला। पहला उनकी रोजी-रोटी की समस्या का हल हो गया और दूसरा सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि पोस्ट ऑफिस में अनेक पत्र-पत्रिकायें आती थीं जिन्हें लिंकन खुद पढ़ लेते थे तथा अपना ज्ञान बढ़ाते थे। गांव में सप्ताह में दो बार डाक आती थी, जिनके पते लिखे होते, उन्हें डाक थमाई जाती और उनसे डाक खर्च लिया जाता था। इसी में पोस्ट मास्टर का थोड़ा सा कमीशन भी होता था। पोस्ट मास्टर का कार्य लिंकन ने लगातार तीन वर्षों तक किया। इतने वर्षों में वे कुछ ज्यादा नहीं कर पाये, उन्होंने कुल मिलाकर 165 डालर कमाये, अतः वह इससे केवल अपने खाने-पीने का खर्च ही निकाल पाये।

लिंकन के दोस्त जानते थे कि उन्हें उनके लिये कोई इससे बेहतर काम तलाशना होगा। क्योंकि डाक का काम ऐसा था कि एक तो उसमें आमदनी कम थी, ऊपर से यदि कोई प्राप्तकर्ता अपनी डाक लेने नहीं आता था तो

उन्हें मीलों पैदल चल कर उन्हें डाक पहुँचानी होती थी। वे डाक वितरण का पूरा हिसाब रखते थे और अपना काम पूरी ईमानदारी के साथ करते थे।

दोस्तों एवं शुभचिंतकों के सम्पर्क के प्रभाव से लिंकन को एक ऐसा काम मिला जिसके वे योग्य नहीं थे। यह काम था जिले का सर्वे करना। उन्हें न गणित का पता था और न किसी अन्य विषय का। नई पीढ़ी को यह जानकर आश्चर्य होगा कि लिंकन ने उस काम के लिये स्वयं को योग्य बनाया था। उन्होंने सम्बन्धित विषय का अध्ययन किया, फिर उसे नियत रूप से पूरा किया।

इसके लिये लिंकन को गाँव-गाँव, तालाब-तालाब, हर अच्छी-बुरी जगह जाना होता था। इस काम में दो लोग उनके साहायक थे। शाम को जब वो लौटते तो उनके कपड़े फटे हाल हो जाते थे। इसके बावजूद उन्होंने अपने काम को पूरी निष्ठा और मनोयोग से पूरा किया।

लिंकन का काम देखकर उसको काम देने वाले अफसर इतने खुश हुये कि लिंकन को अंतर्राष्ट्रीय सर्वे का काम भी दे दिया। उनके उस अधिकारी का नाम जॉन केलहॉन था। भूमि सर्वेक्षण का काम इतना आसान नहीं था। यहाँ पर उन्हें जंगली झाड़ियों व दलदली जमीन पर गुजरना पड़ता था। जॉन केलहान देश के सर्वेक्षक और धुर डेमोक्रेट थे। बाद में लिंकन ने कहीं कहा भी कि वे अब तक वाद-विवाद में मिले सभी प्रतिद्वंद्वियों में सबसे भयंकर प्रतिपक्षी थे।

जिस अन्तर्राष्ट्रीय सड़क का सर्वेक्षक करने का कार्य उन्हें सौंपा गया था, वह सड़क अनेक शहरों से होकर गुजरती थी। न्यू सलेम, जैक्सन विले, न्यू बोस्टन, बाथ, पीटर्सबर्ग तथा ह्यूरोन आदि। उन्होंने इस कार्य को भी बड़ी होशियारी से किया और बिल्कुल सही सर्वेक्षण करके अधिकारियों को सौंप दिया।

❑



पहली राजनीतिक विजय

अब्राहम लिंकन की अद्‌भुत चारित्रिक विशेषताओं में महत्वपूर्ण गुणों में समय का सदुपयोग तथा अपनी निर्बलता को सबलता में बदलने का जुनून था।

सर्वेक्षण कार्य से लिंकन को इतना धन प्राप्त हो गया था कि वे 'लिंकन एण्ड बेरी' में हुए नुकसान की आंशिक भरपाई कर सकें और उसके कुछ कर्जों को अदा कर सकें। अपने पोस्ट मास्टर के कार्य-काल में वे अनेकों साहित्यकारों के सम्पर्क में आये। उनमें वोल्टामर बोलनी, टाइम पैडन जैसे साहित्यकार भी शामिल हैं। 1834 में पुनः विधान सभा का चुनाव आ गया।

इस बार के विधान सभा चुनाव के समय अमेरिका में दो प्रमुख राजनीतिक पार्टी थी। एक तो 'डेमोक्रेटिक पार्टी' जिसके अध्यक्ष एण्ड्रू जैक्सन थे। जैक्सन के विरोधी व्हिडस (सुधार वादी) कहलाये। सुधारवादी पार्टी के नेता हेनरी क्ले थे। राजनीतिक रूप से लिंकन क्ले के नजदीक थे।

मित्रों एवं शुभचिंतकों की सलाह मशवरे के बाद लिंकन ने एक बार फिर चुनाव लड़ने की घोषणा कर दी। इस बार चुनाव के लिये उन्होंने संगामोन काउन्टी का चयन किया था। मैदान में कुल तेरह प्रत्याशी थे, जिनमें से चार का चुना जाना तय था। सर्वेक्षण के काम में उन्होंने जो कुछ कमाया था, उसने लिंकन के चुनाव लड़ने की चिंता को दूर कर दिया था। उस समय उनके एक विरोधी ने कहा था कि पार्टी को उससे उम्दा प्रत्याशी नहीं मिल पा रहा था। मगर इस बार उनकी वाक्‌पटुता विषयों की पकड़ विरोधियों को ध्वस्त करते उनके धारदार तर्क और गजब के आत्मविश्वास ने उनकी विजय का रास्ता प्रशस्त कर दिया।

4 अगस्त को आये चुनाव नतीजों के अनुसार उन्हें कुल 1,376 वोट मिले। सभी प्रत्याशियों में उनकी स्थिति दूसरे नम्बर पर थी। लिंकन अपने राजनीतिक जीवन की पहली पायदान पर पहुँचे और विधान सभा के लिये चुन लिये गये। इसके बाद वे लगातार तीन और कार्यकालों के लिये चुने गये। यह लिंकन का पहला विजयी राजनीतिक बपतिस्मा था।

लिंकन अब दिसम्बर में होने वाली नई विधान सभा के पहले अधिवेशन की तैयारी में जुट गये। लिंकन चाहते थे कि जब वे इस अधिवेशन में भाग लें तो मानसिक और शारीरिक रूप से पूरी तरह से तैयार हों, ताकि वह लोगों पर अपनी अमिट छाप डाल सकें। इसके लिये उन्होंने पहला काम यह किया कि कानून का और अधिक गहन अध्ययन किया।

विधान सभा का पहला अधिवेशन राज्य की राजधानी वेण्डेलिया में पहली दिसम्बर 1834 से 13 फरवरी 1835 तक होना था। इसकी तैयारी के लिये लिंकन ने 200 डालर का कर्ज लिया। इनमें से 60 डालर का उन्होंने एक

सूट बनवाया। यह उनके जीवन का पहला सूट था। अन्य विधायकों की भांति लिंकन भी विधायक होटल में ही ठहरे। आरम्भ के कुछ दिनों का प्रयोग उन्होंने विधान सभा के तौर तरीके जानने तथा जान पहचान बढ़ाने के लिये किया। परन्तु जल्दी ही उन्होंने बहस में भाग लेना आरम्भ कर दिया। कानून पर उनकी पकड़ मजबूत थी। इसी को देखते हुए अनेक विधायक उनसे अपने पेश किये जाने वाले बिल लिखवाते थे। इस प्रकार विधान सभा के पहले अधिवेशन में लिंकन की विधान सभा में धाक जम गयी।

एक ओर राजनीति की पाठशाला लिंकन को नये अध्यायों से परिचित करा रही थी, वहीं दूसरी ओर न्यू सलेम का एक मात्र जैक केलानी लिंकन को अंग्रेजी की स्वर साधना समझा रहा था। वैसे जैक केलानी अपने समय का और उस कस्बे का एक अत्यन्त असफल इंसान था। इतना असफल कि कस्बे के लोग उसे हिकारत की नजर से देखते थे। लेकिन अब्राहम को वह बहुत पसंद था। इतना अधिक कि लिंकन जल्दी ही उसके घनिष्ठ मित्र बन गये। लिंकन उसकी असफलता से नहीं बल्कि उसकी बुद्धिमता से बहुत प्रभावित थे। केलानी को 'हेमलेट' पढ़ते हुए और 'मैकबेथ' को मुंहजुबानी सुनाते हुए देखना, लिंकन को मंत्रमुग्ध कर देता था। केलानी की इस सामर्थ्य ने पहली बार लिंकन को बताया कि अनन्त सौदर्य क्या होता है? भावनाओं का उत्तेजक ज्वार कैसे बनता है?

अब्राहम लिंकन ने शेन्सपियर से श्रद्धा ली और बार्न्स ने उनका प्रेम जीत लिया। शायद इसीलिये भी कि बर्न्स लिंकन की तरह गरीब था। उसका जन्म भी उसी तरह काठ की कोठरी में हुआ था। इसलिये भी कि बर्न्स अपने शुरूआती जीवन में किसान था। लेकिन बर्न्स और शेक्सपियर की कविताओं ने उनके सानेटस और ट्रेजडी ने लिंकन की दुनिया में भावना और प्रेम के सैकड़ों नये द्वार खोले। अधिवेशन के सम्पन्न होने पर उन्हें अपने वेतन का बकाया 158 डालर मिला। उस समय 258 मिला करते थे, जिसमें से 100 डालर लिंकन दिसम्बर में ही हासिल कर चुके थे। यह रकम लिंकन द्वारा कमाई गयी सबसे बड़ी रकम थी। इस बीच 'लिंकन एन्ड बेरी का कर्ज न चुकाये जाने पर कुर्की का आदेश आ गया था। इस बीच जनवरी 1835 में बेरी का स्वर्गवास हो गया था।

बेरी के स्वर्गवास के बाद कानूनन वे आधी रकम चुकाने के उत्तरदायी थे। परन्तु उन्होंने सज्जनता का प्रदर्शन करते हुए यह घोषणा की कि वे 'बेरी एन्ड लिंकन' के पूरे कर्ज को चुकायेंगे। यद्यपि इस कार्य को पूरा करने में उन्हें अनेकों वर्ष लग गये।

सन् 1835 की गरमी और बसंत में लिंकन के पास कुछ ज्यादा काम नहीं था। सिवाय इसके कि वह सप्ताह में दो बार डाक बांटते थे। अतः उन्होंने अपना अधिकतर समय कानून की पुस्तकों का अध्ययन करने में बिताया। पुस्तक की मुख्य बातों को याद करने के लिये वे उसे लिख लिया करते थे, इससे उन्हें याद करने में आसानी हो जाती थी। उन्हें पेड़ के नीचे

बैठकर या लेटकर पढ़ना अधिक अच्छा लगता था। वे तने की आड़ में अपने को धूप से बचाते थे, इस प्रकार वे दिन भर पेड़ का चक्कर पूरा कर लेते थे।

उन्हें सारा-सारा दिन पढ़ने में बीत जाता था। इस बीच उन्हें अपने खान-पान का भी ध्यान नहीं रहता था जिस कारण उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ा और वे दुबले हो गये। मार्च के महीने में उनके कुर्क किये गये सामान की नीलामी हुई। किन्हीं कारणों से उनके घोड़ों को छूट मिल गयी। उनके सर्वेक्षण के सामान को एक दयालु अंकल शार्ट ने 120 डालर में खरीद उन्हें भेंट कर दिया।

प्यार की कोंपल

उस समय तक लिंकन अपने 26 वे बसंत में प्रवेश कर चुके थे। यह उनके शादी के बंधन में बंधने का उचित समय था। लड़कियां उनकी सादगी, भोलेपन और स्पस्टवादिता पर मरती थीं। कई लड़कियाँ उनकी ओर आकर्षित भी हुई। उन्होंने लिंकन से अपने प्रेम का इजहार भी किया। लेकिन कोई भी लड़की लिंकन के मन को छू नहीं पायी। साहित्य और समाज के अध्ययन के कारण लिंकन मन से चलने वाले रिश्ते का मान करते थे।

लिंकन के मन को एक लड़की भा गयी। इस लड़की का नाम आन श्लेज था जो न्यू सलेम ग्राम के एक संस्थापक की बेटी थी। आन श्लेज भी भोली भाली और शर्मीले स्वभाव की लड़की थी। लिंकन उसके प्रति गम्भीर थे। मंझोले कद की गोल मटोल उस नीली आंखों वाली लड़की ने लिंकन के जीवन में प्रेम का उजाला कर दिया था। आन के पिता एक होटल के मालिक थे। इस होटल में लिंकन पहले रह भी चुके थे। उस जमाने में रजाई बनाने के लिये लोग इकट्ठे होते थे। यह एक उत्सव की तरह होता था। आस-पास जहाँ कहीं भी आयोजन होता, आन श्लेज को जरूर बुलाया जाता था। आन श्लेज जब अपनी लम्बी उंगलियों में सुई को पकड़कर हल्के हाथों से चलाती थी तो देखने वाले उसकी कला के कायल हो जाते थे।

जहाँ भी इस प्रकार का आयोजन होता था, लिंकन उसे जरूर ले जाते थे। फिर भी उससे मिलने की इच्छा रह जाती थी। एक बार तो लिंकन ने बड़ा साहस का कार्य किया। जहाँ रजाई बनाई जा रही थी, वहाँ लिंकन अन्दर तक घुसे चले गये और आन को एक स्थान पर बैठी देखकर पीठ से पीठ लगाकर बैठ गये। आन ने जब लिंकन की पीठ के स्पर्श को अपनी पीठ पर महसूस किया तो वह घबरा गयी। उसके हाथ में सुई थी लेकिन वह आड़ी तिरछी चलने लगी और उसका चेहरा शर्म से गुलनार के समान ललिमा से नहा गया।

जब वहाँ उपस्थित महिलाओं ने यह दृश्य देखा तो उनके अधरों पर प्रसन्नता की मुस्कुराहट थिरक उठी। वह समझ गई। उन्होंने आपस में एक दूसरे को इशारे भी किये। वह रजाई बाद में वर्षों तक सम्भाल कर रखी गयी और लिंकन के राष्ट्रपति बनने पर यह कह कर उसे प्रदर्शित

किया गया कि उसके टांके लिंकन की प्रणयवत्सलता ने लगाये हैं। आन गर्मी में बीमार पड़ी, उसे टायफायड हो गया था और 25 अगस्त को उसका देहावसान हो गया। आन की असामयिक मृत्यु से लिंकन बहुत आहत हुए। इसके अलावा पिछले कुछ महीनों में उन्होंने अत्यधिक अध्ययन किया था, जिसके कारण उनका शरीर कुछ कमजोर हो गया था। इन दोनों कारणों का नतीजा यह निकला कि लिंकन अवसाद में चले गये।

उन्हीं दिनों न्यू सलेम गांव अपनी भौगोलिक समस्याओं के चलते पलायन का शिकार हो रहा था। सड़क, जलमार्ग, रेलमार्ग की सुविधायें न होने के कारण वहाँ के अधिसंख्यक लोग पीटर्सबर्ग जाने लगे। लिंकन के दोस्तों ने उन्हें न्यू सलेम से एक मील दक्षिण में अपने पुराने दोस्त बोलिंग ग्रीन के पास एक माह के लिये चले जाने जाने को कहा, जिससे कि उनकी दिनचर्या में बदलाव आये और वे आन श्लेज की मृत्यु के सदमे को भुला सकें। उनकी बात मान कर लिंकन अपने मित्र बोलिंग ग्रीन के पास चले गये और 24 सितम्बर को स्वास्थ्य लाभ हासिल करने के बाद न्यू सलेम वापस आ गये। न्यू सलेम आने के बाद वह फिर डाक विभाग और सर्वेक्षण के कार्यों में लग गये।

इस बीच न्यू सलेम के लोगों ने वहाँ से पलायन का सिलसिला आरम्भ कर दिया था, जिससे लगने लगा था कि एक दिन लिंकन को भी इस गांव को छोड़ना पड़ेगा।

इस बीच प्रान्तीय विधान सभा का विशेष अधिवेशन 1835-1836 के शीतकाल में प्रारम्भ हुआ। इस अधिवेशन में डेमोक्रेट्स और व्हिग (सुधारवादी) के लोग आमने-सामने थे। इस अधिवेशन में जिले की विधान सभा सीटों का पुनः निर्धारण हुआ। इस बार संगमोन काउन्टी को चार के बजाये सात प्रतिनिधि चुनने का अधिकार मिला।

इस विशेष अधिवेशन में एक और नये प्रस्ताव को रखा गया, जिसके तहत इलिनाय और शिकागो नदियों को जोड़ कर नहर बनाने की योजना शामिल थी। इस नहर से मिशीगन झील से मिसीसिपी नदी जुड़ जानी थी। इस नहर से इलिनाय राज्य को वही लाभ मिलना था जो 'ऐरी' नहर से न्यूयार्क राज्य को मिल रहा था।

नदियों को जोड़ कर नहर बनाने की योजना का लिंकन ने भरपूर समर्थन किया। ऐसा इसलिये कि वे राज्य की हर प्रकार की प्रगति और विकास के इच्छुक थे, चाहे वह रेल हो, रोड हो या नहर हो। यातायात के साधन उपलब्ध हो जाने पर कृषि तथा उद्योगों की अपने आप तरक्की हो जाती। इसीलिए लिंकन व्यापार एक संचार व्यवस्था को और बेहतर तथा व्यापक बनाने पर ज़ोर देते रहे।

जून 1836 में एक बार फिर लिंकन ने आगामी विधान सभा का चुनाव लड़ने के लिये प्रत्याशी बनने की घोषणा कर दी। इस चुनाव में संगमोन से सोलह प्रत्याशी मैदान में उतरे। चुनाव प्रचार हेतु लिंकन अपने घोड़े द्वारा एक गांव से दूसरे गांव जाते और वहाँ जन सभाओं को सम्बोधित करते।

पहली अगस्त 1836 को होने वाले इस चुनाव में लिंकन पुनः विजयी हुए। उन्हें अन्य प्रत्याशियों के मुकाबले में सर्वाधिक मत मिले।

अब स्प्रिंगफील्ड उनका कार्य क्षेत्र बनने लगा। नई विधान सभा (1836-37) में संगमोन के सभी प्रतिनिधि जिनमें सात विधान सभा के और दो विधान परिषद के सदस्य शामिल थे, छः फीट या उससे लम्बे कद के थे। लिंकन भी उन्हीं लम्बों में शामिल थे। अतः वे सभी 'नौ लम्बों' के नाम से प्रसिद्ध हो गये। इन सबने अपना एक खास ग्रुप बना लिया और एक बैठक करके वे दो खास मुद्दों पर एकमत हो गये। इसमें पहला मुद्दा विकास का था। वैसे भी विकास, लिंकन की राजनीति का मुख्य स्रोत था। वह चाहते थे कि स्प्रिंगफील्ड नगर का विकास होना चाहिए; और दूसरा यह कि हर सम्भव विकास के लिये उन्हें सरकार का पूर्ण समर्थन मिले। इसके लिये लिंकन ने एक महत्वाकांक्षी और वृहद् योजना का समर्थन किया।

लिंकन ने नौ लम्बों के साथ राज्य के विकास के लिये एक करोड़ डालर का प्रस्ताव रखा, जोकि बाण्ड से हासिल होना था। इसके तहत विकास की अनेकों योजनाएं थीं। इन योजनाओं में उत्तर से दक्षिण तक तथा पूर्व से पश्चिम तक दो रेल लाइनें बिछाने, सभी को एक दूसरे से जोड़ने की बात थी। इसके अलावा इलिनाय, मिशीगन नहर को शीघ्र पूरा करना था। काम आरम्भ भी हुआ। लेकिन आर्थिक कठिनाइयों और जबरदस्त विरोध के कारण उसे बीच में ही रोकना पड़ा। जबकि जिन जिलों को इन योजनाओं का लाभ नहीं मिला था, उन्हें भी कुछ न कुछ सरकारी सहायता दिये जाने का प्रस्ताव था।

इसके बाद मामला उठा इलिनाय राज्य की राजधानी का। लिंकन स्प्रिंगफील्ड को राजधानी बनाना चाहते थे। वेण्डेलिया एक अनुपयुक्त नगर था। वह बहुत छोटा था और दूर दक्षिण में स्थित था। अतः पूरे राज्य से लोगों को वहाँ पहुँचने में मुश्किल होती थी। लेकिन उनके विरोधी अपने-अपने चुनाव क्षेत्र को राजधानी के लिये उपयुक्त बता रहे थे। डेमोक्रेटिक नेता लिंडर ने लिंकन पर नकेल कसने के लिये घोषणा करवा दी कि वे स्प्रिंगफील्ड के इलिनाय स्टेट बैंक के हिसाब-किताब की जाँच करवायेंगे।

लिंडर की धमकी को सुन कर बैंक के अधिकारी आवश्यक दस्तावेज़ लेकर स्प्रिंगफील्ड से वेण्डेलिया पहुँचे और लिंकन को सभी दस्तावेज़ देकर अपना पक्ष रखने को कहा। इन दस्तावेजों के आधार पर लिंकन ने एक जनवरी 1837 को विधान सभा में अपना पहला लम्बा भाषण पढ़ा। लिंकन ने लिंडर की धमकी को राजनीति से प्रेरित बताया और कहा—"विपक्षी अपनी अपेक्षाओं को सच कर रहे हैं। इसलिये राजनीति से प्रेरित इस प्रकार के आरोप लगा रहे हैं।"

उसके बाद उन्होंने न केवल लेखा परीक्षण के कागज़ात प्रस्तुत किये, बल्कि स्प्रिंगफील्ड को राजधानी बनाने के बारे में एक बिल भी पारित करा लिया। लिंकन की प्रस्तुति, उनके विचार और विकास के संदर्भ में उनकी प्रस्थापनाओं को पर्याप्त प्रचार मिला। समाचार पत्रों ने इसे पूरा का पूरा

छापा। इससे लिंकन की लोकप्रियता और प्रसिद्धि बढ़ी और वे पढ़े-लिखे व कर्मठ विधायक शुमार किये जाने लगे। काफी जद्दोजहद के बाद विधान सभा ने स्प्रिंगफील्ड को इलिनाय राज्य की राजधानी बनाने का बिल बहुमत से पास करा लिया।

विधान सभा के अधिवेशन के बाद लिंकन न्यू सलेम वापस चले आये। इस बार वापसी के समय उन्होंने राजनीति में अपना लोहा मनवा लिया था। पहली मार्च 1837 को लिंकन को हाईकोर्ट में बतौर वकील काम करने की इजाज़त मिल गयी। उन्होंने न्यू सलेम के लोगों से विदा ली और किसी से एक घोड़ा मांग कर उन्होंने उस पर अपने दो बैग लादे और स्प्रिंगफील्ड की ओर चल दिये। 15 अप्रैल 1837 को वे स्प्रिंगफील्ड पहुँच गये। वहाँ वह पहुँच तो गये थे, लेकिन वह खुद नहीं जानते कि वह रहेंगे कहाँ और खायेंगे कहाँ? अर्थात न तो उनके पास पैसे ही थे और न ही रहने के लिये कोई घर था, जिसकी छत के नीचे वे अपने नये जीवन का आरम्भ कर सकें।

उनके (लिंकन के) पास यदि कुछ था तो कानूनी ज्ञान, लगन, ईमानदारी, निष्ठा तथा छोटा सा राजनीतिक जीवन। और यही उनके पास कुल जमा पूंजी थी। वहाँ उनकी भेंट मिस्टर स्पीड नामक एक व्यक्ति से हुई, जोकि एक स्टोर का स्वामी था। स्पीड स्टोर चला कर अपना जीवन यापन करते थे। लिंकन ने जब स्पीड से कहा कि वे उन्हें 17 डालर का बिस्तर उधार दे दे तो उसने लिंकन को स्टोर के ऊपर अपने साथ एक कमरे में रहने का प्रस्ताव दिया, जहाँ कि दो पलंग पड़े हुए थे।

लिंकन स्पीड का प्रस्ताव सुनकर ऊपर गये, कमरे को देखा और उन्होंने दो पलंगों को देखकर स्पीड के प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया। हालांकि वहाँ आने के पीछे कई कारण थे। यहीं से सुधारवादी पार्टी अर्थात् व्हिग पार्टी का अखबार निकलता था। स्प्रिंगफील्ड संगमोन जिले का मुख्यालय था। सीमान्त नगर होने के कारण इसकी आबादी 1,500 के आस-पास थी। इस शहर की स्थापना 1821 में हुई थी, यह एक पिछड़ा नगर था, सड़कें कच्ची थीं, सुअर इधर उधर घूमते रहते थे, परन्तु फिर भी एक विशेषता इसकी थी और वह यह कि वह शीघ्र ही इलिनाय राज्य की राजधानी बनने वाला था।

स्पीड के स्टोर में आने के बाद लिंकन के सम्पर्क में वो सभी लोग आ गये जो स्पीड के साथ थे। इन्हीं में संगामो जर्नल के सम्पादक फ्रांसिस स्टुअर्ट जैसे सज्जन व्यक्ति भी थे। इसके अलावा अनेकों नौजवान थे जो आस-पास रहते थे। यहाँ पर चार होटल थे। 19 स्टोर, एक हाई स्कूल तथा छः गिरजाघर थे। लिंकन के लिये यही सब चीजें काफी थीं। उनके बीच वह जल्दी ही लोकप्रिय होते चले गये। इसका कारण लिंकन की वक्तव्य क्षमता थी। वे अनेकों विषय पर धाराप्रवाह बोल सकते थे। उनकी भाषा का प्रवाह नदी की धारा जैसा था। यही कारण था कि नया समूह जल्दी ही लिंकन का समूह बन गया।

स्टुअर्ट ने लिंकन को प्रैक्टिस जमाने में मदद की। उसके पास अपनी एक बड़ी लायब्रेरी थी, जिसमें वकालत की बड़ी-बड़ी और आवश्यक किताबें मौजूद थीं, जो एक वकील के लिये जरूरी होती हैं। यही कारण था कि लिंकन को वहाँ प्रैक्टिस जमाने के लिये ज्यादा एड़ियाँ नहीं घिसनी पड़ीं। एक अच्छा वकील होने के साथ-साथ स्टुअर्ट में राजनीति के कीटाणु भी मौजूद थे, यही कारण था कि वह दोनों जल्दी ही आपस में घुल-मिल गये। संगामो जर्नल के सम्पादक फ्रांसिस, लिंकन से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने उनसे कह रखा था कि वे जब भी और जो भी लिख कर उन्हें देंगे, वे उसे अपने अखबार में प्रकाशित कर देंगे।

इस बीच लिंकन का एक अन्य लड़की मैरी के साथ प्रेम प्रसंग चला। लेकिन बात विवाह तक न पहुँच सकी क्योंकि लिंकन ने अपनी आर्थिक स्थिति और तंगी को स्पष्ट रूप से बढ़ा-चढ़ा कर बखान कर दिया था। उन्होंने मैरी से कह दिया था कि यदि उसे उनके साथ रहना है तो उसे एक कठिन जीवन व्यतीत करने के लिये तैयार रहना होगा।

स्प्रिंगफील्ड एक बड़ा नगर था। स्पीड के साथ रहते-रहते लिंकन के अनेकों मित्र बन गये थे, जोकि वहाँ अकेले रहते थे। इनमें सभी 2-2 और 3-3 के ग्रुप में कमरा लेकर रहते थे। लिंकन की बातें इतनी दिलचस्प होती थीं कि वे सभी युवाओं के केन्द्र-बिन्दु बन गये। उनके एक नये मित्र बटलर ने उनसे मुफ्त में साथ रहने का प्रस्ताव किया; जिसे मानने से लिंकन ने खेद प्रकट कर दिया।

इस बीच स्टुअर्ट उनका एक अच्छा मित्र बन चुका था। उसकी स्प्रिंगफील्ड में कानून की प्रैक्टिस पहले से ही अच्छी चलती थी। वह राष्ट्रीय लोक सभा (प्रतिनिधि सभा) का चुनाव लड़ने का इच्छुक था, अतः उन्होंने अपनी प्रैक्टिस का एक हिस्सा अपने नये पार्टनर लिंकन को सौंप दिया। इस प्रकार लिंकन को वहाँ अपनी प्रैक्टिस जमाने के लिये कोई बड़ा संघर्ष नहीं करना पड़ा, जैसे कि प्रायः नये वकील को करना पड़ता है। वकील के रूप में अपनी स्वयं की साख बनाने में लिंकन को कोई कठिनाई नहीं हुई, क्योंकि उन्हें पहले से ही कानूनी दस्तावेज लिखने का अभ्यास था और न्यू सलेम की कोर्ट की कार्यवाही को वह बराबर देखते रहते थे, इसीलिये कानूनी दांव-पेंचों को भली भान्ति समझने लगे थे। एक स्वतन्त्र वकील होने की हैसियत से वह सारी कानूनी कार्यवाही को बड़ी सोच-समझ कर लिखा करते थे ताकि उनके मुताबिक उनको कोई परेशानी न हो।

जैसे-जैसे उन्हें अभ्यास होता जा रहा था, वैसे-वैसे वह कानून की पेचीदिगियों को बड़ी गहराई से समझते जा रहे थे। कानूनी दस्तावेज तैयार करने में वह जहाँ बहुत मेहनत किया करते थे, वहीं स्टुअर्ट की लायब्रेरी से भी बहुत काम लिया करते थे। वे इस बात को अच्छी तरह से जानते थे कि मामूली-सी गलती भी पूरे केस को पलट कर रख सकती है।

यह वह समय था जब वकीलों के पास न तो सचिव (मुंशी) होता था और न ही कोई टंकन मशीन। सब कुछ खुद ही लिखना और सम्भाल कर

रखना होता था। लिंकन लिखने में प्रवीण थे, लेकिन सम्भाल कर रखना उनसे सम्भंव न हो पाता था। एक-एक कागज खोजने में पर्याप्त समय लगता था। लिंकन और स्टुअर्ट ज्यादातर दीवानी (सिविल) के मुकद्दमे लेते थे और फीस के रूप में अपने पक्ष से पांच डालर वसूल करते थे। पक्षकारों से जो कुछ भी वसूल होता था, वह लिंकन और स्टुअर्ट आपस में आधा-आधा बांट लिया करते थे। दोनों की कुशलता, व्यावहारिकता और केस जीतने के कारण उनकी प्रैक्टिस अच्छी चल रही थी। एक जुलाई 1837 में ही यह बात साबित हो गयी कि स्टुअर्ट और लिंकन की स्प्रिंगफील्ड में सबसे अच्छी प्रैक्टिस है।

यहाँ अदालतें वर्ष में दो-दो सप्ताह के लिये बैठती थीं। इसलिये मात्र संगमोन जिले की प्रैक्टिस से लिंकन या अन्य वकीलों का काम नहीं चलता था। तब लोग हर जिले में जा-जा कर दो दिन से लेकर एक सप्ताह की कोर्ट लगाते थे और वहीं जा-जाकर अपने मुवक्किलों के लिये पैरवी करते थे। यहाँ वकीलों की संख्या भी कुछ ज्यादा ही थी, इसलिये उनकी आय भी कम होती थी। स्टुअर्ट और लिंकन के बीच साझेदारी का सारा हिसाब किताब लिंकन को ही रखना पड़ता था।

8 नवम्बर, 1839 को स्टुअर्ट प्रतिनिधि सभा के सदस्य बन गये और वाशिंगटन चले गये। तब लिंकन ने अपनी निजी प्रैक्टिस आरम्भ कर दी। लिंकन की महत्वाकांक्षा तो राजनीति थी। वकालत के पेशे को वह राजनीति की सीढ़ी मानते थे। इसलिये वे ऐसे प्रकरण की तलाश में रहते थे जिससे उन्हें पर्याप्त ख्याति मिल सके। जीवन के इस मोड़ पर उन्हें एक ऐसा मुकद्दमा मिल गया जिसके द्वारा वे अपने राजनीतिक विरोधियों की भर्त्सना कर सकते थे। हुआ यह कि 1937 में मैरी एंडसन अपने बेटे रिजर्ड के साथ लिंकन के पास आयी। वह न्याय चाहती थी। उसकी दस एकड़ जमीन पर जेम्स एडम्स ने कब्जा कर रखा था। जमीन स्प्रिंगफीड के उत्तर में थी।

जेम्स एडम्स कोई मामूली आदमी नहीं था। वे स्प्रिंगफीड के प्रभावशाली डेमोक्रेटिक नेता थे। लिंकन ने उस महिला के द्वारा लाये गये रिकार्ड को देखा तो वह इस बात को लेकर आश्वस्त हो गये कि जमीन वास्तव में ही श्रीमती एन्डर्सन के पति के नाम है, जिनका देहावसान अभी कुछ दिन पूर्व ही हुआ था। लिंकन को समझते देर न लगी कि यदि देर न लगी तो यह प्रकरण उन्हें अपेक्षानुकूल प्रसिद्धि दिलायेगा। क्योंकि इस प्लाट को धोखाधड़ी के द्वारा जेम्स एडम्स ने अपने कब्जे में कर रखा था।

लिंकन ने इस मुकद्दमे को सुचारू रूप से लड़ने की ठानी। इसलिये मामले की जोरदार तैयारियों में लग गये, ताकि अपनी विजय में कोई शंका न रह जाये। इसके लिये उन्होंने एक काम और किया। एक और वरिष्ठ तथा बुद्धिमान वकील लोंगन को भी अपने साथ जोड़ लिया। उस वकील का पूरा नाम स्टीफन टी लोंगन था। एक राजनीतिज्ञ के बेईमानी से जुड़ा होने के कारण इस मुकद्दमे को समाचार पत्रों में खूब प्रचार मिला। लिंकन की पैरवी से डेमोक्रेटिक जेम्स एडम्स इतना उद्वेलित हुआ कि वह लिंकन

पर खूब अनर्गल आरोप लगाने लगा। लिंकन ने उसके हर आरोप का बखूबी उत्तर दिया। इस प्रकार दोनों के लिये यह एक बड़ी कानूनी तथा राजनीतिक लड़ाई बन गयी। दीवानी के मुकदमे लम्बे ही चलते हैं। इस मुकदमे के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। परन्तु एडम्स 1843 तक अपनी मृत्यु पर्यन्त उस जमीन पर काबिज रहा। 1843 में जेम्स एडम्स का देहावसान हो गया।

लिंकन वकालत के साथ-साथ राजनीति से भी जुड़े थे। वे विधान सभा में अब एक अनुभवी सदस्य माने जाते थे। यद्यपि उन्होंने व्हिग सदस्य की हैसियत से दोबारा स्पीकर पद का चुनाव लड़ा और हार गये। इससे यह बात सिद्ध हो जाती है कि स्प्रिंगफील्ड में जाते ही सब लोग उन्हें चाहने नहीं लगे थे। 1838 से 1839 तक वे चौदह कमेटियों के सदस्य थे। परन्तु उनका मुख्य कार्य पर्दे के पीछे अपेक्षाकृत छोटी व्हिग पार्टी को संगठित और मजबूत करना था। लिंकन लगातार इस कोशिश में लगे रहे कि स्प्रिंगफील्ड को नगर का दर्जा दिया जाये और राज्य सरकार उसे इतना धन मुहैय्या कराये कि वो राज्य की राजधानी के रूप में अपने को विकसित कर सके, ताकि शीघ्र-अतिशीघ्र उसे राजधानी घोषित किया जा सके।

विवाह का प्रस्ताव

सन् 1839 में लिंकन की एक महिला से भेंट हुई। इसका नाम मैरी टोड था। उसने लिंकन को विवाह का प्रस्ताव दिया। मैरी टोड का परिवार एक शिक्षित परिवार था। उसमें जनरल, गवर्नर और नेवी में सचिव भी रह चुके सदस्य थे। मैरी की पढ़ाई भी एक अच्छे फ्रेंच स्कूल में हुई थी। उनका परिवार फ्रांस की राज्य-क्रान्ति के समय वहाँ से भाग कर आया था। घर वालों ने मैरी को पर्शियन उच्चारण का फ्रेंच बोलना सिखाया था। मैरी को यहीं बेहतर नृत्य का प्रशिक्षण भी मिला था। इससे मैरी उच्चाभिमानिनी हो गयी थी। अति प्रशंसा से उसमें अपने विशिष्ट होने का भाव अहंकार की हद तक हो गया था।


मैरी टोड

यही कारण था कि एक दिन उसने अपने मन की बात को यह कहकर उजागर कर दिया कि वह एक दिन ऐसे व्यक्ति से विवाह करेगी जो किसी दिन अमेरिका का राष्ट्रपति बनेगा। विश्वास करना, भरोसा करना तो मन की भीतरी स्थिति है। मैरी यदि अपने मन की बात को मन में ही रखती तो उसकी मनःस्थिति का किसी को पता नहीं चल पाता। मगर मैरी ने यह कह कर हद ही कर दी कि वह जिससे भी शादी करेगी, वही एक दिन अमेरिका का राष्ट्रपति बनेगा।

मैरी टोड का यह बड़बोलापन किसी को रास नहीं आया। जितने लोगों ने मैरी को यह कहते सुना था, उन सभी ने पहले तो तरह-तरह की बातें बनायीं, और फिर जम कर उसका मजाक उड़ाया। मैरी को इस बात का पता चला कि लोग बाग कैसे उसकी टिप्पणी का मजाक उड़ा रहे हैं—तो

भी वह अपनी बात कहने से बाज नहीं आयी। उसका अब भी यही कहना था कि मैं एक दिन अपनी हंसी उड़ाने वालों को जवाब जरूर दूंगी। मैं बता दूंगी कि मेरी बात झूठी नहीं थी। इस पर उसकी बहन ने कहा—"उसे चमकदार वस्तुएं लुभाती हैं, वह प्रदर्शन में विश्वास रखती है और मैं आज तक जितनी महिलाओं से मिली हूँ, उनमें मैरी सबसे अधिक महत्त्वाकांक्षी है।"

अपने गुस्सैल स्वभाव व तुनकमिजाजी के चलते ही मैरी एक दिन अपने घर से लड़-झगड़ करके अपनी बहन के यहाँ रहने चली गयी। उसकी बहन तब स्प्रिंगफील्ड में रह रही थी। लिंकन से उसकी मुलाकात भी यहीं हुई थी। मगर मैरी की इच्छा भावी राष्ट्रपति से विवाह की थी और वह यहीं रहता था। सन् 1860 में जिनकी नियति ने जिन्हें राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाया, उनमें डेमोक्रेस्ट स्टीफन ए डगलस और रिपब्लिकन पार्टी के अब्राहम लिंकन वहीं रहते थे।

मैरी की मुलाकात स्प्रिंगफील्ड में ही दोनों महानुभावों से हुई। वह डगलस से भी मिली और लिंकन से भी। मैरी के कथनानुसार—"दोनों ने ही उसकी बाहें थामने का भरोसा उसे दिया था। इतना ही नहीं, विवाह के लिये प्रस्तावित भी किया था।"

मैरी से जब भी पूछा जाता कि वह किससे विवाह करेगी, उसका जवाब होता कि जिसके राष्ट्रपति बनने की सम्भावना अधिक होगी। अर्थात जो सम्भावित है, उसी से विवाह होगा। इस कसौटी पर डगलस ज्यादा खरे उतर रहे थे। वे राज्य के सैक्रेटरी थे, इसलिये उनकी सम्भावनाएं लिंकन की तुलना में सौ गुना अधिक थीं। जबकि लिंकन एक संघर्षशील वकील से ज्यादा कुछ नहीं थे। एक ऐसा वकील, जोकि स्पीड के स्टोर में रहता था और कई बार उसका बिल भी नहीं दे पाता था।

लोग जब तक लिंकन को अपने राज्य से बाहर जान पाते, तब तक डगलस अमेरिकी राजनीति की अनन्तम् शक्ति बन चुके थे। हर औसतन अमेरिकी उनकी धाराप्रवाह वाक् शक्ति का कायल था।

डगलस की सामाजिक प्रतिष्ठा लिंकन की तुलना में कहीं ज्यादा थी। उसके बात करने का अंदाज, शब्द चयन, तर्क और सुन्दर व्यक्तित्व, उसको महिलाओं में भी लोकप्रिय बनाने के लिये पर्याप्त था। उसकी धीर-गम्भीर और संप्रेषित वाणी, नृत्य करने की अप्रतिम क्षमता की दीवानी मैरी भी थी। डगलस मैरी का आदर्श पुरुष था। एक बार उसने आईने में निहारते हुए कहा—"मैरी टोड डगलस।"

उसे यह सब न केवल अच्छा लगा, बल्कि उसने एक ही सांस में व्हाइट हाउस के सपने भी देख डाले। परन्तु शीघ्र ही डगलस के दुर्व्यवहार के कारण मैरी ने उससे किनारा कर लिया। सीनेटर बीवेरीज के अनुसार, डगलस ने एक बार मैरी को विवाह का प्रस्ताव दिया था, लेकिन उसकी बुरी आदतों के कारण मैरी ने उसे अस्वीकार कर दिया था। जो भी हो, डगलस एक सजग और व्यवहारिक व्यक्ति था। उसने दोबारा कभी मैरी को प्रस्ताव

नहीं किया। इससे मैरी बहुत आहत हुई, उसने चाहा कि डगलस में उसे लेकर ईर्ष्या जन्मे, ऐसा तभी सम्भव था जब मैरी किसी ऐसे व्यक्ति से विवाह करती जो डगलस को दिखायी दे। साथ ही डगलस का विरोधी भी हो।

महिलाओं की सोच यही होती है कि विरोधी व्यक्ति के करीब जाकर अपने प्रेमी के मन में ईर्ष्या जगा सकती हैं। मैरी भी यही सोच रही थी। यही कारण था कि उसने लिंकन का चयन किया। लेकिन मैरी ने जो खुद भी नहीं सोचा था, वैसा हो न सका और डगलस कभी उसकी ओर लौट कर नहीं आया। मैरी को अन्त में लिंकन तक ही सीमित होकर रहना पड़ा।

इस बीच लिंकन लगातार अपने विकास कार्यों की ओर लगे रहे। उनका कहना था— "आन्तरिक विकास कार्यों को अधूरा नहीं छोड़ा जा सकता। क्योंकि बदनामी होने के साथ-साथ भारी आर्थिक हानि भी होगी।"

राज्य के विकास के लिये किसी भी कीमत पर विकास कार्यों को लिंकन पूरा करना चाहते थे। उन्होंने दलील दी कि इलिनाय राज्य में भारी प्राकृतिक संसाधन हैं। यहाँ की जमीन उपजाऊ है, परन्तु इसका लाभ तभी मिल सकता है जब थल मार्ग से उत्पादों को बाहर भेजने की व्यवस्था हो। उनकी सोच के अनुसार, विकास कार्यों को बीच में रोकना नाव को मंझधार में रोकने के समान था। लेकिन उनके सारे प्रयास विफल हुए और रुके हुए विकास कार्य पुनः नहीं हो सके।

डेमोक्रेटिक विधायकों के हमलों से इलिनाय स्टेट बैंक और स्प्रिंगफील्ड को बचाने के लिंकन ने भरपूर प्रयास किये। सन् 1840 में प्रदेश की राजधानी वेण्डेविमा से हटकर स्प्रिंगफील्ड स्थानान्तरित हो गयी। परन्तु स्प्रिंगफील्ड के स्टेट बैंक के लिए उनके सारे प्रयास विफल रहे। बहुसंख्यक डेमोक्रेटिक उसको बरबाद करने में कामयाब हो गये। इन सबके बावजूद स्प्रिंगफील्ड और मध्य इलिनाय में लिंकन की लोकप्रियता का ग्राफ बढ़ता चला गया। लिंकन विधान सभा में व्हिग पार्टी के सर्वमान्य नेता बन गये।

1838 में जब स्टुअर्ट ने प्रतिनिधि सभा का चुनाव लड़ने की घोषणा की तो लिंकन ने उनका भरपूर साथ दिया और उनका जमकर प्रचार भी किया। लिंकन की यह मेहनत रंग ले आयी और स्टुअर्ट उस चुनाव में सफल घोषित हुए। आने वाले राष्ट्रपति चुनाव के लिये लिंकन ने पार्टी को मजबूत किया तथा जिले और नीचे के स्तर के पार्टी के नेताओं को मुकर्रर किया। उन्होंने व्हिग पार्टी की आर्थिक नीतियों को भी जनता के सामने रखा।

1839 में डेमोक्रेटिक पार्टी के राज्य कमेटी के सदस्य डगलस ने लिंकन को स्प्रिंगफील्ड में जनता के सामने विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर चर्चा करने की चुनौती दी।

लिंकन ने डगलस की चुनौती को स्वीकार कर लिया। इस सम्बन्ध में बहस का पहला चरण 19 नवम्बर 1839 को हुआ। बाद में जब इस चर्चा का विश्लेषण किया गया तो अधिकतर लोगों ने माना कि यह राजनीतिक कुश्ती बराबर पर छूटी। न इसमें किसी की हार हुई और न ही कोई जीता।

परन्तु लिंकन इस बराबरी की कुश्ती पर संतुष्ट नहीं थे। वे तो इस कुश्ती

में निर्णायक जीत हासिल करना चाहते थे। अतः दूसरी प्रतियोगिता की तिथि 26 दिसम्बर रखी गयी।

इस प्रतियोगिता में लिंकन ने देश की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिये एक राष्ट्रीय बैंक की स्थापना पर बल दिया। लिंकन राजनीति तथा समाज में ईर्ष्या तथा मनमुटाव की प्रवृत्ति से चिंतिति थे। उन्होंने पाया कि सम्प्रदायवाद व दास प्रथा सामाजिक ताने-बाने को छिन्न भिन्न कर रही है। वे जनता द्वारा कानून को अपने हाथ में लेकर हिंसक हो जाने की प्रवृत्ति से भी चिंतित थे। ऐसी समस्याओं के समाधान के लिये उन्होंने सुझाव दिया कि प्रत्येक अमेरिकी को, स्वतन्त्रता प्रेमी व अपनी आने वाली पीढ़ी के शुभचिन्तक को 'क्रान्ति' के खून की शपथ लेनी चाहिये कि वो देश का कानून कभी नहीं तोड़ेगा और न ही यह सहन करेगा कि कोई और देश के कानून से खिलवाड़ करे। हर माँ अपने बच्चों यही शिक्षा दे और ऐसी शिक्षा का प्रसार स्कूलों में भी होना चाहिये। उचित यही होगा कि ऐसी शिक्षा को बच्चों की पाठ्य पुस्तकों में लिख देना चाहिये। मंचों से इसके लिये उपदेश दिये जाने चाहिये। संक्षेप में, उन्होंने कहा कि यह एक "राजनीतिक धर्म बन जाना चाहिये"। लिंकन के ये विचार शीघ्र ही व्हिग पार्टी के विचार बन गये।

लिंकन के अंदर वास्तव में इन विचारों ने तभी से घर कर लिया था जब नवम्बर, 1837 में इलिनाय के एल्टन नगर में हिंसक जनता ने "आब्जर्वर" अखबार के सम्पादक तथा दास प्रथा के विरोधी श्री के प्रेस में आग लगा दी थी। लिंकन को इस घटना से मानसिक क्लेश हुआ। उन्होंने दास प्रथा के विरोधियों को भी सलाह दी कि वे अपना विरोध इस ढंग से प्रकट करें जिससे कि हिंसा की प्रवृत्ति को बढ़ावा न मिले और कैथोलिक उन्माद, सामाजिक तथा राजनीतिक ढांचे को तहस नहस कर दे।

अन्य बुराइयों के विरुद्ध लड़ने वालों को भी लिंकन ने यही सलाह दी। उदाहरण के लिये, शराब विरोधियों से उन्होंने कहा कि वे शराब के शौकीन लोगों को समझा-बुझाकर, दयापूर्वक अहिंसक तरीकों से अपने पक्ष को रखें, न कि गुस्से से लाल पीले हो कर उन्हें गालियाँ दें। लिंकन का यह भी कहना था—

"उन्माद हमारा सबसे बड़ा दुश्मन है।"

इसीलिये उन्होंने उन्माद के बजाये ठंडे दिमाग से तर्क देने व सही सोच पर विश्वास रखने की सलाह दी। लिंकन ने अपने भाषणों में देश-भक्ति, स्वतन्त्रता तथा प्रजातन्त्र पर बल दिया और तानाशाही के प्रतिबिम्ब बोनापार्ट वादियों की भर्त्सना की।

चांदनी बिखरी हुई थी, लिंकन का भाषण था और जुलाई का महीना था। मैरी की उपस्थिति में लिंकन का यह पहला राजनीतिक भाषण था। लिंकन प्रखर वक्ता थे ही; उन्होंने जब अपने भाषण का आरम्भ किया तो जनता में समर्थन की लहर दौड़ गयी। भाषण समाप्त होने के बाद लिंकन के बाजू में खड़े होकर मैरी ने उससे कहा—"लिंकन तुम अद्भुत वक्ता हो।

देखना एक दिन तुम अमेरिका के राष्ट्रपति बनोगे।"

मैरी का यह वक्तव्य सुन कर लिंकन ने उसे आपादमस्तक निहारा, हथेली छुई और भाल पर स्नेह कवच जड़ दिया। उसके बाद जनवरी 1841 का महीना विवाह के लिये तय हुआ। दिसम्बर 1840 में लिंकन की मैरी से सगाई हुई थी। सगाई के बाद लिंकन को लगा कि उनकी आमदनी के स्रोत स्थाई नहीं हैं। इसलिये शायद मैरी को खुश नहीं रख पायेंगे। अतः जनवरी 1841 में जब उनका विवाह होने वाला था, उन्होंने मैरी से अपनी मंगनी तोड़ दी। उनकी इस हरकत से मैरी अत्यन्त दुःखी हो गयी। लिंकन को भी यह सब अच्छा नहीं लगा। वह आत्मग्लानि से भर गये और बीमार पड़ गये। स्वास्थ्य लाभ के लिये वे स्पीड के पास उनके केन्टवी स्थित निवास में चले गये।

जब लिंकन स्वस्थ होकर वापस स्प्रिंगफील्ड लौटे, तो श्रीमती साडमन फ्रांसिस ने लिंकन और मैरी की पुनः भेंट करायी। उन दोनों को पुरानी बातों को भूलकर एक बार फिर नये सिरे से एक दूसरे को समझने की सलाह दी।

श्रीमती साडमन फ्रांसिस की बात मान कर उन्होंने एक दूसरे से दोबारा मिलना शुरू किया तो उन मुलाकातों में दोनों ने पाया कि उनमें अनेक समानताएं हैं। दोनों की कविताओं में रुचि थी और दोनों के राजनीतिक विचार भी लगभग एक जैसे थे। हां, मैरी टोड को लिंकन का पहनना-ओढ़ना कतई पसंद नहीं था। वह उनकी तुलना अपने पिता राबर्ट टोड से किया करती थी, जोकि लेक्सिंगटन की सड़कों पर शानदार सूट तथा हाथ में सोने की गोल मूंठ वाली घड़ी लेकर टहलने के लिये प्रसिद्ध थे।

इसके विपरीत लिंकन को गरमी में कोट पहनना कतई पसंद नहीं था। अपनी पैंट पर भी वह महज एक ही गेलिस का इस्तेमाल करते थे। यदि उनका एकाध बटन टूट जाता था तो वे उसके स्थान पर एक आध पिन लगा लिया करते थे। उन्हें अपने आप को टिपटाप बनाने का कतई शौक नहीं था। यही उनके अलगाव का मुख्य कारण था।

लेकिन बाद में मैरी शेड ने उनमें समझौता करा दिया था। फरवरी 1847 में इलिनाय बैंक (स्टेट बैंक) को अपना कारोबार बंद करना पड़ा। उसके नोट बेकार करार दिये गये। नोटों के बेकार होने की घोषणा से इलिनाय की जनता को भयानक परेशानियों का सामना करना पड़ा। व्हिग पार्टी ने डेमोक्रेटिक पार्टी पर इलिनाय की जनता की इस बर्बादी का आरोप लगाया।

द्वन्द्व युद्ध और विवाह

व्हिग पार्टी जनता के सम्मुख एक बेहतरीन पार्टी बन कर उभरी। लिंकन ने डेमोक्रेटिक पार्टी के नेता शील्ड पर गम्भीर आरोप लगाये। उन्होंने संगामो जर्नल में भी इस सम्बन्ध में खूब लेख लिखे। इस विषय पर मैरी ने लिंकन का भरपूर साथ दिया। शील्ड ने जब लिंकन के लेखों को पढ़ा तो वह तिलमिला गया। उसने कहा—"इस गुमनाम लिखने वाले में यदि हिम्मत है

तो वह उनके साथ द्वन्द्व युद्ध करे।"

लिंकन ने मैरी को बचाते हुए सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली और अपने एक मित्र के कहने पर शील्ड के साथ द्वन्द्व युद्ध के लिये तैयार हो गये।

तय हुआ कि लड़ाई तलवार से होगी।

इलिनाय में तब ऐसे द्वन्द्व युद्ध पर प्रतिबन्ध था। इसीलिये पास के मिसौरी राज्य में यह युद्ध होना तय हुआ।

दोनों अपने-अपने समर्थकों के साथ रणस्थल पर पहुँच गये। परन्तु ऐन मौके पर लिंकन के कुछ दोस्तों ने बीच बचाव कर के मामले को रफा-दफा कर दिया। द्वन्द्व युद्ध टल गया और दोनों प्रतिद्वन्द्वियों ने हाथ मिलाये और एक दूसरे का अभिवादन स्वीकार किया।

मैरी शेड इस पूरे घटना-क्रम से बहुत प्रभावित हुई। जिन्होंने लिंकन और शील्ड के बीच बचाव किया था, वे मैरी के ही रिश्तेदार थे। मैरी और लिंकन की घनिष्ठता प्रगाढ़ हुई और अन्त में वो दोनों 4 नवम्बर 1842 को विवाह बंधन में बंध गये। इस बीच उन्हें बहुत सारे उतार चढ़ावों से गुजरना पड़ा।

इन दोनों को दाम्पत्य जीवन में बांधने में ईर्ष्या का बहुत बड़ा हाथ था। यह उन दिनों की बात है जब लिंकन ने मैरी शेड से मंगनी के बाद अलहदगी अख्तियार की थी। तब इसका मुख्य कारण मैरी शेड ही थी। लिंकन को उसकी बातों में उस अनुराग के अभाव का अनुभव होता था ज़िसे कि लिंकन जैसा पुरुष खोज रहा था। मैरी ने अपने शानदार स्कूल में बेहतरीन फ्रेंच नृत्य तो सीख लिया था, लेकिन उसने उस स्कूल में व्यवहार कुशलता की युक्ति नहीं सीखी थी। इसके कारण लिंकन धीरे-धीरे मैरी से दूर होने लगे थे। मैरी शार्टकट में विश्वास रखती थी। उसकी इसी आदत ने लिंकन के मन से उसके प्रेम का उन्मूलन कर दिया था।

उन दिनों जल्दी ही लिंकन की मुलाकात मतिरादा नामक एक युवती से हो गयी। मतिरादा मैरी शेड की एक रिश्तेदार थी। यह और बात है कि वह मैरी के बराबर नृत्य में पारंगत न थी। फिर मैरी से वह एक लम्बी छरहरी और चित्ताकर्षक युवती थी और उसकी सबसे बड़ी खूबी यह थी कि पुरुषों के साथ कैसे पेश आया जाता है या वे क्या पसंद करते हैं, यह मतिरादा को बखूबी मालूम था। कई बार ऐसा भी हुआ कि मैरी शेड, लिंकन से कुछ कह रही होती थी और लिंकन मतिरादा को निहारने में इतने व्यस्त रहते थे कि उन्हें पता ही न होता था कि मैरी उनसे क्या कह रही है।

लिंकन का मतिरादा की ओर झुकाव मैरी शेड को रास नहीं आता था। वह मन ही मन कुपित होती थी। एक बार तो लिंकन मतिरादा को डांस बॉर में भी लेकर गये। लेकिन उन्होंने इस बात की परवाह नहीं की कि मैरी किसके साथ डांस कर रही है।

लिंकन तो एक कोने में मतिरादा के साथ बतियाने में व्यस्त थे। यह सब मैरी जैसी लड़की के लिये उत्तेजित करने के लिये पर्याप्त था। उसने लिंकन से और सारी बातों के साथ यह भी कह दिया कि वह मतिरादा से

प्रेम करने लगे हैं। मगर अपने स्वभाव के विपरीत लिंकन ने इसका खण्डन नहीं किया, बल्कि माना कि शायद तुम ठीक सोच रही हो।

इसके बाद ही लिंकन यह सोचने पर विवश हुए थे कि वह और मैरी दो ध्रुव हैं। दोनों का विवाह बेमेल और बेमतलब होगा। दोनों की रुचि, आचार व्यवहार, पसंदीदगी और पारिवारिक पृष्ठभूमि में जमीन-आसमान का अन्तर है। बेहतर हो कि इस सगाई को खत्म कर दिया जाये।

लिंकन इस बात को मैरी शेड से साफ साफ कहना चाहते थे, लेकिन हिम्मत नहीं हो रही थी। एक दिन लिंकन ने इसके लिये एक तरकीब खोज निकाली थी। उन्होंने एक पत्र लिखा और स्पीड को पढ़ने के लिये दिया। इसमें उन्होंने साफ साफ लिखा था कि—"बहुत सोच विचार के बाद मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि अब मैं तुम्हें प्रेम नहीं करता हूँ। इसलिये यह विवाह सम्भव नहीं है।"

लिंकन ने यह पत्र स्पीड को देते हुए उससे कहा—"तुम यह पत्र मैरी शेड तक पहुँचा दो।"

"सारी।" स्पीड स्पष्ट इंकार करता हुआ बोला—"यह मेरे लिये सम्भव नहीं है। अपना यह काम तुम्हें खुद ही करना होगा कि तुम न तो मैरी से प्यार करते हो और न ही उससे शादी करना चाहते हो। मगर याद रखना कि इससे ज्यादा कुछ मत कहना और न ही वहाँ रुकना।"

इस पर लिंकन ने अपने कोट के बटन खोले और निश्चयी मुद्रा में धीरे-धीरे वहाँ से चले गये। लगभग रात को ग्यारह बजे लिंकन वापस लौटे।

स्पीड और उसके मित्र लिंकन की प्रतीक्षा कर रहे थे। उसके आते ही स्पीड ने उससे पूछा—"जैसा कहा था, क्या तुमने वैसा ही किया?"

"हाँ, किया।" लिंकन ने जवाब दिया।

"फिर क्या हुआ?" स्पीड ने जिज्ञासा में भर कर पूछा।

"मैंने जैसे ही मैरी से कहा कि मैं तुमसे प्यार नहीं करता हूँ...।" लिंकन ने जवाब देते हुए बताना आरम्भ किया—"उसके आंसुओं का बांध टूट गया। आंसू उसके गाल से बह रहे थे और मुझे लगा कि वे मैरी के गाल को सहला रहे हैं। सच कहूँ तो मैंने उसे अपनी बाहों में थाम लिया और भाव-विभोर होकर अनेक नेह कवच मढ़ दिये।"

इस पर स्पीड ने कहा—"तो तुम इस तरह से सगाई तोड़ कर आ रहे हो? तुमने मूर्ख की तरह व्यवहार किया। इस प्रकार तो तुमने सगाई को फिर पक्का कर लिया।"

लिंकन को कोई जवाब देते न बना। विवाह की तारीख तय होने लगी। लेकिन लिंकन इस विवाह से खुश नहीं थे। वह एक बार फिर अवसाद में चले गये। उन्होंने विवाह की स्वीकृति तो दे दी थी लेकिन उनकी आत्मा विद्रोह कर रही थी। उन्होंने खाना पीना कम कर दिया था। रात को तीन बजे जाग जाते और शून्य में निहारते रहते। न तो वह दफ्तर ही जाते थे और न ही उनकी विधान सभा जाने की इच्छा होती थी। इस बीच लिंकन ने डॉक्टर डेनियल को अपनी तबीयत के सम्बन्ध में लिखा और कहा कि

वे कोई उपचार बतायें। मगर डॉक्टर डेनियल ने देखे बिना इलाज करने से इंकार कर दिया।

इस बीच विवाह की तारीख का निर्धारण कर लिया गया। 1 जनवरी 1941 का दिन विवाह की तिथि तय की गयी। नववर्ष की पहली सांझ और विवाहोत्सव उत्साह दुगना था। शाम को करीब साढ़े छः बजे अतिथियों ने आना आरम्भ कर दिया। सात बजकर पांच मिनट पर मंत्री जी भी आ गये। पटाखों के बीच लिंकन की प्रतीक्षा होती रही, यहाँ तक कि साढ़े सात बज गये; और लिंकन नहीं आये।

अब खुशी चिंता में बदलने लगी, क्योंकि विवाह मंडप तैयार था और दूल्हा नदारद था। हर किसी के मस्तिष्क में यही प्रश्न गूंज रहा था कि कोई अनहोनी तो नहीं हो गयी। परिवार के लोग एक दूसरे से मशविरा करने में लग गये। कोई कुछ समझ नहीं पा रहा था, न ही किसी की समझ में कुछ आ रहा था कि दूल्हा अभी तक क्यों नहीं आया।

उधर, दूसरे कक्ष में मैरी टोड सिल्क के परिधान में दुल्हन बनी अपने जीवन साथी की प्रतीक्षा कर रही थी। उसकी भी बेचैनी बढ़ गयी थी। यही कारण था कि वह बार-बार उठ कर खिड़की तक आती और झांक कर निराश होकर वापस चली आती। उसकी आंखें घड़ी की सुईयों पर जमी हुई थीं, जो धीरे-धीरे एक-एक पल के समान एक-एक मिनट चल रही थी।

जब विवाह मंडप में रात के साढ़े नौ बजे तक भी दूल्हा नही पहुँचा तो अतिथि एक-एक करके फुसफुसाते हुए विदा होने लगे। घर वाले शर्मसार थे। अन्तिम अतिथि के जाने के बाद मैरी शेड का घूंघट हटा, फिर अपने ही बालों में लगे फूलों को तोड़ते हुए फट पड़ी। उसके दुःख का कोई पारावार नहीं था। वह फूट-फूट कर रो रही थी। दुःख के इस अवसर पर उसे लोगों का ख्याल आ रहा था कि वह क्या सोचेंगे। लोग उसका मज़ाक उड़ायेंगे, उस पर फब्तियाँ कसेंगे। यही सोच कर जहाँ एक पल पहले तक वह लिंकन की बाहों में झूलने की सोच रही थी, वह अब आत्म हत्या तक करने को सोच रही थी। आखिरकार लिंकन ने हरकत ही ऐसी की थी।

मगर वह गये कहाँ? कहीं किसी दुर्घटना का शिकार तो नहीं हो गये? या वह यहाँ से पलायन तो नहीं कर गये? या फिर उन्होंने आत्महत्या तो नहीं कर ली? इसी प्रकार के नाना प्रकार के प्रश्न उनके मस्तिष्क में कौंध रहे थे।

मगर हकीकत कोई नहीं जानता था।

लोग पूरी रात लिंकन को खोजते रहे। मगर लिंकन किसी को नहीं मिले।

दूसरे दिन जब लोग दफ्तर पहुँचे तो वह अपने दफ्तर में ही बैठे मिले, बड़बड़ाते हुए। उनके दोस्तों ने उन्हें बड़बड़ाते देखा तो वह यही समझे कि उनका मानसिक संतुलन बिगड़ गया है। उन्होंने मैरी टोड के रिश्तेदारों को खबर की। उसके सम्बन्धियों ने जब लिंकन की हालत को देखा तो उन्हें लगा कि लिंकन पागल हो गया है।

तत्काल डॉक्टर को बुलाया गया। लेकिन लिंकन ने डॉक्टर को दिखाने से इंकार कर दिया और ज़्यादा ज़िद करने पर आत्महत्या करने तक की धमकी दे डाली। इस पर डॉक्टर ने कहा कि उनकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं है। स्पीड और बटलर उन पर नज़र रखें। डॉक्टर हेनरी चाहते थे कि लिंकन व्यस्त रहें। लेकिन ऐसा नहीं हो पा रहा था। वह विधान सभा भी नहीं जा रहे थे। 19 जनवरी को जे. हार्डिन ने सदन में लिंकन के बीमार होने की घोषणा की।

इस बीच लिंकन ने अपने एक मित्र को चिट्ठी लिखी। यह लिंकन की अब तक लिखी गयी सबसे अधिक निराशा में डूबी हुई चिट्ठी थी। उन्होंने लिखा था—

"मैं दुनिया का शायद सबसे दुःखी इंसान हूँ। मुझे नहीं लगता कि अब मैं कभी ठीक हो पाऊँगा।" वह लगातार मृत्यु के बारे में सोचने लगे थे। उन्होंने मृत्यु पर एक कविता भी लिखी थी, जो 'संगामो जर्नल' में छपी थी।

लिंकन की यह हालत देख कर उसका मित्र स्पीड बहुत परेशान हो गया। उसे भी अब लगने लगा था कि अब लिंकन को बचा पाना शायद ही सम्भव हो पाये। स्पीड लिंकन को लेकर अपनी माँ के पास गया। वह लुडखविले में रहती थी, जहाँ कि उनका एक बड़ा सा शस्त्रागार था।

इस बीच श्रीमती एडवर्ड ने लिंकन को एक पत्र लिखा कि यदि वह चाहते हैं तो मैरी टोड उन्हें इस रिश्ते के लिये सदा के लिये आज़ाद कर देगी और यदि वह अब इस रिश्ते को बनाये रखना चाहते हैं तो उन्हें फिर से यहाँ आकर नये सिरे से रिश्ते को अपनाना पड़ेगा।

लिंकन ने इस बीच मैरी शेड़ और उनके परिवार वालों से सबसे सम्बन्ध विच्छेद कर लिया था। वह भी अब यही मानने लगे थे कि इतनी भद्द पिटने और अवमानना होने के बाद के बाद मैरी जैसी तेज तर्रार लड़की ने अपने लिये किसी दूसरे वर को खोज लिया होगा।

मगर वह एक बात नहीं जानते थे कि उन्होंने ही मतिरादा से अपने सम्बन्धों को बढ़ा कर मैरी शेड के मन में अपने लिये प्रेम का जाल बिछाया था। मैरी को लिंकन का मतिरादा या किसी अन्य लड़की से मिलना एक आंख नहीं भाया था, यहीं से उनके मन में लिंकन के प्रति प्रेम का ज्वालामुखी सुलगा था, जिसका लावा अब तक मैरी शेड को अपने बहाव में बहाये ले जा रहा था। यह मतिरादा के प्रति ईर्ष्या ही थी, जिसने लिंकन के मन में प्रेम का अंकुर बोया था, जोकि अब एक विशाल वृक्ष का रूप ले चुका था।

फिर मैरी शेड एक जिद्दी स्वभाव की लड़की थी। वह हर उस शख़्स को जवाब देना चाहती थी जिसने उस पर फब्ती कसी थी, और जिसने लिंकन को बुरा-भला कहा था, जिसने उसके फैसले को मूर्खतापूर्ण बताया था।

मैरी शेड की जिद थी कि यदि लिंकन बीमार हैं तो वह उन्हें ठीक करेगी अथवा उनके ठीक होने का इंतजार करेगी; मगर वह किसी और आदमी

को लिंकन पर तरजीह नहीं देगी। वह किसी और के बारे में सोच भी नहीं सकती थी, जीवन बिताना तो दूर की बात थी।

दूसरी ओर लिंकन मैरी से काफी दूर जा चुके थे। इतने दूर कि उन्होंने श्रीमती बटलर की छोटी बहन को, जिसका नाम सराह रिकार्ड था, को विवाह का प्रस्ताव दे दिया। सराह रिकार्ड उस समय सोलह वर्ष की थी, जबकि लिंकन उस समय तक जीवन के बत्तीस वसंत देख चुके थे।

लिंकन का प्रस्ताव सुन कर सराह रिकार्ड ने स्पष्ट इंकार कर दिया। इस सम्बन्ध में सराह ने अपनी एक दोस्त को चिट्ठी में लिखा था—"लिंकन एक अंग्रेज दोस्त की तरह तो ठीक हैं, मगर मैं उनसे शादी के बारे में सोच भी नहीं सकती। मैं अभी सिर्फ सोलह बरस की हूँ और शादी के बारे में इतनी गम्भीर भी नहीं हूँ।"

'स्प्रिंगमील जर्नल' में एक सम्पादकीय लिखते हुए लिंकन की सिमोन फ्रांसिस से गहरी दोस्ती हो गयी थी। उनकी पत्नी चालीस वर्ष की अवस्था में स्प्रिंगफील्ड में जोड़े मिलाने के लिये प्रसिद्ध थी।

अक्टूबर, 1842 में सिमोन फ्रांसिस ने एक दिन पत्र भेज कर दोपहर को लिंकन को बुलवाया। लिंकन को समझ में नहीं आया कि उन्हें आखिर बुलाया क्यों गया है! फिर भी वह इंकार न कर सके और वहाँ पहुँच कर भौंचक्के रह गये। वहाँ मैरी शेड बैठी थी।

नरमदिल लिंकन ने मैरी शेड को देखा, उनके पास भागने का कोई रास्ता नहीं बचा था। लिंकन को देखते ही वह रोने लगी। लिंकन से उसका रोना न देखा गया और उन्होंने अपने बाजुओं को उसकी ओर बढ़ा दिया। इन बढ़े हुए बाजुओं में जीवन का साथ निभाने का वादा था, माफी थी और आने वाले जीवन के प्रति भरोसा था।

उसके बाद भी वो दोनों मिलते रहे। लेकिन इस बार उनकी मुलाकात गुपचुप थी। मैरी ने अपनी बहन को भी इन मुलाकातों की हवा नहीं लगने दी। वह तब तक इस रिश्ते को छुपा कर रखना चाहती थी जब तक वे किसी ठोस निर्णय पर नहीं पहुँच जाते।

अंत में मैरी की तपस्या रंग लायी और 4 नवम्बर, 1842 को शुक्रवार के दिन मैरी और लिंकन विवाह सूत्र में बंध गये।

वैवाहिक जीवन का आरम्भ

दाम्पत्य जीवन का आरम्भ हुआ। ग्लोब हैवर्न नामक होटल में कुछ कमरे स्थाई निवास के लिये भी थे। जिसके स्वामी का नाम डाक्टर अर्ली था। डाक्टर अर्ली का निधन हो गया था। श्रीमती अर्ली वहाँ अकेली रहती थीं। लिंकन ने उसी होटल के एक कमरे से अपना वैवाहिक जीवन आरम्भ किया। वे इसके लिए 4 डालर प्रति सप्ताह देते थे। लिंकन तो अपने इस मकान से संतुष्ट थे इससे, परन्तु मैरी लिंकन सहमत नहीं थी। वह बड़े घर की बेटी थी और अधिक आराम और सुख सुविधा में रहने वाली थी। उसके मायके में नौकर चाकर थे तथा गुलाम भी काम करते थे। जबकि यहाँ

मैरी शेड को अपना सारा काम खुद ही करना पड़ता था और फिर होटल में शोर गुल भी बहुत होता था।

दोनों होटल के सामान्य कक्ष में भोजन करने जाते थे। जबकि मैरी ऐसे वातावरण की बिल्कुल भी अभ्यस्त नहीं थी। परन्तु सब कुछ जानते हुए उसने अपनी इच्छा से विवाह किया था, अतः वह इसे चुपचाप सह रही थी।

मगर धीरे धीरे मैरी के अन्दर का लावा सुलगता रहता था। अभावों ने उसे चिड़चिड़ा और झगड़ालू बना दिया था। एक बार ऐसा हुआ कि लिंकन नाश्ता कर रहे थे। तभी उन्होंने ऐसा कुछ कह दिया कि मैरी का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया और उसने गर्म कॉफी कर प्याला लिंकन के मुंह पर दे मारा।

यह सब देखने वाले कई लोग थे। लिंकन क्षुब्ध होकर चुपचाप बैठे रहे। श्रीमती अर्ली भी वहीं थीं। जब उन्होंने ने मैरी को लिंकन के चेहरे पर गर्म कॉफी का प्याला फैंकते देखा तो वह भागी हुई अन्दर गयीं और एक भीगा हुआ तौलिया लेकर आयीं और लिंकन का चेहरा तथा कपड़े साफ किये। सीनेटर बोवेरिज के अनुसार, श्रीमती लिंकन की आवाज उस समय पूरी गली में सुनी जा सकती थी। आस पड़ौस के लोग तो उनके वाक्यों को जस का तस सुन सकते थे। वह शायद एक प्रकार की प्रतिहिंसा थी।

मैरी हमेशा अपने पति की शिकायत और आलोचना करती थी। उसके लिये वहाँ कुछ भी अच्छा नहीं था। यहाँ तक कि वह उनके उठने-बैठने, चलने-फिरने तक का मजाक बनाया करती थी। उसका कहना था कि लिंकन की चाल में गरिमा दूर-दूर तक नहीं झलकती है। वह उसके बड़े बड़े कानों का भी मखौल उड़ाया करती थी। उसका सिर हाथ पैरों तथा उसके शरीर की तुलना में काफी छोटा था अर्थात लिंकन बे-अनुपाती थे। वह रोज ही लिंकन को कोई न कोई नया नाम दिया करती थी और उनकी हर बात का मखौल उड़ाया करती थीं।

हर्नडन का मानना है कि मैरी शेड लिंकन, एक बेवजह चिल्लाने वाली महिला नहीं थी। यह लिंकन का आचरण ही था, जो उसे कुछ न कुछ कहने के लिये प्रेरित करता था। जैसे, जब वह टहलने जाते तो उनका कोट सदा गंदा रहता था, उस पर ब्रुश फिराने की जरूरत होती थी। मगर वह ऐसे ही टहलने के लिये निकल जाते थे जबकि मैरी उनसे इस सम्बन्ध में लगातार कहती रहती थी। लेकिन लिंकन अपनी हरक्तों से बाज नहीं आते थे।

लिंकन ने कभी रेजर नहीं रखा और न ही कभी समय पर बाल कटवाने के लिये गये। उनके ऊबड़-खाबड़ लम्बे बालों को देख कर श्रीमती लिंकन उन्हें उलहाना दिया करती थी। मगर वह अपनी आदत से मजबूर थे। उनसे वे आदतें छुटती नहीं थी।

शिकागो में एक दिन एक फोटोग्राफर सबकी तस्वीरें ले रहा था। लिंकन की बारी आने पर उसने उनसे कहा—“सर, आप थोड़े सामान्य हो जायें ताकि मैं आपकी तस्वीर ले सकूँ।”

उस फोटोग्राफर का तात्पर्य लिंकन के व्यवस्थित हो जाने से था। इस पर लिंकन ने कहा—"व्यवस्थित लिंकन की तस्वीर को स्प्रिंगफील्ड में पहचानेगा कौन?"

फोटोग्राफर बेचारा खामोशी लगा गया। लिंकन की दिक्कत केवल यहीं खत्म नहीं थी। उन्हें "टेबिल मेनर्स" का ध्यान नहीं रहता था। वे छुरी को कभी दाहिने हाथ में नहीं रखते थे। मछली को "फोर्क" से कैसे काटें और खायें, इसका ध्यान वह शायद ही कभी रख पाते थे। ये सारी बातें उनके लिये व्यर्थ की बातें थीं।

अपने इस व्यवहार के कारण वह कई बार अपनी पत्नी से डांट खा चुके थे। महिलायें कभी मैरी से मिलने आतीं तो वे उठते भी नहीं थे। इस पर जब मैरी नाराजगी जताती तो वह चुपचाप सुनते रहते। दफ्तर से लौटने का उनका यह आलस था कि वह कोट कहीं फैंकते और कॉलर को कहीं और फैंकते। फिर उल्टे-सीधे लेटकर कुछ पढ़ने लगते। उन्हें चूंकि कविताओं को पढ़ने का बहुत शौक था, इसलिये वे ज्यादातर इन्हें ही पढ़ा करते थे और वह भी चुपचाप नहीं, पूरे जोर-शोर के साथ कविता पाठ किया करते थे। इसकी आदत उन्हें इंडियाना के स्कूल में पड़ी थी। उस स्कूल में जोर-जोर से पढ़ाया जाता था और बुलवाया जाता था।

लिंकन के दोस्त स्पीड से श्रीमती लिंकन बहुत चिढ़ती थीं, उन्हें लगता था कि लिंकन को बहकाने में उसी का हाथ है। इसी की बात को मान कर लिंकन विवाह के दिन नहीं पहुँचे थे। उनके पत्र लेखन पर भी घर में बवाल हुआ और लिंकन को बाध्य होना पड़ा कि आगे से वह अपने पत्रों को 'आदर के साथ' वाक्य पर समाप्त करेंगे। ऐसे ही अनेकों ऐसी घटनाएं हैं जिनसे लिंकन दम्पति की रोज-रोज की खटपट की भनक मिलती है।

पुत्र की प्राप्ति

फिर भी वह लिंकन को बहुत चाहती थी। उसकी गर्भावस्था ने इन छोटी छोटी बातों को पीछे कर दिया। पहली अगस्त 1843 को मैरी ने अपने पहले पुत्र को जन्म दिया। लिंकन अपने बेटे का नाम अपने मित्र स्पीड जेन के नाम पर रखना चाहते थे। श्रीमती लिंकन को जब इस बात का पता चला तो आग बगूला हो गयीं। अंततः उसका नाम मैरी ने पिता के नाम पर "राबर्ट शेड लिंकन" रखा गया। पुत्र प्राप्ति से मैरी और लिंकन के सम्बन्ध और प्रगाढ़ हो गये।

लिंकन अपने पारिवारिक जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिये अब एक अलग मकान लेना चाहते थे। परन्तु अभी उनकी आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि वह मकान ले पाते। विधायक और वकील के रूप में उनकी आमदनी सीमित थी। इसके अलावा वह न्यू सलेम की कर्ज की किश्तें अभी तक चुका रहे थे, जोकि 'लिंकन एण्ड बैरी' नामक स्टोर के कारण उन पर हुआ था।

इसके अलावा एक खर्च और था—उन्हें अपने पिता और सौतेली माता

के खर्च के लिये भी कुछ रकम अवश्य भेजनी होती थी। लिंकन अपना खुद का मकान तो ले नहीं सके, लेकिन उन्होंने एक छोटा सा लेकिन तीन कमरों का मकान किराये पर ले लिया। उनका परिवार 1843 के अन्त में उस मकान में आ गया।

पारिवारिक वातावरण

श्रीमती लिंकन के यहाँ चार संतानों ने जन्म लिया। लेकिन मात्र एक ही व्यस्क हो पाई। उनके अन्य बच्चों के नाम इडी, विली और टड थे। राबर्ट उनका पहला पुत्र था, उसे मिला कर कुल चार बच्चे थे। इडी की मृत्यु चार वर्ष में ही स्प्रिंगफील्ड में हो गयी। विली बारह वर्ष का हुआ तो व्हाइट हाउस में उसका निधन हो गया, जबकि टड का देहावसान 18 वर्ष की आयु में 1871 में हुआ। केवल राबर्ट शेड लिंकन एकमात्र ऐसा पुत्र था, जो कि दीर्घायु हुआ। उसका निधन 26 जुलाई 1926 में को 83 वर्ष की आयु में हुआ।


लिंकन अपने बच्चों के साथ

दिसम्बर में मैरी के पिता राबर्ट एस शेड उसकी तीन बहनों के साथ मैरी से मिलने के लिये स्प्रिंगफील्ड आये। वे अपने नये नाती से मिलकर अत्यधिक प्रसन्न हुए। वे राबर्ट लिंकन से बहुत प्रभावित थे। उनका एक मुकदमा जोकि जमीन से सम्बन्धित था, संगमॉन कोर्ट में लड़ रहे थे। लिंकन की सीमित आय को देख कर वह लिंकन की परेशानियों से अवगत थे। चलते समय उन्होंने मैरी के हाथों में एक सोने का टुकड़ा रख दिया। इसके अलावा उन्होंने यह प्रबन्ध भी कर दिया कि उनके जीवन काल तक मैरी को 120 डालर प्रति वर्ष मिलता रहे।

राबर्ट एस शेड ने अपने अन्य दामादों की भांति लिंकन दम्पति को भी 80 एकड़ जमीन दी। सन् 1844 को लिंकन अपना मकान खरीदने में समर्थ हुए। उन्होंने उस दो खण्डों के मकान को 1200 डालर में खरीदा। अपने बढ़े हुए खर्च की पूर्ति के लिये लिंकन अपने वकालत के पेशे में और अधिक मेहनत करने लगे।

इसके विपरीत लिंकन के चचेरे भाई जान हैक्स का कहना था कि लिंकन अपने सपने देखने के अलावा किसी बात में अच्छे नहीं थे। वह अमूर्त बातों में खो जाते, फिर तो जैसे वह पूरी दुनिया को भुला बैठते। उन्हें तब न कुछ सुनायी देता था और न कुछ दिखायी देता था। उनकी निगाहें कहीं भी अटक जाती थीं, चाहे वह कोई अमूर्त फुनगी हो, बादल हो, फूल हो या फिर कुछ भी न होकर शून्य ही हो, और कोई विचार उनके मस्तिष्क में आकर अटक जाता था। लिंकन उसमें से तभी निकल पाते जब श्रीमती

लिंकन के चीखने-चिल्लाने और उलाहने की कर्कश आवाजें उनके कानों में सुनायी पड़ती थीं।

श्रीमती लिंकन और पत्नियों की भांति भोजन बनाने और खिलाने में पर्याप्त रुचि लेती थीं। वह बड़ी मेहनत और लगन से खाना बनातीं और फिर उसे टेबिल पर बड़ी कुशलता से सजाती थीं। लिंकन का हाल दूसरा था। वह कई बार टेबिल तक पहुँच तो जाते थे लेकिन खाने को देखते-देखते उसे खाना भूल जाते थे। भोजन उनकी रुचि नहीं जरूरत का एक हिस्सा था। भोजन खाने की याद भी श्रीमती लिंकन ही दिलाती थीं, तभी वह खाते थे।

भोजन करने के बाद वह उठते और जहाँ आग जलती देखते, वहीं जाकर बैठ जाते। बच्चे उनके पास होते थे। कभी वह उनके बाल खींचते, कभी उनकी पीठ पर चढ़ जाते और इसी प्रकार की शैतानियाँ करते रहते थे। मगर लिंकन उन्हें कुछ न कहते थे, वह अपने आप में ही मगन रहते थे। कभी अचानक उठते और बच्चों को चुटकुले सुनाते या किसी कविता की पंक्तियाँ सुनाने लगते। श्रीमती लिंकन उन्हें बार बार कहती कि बच्चों की गलतियों पर हल्के से डांट भी दिया करो, उन्हें बताया करो कि क्या सही है और क्या गलत है—ताकि भविष्य में वह बेहतर इंसान बन सकें।

लेकिन लिंकन का कहना था कि—"मुझे बच्चों में कोई गलती दिखायी नहीं देती। इस बारे में मैं अंधा-बहरा हूँ।"

इतना सब होने पर जब भी लिंकन किसी बच्चे को अच्छा काम करते देखते तो उसकी प्रशंसा अवश्य किया करते थे।

एक बार की बात है, लिंकन अपने एक न्यायाधीश मित्र के साथ शतरंज खेल रहे थे। इस बीच उनका बेटा राबर्ट आया और उसने कहा—"भोजन का समय हो गया है, चलें।" इस पर लिंकन ने कहा—"बेटा, तुम चलो, हम अभी आते हैं।"

जैसे कि आम घरों में होता है, लिंकन का बेटा वहाँ से चला गया और वह अपने खेल में डूब गये और भूल गये कि उन्हें बुलाया भी गया था।

थोड़ी देर बाद राबर्ट फिर आया और उसने कहा—"डैडी, चलें, सभी भोजन पर आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

राबर्ट की बात सुनकर उन्होंने उसी तरह से शतरंज के प्यादों को देखते हुए कह दिया—"तुम चलो, हम आते हैं।"

राबर्ट चला गया और लिंकन भूल गये। तीसरी बार राबर्ट माँ का संदेशा लेकर आया—"डैडी चलो, मम्मी भोजन पर आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं।"

"कहा ना!" लिंकन फिर राबर्ट को टरकाते हुए बोले—"बस जरा यह बाजी खत्म होने दो। हम अभी आते हैं।"

राबर्ट फिर लौट गया। लिंकन फिर प्यादों में उलझ गये, यहाँ तक कि कितनी ही देर गुजार गयी। जब काफी देर तक लिंकन भोजन की मेज तक नहीं पहुँचे तो इस बार राबर्ट तमतमाता हुआ आया और उसने लिंकन से कुछ नहीं कहा, मगर शतरंज में इतनी जोर से लात मारी कि वह लिंकन

और उनके मित्र के सिर के ऊपर से उछल गयी।

इस पर भी लिंकन राबर्ट से नाराज नहीं हुए, बल्कि वह बड़ी सहजता से उठे और उन्होंने अपने मित्र से हाथ मिलाते हुए कहा—"अगली बाजी फिर किसी दिन पूरी करेंगे।"

उनका न्यायाधीश मित्र वहाँ से चला गया। उसके जाने के बाद भी मजे की बात यह थी कि वह न तो राबर्ट पर नाराज हुए, न उसे डांटा और न उसे कुछ कहा।

इस बीच अधिक मेहनत करने से लिंकन की वकालत का कारोबार चमक उठा था। अब वे लोगन की साझेदारी में प्रेक्टिस करने लगे थे, उनकी प्रैक्टिस अच्छी चल रही थी। लोगन एण्ड लिंकन ने अपना कार्यालय जिला न्यायालय के ऊपर स्थानान्तरित कर दिया था। लोगन एक वरिष्ठ वकील थे। लिंकन ने उनसे बहुत कुछ सीखा था।

नये वकीलों के बीच लिंकन भाषण भी देते थे और उनके साथ अपना ज्ञान तथा अनुभव को बांटते थे। लिंकन इलिनाय उच्च न्यायालय के पुस्तकालय में जाकर पुराने मुकदमों की कार्य- वाही का अध्ययन करते थे। उच्च न्यायालय के भी लिंकन को अनेकों मुकदमें मिले। वे अपने मुकदमों के पक्ष में पुरानी नजीर पेश करके जजों को अचम्भे में डाल देते थे।

लिंकन वरिष्ठ वकील के रूप में

लोगन ने 1844 के अन्त में लिंकन के साथ अपनी साझेदारी को समाप्त कर दिया। लोगन अपने बेटे डेविड के साथ व्यापार में चले गये। तब लिंकन ने हर्नडन को अपना नया पार्टनर बनाया। अब से पहले लिंकन जिसके साथ भी जुड़े, उसके कनिष्ठ साझेदार के रूप में जुड़े। लेकिन हर्नडन के साथ जुड़ने पर उनका दर्जा वरिष्ठ साझेदार का था। इस समय तक अन्य राजनीतिज्ञों की भांति लिंकन भी अमेरिकी कांग्रेस (संसद) में जाने का सपना संजोने लगे थे। इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिये उन्हें वरिष्ठ के बजाये एक कनिष्ठ साझीदार की जरूरत थी।

लिंकन एक वकील के रूप में इतने प्रसिद्ध हो चुके थे कि अब उन्हें नये केस लेने के लिये किसी वरिष्ठ वकील की आवश्यकता न थी। मुवक्किलों के लिये अब उनका स्वयं का नाम ही काफी था।


लिंकन वकील के रूप में

हर्नडन एक नये, युवा और मेहनती वकील थे, जो कानून की पुस्तकों का खूब अध्ययन किया करते थे। ऊपर उठने के लिये उन्हें लिंकन जैसे प्रसिद्ध वकील की आवश्यकता थी। इस प्रकार हर्नडन और लिंकन एक-दूसरे की जरूरत थे। राजनीतिक रूप से युवा हर्नडन भी व्हिग पार्टी से जुड़े हुए थे। वे पूरी

तरह से लिंकन के वफादार थे। इस प्रकार दोनों के सम्बन्ध न केवल व्यवसायिक थे, बल्कि भावनात्मक रूप से भी वो दोनों एक सूत्र में बंधे हुए थे।

हर्नड़न न केवल कानून की पुस्तकें पढ़ते थे बल्कि उनके साथ साथ वे अन्य विषयों की पुस्तकें भी पढ़ते थे; जैसे इतिहास, शिक्षा, विज्ञान, चिकित्सा और दर्शनशास्त्र आदि। इन दोनों ने अपना कार्यालय टिंसले बिल्डिंग में एक कमरा किराये पर लेकर बनाया। लिंकन और हर्नडन की प्रैक्टिस भी जल्दी चल निकली। सन् 1847 में इस फर्म ने 100 केस लड़े, जो दोनों को व्यस्त रखने के लिये पर्याप्त थे। वरिष्ठ तथा प्रसिद्ध वकील होने के वावजूद लिंकन ने फर्म की आमदनी को आपस में आधा-आधा बांटा। फर्म का सारा हिसाब-किताब परम्परा के अनुसार हर्नडन ही रखते थे क्योंकि वही उनके कनिष्ठ साझीदार थे। स्प्रिंगफील्ड के अलावा वह आस पास के क्षेत्र में भी अपने मुकदमों की पैरवी के लिये जाया करते थे। यह अदालतें जिले के विभिन्न भागों में लगती थीं। साल में दो बार जजों, ज्यूरियों तथा वकीलों का कारवाँ विभिन्न जिलों में जाकर वहाँ के मुकदमों को निपटाता था।

इस भ्रमण में दिन तो अदालत के कार्यों में निकल जाता था, लेकिन रात को सब एक साथ बैठ कर आग तापते और आपस में विचार-विमर्श करते थे। ऐसे समय में लिंकन अपने साथियों को चुटकुले सुना कर उनका खूब मनोरंजन किया करते थे। ऐसी यात्राओं से लिंकन को आर्थिक लाभ तो होता ही था, साथ ही साथ स्थानीय वकीलों और मुवक्किलों के सम्पर्क में आने से उन्हें इसका राजनीतिक लाभ भी मिलता था।

लिंकन के मधुर व्यवहार से उससे मिलने वाले इतने प्रभावित होते थे कि जो एक बार उनसे मिल लेता था, वही उनका राजनीतिक समर्थक बन जाता था। अपने चुनाव क्षेत्र के बहुत से लोगों के नाम लिंकन को याद हो गये थे। जब कभी लिंकन इन लोगों से मिलते तो उनसे हाथ मिला कर आत्मीयता प्रकट करते। लिंकन को ऐसी यात्रा वर्ष में तीन बार करनी होती थी।

सन् 1846 में मैरी ने अपने दूसरे पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम लिंकन ने एडवर्ड (एडी) रखा। लिंकन ने यह नाम अपने राजनीतिक साथी एडवर्ड डी. बेकर के नाम पर रखा था। लिंकन और मैरी के स्वभाव में काफी अन्तर था। लिंकन जहाँ सुस्त तथा मूडी स्वभाव के थे, वहीं मैरी घरेलू काम-काज में बहुत मेहनती थीं। लिंकन घर में कम बोलते थे, जबकि मैरी खूब बोलती थी। बच्चों के पालन-पोषण में भी दोनों के अलग-अलग विचार थे। शैतानी करने पर मैरी जहाँ बच्चों की पिटाई कर दिया करती थीं, वहीं लिंकन बच्चों के साथ घुल मिल कर रहते और कितनी भी शैतानी करने पर उन्हें डांटते तक नहीं थे। उनका कहना था—"बच्चे स्वतन्त्र और खुश रहने चाहिये तथा प्रेम-बंधन से अपने माँ-बाप से बंधे होने चाहिये।"

लिंकन अपने पिता की सख्ती को बचपन में झेल चुके थे, अतः वे नहीं

चाहते थे कि उनके बच्चे भी उसी दौर से गुजर कर विद्रोही बने। बड़ा होने पर उनका बड़ा बेटा राबर्ट अपने पिता की तरह पढ़ने लिखने का शौकीन बना।

लिंकन किसी चर्च से नहीं जुड़े थे और न ही धार्मिक वाद-विवादों में पड़ते थे। यहाँ तक कि कभी उनके नजदीकी मित्रों में भी कभी इस प्रकार की बातें होतीं थीं तो वह उनसे बातें करने से बचते थे। सम्भवतया यह उनकी नापसंदीदगी का क्षेत्र था। एक बार उन्होंने हर्नडन से कहा था—"धर्म के बारे में मेरी सोच इंडियाना के लीन नामक वृद्ध आदमी से मिलती है।"

इसी सम्बन्ध में उन्होंने एक चर्च में एक बार यह भी कहा था—"मैं जब कोई अच्छा काम करता हूँ तो मुझे अच्छा लगता है और जब मैं बुरा काम करता हूँ तो मुझे बुरा लगता है, इसका एहसास ही मेरा धर्म है।"

रविवार का दिन लिंकन आमतौर से अपने बच्चों के साथ ही बिताना पसंद करते थे। उस दिन जहाँ कहीं भी वह जाते तो बच्चे उनके साथ होते थे। मगर एक रविवार को लिंकन अपनी पत्नी को लेकर किसी चर्च में चले गये। तब तक एड कहीं खेलने गया हुआ था। घर वापस आया तो एड ने देखा कि मम्मी-पापा घर में नहीं हैं। उसने अपने बड़े भाई राबर्ट से मम्मी-पापा के बारे में पूछा तो उसने बता दिया कि वो दोनों चर्च गये हुए हैं।

एड ने राबर्ट से जब यह सुना तो वह जिस हाल में था, उसी हाल में दौड़ता हुआ चर्च पहुँच गया। उसके कपड़ों पर इलिनाय की काली मिट्टी लगी हुई थी, शर्ट के बटन खुले हुए थे और वह पूरी तरह से अस्त-व्यस्त हालत में था। श्रीमती लिंकन ने जब एड को इस हालत में देखा तो वह बड़ी शर्मिंदा हुई। मगर लिंकन को जरा भी बुरा नहीं न लगा। उन्होंने पूरे उत्साह के साथ बाहें फैला कर अपने बेटे का स्वागत किया और स्नेह से भर कर गोद में उठा लिया उसे सीने से चिपका लिया। कहा कुछ नहीं।

हर्नडन ने लिखा है कि लिंकन रविवार की सुबह कभी-कभी बच्चों को दफ्तर ले आते थे। बच्चे उधमी थे। वहां उन्होंने मेज की ड्राअर, पुस्तकों, फाइलों तथा जरूरी कागजात सबको बिछा कर डांस करना आरम्भ कर दिया। लिंकन ने उन्हें देखा, लेकिन डांटा नहीं। हर्नडन का कहना है कि मैंने ऐसा कोमल हृदयी व्यक्ति आज तक नहीं देखा। वैसे तो श्रीमती लिंकन कार्यालय जाती नहीं थीं। मगर जब भी जातीं, वहाँ से आहत होकर लौटती थीं; क्योंकि कार्यालय में कोई भी चीज ठीक जगह पर नहीं होती थी।

इस सम्बन्ध में उनके मित्र स्पीड का कहना था—"लिंकन नियमित रूप से एक अनियमित इंसान थे।"

सामाजिक व्यवस्था पर विचार

व्हिग पार्टी के लिंकन सदा समर्थक रहे। लेकिन आर्थिक नीतियों के सम्बन्ध में उनके विचार दूसरे थे। लिंकन पूर्ण मुक्त व्यापार के विरोधी थे। इनका मानना था—संरक्षण कर प्रणाली समाप्त करने से 'निरर्थक श्रम' पर अधिक

खर्च होगा, क्योंकि विदेश व्यापार अधिक बढ़ जायेगा। जिसमें एक ऐसी व्यवस्था लगातार बनी रहेगी जिसमें श्रम न करने वालों की आमदनी, श्रम करने वालों की आमदनी से कहीं ज्यादा होगी। जबकि श्रमिक को उचित पारिश्रमिक नहीं मिलेगा तो उसका हक मारा जायेगा।

लिंकन इसे गलत मानते थे। उसका मानना था कि श्रमिक को उत्पादन का सारा का सारा या अधिक से अधिक लाभ मिलना चाहिये। यहाँ हम लिंकन को कार्ल् मार्क्स के विचारों के काफी नजदीक पाते हैं, जो कि उन दिनों यूरोप में श्रमिकों के अधिकारों की लड़ाई लड़ रहे थे। लिंकन व्हिग पार्टी की जिन आर्थिक नीतियों से प्रभावित थे; वे प्रगतिशील थीं और देश को विकास के रास्ते ले जाने वाली थीं।

व्हिग पार्टी के नेता 'हेनरी क्ले' लिंकन के राजनीतिक आदर्श थे। हेनरी क्ले उत्तर-पूर्व को औद्योगिक उत्पादन, पश्चिम को अनाज उत्पादन तथा दक्षिण को इकाई के रूप में विकसित करना चाहते थे। इस सम्बन्ध में उनका मानना था कि इससे राजनीतिक स्वार्थ तथा क्षेत्रीय संघर्ष को लोग भूल जायेंगे और अमेरिकी राष्ट्रवाद की ओर अग्रसर होंगे। इससे वर्ग संघर्ष समाप्त होगा तथा एक ऐसी न्याय पूर्ण तथा परिपूर्ण व्यवस्था बनेगी जो सबके लिये एक समान रास्ता खोलेगी। सबको एक समान आशा, शक्ति, प्रगति और विकास के अवसर प्रदान करेगी। यह एक ऐसा दृष्टिकोण था जिसकी ओर अनेक धनवान तथा शिक्षित लोग भी आकर्षित हुए।

अपने विचारों में लिंकन किसी तरह की अस्पष्टता नहीं रखते थे। डगलस के साथ हुई उनकी दो बार की बहस अमेरिकी राजनीति की धारा तय करने वाली बहस मानी जाती है। इसी बहस से लोग लिंकन के राजनीति शास्त्र का मूल्यांकन करते हैं। डगलस से उनकी पहली बहस 19 नवम्बर 1839 को हुई थी और दूसरी उसी सन् की 26 नवम्बर को। यही कारण था कि लिंकन ने अपने प्रचार में हार्डिन के विरुद्ध कुछ भी नहीं कहा। उन्होंने केवल यह बात कही कि एक के बाद एक धर्म के हिसाब से प्रत्याशी को चुनना एक स्वस्थ परम्परा है। वे सधी हुई संयत भाषा में सरोकार से शुरू होकर विधायी संकल्प तक पहुँचते थे। लिहाजा उन्होंने यही कहा कि प्रत्याशी बदलते रहेंगे, वे अपनी सम्पूर्ण कार्यक्षमता से काम करते रहेंगे।

लिंकन की इस दलील में दम था। व्हिग पार्टी के सदस्यों ने इस दलील का समर्थन किया। उन्हें मिलते समर्थन को देखकर हार्डिन हताश हो गये। वे भांप गये कि उनका जीतना तो दूर, इज्जत बचाना भी मुश्किल हो जायेगा। इसलिये वे मैदान से हट गये। उन्होंने घोषणा कर दी कि वे किस्को युद्ध में भाग लेने जा रहे हैं; इसलिये वह चुनाव नहीं लड़ेंगे।

पहली मई 1846 के अधिवेशन में लिंकन पार्टी के प्रत्याशी चुन लिये गये। चुनाव में उनके खिलाफ डेमोक्रेटिक पार्टी के लीडर कार्टराइट थे। कार्टराईट मेथाडिस्ट अनुगामी थे। उन्होंने लिंकन के विरुद्ध मुद्दा उछाला कि लिंकन चर्च को अधिक महत्व नहीं देते हैं। उनकी धार्मिक आस्था संदिग्ध है। उन्हें लगा कि बेकर के सामने लिंकन ने इस बारे में कुछ नहीं कहा।

शायद इस बार भी वे चुप रहें और उनका दांव चल जाये।

मगर इस बार लिंकन चुप रहने वाले नहीं थे। उन्होंने कार्टराइट के आरोप का उत्तर देते हुए कहा—"यह सही है कि मैं किसी चर्च का सदस्य नहीं हूँ। यदि कोई व्यक्ति किसी सम्प्रदाय विशेष के प्रति अनुरक्त नहीं है तो भी आप उसे किसी धर्म विशेष या सभी धर्मों का विरोधी नहीं कह सकते, जब तक कि वह धर्म विरोधी प्रमाणित न हो जाये।"

लिंकन के तर्कों ने कार्टराइट की बोलती बंद कर दी। जनता पर उसके दुष्प्रचार का कोई प्रभाव न पड़ा और तीन अगस्त 1846 को लिंकन कार्टराइट को विधिवत् परास्त कर कांग्रेस की प्रतिनिधि सभा के लिये चुन लिये गये।

बढ़ती राजनैतिक प्रतिष्ठा

इस बीच लिंकन को इलिनाय राज्य के बाहर व्हिग पार्टी के नेता के रूप में मान्यता मिल चुकी थी। तीसवीं कांग्रेस का पहला अधिवेशन होने में अभी एक वर्ष से अधिक का समय बाकी था। यह अधिवेशन दिसम्बर 1847 के प्रारम्भ में होना था। अधिवेशन की तैयारी के लिये लिंकन के पास पर्याप्त समय था। इसीलिये उससे पहले उन्होंने शिकागो में हुए "नदी तथा बंदरगाह" अधिवेशन में प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया।

इस एक वर्ष के समय में लिंकन ने अपनी कानूनी प्रैक्टिस पर ध्यान दिया। उन्होंने अपनी कुछ अच्छे फोटो खिंचवाये और खाली समय परिवार के साथ बिताया। लिंकन अभी भी काफी दुबले पतले थे। छः फीट चार इंच होने के बावजूद उनका वजन 80 किलो था। उनकी टांगें बहुत लम्बी और नाक भी लम्बी थी। उनके चेहरे पर हर समय गम्भीरता के भाव छाये रहते थे। उन्हें देखकर लगता था जैसे कि वह अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हैं।

❑



वैवाहिक जीवन का असंतोष

लिंकन सन् 1844 में चार्ला ड्रेसर के मकान में आ गये। इसके लिये उन्होंने उन्हें 1500 डालर दिये। चार्ला ड्रेसर वही हैं जिन्होंने वर्षों पहले लिंकन का विवाह कराया था। मकान में एक लिविंग रूम, किचन, बेडरूम, आउट हाउस था। मैरी लिंकन को यह जगह स्वर्ग जैसी लगती थी। मगर धीरे-धीरे अपने स्वभाव के अनुसार उन्हें उसकी हर चीज से शिकायत होने लगी।



लिंकन पुत्र को पढ़ाते हुए

ऐसा इसलिये भी था कि वहीं उनकी एक बहन बड़े ठाठ से एक दोमंजिला मकान में रहती थी। मैरी लिंकन जब भी अपने पति लिंकन से घरेलू मामलों में बात चीत किया करती तो लिंकन का आमतौर पर यही जवाब होता—"मैं नहीं जानता। इन सब मामलों में तुम्हारी समझ ज्यादा अच्छी है।"

मगर इस बार जब मैरी लिंकन ने उनसे मकान के बारे में शिकायत की तो लिंकन का यही जवाब था—"यह मकान हमारे लिये काफी है। यहाँ जगह भी काफी है, फिर मेरी मासिक आमदनी 500 डालर है और इसमें कुछ ज्यादा इजाफा नहीं हुआ। इसलिये इसके विस्तार के बारे में तो कम से कम नहीं सोचना चाहिये।"

लेकिन, मैरी लिंकन की बात से सहमत नहीं थी। तब बात को टालने के लिये मैरी को राजी करने के लिये लिंकन ने एक ठेकेदार को बुलवाया और मकान में चाहे गये बदलाव पर आने वाले खर्च के बारे में पूछा।

ठेकेदार ने लिंकन को अनुमानित खर्च बता दिया। लिंकन ने मैरी को समझाया कि इतना खर्च सम्भव नहीं है। लिंकन निश्चिंत हो गये कि मैरी उनकी बात से सहमत हो गयी है। वह अपने काम में लग गये। इस बीच उन्हें बाहर जाना पड़ा। उनके बाहर जाते ही मैरी ने एक दूसरे ठेकेदार को बुलवाया और तत्काल उन्होंने उसे बनवाने का ऑर्डर दे दिया।

लिंकन अपनी यात्रा से वापस लौटे तो अपने मकान को पहचान नहीं पाये। उन्होंने पड़ोस में पूछा कि लिंकन का मकान कौन सा है?

लिंकन अपने मुवक्किलों से ज्यादा फीस वसूल नहीं करते थे। क्योंकि ज़्यादातर मुवक्किल गरीब थे। इसलिए वह उनसे अपनी फीस कम ही लिया करते थे। एक बार उनके मुवक्किल ने उन्हें 25 डॉलर भेज दिये। इस पर उन्होंने महज़ 10 डालर स्वीकार करते हुए कहा, "आप मेरे प्रति कुछ ज़्यादा ही उदार हो गये थे।"

एक और प्रकरण उनके पास आया। यह करीब एक हज़ार डालर की प्रॉपर्टी का मामला था। प्रॉपर्टी एक पागल लड़की की थी। बात तय हो गयी थीं। उस समय लिंकन का साथी कार्ड लेमन था। लिंकन ने यह मामला सुनवाई के पन्द्रह मिनटों में ही जीत लिया। लेमन खुश-खुश लिंकन के पास आया और फीस बांटने लगा। इस पर लिंकन अपना आपा खो बैठे। लेमन ने कहा, "पैसे उस पागल लड़की के भाई ने दिये हैं और प्रकरण जीत कर वो लोग काफी संतुष्ट हैं।"

"इससे क्या होता है?" लिंकन भड़क कर बोले, "वह तो इसलिए खुश हैं कि प्रकरण जीत गये। पैसे तो गरीब आदमी की जेब से ही जा रहे हैं! मैं इस तरह उसे ठगने से भूखा रहना ज़्यादा पसंद करता हूँ। तुम तत्काल उन्हें कम से कम आधे पैसे वापस कर दो। वरना मैं इनमें से एक सेन्ट भी नहीं लूंगा।"

लिंकन के ऐसे विचार और उनके जीवन जीने का यही अन्दाज़ था। वह किसी से भी किसी भी तरह आये पैसे का प्रयोग ठीक नहीं समझते थे। ऐसा वह मात्र दिखाने के लिए नहीं करते थे, यह उनका स्वभाव था।

इस सम्बन्ध में उनका एक और मामला बहुत चर्चित हुआ था। वह था एक सैनिक आर्मस्ट्रांग की विधवा की पेंशन का प्रकरण; जो एक एजेंट लिंकन के पास लेकर आया था। लिंकन ने मुकदमा लड़ा और जीता। लेकिन उन्होंने उस विधवा से एक भी पैसा नहीं लिया। बल्कि उसके रुकने और भोजन का इन्तज़ाम किया। यहाँ तक कि उसके लौटने की व्यवस्था भी की।

कुछ बरस के बाद वह फिर एक बड़ी मुसीबत में फंस गयी। उसे लिंकन की याद आयी। हुआ यह कि आर्मस्ट्रांग का बेटा शराब पीकर झगड़ा करने और फिर हत्या करने के मामले में फंस गया था। उसने लिंकन को अपनी कथा सुनाई। लिंकन ने प्रकरण का गहराई से अध्ययन किया और अदालत के सामने प्रभावशाली ढंग से अपनी दलील रखी। इसका प्रभाव यह हुआ कि कोर्ट ने जैक आर्मस्ट्रांग को रिहा कर दिया।

श्रीमती आर्म स्ट्रांग ने लिंकन का आभार मानते हुए इसके एवज में लिंकन से 50 एकड़ ज़मीन लेने की प्रार्थना की। उसने कहा कि उसके पास इस जमीन के अलावा देने के लिये और कुछ नहीं है। इस पर लिंकन ने कहा—

"आंटी, वह वक्त भी था जब मेरे पास पहनने लायक कपड़े भी नहीं थे। आप लोगों ने बचपन में मेरी कितनी मदद की है। मैं आपका ऋणी हूँ और किसी भी तरह से आपके उस एहसान का बदला नहीं चुका सकता हूँ। मुझे क्षमा करें। मैं आपसे एक पैसा भी नहीं ले सकता हूँ।"

इस पर श्रीमती आर्मस्ट्रांग ने उनकी लाख मिन्नतें कीं, लेकिन लिंकन ने उनसे कोई शुल्क नहीं लिया।

यही कारण था कि मैरी टोड को कम से कम पैसों में घर का खर्च चलाना पड़ता था। मैरी शहर भर से सेंट लाती और उसमें से थोड़ा निकाल लेती। फिर बाद में कोई न कोई बहाना करके उन्हें वापस कर देती। कुछ दिन

तक मैरी का दांव चल गया। लेकिन बाद में दुकानदार समझ गये कि मैरी ऐसा करती है। इसके बाद कई तो लौटाई शीशियों पर परची लगाने लग गये कि इसे मैरी लिंकन ने वापस लौटाया है।

एक बार लिंकन के एक दोस्त ने 'स्प्रिंगफील्ड रिपब्लिकन' नाम से एक अखबार निकाला। उसने लिंकन से उस अखबार का ग्राहक बनने का अनुरोध किया। लिंकन ने उनके अनुरोध को स्वीकार कर लिया। दूसरे दिन घर की दहलीज़ पर एक नया अखबार देखते ही श्रीमती लिंकन उबल गयीं। उन्होंने लिंकन से पूछा—"फिर एक नया अखबार! हद है कचरा बटोरने की! ऊपर से फिजूलखर्ची अलग।"

उनकी झाड़ सुन कर लिंकन ने कहा—"मैंने अखबार डालने के लिये नहीं कहा।"

"फिर ये अखबार कहाँ से आ गया और कैसे आ गया?" मैरी ने बहस करते हुए पूछा।

"यह मेरे एक दोस्त का अखबार है।" लिंकन उसे बताते हुए बोले—"उसने मुझसे ग्राहक बनने की बात कही थी और मैंने हामी भर दी थी। मुझे क्या पता था कि वह अगले ही दिन से मेरे घर अखबार डालना आरम्भ कर देगा।"

"अरे वाह! ऐसे कैसे! मैं उसे पत्र लिखती हूं।" उन्होंने यही समझा कि मैरी गुस्से में ऐसा कह रही है—वह सच में ही संपादक को पत्र लिखने वाली नहीं है।

मगर मैरी ने जो कहा था, वह कर दिखाया। उन्होंने अखबार के सम्पादक को उसके खिलाफ बड़े तीखे अंदाज़ में पत्र लिखा और उसके पास भेज दिया।

पत्र की भाषा और उसके तीखेपन से सम्पादक नाराज़ हो गया और उसने उनके पत्र को अखबार में अपनी टिप्पणी के साथ छाप दिया। इस अवमानना से लिंकन को बहुत बुरा लगा। हालांकि उन्होंने सम्पादक से कहा कि यह एक तरह की गलतफहमी है।

लिंकन और मैरी टोड के विवाह के तेइस वर्षों तक लिंकन का कोई भी रिश्तेदार उनके घर नहीं आया था। वैसे कहने को लिंकन की सौतेली माँ उनके सबसे नज़दीक थी। उन्होंने भी कभी लिंकन का घर भीतर से नहीं देखा था। लिंकन ही उनसे मिलने के लिए गाहे-बगाहे उनके घर चले जाया करते थे। लिंकन की दूर की एक चचेरी बहन थी, जिसका नाम हैरियट हेक्स था। वह बड़ी प्यारी और संवेदनशील लड़की थी। लिंकन उसे बहुत प्यार किया करते थे। वह उसे अपने घर ले आये ताकि वह स्प्रिंगफील्ड से अपना स्कूल पूर्ण कर सके। लिंकन जितना उससे लाड़ करते थे, श्रीमती लिंकन उससे उतना ही नाराज़ होती थी। उनके जाते ही मैरी उससे जम कर काम करवाती थी। मैरी ने उसे एक प्रकार से घर की दासी बना डाला। लिंकन ने इसका विरोध किया और कहा—"यह अन्याय है।"

मैरी ने इस पर पूरा घर सिर पर उठा लिया और घर में कलह बढ़ गयी।

मैरी के दुर्व्यवहार की वजह से कोई भी घरेलू नौकर टिक नहीं पाता था। बल्कि वास्तविकता तो यही थी कि कोई भी उनके घर में काम नहीं करना चाहता था। चाहे उसे कितनी भी सुविधाएं देने की बात की जाती, मगर कोई राज़ी ही नहीं होता था।

श्रीमती लिंकन के यहाँ घर में काम करने के लिये एक बार एक नयी नौकरानी आयी, जोकि स्प्रिंगफील्ड के एक चर्चित चार्ट लंबूजैक या कहें लंबूपैक की भतीजी थी। लंबूपैंक एक मूर्ख सा आदमी था और उसके दोस्त भी उसी के समान थे। उसके पास एक टूटी-फूटी वैगन थी। इसमें बैठ कर वो लोग यहाँ-वहाँ शेखी बघारते फिरते थे और लोगों पर रौब भी गांठते थे। श्रीमती लिंकन के घर काम करते हुए उस नौकरानी को अभी कुछ ही दिन हुए थे कि उसमें और श्रीमती लिंकन ने जबरदस्त झगड़ा हो गया और श्रीमती लिंकन ने उसे घर से भगा दिया।

नौकरानी लड़की रोती हुई अपने चाचा के पास पहुँची और उसने श्रीमती लिंकन की उससे खूब शिकायत की। उसकी बात सुनते ही लंबूजैक अपने चमचों के साथ श्रीमती लिंकन के घर पहुँच गया और उसने उनसे कहा—"मैं अपनी भतीजी का सामान लेने आया हूँ। वही भतीजी, जो तुम्हारे यहाँ काम करती थी और तुमने जिसका सामान अपने पास रख कर घर से भगा दिया है।"

लंबूजैक के मुंह से इतना सुनना था कि मैरी टोड आपे से बाहर हो गयी। लंबूजैक को इतनी खरी खोटी सुनायी कि वह हक्का-बक्का रह गया। यही नहीं, उसने काम करने वाली लड़की को खूब कोसा और अन्त में बोली—"अगर अपनी खैरियत चाहते हो तो चुपचाप यहाँ से चले जाओ और खबरदार! दोबारा इस घर में कदम रखने की हिम्मत मत करना! वर्ना तुम्हारे हक में अच्छा नहीं होगा।"

यह कहने के साथ ही श्रीमती लिंकन ने धाड़ से दरवाज़ा बंद कर लिया और जैक व उसके बाहर खड़े साथी इस बिजली को चमकते देखते रह गये, जो अचानक दरवाज़ा बंद करने से अन्दर चली गयी थी।

यह जैक का सरासर अपमान था, जो उसके साथियों के सामने हुआ था। साथियों के उकसाने पर वह क्रोध में उबलता हुआ लिंकन के दफ्तर जा पहुँचा।

लिंकन ने उससे पूरा वाकया सुना और उस पर दुःख प्रकट करते हुए कहा—"यार, तुम मेरी पत्नी को कुछ मिनट सहन नहीं कर पाये! मुझे देखो, उसे पिछले पन्द्रह सालों से झेल रहा हूँ।"

इस पर जैक और उसके साथी झेंप गये और उन्होंने वहाँ आकर लिंकन से ऊंची भाषा में बात करने के लिए क्षमा याचना की।

श्रीमती लिंकन ने एक बार फिर कोशिश करके एक नौकर रख लिया। वह एक कम उम्र की छोटी लड़की थी। मगर पड़ोसी इस बार चौंक गये। क्योंकि उनके विचारानुसार श्रीमती लिंकन के घर में कोई भी नौकर दो महीने से ज़्यादा नहीं टिक पाता था। जबकि उस लड़की को काम करते

हुए वहाँ दो बरस हो चुके थे। बाद में पता चला कि इसकी वजह श्रीमती लिंकन नहीं बल्कि खुद लिंकन थे। उन्होंने उस लड़की को काम पर रखते हुए कहा था—"घरेलू काम के अलावा तुम्हें एक काम और भी करना होगा।"

"कौन सा काम?"

"तुम्हें मेरी पत्नी के क्रोध को सहन करना होगा।" लिंकन ने कहा—"और इसके बदले मैं तुम्हें हर सप्ताह एक डालर अलग से दूँगा।"

लड़की मान गयी थी।

श्रीमती लिंकन जब भी भड़कती तो वह सिर झुका कर चुपचाप सुन लेती। न कभी पैर पटकती और न ही अपनी तरफ से कुछ कहती थी। जवाब देना तो जैसे उसने सीखा ही नहीं था। इस लड़की का नाम मारिया था। मारिया के इस व्यवहार से भी श्रीमती लिंकन की आदत में कोई अन्तर नहीं आया। वह बात-बिना बात अकसर चीखती-चिल्लाती रहती थीं।

ऐसे ही एक दिन किसी और कमरे से श्रीमती लिंकन मारिया पर चीख रही थीं। मारिया उस समय किचन में अकेली थी और बर्तन साफ कर रही थी। लिंकन तब घर में ही थे। वह मारिया के पास आये। उसका कंधा थपथपाया और कहा—"इसी प्रकार शान्ति से अपने काम में लगी रहो। अपना साहस कभी न खोना।"

मारिया ने मुंह से कुछ न कहा, केवल सिर को हिलाकर उनकी बात को स्वीकृति दी। इसके बाद भी वह कई बरस तक लिंकन के घर पर रही। फिर उसका विवाह हो गया। एक बार वह वाशिंगटन में लिंकन से मिली। लिंकन उससे मिल कर बहुत प्रसन्न हुए। अतीत की सैंकड़ों बातें हुईं। वे चाहते थे कि रात के भोजन के समय वे साथ रहें। मगर मैरी ने उसे फलों की टोकरी पकड़ा कर वहाँ से चलता कर दिया।

श्रीमती लिंकन करीब-करीब झगड़ालू स्वभाव की थी। वह व्यवहार से कहीं से भी सभ्य नहीं थीं। कभी-कभी तो उनका व्यवहार इतना असभ्य हो जाता था कि लगता था कि कहीं वह पागल तो नहीं हो गयी हों। वह एक हद तक निर्दयी थीं। उनके निर्दयता पूर्ण व्यवहार को देखते हुए ही हर्नडन ने उन्हें जंगली का नाम दिया था। राष्ट्रपति के सचिव जान उन्हें एक यही गाली से सम्बोधित करते। जेम्स गोर्ली सोलह साल तक उनके पड़ौसी रहे। उनका विचार था कि श्रीमती लिंकन के भीतर कोई शैतान रहता है।

श्रीमती लिंकन को जब क्रोध आता था तो वह इतनी जोर से चीखती थीं कि उनकी आवाज कई घरों तक जाती थी। उस आवाज को सुनकर ऐसा लगता था कि जैसे कोई भद्दी आकृति वाला विशालकाय दैत्य उन्हें मारने आ रहा है। समय के साथ-साथ उनका यह बरताव बढ़ता ही गया। लिंकन के दोस्तों को श्रीमती लिंकन के व्यवहार को देखकर उस पर दया आती थी। लेकिन वे करते भी तो क्या?

लिंकन आधी रात को भी बाहर टहलते दिखायी देते। वो पूरे तौर से निढाल होते, उनका सिर झुका होता और माथे पर चिंता की ढेर सारी लकीरें

होती थीं। कई बार वह कह चुके थे—"मुझे घर जाने से नफरत हो गयी है।"

लिंकन की हालत के बारे में हर्नडन ने लिखा है—"लिंकन आमतौर से न जल्दी उठते, न जल्दी दफ्तर आते थे। वे लगभग 9 बजे दफ्तर आते थे, जबकि मैं उनसे करीब एक घंटे पहले दफ्तर पहुँच जाता था। एक बार तो वह दिन निकलने से पहले ही दफ्तर पहुँच गये। मैंने उन्हें दफ्तर में देखा तो तत्काल समझ गया कि घरेलू झगड़े में ज्वार आया होगा। उन्होंने मेरे आने पर भी सिर नहीं उठाया था। केवल सिर हिलाकर मेरे अभिवादन का जवाब दिया। उनके झुके हुए चेहरे और कमरे में पसरी चुप्पी से मैं उनका दर्द पढ़ सकता था। काफी देर तक सन्नाटा नहीं टूटा तो यहाँ-वहाँ कागज बटोरते हुए मुझे लगा कि सन्नाटा मुझे दबोच रहा है। मुझे कहीं चला जाना चाहिये। मैं गया भी, लगभग एक घंटे के बाद मैं वापस आया तो लिंकन उसी तरह असहाय वेदना के चिन्ह लिये बैठे थे। रात घिर आयी, लेकिन लिंकन दफ्तर में ही थे। कम ही लोगों ने लिंकन को पेड़ों के घने सायों के बीच दर्द में डूबे देखा होगा। यदि कोई उनके उस दर्द की बात को झुठलाना चाहे, तब मैं यही कह सकता हूँ कि वो लोग वास्तविकता को जानते ही नहीं हैं।"

ऐसा भी हुआ जब श्रीमती लिंकन ने सारी सीमायें तोड़ दीं। एक बार पहले तो वह किसी बात पर चिल्लाती रहीं, फिर अपने आपको सम्भाल न पाने पर उन्होंने निर्दयता के साथ लिंकन पर प्रहार कर दिया। इस बार लिंकन अपमान और चोट के दर्द से तिलमिला उठे। उन्होंने कहा—

"बस! अब बहुत हो गया। तुम इसी वक्त यहाँ से निकल जाओ।"

यह कहने के बाद उन्होंने मैरी टोड की बाह पकड़ी और उसे खींचते हुए किचन से मुख्य द्वार तक लाये और फिर क्रोध में भर कर कहा—"यह रहा दरवाजा और वह रहा तुम्हारा रास्ता! निकल जाओ यहां से। तुम मेरे घर को नरक बना चुकी हो और जिंदगी की दुश्मन बन गयी हो।"

लिंकन, जो कि सब्र और धैर्य की मूर्ति थे, उनके भी सब्र का बांध टूट गया था। इन सारी बातों से यही साबित होता है कि लिंकन अपने वैवाहिक जीवन से कभी प्रसन्न नहीं रहे।

❑



लिंकन अमेरिकी संसद में

राजनीति में प्रवेश के लिये लिंकन ने व्हिग पार्टी को चुना। व्हिग पार्टी के प्रतिनिधि के तौर पर ही वह संसद तक पहुँचे। संसद तक पहुँचने में उनके मित्रों और शुभचिंतकों ने जो उनका साथ दिया, उसके लिये वे सदा उनके आभारी रहे। सांसद बनने के बाद भी वह अधिक खुश नहीं थे तो इसका कारण यही था कि वह इस रूप में भी कुछ नहीं कर सकते थे। इसकी मुख्य वजह यही थी कि व्हिग पार्टी के सांसदों की संख्या, डेमोक्रेटिक सांसदों की संख्या के मुकाबले कम थी। राष्ट्रपति भी डेमोक्रेटिक ही था और सरकार भी उन्हीं की थी। इलिनाय राज्य से प्रतिनिधि सभा में लिंकन एकमात्र प्रतिनिधि थे। व्हिग पार्टी एक नई पार्टी थी, जो कि अभी अपना आधार बनाने में लगी थी, जबकि डेमोक्रेटिक पार्टी पुरानी थी।

लिंकन अपनी पार्टी को रचनात्मक नेतृत्व देने की ताकत रखते थे। व्हिग नेता क्ले और वेब्स्टर पुराने पड़ गये थे, उनसे कुछ नयापन लाने की चाहत करना बेकार था। यही नहीं, व्हिग पार्टी के मुद्दे भी पुराने पड़ गये थे, जैसे राष्ट्रीय वोट सम्बन्धी, आंतरिक विकास तथा संरक्षण कर प्रणाली। अपने प्रतिनिधि सभा के दो वर्ष के कार्यकाल में लिंकन व्हिग पार्टी में नया नेतृत्व तथा नये सामाजिक मुद्दे लाने की आशा रखते थे। कहने का सीधा सा मतलब यही है कि अब लिंकन की सोच का दायरा स्थानीय न होकर राष्ट्रीय बन गया था। इसके लिये उन्होंने नये विचारों के नेता जनरल टेलर का चयन किया। वह जनरल टेलर को राष्ट्रपति पद के लिये व्हिग पार्टी के नये प्रत्याशी के रूप में आगे लाये और पार्टी के नये सिद्धान्तों की भी व्याख्या की।



लिंकन अमेरिकी संसद में

पहले काम में तो लिंकन को सफलता हासिल हुई—जब कि दूसरे काम में उनके हाथ निराशा लगी। अपने दो वर्ष के कार्यकाल के बाद वे वाशिंगटन छोड़कर इलिनाय वापस चले आये। वे अपने इस कार्यकाल से स्वयं संतुष्ट नहीं थे, क्योंकि व्हिग पार्टी में कोई आधारभूत परिवर्तन लाने में वह असमर्थ रहे थे। उन्हें थोड़ी बहुत प्रशंसा मिली तो उनकी अपनी वक्तृत्व शैली की वजह से मिली।

लिंकन वाशिंगटन में श्रीमती स्प्रिंग के बोर्डिंग हाउस में रहने लगे। यह बोर्डिंग हाउस राजधानी के पूर्व में स्थित था। उस बोर्डिंग हाउस में उनके अलावा आठ अन्य सांसद भी निवास करते थे। उनमें गिडिंग्स प्रमुख थे, जोकि ओहियो राज्य से सांसद थे और गुलाम प्रथा के प्रखर आलोचक थे।

लिंकन अपने व्यक्तित्व के कारण वाशिंगटन में आकर्षण का केन्द्र बन गये। वे वहां भी लोगों से हंसी मजाक और किस्से कहानियां सुनाकर उनका मनोरंजन किया करते थे। उनका सिद्धान्त भी यही था कि काम के समय काम, खेल के समय खेल, और मनोरंजन के समय मनोरंजन करना चाहिये। वाशिंगटन एक बड़ा शहर था। उसकी आबादी भी काफी ज्यादा थी, लगभग 40 हजार लोग वहां निवास करते थे। इनमें से 4 हजार लगभग गुलाम थे तथा 8 हजार के लगभग काले अफ्रीकी शामिल थे, जो कि स्वतन्त्र थे।

वाशिंगटन में ज्यादातर सांसद अकेले ही रहते थे, जबकि लिंकन वहां अपने परिवार के साथ रहते थे। मैरी और उनके बच्चों को वहां रहने तथा वहां के वातावरण के अनुसार ढलने में काफी कठिनाई हुई। क्योंकि लिंकन परिवार ने अभी तक जो शहर देखे थे, उनमें से यह सबसे बड़ा शहर था। इन लोगों ने पहली बार व्हाइट हाउस को देखा, जो कि इनके द्वारा देखी गयी सबसे भव्य इमारत थी। लिंकन के पास अपने बच्चों तथा परिवार को देने के लिये वक्त भी कम था। इन सारी बातों से उकता कर मैरी अपने बच्चों को साथ लेकर केन्टुकी, अपने पिता के पास चली आयी। वैसे भी वाशिंगटन में ऐसे सांसद नाम मात्र को ही थे जो परिवार को लेकर वहाँ आये थे।

परिवार के केन्टुकी चले जाने के बाद लिंकन अपना पूरा समय प्रतिनिधि सभा को देने लगे। वे डाक विभाग के डाक मार्गों की कमेटी के सदस्य बन गये। फिर उन्हें उनकी कुशलता के चलते युद्ध विभाग की व्यय कमेटी में भी रखा गया। रेल लाइनें बिछाने सम्बन्धी काम में उनकी रुचि इलिनाय के जमाने से थी। उनका भौगोलिक अध्ययन भी व्यापक था। यही कारण था कि उन्होंने दूसरे सांसदों को भी इस आशय के दस्तावेज तैयार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इतना ही नहीं, सरकार से बातचीत करने में भी वे व्हिग पार्टी के सांसद भी सहायता करते थे।

पार्टी के प्रति पूर्ण समर्पण

लिंकन अपना भाषण स्वयं लिखते थे, उनकी प्रतियां तैयार करते। दूसरे सांसदों और सरकार से होने वाली बातचीत के मुद्दे भी वही तैयार करते थे। इस प्रकार उनका अधिकांश समय पढ़ने-लिखने में ही बीत जाता था। इस काम के लिये उनके पास कोई सहायक भी नहीं था, इसीलिये उन्हें यह सारा काम खुद ही अपने हाथ से तैयार करना होता था।

पत्नी के केन्टुकी जाने के बाद लिंकन अपना सारा समय संसदीय कार्यों में देने लगे। क्योंकि अब वह पूरी तरह से स्वतन्त्र थे। प्रतिनिधि सभा में उनकी उपस्थिति सराहनीय थी। उन्होंने पोस्ट आफिस कमेटी की रिपोर्ट सांसद में पेश की। वे इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखते थे कि संसद में उनके भाषण की प्रतियाँ उनके चुनाव क्षेत्र में अवश्य पहुँचें। इसकी व्यवस्था का उन्होंने पूरा प्रबंध कर रखा था। इसके लिये दो वर्षों में उन्होंने 7,580 प्रतियाँ वहाँ भेजी थीं। संसद में लिंकन का सम्पर्क बड़े राष्ट्रीय नेताओं की

बजाये छोटे स्थानीय व्हिग नेताओं से अधिक रहा, जो बाद में चलकर लिंकन के घनिष्ठ मित्र बने।

व्हिग पार्टी के लोग इस बात को लेकर परेशान थे कि आने वाले चुनाव में किस प्रकार डेमोक्रेटिक पार्टी के नेता को राष्ट्रपति बनने से रोका जाये। यह चुनाव 1848 में होने थे। व्हिग पार्टी की चिंता का मुख्य कारण यह था कि वर्तमान राष्ट्रपति जो कि डेमोक्रेटिक पार्टी से सम्बन्धित थे, असाधारण रूप से लोगों में प्रसिद्ध थे। उनकी सफलताएं शिखर पर थीं। ऐसे में व्हिग पार्टी के पास केवल एक ही मुद्दा था और वह था मैक्सिको युद्ध का थोपा जाना। यही वह मुद्दा था जिसे उठाकर डेमोक्रेटिक पार्टी को नीचा दिखाया जा सकता था। यह युद्ध तत्कालीन राष्ट्रपति पोक की गलत नीतियों का नतीजा था। मैक्सिको के स्पेनी साम्राज्य के विरुद्ध अमेरिका का तनाव 1836 से आरम्भ हुआ था। मैक्सिको साम्राज्य टैक्सास से कैलिफोर्निया तक फैला हुआ था। सन् 1836 में टैक्सास के लोगों ने स्पेनी साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था और वे विजयी भी हुए।

सन् 1847 में टैक्सास संयुक्त राज्य अमेरिका का सदस्य बन गया फिर अमेरिकी सेना ने कैलिफोर्निया और मैक्सिको को भी अपनी परिधि में शामिल कर लिया। उस समय संयुक्त राज्य अमेरिका में स्वायत्तता थी, जबकि उसके मुकाबले में स्पैनी साम्राज्य निरंकुश था।

राष्ट्रपति पोक ने दिसम्बर 1847 के संसद अधिवेशन में संसद से युद्ध समाप्ति हेतु अतिरिक्त धन की मांग की। उन्होंने कहा कि इसके बदले देश को न्यू मैक्सिको तथा कैलिफोर्निया का विशाल क्षेत्र मिला है। उनका यह भी कहना था कि युद्ध की शुरूआत मैक्सिको ने टैक्सास पर हमला करके की है।

लिंकन ने राष्ट्रपति पोक की मांग का विरोध किया। इसके लिये उन्होंने 22 दिसम्बर 1847 को संसद में प्रस्ताव रखा कि राष्ट्रपति इस बात का हिसाब दें कि अमेरिकी नागरिकों का जो खून बहा, वो हमारी भूमि के थे या नहीं। लिंकन यह साबित करना चाहते थे कि विवाद इस बात को लेकर उपजा कि अमेरिकी सेना ने एक मैक्सिकन बस्ती पर बिना उकसावे के हमला बोल दिया।

3 जनवरी 1848 को मेसाच्युसेट के सांसद जार्ज अंशपन ने एक प्रस्ताव पेश करके लिंकन के प्रस्ताव को और बल दे दिया। जार्ज अंशपन ने यह प्रस्ताव पेश किया कि यह युद्ध अमेरिका के राष्ट्रपति ने अनावश्यक रूप से तथा असवैधानिक तरीके से देश पर थोपा। इस प्रस्ताव के समर्थन में व्हिग पार्टी के 85 सांसदों ने हस्ताक्षर किये। अपनी बात को साबित करने के लिये लिंकन ने संसद में एक लम्बा और सारगर्भित भाषण देते हुए मांग की कि सरकार को चाहिये कि वह युद्ध से सम्बन्धित सारी जानकारी संसद में प्रस्तुत करे।

लिंकन को यह आशा थी कि युद्ध का मुद्दा उठाने से वे प्रतिनिधि सभा में अपना एक विशेष स्थान बनाने में सफल हो जायेंगे। परन्तु उनकी आशाओं

पर तब पानी फिर गया जब उन्हें पता चला कि वाशिंगटन में किसी ने भी उनके प्रस्तावों की ओर ध्यान नहीं दिया। ऐसा इस दुष्प्रचार के चलते हुआ कि युद्ध का कदम सरकार ने उठाया है यानि अमेरिका ने उठाया है और लिंकन इसका विरोध कर रहे हैं। इसका आशय मिसौरी के एक सांसद की राय में देशभक्ति का विरोध था। इसे मानते हुए लिंकन को तरजीह नहीं दी गयी। सदन ने उनके प्रस्ताव पर किसी प्रकार की बहस करना भी उचित नहीं समझा; अलबत्ता उनके अपने प्रान्त इलिनाय के अखबारों ने इस बावत छापा। मजे की बात यह रही कि उनकी अपनी पार्टी व्हिग पार्टी ने भी लिंकन के युद्ध विरोधी बयान को लोकतान्त्रिक संदर्भों में अनुचित माना।

व्हिग पार्टी का मानना था कि लिंकन ने यह कदम अपनी राजनीतिक अदूरदर्शिता के तहत उठाया था। ऐसा करने से अमेरिका की जनता में व्हिग पार्टी की छवि खराब हुई। पार्टी का यह भी मानना था कि विदेशी हमलों की समाप्ति के लिये यदि हमारे देश की सेना दुश्मन पर आक्रमण करती है तो न तो वह असवैधानिक है और न ही अनुचित है। इससे हर ओर लिंकन की अनदेखी हुई। स्वयं राष्ट्रपति पोक ने उनके सवालों का कोई उत्तर नहीं दिया। यहाँ तक कि अपने सम्बोधन में उन्होंने लिंकन का नाम भी नहीं लिया। किसी राष्ट्रीय पत्र में लिंकन के भाषण का जिक्र तक नहीं किया गया।

पार्टी की भीतरी सतहों का विरोध लिंकन को साल गया। बाद में उन्होंने अपनी सफाई में कहा—"यह सही है कि मैंने राष्ट्रपति पोक की आलोचना की थी। मगर इसलिये कि उन्हें युद्ध आरम्भ नहीं करना चाहिये था। लेकिन युद्ध आरम्भ होने के बाद उसकी आपूर्ति बाधित कर दी जाये, मैंने ऐसा नहीं कहा था। यूँ भी अब ये बीते समय की बात है। युद्ध का पटाक्षेप हो चुका है। शान्ति समझौते की प्रक्रिया चल रही है। इसलिये इन बातों को अब तूल नहीं देना चाहिये।"

लिंकन के इस मुद्दे को लेकर व्हिग पार्टी की दरारें उभर कर सामने आ गयीं। उनमें से एक आदमी स्थापित मान्यताओं की वकालत करता था, अन्य सभी वो लोग थे जो उम्र एवं विचार में पक्की आयु वाले थे और उनका केवल एकसूत्रीय कार्यक्रम ही था, वह था राजनीति के सिंहासन पर काबिज रहना। लेकिन पार्टी में केवल प्रौढ़ पुरुष ही नहीं थे, उनमें युवा वर्ग भी शामिल था। लिंकन को युवा वर्ग के लोग बहुत पसंद करते थे। वे उनकी तर्क शैली से प्रभावित थे। उन युवाओं की सोच यही थी कि लिंकन अपने तर्कों पर सही साबित हों। लिंकन के समर्थक युवा वर्ग को 'युवा इंडियन्स' की संज्ञा दी जाती थी। इन युवा इन्डियन्स के अनुसार, वे जनता को यह समझाने में कामयाब थे कि उन्होंने मात्र युद्ध प्रारम्भ करने के लिये राष्ट्रपति का विरोध किया था।

चयन में भूमिका उम्मीदवार राष्ट्रपति

इन युवा इन्डियन्स की नीति यह थी कि युद्ध में सबसे अधिक सफल जनरल जाचरी टेलर को राष्ट्रपति पद के लिये व्हिग पार्टी के प्रत्याशी के रूप में उतारा जाये, ताकि लोगों की गलत धारणा दूर हो कि व्हिग पार्टी के लोग युद्ध के विरोधी हैं। यह सारी नीति इन युवा इन्डियन्स की थी, जिसे प्रस्तुत करने के लिये साहसी लिंकन को आगे कर दिया गया।

इसके लिये लिंकन राजी हो गये। संसद में वे पोक का विरोध करते रहे। उनकी राजनीति यही थी कि प्रतिनिधि सभा में युद्ध के मुद्दे को गरमाये रखा जाये और युद्ध के असली नायक जनरल जाचरी टेलर की स्थापना की जाये। इसके लिये लिंकन ने भ्रमण किया और फिलाडेल्फिया के व्हिग पार्टी के राष्ट्रीय अधिवेशन में इस बात की मंजूरी ले ली कि अगले राष्ट्रपति के चुनाव में टेलर ही पार्टी के प्रत्याशी होंगे। इसके साथ ही यह तय हो गया कि परंपरावादी व्हिग पार्टी के बूढ़ों से कमान छीन कर युवा वर्ग के हाथों में दे दी जाये।

मैक्सिको तथा अमरीकी सेनाओं का युद्ध अप्रैल 1846 में आरम्भ हुआ था, जिसमें टेलर ने उत्तरी मोर्चा सम्भाला था और मैक्सिकोनी सेना को देश से बाहर भगा दिया था। जनरल स्काट ने दक्षिणी मोर्चा सम्भाला और मैक्सिकन सेना का पीछा करते हुए मेक्सिको नगर पर भी कब्जा कर लिया था। युद्ध की समाप्ति पर ही लिंकन ने एक ओर संसद में राष्ट्रप्रति पोक के विरुद्ध आक्रमण तेज कर दिया और दूसरी ओर युद्ध के हीरो रहे जनरल टेलर को राष्ट्रपति पद के लिये उतारा। हालांकि टेलर सार्वजनिक कार्यों से अनभिज्ञ थे तथा उन्हें किसी प्रकार का राजनीतिक अनुभव भी नहीं था, फिर भी लिंकन को विश्वास था कि युद्ध में लोकप्रिय हुए टेलर ही एक ऐसे प्रत्याशी हैं जो व्हिग पार्टी को राष्ट्रपति चुनाव में जीत दिला सकते हैं।

इसके साथ ही तय हुआ कि व्हिग पार्टी के लोग सभी जगहों पर स्थानीय मसलों पर राष्ट्रीय मुद्दों को तरजीह दें। पार्टी के नौजवान भी यही चाहते थे कि पार्टी अपना पुराना राग अलापना बंद कर दे और नये राष्ट्रीय मुद्दों को लेकर आगे बढ़े। लिंकन का कहना था, टेलर जनाकांक्षाओं के अनुरूप काम करेंगे। वे सरोकारी होंगे और छोटे-बड़े मुद्दों पर संसद को साथ लेकर चलेंगे। इतना ही नहीं, टेलर के राष्ट्रपति बनने पर वे अपने विशेषाधिकार 'वीटो' का उपयोग भी कम से कम करेंगे। जनहित में जैसा जनता चाहेगी, वैसा ही होगा। देश के नौजवानों की इच्छा के अनुरूप वे दास प्रथा को खत्म करने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

लिंकन ने टेलर के चुनाव प्रचार में यह भी कहा कि युद्ध साम्राज्यवादी शोषण है। उन्होंने मांग की कि पोक यह बतायें कि जहाँ मैक्सिको में पहला खून बहा, क्या संयुक्त राज्य अमेरिका वहाँ का मालिक है? लिंकन ने इसी दौरान क्रान्ति के अधिकार का भी समर्थन किया। उसने घोषणा की कि देश के किसी भी भाग में, कहीं के भी लोगों के यह अधिकार होगा कि वे

अपने मौलिक अधिकारों के लिये क्रान्ति कर सकें।

'क्रान्ति' अर्थात बदलाव (यहाँ लिंकन के विचार कार्ल मार्क्स से मिलते हैं) यदि जनता चाहे तो अपने अनुकूल सरकार बनाने में अपनी भूमिका सुनिश्चित कर सकती है। क्रान्ति भी जनता का अधिकार है।

27 जुलाई को प्रतिनिधि सभा में भावी राष्ट्रपति पर विचार व्यक्त करने के लिये कुछ सांसदों को मौका दिया गया। इस विषय पर बोलने के लिये लिंकन का नम्बर आठवां था। सात सांसद बोल चुके थे। एक ही विषय पर विचार सुन कर श्रोता उकता चुके थे। उनकी बारी आने तक लिंकन को एहसास हो चुका था कि लोग बैठे-बैठे उकता चुके हैं और अब वह उठना चाहते हैं। वक्त की नजाकत देखते हुए उन्होंने अपने तरकश के चुटकलों और व्यंगों का ऐसा सहारा लिया कि सांसद मंत्रमुग्ध होकर उन्हें आधे घंटे तक गुदगुदाते हुए सुनते रहे। उन्होंने डेमोक्रेटिक उम्मीदवार की आलोचना बड़े ही रोमांचक और हास्य व्यंग से भरे अंदाज में की थी। इस प्रकार से लिंकन ने यह साबित कर दिया कि भाषण कला में उनका कोई जवाब नहीं है। लिंकन के भाषण की धाक जम गयी।

संसद का अधिवेशन 14 अगस्त को ही पूरा हो गया था। परन्तु राष्ट्रपति चुनाव के प्रचार हेतु लिंकन वाशिंगटन में ही बने रहे। पत्नी और बच्चों के बिना रहते-रहते लिंकन बहुत अकेलापन महसूस करने लगे थे। पति-पत्नी दोनों एक-दूसरे को चाहते थे। राष्ट्रपति चुनाव प्रचार के लिये उन्होंने एक भ्रमण कार्यक्रम बनाया और अपने परिवार को साथ ले लिया। परिवार को वो उतना ही समय दे पाते थे जितना कि ऐसे समय में दिया जा सकता है। परिवार के साथ ही लिंकन न्यू बेडफोर्ड, टांटन, वारसेस्टर गये और वहाँ टेलर के समर्थन में जबरदस्त उत्साह पैदा किया। इसके अतिरिक्त वह बोस्टन, लाबेल, डेधाम गये, जहाँ उन्होंने भाषण दिये। सभाओं में विपक्षी दलों पर धारदार हमले किये।

लिंकन ने डेमोक्रेटिक प्रत्याशी के साथ साथ स्वतन्त्र प्रत्याशी न्यूरेन पर भी हमले तेज कर दिये, जिसकी कि व्हिग पार्टी के वोट काटने की सम्भावना थी। अखबारों ने भी अपनी-अपनी प्रतिबद्धता के अनुसार कवरेज किये। ऐसे अखबार जो व्हिग पार्टी में अमेरिका का भविष्य देखते थे, जबकि डेमोक्रेटिक पत्रों ने उनकी अनदेखी की। लिंकन की भाषण शैली को लोगों ने खूब सराहा।

इस बीच परिवार के आग्रह के चलते अपने व्यस्त समय में से थोड़ा समय निकाल कर नियाग्रा फाल देखने गये। वह उससे बहुत प्रभावित हुए। प्रकृति के उस अजूबे को देखकर उनके मुंह से केवल इतना ही निकला कि नियाग्रा उतना ही शक्तिशाली और ताजा आज है जितना कि वह हजारों वर्ष पहले था। उनके मन में भी इसी तरह की ताजगी और आकांक्षा के फूल खिल उठे। एक ऐसी आकांक्षा जो तमाम जद्दोजहद के बाद भी अपनी ताकत को कम नहीं होने देती। ऐसी आकांक्षा जिसका अनंत कभी खत्म नहीं होता—निरंतर अपनी निष्ठा, गति और संकल्प के साथ बहता रहता था।

नियाग्रा के विषय में हर्नडन ने लिखा है कि उन्हें (लिंकन को) आश्चर्य है कि इतना अधिक जल आता कहाँ से है। शायद उनका यह अर्थ था कि नियाग्रा को इतनी शक्ति (जल) मिलती कहाँ से है? वहाँ से एक अन्य स्थान और घूम कर मैरी लिंकन और बच्चे वापस लौट गये।

इसके बाद लिंकन और ज्यादा समय टेलर के चुनाव प्रचार को देने लगे। पूरे देश में चुनाव प्रचार के बाद लिंकन इस बात से आश्वस्त थे कि आगामी चुनाव में राष्ट्रपति के लिये टेलर की विजय पक्की है। फिर भी उन्हें इलिनाय को लेकर बहुत चिंता थी। इस बारे में वह हर्नडन को लिखते और उसके जवाब में आतीं चिट्ठियों से भरोसा पाते।

इस बीच पार्टी के बूढ़े और पुराने हो चुके लोगों ने लिंकन की बढ़ती लोकप्रियता से जल कर एक दांव खेला और उन्होंने व्हिग पार्टी की प्रतिनिधि सभा के लिये लिंकन की जगह लोगन को अपना उम्मीदवार बना दिया। उनका यह कदम यह दर्शाने के लिये पर्याप्त था कि वे अभी नई पीढ़ी के प्रतिनिधित्व को कोई अवसर यथासम्भव देना नहीं चाहते। फिर भी लिंकन ने हर्नडन को लिखा कि जोशीले युवाओं को इकट्ठा कर वहाँ पर "टेलर क्लब" बनवायें। इलिनाय से सिर्फ लिंकन ही व्हिग पार्टी से विजयी हुए थे। वहाँ डेमोक्रेटिक लोगों का वर्चस्व था। इसे समझते-बूझते लोगन को टिकट दिया गया। नतीजतन लोगन चुनाव हार गये। उसके बाद टेलर के चुनाव के लिये लिंकन ने इलिनाय में मोर्चा सम्भाला।

लिंकन अक्टूबर के महीने में इलिनाय आये और उन्होंने कोशिश की कि राष्ट्रपति चुनाव के दौरान वहाँ पार्टी की ऐसी किरकिरी न हो। उन्होंने पार्टी के लोगों से कहना आरम्भ किया कि यदि पार्टी में मतभेद आरम्भ रहते हैं तो इस सिर फुटव्वल का फायदा डेमोक्रेटिक पार्टी को होगा; जैसा कि सन् 1844 में हुआ था। उस समय भी पार्टी की फूट की वजह से ही डेमोक्रेटिक प्रत्याशी विजयी रहा था। इस बार चुनाव में डेमोक्रेटिक पार्टी की ओर से कास मैदान में थे।

लिंकन ने शिकागो में अपने भाषण में कहा कि जो नये क्षेत्र संयुक्त राज्य अमेरिका में शामिल हुए हैं, उन्हें यदि दास प्रथा से मुक्त रखना है तो लोगों को व्हिग पार्टी के प्रत्याशी टेलर को वोट देना चाहिये। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि 1844 की तरह ही पार्टी के वोटों का बंटवारा होता है तो 1846 में भी इसका फायदा डेमोक्रेटिक उम्मीदवार कास को ही मिलेगा। लिंकन ने दास प्रथा की समाप्ति पर लोगों को एक करना आरम्भ कर दिया। लिंकन की इस दलील को भी वोटरों ने गम्भीरता से लिया और वोटों को बंटने से रोका। चुनाव में लिंकन की मेहनत और सूझ-बूझ काम आयी और टेलर विजयी हुए।

दास प्रथा का खुलकर विरोध

दिसम्बर के महीने में लिंकन वापस वाशिंगटन आ गये। वे जान गये कि अगले प्रतिनिधि सभा के अधिवेशन का मुख्य मुद्दा दास प्रथा तथा उसके

फैलाव का होगा।स लिंकन तो आरम्भ से ही दास प्रथा के विरोधी थे। उनकी सोच थी कि दास प्रथा के फैलाव को रोकना ही अमेरिका के हित में है, और तभी यह कुप्रथा हमेशा के लिये समाप्त हो सकेगी।

टेलर और नई संसद का चुनाव तो हो गया था, लेकिन अभी उद्घाटन (शपथ ग्रहण समारोह) नहीं हुआ था। इसका मुख्य कारण यह था कि अमेरिका में राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति तथा संसद के चुनाव के बाद कार्यभार का काम लम्बे अन्तराल के बाद होता है। दास प्रथा पर लिंकन पहले ही अपने विचार स्पष्ट कर चुके थे कि यह अन्याय तथा गलत नीतियों का परिणाम है। उनके अनुसार, अमेरिका वासियों को कभी भी दास प्रथा की प्राकृतिक मौत अर्थात स्वतः समाप्ति पर अड़ंगा नहीं लगाना चाहिये।

पहले अधिवेशन में लिंकन ने सदन में उस प्रस्ताव पर अपना सहमति वोट दिया था, जिसके द्वारा संयुक्त राज्य के नये क्षेत्रों में दास प्रथा पर प्रतिबन्ध लगा था। दूसरे अधिवेशन में दास प्रथा का मुद्दा एक बार फिर गरमाया। लिंकन तथा अन्य दास प्रथा विरोधी सांसद संसद तथा राष्ट्रपति की नाक के नीचे वाशिंगटन में दासों की स्थिति तथा दासों के दिल दहला देने वाले व्यापार से विचलित थे।

एक दिन सांसद यह देख कर अवाक रह गये कि श्रीमती स्प्रिंग के बोर्डिंग हाउस से पुलिस एक आदमी को पकड़ कर ले गयी। मालूम करने पर पता चला कि वह किसी का दास था और यहाँ आकर नौकरी कर रहा था। वह दास नौकरी इसलिये कर रहा था ताकि वह अपने मालिक को अपनी कीमत देकर बदले में उससे मुक्ति हासिल कर सके। कुछ समय तक तो वह काम करके मालिक को पैसे देता रहा। लेकिन बीच में मालिक की नीयत बदल गयी। उस समय तक दास पर केवल 60 डालर बाकी थे। तभी मालिक ने पुलिस में रिपोर्ट कर दी। इस घटना से लिंकन और उनके कई साथी सांसद बहुत विचलित हुए।

तब वाशिंगटन के पास गुलामों का व्यापार खुलेआम होता था। वहाँ गुलामों की एक मंडी थी। इस मंडी के दो सबसे बड़े सौदागर थे—उनमें से एक का नाम फ्रैंकलिन था तथा दूसरे का नाम आर्मफील्ड था। इन दोनों फ्रैकलिन और आर्मफील्ड नाम का एक गोदाम था। वे अपने गोदामों में गाड़ियों में भर कर अफ्रीका से गुलाम लाते थे और इन्हें अमानवीय परिस्थिति में अस्थाई रूप से रखा जाता था। लिंकन उसे 'हब्शियों का अस्तबल' कहते थे। फिर उन दासों को दक्षिण में बेचने के लिये भेज दिया जाता था। इस दास व्यापार को देखकर दक्षिण तथा उत्तर दोनों के लोगों को भारी पीड़ा होती थी। विदेशी लोग जब इस घृणित व्यापार को देखते तो उन्हें बड़ा अचरज होता था कि अमेरिका जैसा देश कैसे इतने बड़े विरोधाभास में घिरा है। एक ऐसे देश की राजधानी में खुलेआम यह निन्दनीय काम हो रहा है जो अपने आप को "स्वतन्त्रता का पुजारी" कहता है।

अमेरिका में पिछली दो शताब्दियों से यही सब हो रहा था। दास प्रथा के विरुद्ध उत्तरी भाग में जनाक्रोश बढ़ता जा रहा था। दास प्रथा विरोधी

सांसद एक के बाद एक प्रस्ताव राजधानी से दास व्यापार की समाप्ति हेतु ला रहे थे। दास प्रथा के प्रबल विरोधियों ने एक अलग से पार्टी बना रखी थी जिसका नाम उन्होंने फ्री सॉयल (मुक्त भूमि) रख रखा था। यह पार्टी केवल इसी मुद्दे पर बात करती थी। संसद में डेमोक्रेटिक पार्टी का बहुमत था जिसके सांसद इन प्रस्तावों का विरोध करते थे। व्हिग पार्टी उन प्रस्तावों के समर्थन में थी। लिंकन को इस बारे में कोई संदेह नहीं था कि यह प्रथा ऐसे ही समाप्त नहीं होगी। इसका कारण यह था कि उसके विरोधी तो थे, लेकिन समर्थक भी थे। इस प्रकार राजनीति में ध्रुवीकरण होता जा रहा था। लिंकन की स्पष्ट नीति यह वाशिंगटन डी०सी० (डिस्ट्रिन्ट आफ कोलम्बिया) से दास प्रथा समाप्ति का अधिकार संसद को अवश्य है, परन्तु इसे कोलम्बिया जिले की जनता की पहल पर ही किया जाना चाहिये। लिहाजा इसके लिये पूरे देश में एक जरूरी वातावरण बनाना होगा।

लिंकन चाहते थे कि दास प्रथा की समाप्ति के लिये क्रमागत बदलाव हो। यदि एकदम से कोई कदम उठाया गया तो दास प्रथा समर्थक एक हो सकते हैं। संसद में भी दक्षिण के सांसद यथास्थिति के पक्षधर थे। अर्थात वे दास प्रथा का विरोध नहीं करते थे। मगर उत्तर के सांसद उग्र थे। इसीलिये लिंकन दास प्रथा के मामले पर कोई ऐसा बीच का रास्ता चाहते थे जिससे कि नये राष्ट्रपति (टेलर) के कार्यभार ग्रहण के मौके पर पार्टी की एकता बनी रहे।

लिंकन ने सरकार के सामने 'क्षतिपूर्ति मुक्ति' का प्रस्ताव रखा। इसका अभिप्राय यह था कि दास मालिकों को सरकार मुआवजा दे और उन लोगों को मुक्त कर दिया जाये। यह प्रस्ताव 'सांप भी मरे और लाठी भी न टूटे' कहावत पर आधारित था।

10 जनवरी 1849 को लिंकन ने यह प्रस्ताव प्रतिनिधि सभा में रखा। लिंकन ने दास प्रथा के मसले पर वाशिंगटन में जनमत संग्रह कराने की बात कही और इच्छा जताई कि इसमें सभी गोरे भाग लें। यह वह दौर था जब अमेरिका में सभी लोगों को मताधिकार नहीं था। केवल सीमित स्वतन्त्र लोग ही अपने इस अधिकार का प्रयोग कर सकते थे।

लिंकन का कहना था कि यदि जनता का रुझान दास प्रथा के खिलाफ अधिक हो तो उसे तत्काल समाप्त कर दिया जाये। प्रस्ताव के अनुसार, यदि मालिक चाहे तो सरकारी खजाने से हर्जाना लेकर अपने दास को मुक्त कर सकता है। प्रस्ताव में यह बात भी कही गयी कि 1850 के बाद यदि कोई दास महिला अपने बच्चे को जन्म दे तो वह बच्चा स्वाभाविक रूप से 'मुक्त' होगा। उसे दास नहीं बनाया जा सकता है। कोलम्बिया जिले में बाहर से आने वाले दासों की भरमार न हो जाये, बाहर से आने वाले दासों को उसी स्थान पर भेज दिया जाये जहाँ से वो आये हों। यह बात दास स्वामियों को संतुष्ट करने के लिये प्रस्ताव में जोड़ी गयी।

आरम्भ में लिंकन के प्रस्ताव को दास प्रथा विरोधी और दक्षिण के दास स्वामियों के समर्थक दोनों तरह के सांसदों का समर्थन मिला। अर्थात समर्थक

और विरोधी दोनों ने ही लिंकन की पीठ थपथपाई। लेकिन दुर्भाग्य से जब लिंकन न अपने प्रस्ताव के क्रियान्वयन के लिये संसद में बिल लाने की कोशिश की तो उन्हें दोनों पक्षों के भारी विरोध का सामना करना पड़ा।

उत्तर के दास विरोधियों का कहना था कि सैद्धान्तिक रूप से हम इससे सहमत हैं, लेकिन प्रस्ताव अनावश्यक रूप से दास मालिकों के प्रति उदार है। दूसरी ओर दक्षिण के दास स्वामी अपने कानूनी अधिकार के साथ किसी भी प्रकार की छेड़छाड़ के लिये तैयार नहीं थें। लिंकन इससे बहुत आहत हुए और उन्होंने बिल को सदन में रखना व्यर्थ समझ लिया, वह जान गये थे कि अब वह बिल पास होने वाला नहीं है। उस पर सदन में केवल पर गरमा गरम बहस होगी—अन्त में भारी बहुमत से बिल गिर जायेगा।

इस बीच नये राष्ट्रपति टेलर ने मार्च 1849 में अपने पदभार को ग्रहण कर लिया। उनके पदभार ग्रहण करते ही लिंकन तथा अन्य व्हिग पार्टी सदस्यों की महत्ता बढ़ गयी। सभी जानते थे कि यह चुनाव अपरोक्ष रूप से लिंकन ने ही जीता है। अब पार्टी कार्यकर्ता लिंकन के कार्यालय में पद पाने के लिए जुटने लगे। लिंकन जानते थे कि सभी कार्यकर्ताओं को पद देना सम्भव नहीं है, अतः वे सबको यही उत्तर देते कि वे इसके लिये कोशिश करेंगे।

टेलर डेमोक्रेटिक पार्टी के कार्यकर्ताओं को बड़े पैमाने पर हटाने के पक्ष में नहीं थे। अतः व्हिग पार्टी के कार्यकर्ताओं को भी पद देना सम्भव नहीं था। लिंकन छोटे-बड़े सभी महत्वपूर्ण पदों पर व्हिग पार्टी के वफादार कार्यकर्ताओं की नियुक्ति के पक्ष में थे। उनकी सिफारिश पर कुछ पार्टी के कार्यकर्ताओं को छोटी-मोटी नौकरी तो मिलीं, परन्तु अधिकतर कार्यकर्ताओं को निराश होना पड़ा। लिंकन इस बात से नाराज थे कि उनकी सिफारिश पर किसी को ऊँचा पद नहीं मिला। व्हिग पार्टी में अब लिंकन का कद इतना ऊँचा हो चुका था कि यदि वे अपने लिये कोई ऊँचा पद चाहते तो वह उन्हें अवश्य मिल जाता; मगर लिंकन ने मना कर दिया।

लिंकन का तैयारी करना, किसी विषय विशेष के प्रति संदर्भ तैयार करना और निरंतर अध्ययन करना कभी बंद नहीं हुआ। हर्नडन ने लिखा है कि लिंकन जिस बिस्तर पर सोते थे, वह उनके कद के हिसाब से बहुत छोटा था। उनके पैर बाहर लटके रहते थे। मगर फिर भी वो सिरहाने रखी कुर्सी पर मोमबत्ती जला कर घंटों अध्ययन करते रहते थे। यही कारण था कि वे ज्यामिति, बीजगणित और खगोलशास्त्र में भी निपुण हो गये थे। बाद में उन्होंने भाषाओं के उद्भव और विकास पर एक भाषण भी तैयार किया था।

हर्नडन ने लिंकन के जीवन चरित्र पर काम किया। उन्हें लगा कि लिंकन को लेकर जितनी भी बातें सामने आयी हैं, उनमें सच्चाई कम और अतिरेक ज्यादा है। इसलिये वे लिंकन के साथी रहे स्टुअर्ट, व्हिटनी, जज डेविस से मिले, जोसी वीक ने बताया कि कोई भी नया आदमी लिंकन से मिलकर आसानी से समझ सकता था कि उनके भीतर गहरा दर्द छुपा है। इसके

बाद हर्नडन खुद इस नतीजे पर पहुँचे कि पिछले बीस वर्षों में लिंकन ने शायद एक आध ही दिन खुशी-खुशी बिताया होगा। उनके चेहरे पर दुःख की छाया स्थायी भावों के समान चिपक कर रह गयी थी।

शाम होने पर जब लिंकन सिर झुकाकर टहल रहे होते तो उस समय उनका दुःख सबसे घनीभूत हो जाता। इस बीच मिलने वाले व्यक्ति से हाथ मिलाने के बावजूद उन्हें याद नहीं रहता था कि कौन उनसे मिलकर गया अथवा किसने उनसे क्या बात की थी। वे अपने आप में खोये रहते। कुछ लोगों का तो यहां तक मानना है कि हाथ मिलाने की प्रक्रिया का भी उन्हें ध्यान नहीं रहता था। यानि उन्हें उस समय यह भी मालूम नहीं रहता था वे क्या कर रहे हैं। जज डेविस उनके बड़े प्रशंसक थे। लिंकन का व्यंगात्मक लहजा, छोटी-छोटी कहानियाँ चुनकर सुनाना, इन सब में जब जज डेविस को एक अलग ही लिंकन दिखायी देता था। बावजूद इसके उनके भीतर अवसादी मनोभाव और उनका प्रभावकारी स्वरूप दोनों को अलग-अलग नहीं किया जा सकता था।

राष्ट्रपति बनने के बाद टेलर बदल गये, इस वाक्य को इस बात से ज्यादा बल मिलता है कि इलिनाय के लिये भूमि कमिश्नर का पद निकला। लिंकन के मित्रों ने दबाव बनाया कि वह इस पद के लिये आवेदन करें। इसका पहला कारण आर्थिक था। इस पद पर कार्य करने वाले व्यक्ति को 3,000 डालर सालाना मिलते हैं। इसका दूसरा कारण यह था कि लिंकन के दोस्त नहीं चाहते थे कि वे वकालत का काम करें। उनके अनुसार, लिंकन के कानून की प्रैक्टिस में जाने से अच्छा था कि वह इस पद को अपना लें। जज डेविस ने भी यही कहा कि यदि उन्हें यह पद मिलता तो वह इसे अवश्य ही ले लेते। डेविस के अनुसार, लिंकन इसे अपनी राजनीति का अन्तिम पड़ाव न समझें। इसके बाद भी उनके लिये राजनीति के दरवाजे खुले रह सकते हैं।

मित्रों की दलीलों को सुनने के बाद लिंकन ने 'भूमि कमिश्नर' के लिये आवेदन दे दिया। इस बीच शिकागो (इलिनाय राज्य) के कार्यकर्ता बटरफील्ड ने भी इसके लिये आवेदन कर दिया।

राष्ट्रपति टेलर के लिये अब निर्णय ले पाना कठिन हो गया। उन्होंने सम्बन्धित मंत्री के कंधे पर रख कर बन्दूक चलायी और मामले को उन्होंने उस सम्बन्धित मन्त्री पर छोड़ दिया। उपमंत्री ने उस पद पर बटरफील्ड की नियुक्ति कर दी। लिंकन इससे बेहद क्षुब्ध हुए। उन्हें लगा कि इससे व्हिग पार्टी के कार्यकर्ताओं में घोर निराशा फैलेगी। लिंकन टेलर से इतना नाराज हुए कि उन्होंने टेलर की आलोचना करते हुए उन्हें एक सजावट की चीज (गुलदस्ता) तक कह डाला। टेलर इतनी जल्दी भूल गये कि उन्हें राष्ट्रपति बनाने में लिंकन का कितना बड़ा हाथ था। इस फैसले से लिंकन अपने से अधिक व्हिग पार्टी के लिये चिंतित थे। बटरफील्ड की नियुक्ति से पार्टी के सक्रिय और निष्ठावान कार्यकर्ताओं में घोर निराशा थी। उन्हें टेलर पर बहुत रोष था। परन्तु सच बात तो यह है कि राजनीति में न कोई

स्थाई मित्र होता है और न ही स्थाई दुश्मन।

लिंकन को बाद में कई प्रलोभन भी दिये गये। उन्हीं में से एक प्रलोभन था औरगान के गवर्नर का सचिव बनना। लिंकन ने इसे विनम्रता से ठुकरा दिया। वैसे इस पद के द्वारा लिंकन को एक विशेष परिधि में बांधे रखने की साजिश थी। यदि ऐसा हो जाता तो लिंकन राजनीति की मुख्य धारा से कट जाते और यही व्हिग पार्टी के वरिष्ठ और बूढ़े हो चुके नेता चाहते थे, जोकि लिंकन की लोकप्रियता से भयभीत थे।

लिंकन इससे बहुत निराश हुए और उन्होंने तय किया कि अब वे राजनीति को तिलांजलि देंगे और स्प्रिंगफील्ड में प्रैक्टिस करेंगे। उन्होंने यही बात अपनी पत्नी मैरी टोड को भी बताई। मैरी उनकी बात सुनकर भड़क गयी और उन्हें वही करने को कहा जो पार्टी के वरिष्ठ नेता चाहते थे। इस पर लिंकन भी गुस्से में आ गये, उन्होंने मैरी को पहले तो गुस्से में लेकिन बाद में मीठे स्वरों में समझाया कि आज ही सब कुछ करना जरूरी नहीं है। एक अच्छे राजनीतिज्ञ को अपने अवसर के दरवाजे सदा खुले रखने चाहिये।

लिंकन को फिर से अपनी वकालत खड़ी करने में अधिक समय नहीं लगा। लिंकन अपने पुराने मित्र हर्नडन के साथ ही वहाँ वकालत करने लगे। जिला और राज्य न्यायालयों के साथ लिंकन सुप्रीम कोर्ट में भी मुकदमों की पैरवी करने लगे। सन् 1849 को उन्होंने सुप्रीम कोर्ट में पहली पैरवी की। इस बीच इलिनाय राज्य को न्याय व्यवस्था के दृष्टिकोण से दो भागों में बांट दिया गया। एक हिस्सा स्प्रिंगफील्ड और दूसरा शिकागो। इसलिये भी कि शिकागो तेजी से आगे बढ़ रहा था।

❑



वकालत में सफलता

लिंकन को सदा यह बात खला करती थी कि वे अन्य समकालीन राजनीतिज्ञों से कम शिक्षित हैं। अपनी मानसिक क्षमता को बढ़ाने के लिये उन्होंने 'इयोक्लिड के ज्योमेट्री के सिद्धान्त' का विस्तृत अध्ययन किया। इस बीच उनकी वकालत की पुरानी साख चल निकली। उन्हें सर्वोच्च न्यायालय के मुकदमें लगातार मिल रहे थे। हर्नडन इन मुकदमों में नजीर तलाशने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते थे। उन्होंने सुविधा के लिये ऐसे मुकदमों का एक इंडेक्स भी बना लिया था।



लिंकन लिखते हुए

मुकदमों के सिलसिले में लिंकन का अकसर शिकागो जाना होता रहता था। शिकागो हाईकोर्ट में लिंकन के हाथ एक दिलचस्प मुकदमा लगा। झगड़ा पार्कर और हायर के बीच था। लिंकन हायर की पैरवी कर रहे थे। पार्कर का कहना था कि उन्होंने पानी से चमकने वाले पहिये का पेटेंट कराया था, जिसका हायर नाजायज तरीके से दुरुपयोग कर रहा हैं। लिंकन ने न्यायालय में दलील दी कि हायर का उपकरण पार्कर के पहिये की नकल नहीं है, क्योंकि यह तो सदियों पुरानी जल-शक्ति का प्रयोग है। उन्होंने बताया कि जल-शक्ति से चलने वाली आरामशीन का प्रयोग वे स्वयं न्यू सलेम में कर चुके हैं, लिंकन की दलीलों से कोर्ट सहमत हो गयी और हायर वह मुकदमा जीत गये।

लिंकन और हर्नडन की सर्वाधिक प्रैक्टिस संगमन काउन्टी के सर्किट कोर्ट में थी। 1853 में इस कोर्ट में लड़े गये मुकदमों में एक-तिहाई इस पार्टनरशिप ने लड़े। उन दोनों ने अपने दफ्तर को विस्तार देकर बड़ा कर लिया था। इस कार्यालय में इन दोनों ने 1861 तक काम किया। लिंकन और हर्नडन कुछ मुकदमें एक साथ लड़ते थे और कुछ स्वतन्त्र रूप से लड़ते थे। लिंकन सर्किट कोर्ट में भ्रमण करने जाते थे, जबकि हर्नडन स्थाई रूप से कार्यालय देखते थे। इनके मुख्यालय में कुछ विद्यार्थी कानून का अध्ययन करने भी आते थे। इसी अंतराल में लिंकन स्प्रिंगफील्ड के वरिष्ठ अभिभावक के रूप में प्रतिष्ठित हो गये थे।

जज डेविस शाम को टहलते समय लिंकन का साथ देते थे। लिंकन के अनेक विचार डेविस से मेल खाते थे। दोनों ही व्हिग पार्टी के सिद्धान्तों के प्रति समर्पित थे। दोनों ही दास प्रथा विरोधी थे। दोनों राष्ट्रवादी विचारधारा के थे और देश की आर्थिक प्रगति के लिये संकल्पबद्ध थे। डेविस के फैसले नजीरों की बजाये सिद्धान्त पर अधिक आधारित होते थे। उस समय की

प्रचलित रीति के अनुसार जब कभी डेविस आवश्यक कार्य हेतु कोर्ट में उपस्थित नहीं हो पाते थे, तब वे लिंकन को अपने स्थान पर बैठने का आदेश दे देते थे। इस प्रकार लिंकन ने जज का स्थान ग्रहण करके अनेक फैसले दिये, जिन्हें स्वीकार किया गया। डेविस और लिंकन का यह साथ लगातार ग्यारह वर्ष तक रहा।

भ्रमण का शौक

भ्रमण में लिंकन रेण्डियर द्वारा खींची जाने वाली छोटी गाड़ी का प्रयोग करते थे। भ्रमण के दौरान ठहरने वाले स्थानों की दशा अत्यन्त दयनीय होती थी। जाड़ों में कीचड़ होती और गर्मियों में अत्यन्त धूल। मच्छर-मक्खियों और खच्चरों की चरमर होती थी। भोजन की टेबिल गंदी होती और महिला कर्मचारी अत्यन्त गंदी होती थी।

लिंकन किसी भी मुवक्किल से ज्यादा फीस नहीं लेते थे। उनकी साख एक ईमानदार ऐब (ऐब का मतलब अब्राहम) के रूप में हो गयी। एक ऐसा वकील जिसने आज तक झूठ नहीं बोला। वे कोशिश करते कि तर्कों के जाल में वे असत्य की प्रस्थापना न करें। इससे यह हुआ कि नये वकीलों की नजर में भी उनका रुतबा और प्रतिष्ठा बढ़ गयी। अदालत के विरोध को वे निजी विरोध नहीं मानते थे। इसलिये विरोधी वकील भी उनके प्रशंसक बने रहते थे। वे विरोधी वकील को बोलने का पूरा मौका देते थे। जब कोई जज पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर फैसला देता तो लिंकन उसका पुरजोर विरोध करते। गवाहों से सवाल पूछने में उनका कोई सानी नहीं था। वे ऐसे सवाल पूछते कि झूठ के कितने भी जाल बना कर सच को छुपाया गया हो, वह बाहर आ जाता था।

लिंकन ईमानदार अवश्य थे परन्तु कमजोर नहीं थे। वह फौजदारी और दीवानी दोनों तरह के मुकदमें लेते थे। वे अपनी दलीलों से जूरी को भावुक बना देते, जो अन्त में उनके हक में फैसला दे देता। इलिनाय के पत्रकारों ने यह पाया था कि लिंकन अपने पेशे के शिखर पर हैं।

लिंकन की आमदनी का एकमात्र जरिया उनकी वकालत से मिलने वाली फीस थी। उसी से वे अपने परिवार का भरण पोषण करते थे। अन्य वकीलों की भांति जमीन की खरीद-फरोख्त, खेती या व्यापार द्वारा आमदनी का उनका कोई स्रोत नहीं था। अतः वे वकालत का काम पूरी निष्ठा और लगन से करते थे। कानून की प्रैक्टिस से वह वर्ष में लगभग 2000 डालर ही कमा पाते थे। सन् 1860 तक उनके पास 5000 डालर नगद तथा 12000 डालर की भूमि थी।

चलती वकालत के बीच पिता की बीमारी

लिंकन के पिता थामस लिंकन अब अस्वस्थ रहने लगे थे। बीमारी में वे अपने दूसरे बेटे जानसन की वजह से और परेशान हो जाते थे। जानसन उनका सौतेला बेटा था, जिसके कारण वह अकसर आर्थिक मुसीबतों में फंस जाते थे। जानसन ने लिंकन को खबर की कि उनके पिता सख्त बीमार

हैं और उन्हें देखना चाहते हैं। लिंकन पिता से मिलने गये। पिता की तबीयत ठीक नहीं थी। मगर इतनी खराब नहीं थी जितनी कि जानसन ने बताया था। लिंकन अपने पिता की इतनी सहायता करते रहते थे कि उनकी रोजी-रोटी चलती रहे। अपनी सौतेली माँ से लिंकन विशेष स्नेह रखते थे, वह उनका आदर सम्मान भी करते थे। पिता थामस से वह इसलिये खफा रहते थे क्योंकि उनका मानना था कि वे अपने बिगड़ैल बेटे जानसन पर अधिक विश्वास करते हैं।

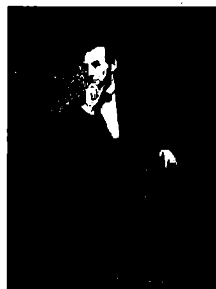
जाड़े के मौसम में जब लिंकन पूरी तरह वकालत के पेशे पर अपना ध्यान केन्द्रित कर रहे थे तो एक बार फिर पिता की बीमारी की खबर आयी। स्प्रिंगफील्ड से उनके पिता के गाँव का रास्ता तीन दिन का था। पहली बार जब वे अपने पिता की बीमारी की खबर सुन कर वहाँ गये थे तो उन्हें पूरा एक सप्ताह लग गया था, जिसके कारण उन्हें भूमि कमिश्नर के पद से हाथ धोना पड़ा था। पिता की तबीयत भी इतनी खराब नहीं थी जितना उन्हें बताया गया था।

यही कारण था कि इस बार फिर पिता की बीमारी की खबर गयी तो पशोपेश में पड़ गये कि वह क्या करें! क्योंकि दूध का जला छाछ भी फूंक मार कर पीता है। लिंकन ने सोचा कि यह तो जानसन की 'भेड़िया आया' वाली चाल है। उस सप्ताह उनके अनेक मुकदमें लगे हुए थे। उनका समय निकाल पाना मुश्किल था। उनकी पत्नी मैरी की तबीयत भी ठीक नहीं थी। उसने 21 दिसम्बर 1849 को अपने तीसरे बेटे को जन्म दिया था। अतः लिंकन अपने पिता को देखने नहीं जा सके। उन्होंने केवल एक पत्र द्वारा उन्हें सूचना भेजी।

परन्तु इस बार थामस की बीमारी गम्भीर थी और उनका देहावसान हो गया। लिंकन अपने पिता के अन्तिम संस्कार में भी शामिल नहीं हो पाये, जिसका कि उन्हें अफसोस रहा।

पुत्र-शोक भी

1849 में ही लिंकन को अन्य घरेलू समस्याओं का भी सामना करना पड़ा। दिसम्बर में उनका दूसरा पुत्र एडवर्ड गम्भीर रूप से बीमार हो गया। उसे टी.बी. की बीमारी हो गयी थी, जिसका कि उस समय कोई इलाज नहीं था। 52 दिनों की गम्भीर बीमारी के बाद चार साल से भी कम की अवस्था का एडवर्ड पहली फरवरी 1850 को चल बसा। इससे कुछ ही पहले मैरी के माता-पिता का भी देहान्त हो गया था। लिंकन ने अपने तीसरे पुत्र का नाम विलियम वैलेस रखा। यह उस चिकित्सक का नाम था जिसने एडवर्ड की बीमारी में उसकी बड़ी सेवा की थी। मई 1853 को मैरी ने लिंकन के चौथे पुत्र को



लिंकन पुत्र शोक में डूबे हुए

जन्म दिया, जिसका नाम उन्होंने अपने पिता के नाम पर थामस रखा। लिंकन के यहाँ चार संतानें हुईं और चारों ही पुत्र थे।

अमेरिका में भी भारत की ही भान्ति उन्नीसवीं सदी के मध्य में रेल की पटरी बिछाने का काम आरम्भ हो गया। विकास का नया अध्याय कभी निरापद नहीं होता। नई सुविधाओं के साथ-साथ इसने अनेक कानूनी समस्याओं को भी जन्म दिया। इलिनाय राज्य में भी समस्याएं पैदा होने लगीं। वहाँ भी जमीन अधिग्रहण में कानूनी अड़चनें, यात्रियों तथा वाहकों के अधिकार आदि विभिन्न ऐसी समस्याएं थीं जिनके समाधान के लिये लोगों ने न्यायालयों की शरण ली।

लिंकन भी इसमें व्यस्त हो गये। लिंकन यातायात साधनों के प्रबल समर्थक थे। वे मानते थे कि अन्ततः इससे जनता को ही लाभ होता है। यातायात के साधनों के समर्थक होने के कारण लिंकन रेल कम्पनियों के सामने आने वाले विभिन्न कानूनी व्यवधानों को समाप्त करने हेतु उनकी ओर से पैरवी करने लगे। लिंकन के एक प्रकरण पर इलिनाय के हाईकोर्ट ने फैसला सुनाया था कि जनता और कम्पनियों को कम खर्च वाला रास्ता चुनने से कोई नहीं रोक सकता। दरअसल इस काम में स्थानीय शेयरहोल्डर भांजी मार रहे थे। अदालत के फैसले ने स्थापना दी कि जनहित, सदैव निजी हितों से ऊपर होता है। इस मुकदमे की बहुत चर्चा हुई। जज का यह फैसला विभिन्न ऐसे फैसलों की नजीर बन गया और जनहित को ऊपर रखा गया।

ऐसे अन्य मुकदमों की सफलता के बाद लिंकन रेल कम्पनियों के वकील बन गये। लिंकन को रेल कम्पनियाँ अपना वकील बनाने लगीं। स्वभाविक रूप से उनकी आमदनी भी बढ़ने लगी। इसके साथ-साथ कई और मुकदमें उनके पास आने लगे। इसी तरह जब किसी नदी पर रेल पुल बनने से नावों का आवागमन रुक जाता, तब भी कानूनी समस्या खड़ी हो जाती। लिंकन कभी तो रेल कम्पनी की ओर से वकील बनते, कभी विरोधी पार्टी की ओर से। स्थिति चाहे जैसी भी हो, लिंकन जिसकी भी ओर से केस लड़ते, जीत उसी की होती थी।

इधर मैरी का भी स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था। उसके एक बच्चे की मृत्यु हो गयी थी। दो बच्चों ने और जन्म ले लिया था। लिंकन अब पहले की तुलना में अपने घर की ओर अधिक ध्यान देने लगे थे। मैरी को उपन्यास पढ़ने का शौक था। परन्तु अपने बढ़ते हुए परिवार के लिये एक शयन-कक्ष का यह मकान अब छोटा लगता था। इस बात को लेकर वह कभी-कभी झुंझला जाती थी। गुस्से में आकर वह कभी कभार लिंकन पर चीजें फैंक देती। लिंकन इन बातों को नजरअंदाज करके और एक बच्चे को गोद में लेकर थोड़ी देर के लिये घर से बाहर चले जाते। उसके बाद वह बच्चे को घर के बाहर ही छोड़ते और स्वयं कार्यालय चले जाते।

गुस्सा शांत होने पर मैरी पछताती। रविवार का दिन लिंकन अधिकतर घर में ही बिताते थे। अपने तीन बच्चों में बीच वाला विली उन्हें सबसे होनहार प्रतीत होता था। उससे लिंकन को भविष्य में कुछ आशाएं थीं।

खाली समय में लिंकन अपने बच्चों को गाड़ी में बैठा कर घर के सामने घुमाते। बड़े होने पर वो दोनों बच्चों को पैदल घुमाने ले जाते। छोटा टाड जब थक जाता तो लिंकन उसे कंधे पर बैठा कर वापस ले आते। रविवार को जब मैरी प्रार्थना करने के लिये गिरजाघर जाती तो लिंकन अपने बच्चों को कार्यालय ले जाते थे, जहाँ उनके बच्चें खूब उधम मचाते थे। दफ्तर का सारा सामान तितर-बितर कर रख देते थे। वह अपने बच्चों को उधम मचाने पर न तो रोकते थे, न ही उन्हें किसी प्रकार की डांट-डपट करते थे। लिंकन के पार्टनर हर्नडन महिला अधिकारों के पक्षधर थे, वे अपने आपको सामाजिक जीवन में सक्रिय रखते थे। 1854 में हर्नडन को स्प्रिंगफील्ड का मेयर चुन लिया गया।

इधर चार साल विधायक और दो वर्ष सांसद रहने के बाद लिंकन के मन में अपने राष्ट्र के प्रति कुछ करने की तमन्ना बाकी थी। सन् 1850 के बाद से वे वकालत में डूबे रहते थे। लेकिन उनका मन जन सरोकारों के प्रति लगा रहता था। अपने पेशे में भी वे ऐसे प्रकरण लेते थे, जिनका जनता से सीधा सम्बन्ध होता था। वैसे जरूरी होने पर व्हिग पार्टी में अपनी भूमिका निभाते रहते थे। दास प्रथा के उन्मूलन के मामले में वे थोड़े उदार थे। उदार इस तरह कि वे इस मुद्दे पर देश को नहीं बंटने देना चाहते थे। दक्षिण के सांसद आरम्भ से ही दास प्रथा के समर्थक थे। उन्हीं की धमकियाँ थीं कि इस मुद्दे पर देश बंट भी सकता है और लिंकन नहीं चाहते थे कि एक बेहतर काम के लिये देश की अखण्डता को दांव पर लगाया जाये। इसी मसले पर वह फिर से व्हिग पार्टी में सक्रिय हो गये।

❑



राष्ट्रपति बनने की ओर

आयोवा, ओहियो, इन्डियाना, विस्कोसिन और कैंसास में हुए लिंकन के भाषणों के बाद 'इलिनाय गजट' नामक अखबार ने सबसे पहले लिखा कि लिंकन को राष्ट्रपति बनना चाहिये। उत्तरी भाग से अखबारों की राय में अब यह जरूरी हो गया है कि लिंकन अब एक बड़ी जिम्मेदारी को निभाने के योग्य हैं। छोटे-छोटे पद के बजाय लोग चाहते थे कि वे अब राष्ट्रपति या उपराष्ट्रपति का पद ग्रहण करें। इस समय तक लिंकन अपने सपने से पूरे देश को अवगत करा चुके थे।

अमरीकी समाज के लिये लिंकन का एक सपना था। उनके अनुसार, मुक्त समाज में यह आवश्यक नहीं है कि कोई व्यक्ति हमेशा के लिये मजदूरी पर कार्य करने वाला श्रमिक ही रहे। ऐसा तो केवल प्रारम्भिक अवस्था में ही होता है। उनके अनुसार, विकास का रास्ता उनके लिए खुला है जो कड़ी मेहनत कर सकते हैं। लिंकन के लिये अभी अमीर-गरीब की बढ़ती खाई के बारे में सोचने का वक्त नहीं आया था। दोनों ही वर्गों में उनके समर्थक थे। उस समय अमेरिका पूँजीवाद की ओर अग्रसर था। जिसकी टक्कर सामन्तवाद से हो रही थी।

सामन्त लोग (बड़े जमींदार) दास प्रथा के समर्थक थे और पूंजीपति (उद्योगपति) दास प्रथा का विरोध कर रहे थे। उस समय दास प्रथा अमेरिकी समाज की ज्वलंत समस्या थी। फैक्ट्री मजदूरों की दयनीय स्थिति की ओर सामाजिक कार्यकर्ताओं का ध्यान कम था। फिर भी लिंकन का मानना था कि समाज में मजदूर तो कोल्हू में अंधे बैल के समान है, जो अपने स्थान से हट नहीं सकता और न ही सींग चला सकता है। उनके अनुसार, मुक्त अर्थव्यवस्था और दास समाज अभी तक देश में एक साथ शान्तिपूर्वक चले।

भूमि की उर्वरा शक्ति में गिरावट तथा दासों की संख्या में प्राकृतिक रूप से वृद्धि ने दास स्वामियों को इस बात के लिये मजबूर किया कि वे नई भूमि को तलाशें। परन्तु दूसरी ओर मुक्त समाज भी साथ-साथ बढ़ा। हर इंसान अपनी स्थिति को बेहतर बनाने का प्रयास करता है। उसे इसके लिये स्थान चाहिये। नए राष्ट्रीय क्षेत्र उसे वरदान स्वरूप मिले। डगलस और दक्षिण डेमोक्रेटिक लोग सामन्तों से प्रेरित होकर इन नये मुक्त क्षेत्रों में भी दास प्रथा लागू करना चाहते थे, जब कि लिंकन का सपना दास मुक्त समाज और देश का था।

6 नवम्बर 1859 को ओहियो के पत्र 'सैडस्की' ने प्रमुखता से रिपब्लिकनों से अपील की कि वे लिंकन को राष्ट्रपति पद हेतु अपना प्रत्याशी नामांकित करें। इलिनाय के 'ओलनी टाइम्स' ने तो लगातार अपने पत्र के नीचे यह लिखना शुरू कर दिया : '1860 के राष्ट्रपति पद हेतु अब्राहम लिंकन'।

न्यूयार्क हेराल्ड, राकफोर्ड रिपब्लिकन (इलिनाय) तथा रीडिंग जर्नल (पेंसिलवेनिया) पत्रों ने उनके सम्भावित प्रत्याशी बनने की बात को प्रमुखता से छापा। इस प्रकार एक साथ चार उत्तरी राज्यों से लिंकन को अगला राष्ट्रपति बनाने की बात उठी। यह सब उनके विचारों, सिद्धान्तों तथा उनकी अभिव्यक्ति (भाषण) का ही चमत्कार था।

लिंकन अपने को राष्ट्रपति पद योग्य नहीं समझते थे। इसलिये लिंकन ने कभी इन बातों को गम्भीरता से नहीं लिया। अलबत्ता उनकी पत्नी मैरी टोड को जरूर भरोसा था कि लिंकन एक दिन अवश्य राष्ट्रपति बनेंगे। जब कभी मैरी उनसे इस बारे में कहती तो वे ठहाका मार कर हंसते और कहते कि उनके जैसा आम आदमी भला कैसे राष्ट्रपति बन सकता है! कोई समाचार पत्र लिंकन को इलिनाय का प्यारा बेटा कहता, कोई उन्हें उपराष्ट्रपति के लायक मानता तो कोई राष्ट्रपति पद या फिर इलिनाय के गवर्नर के रूप में देखता। सैमुअल गेलोब तो लिंकन के लिये ओहियो में 'राष्ट्रपति पद के लिये लिंकन' जैसा आन्दोलन चलाना चाहते थे। सभी के लिये लिंकन का विनम्रता के साथ एक ही उत्तर होता था—

"मैं अपने आपको राष्ट्रपति पद के योग्य नहीं समझता।"

लेकिन यह भी सच था कि लिंकन राष्ट्रपति पद के विषय में सोचते अवश्य थे। जब वे इस विषय पर गहराई से सोचते तो उन्हें लगता कि रिपब्लिकन पार्टी का प्रत्याशी बनने हेतु उनकी किसी भी अन्य प्रत्याशी के मुकाबले में अधिक सम्भावना है। आखिर वे उसके संस्थापक सदस्य थे। उन्होंने इसके लिये निजी और चुपचाप चलने वाले प्रचार का हथकंडा बनाया।

लिंकन इस बात से पूरी तरह से परिचित थे कि डगलस के साथ हुए उनके वाद-विवाद को भरपूर सराहना मिली थी। लोग उनके साथ वैचारिक रूप से खड़े थे। इसलिये उचित यही होगा कि उसका संकलन कर समग्र रूप से छपवाया जाये। उन्होंने अपने भाषण इकट्ठे किये, उन्हें चिपकाया। इस बीच उन्हें ओहियो की एक संस्था मिल गयी, जिसने 260 पृष्ठों की एक पुस्तक प्रकाशित कर दी। इस पुस्तक को अपेक्षित रूप से सफलता मिली। लोगों ने उसे ढूंढ ढूंढ कर पढ़ा। इसी से प्रेरित होकर लिंकन ने आत्मकथा का करारनामा किया।

उस पुस्तक में लिंकन ने अपने निजी गीत गाने के बजाय सार्वजनिक जीवन, उसके अनुभव और विचारों को ज्यादा तरजीह दी। उसे भी खूब प्रशंसा मिली। इसी के चलते उन्हें न्यूयार्क में फरवरी 1860 को एक भाषण देने का निमन्त्रण मिला। बोलने से पहले लिंकन तैयारी बहुत करते थे। उन्होंने इस न्यौते को स्वीकार कर लिया और उसके लिये एक नया सूट भी सिलवा लिया, जिसकी कीमत सौ डालर थी।

न्यूयार्क के मैनहट्टन के कूपा यूनियन में जब लिंकन ने भाषण देना शुरू किया तो उनकी आवाज तेज और पैनी थी। लोगों ने सोचा कि अब उन्हें पश्चिम के कम पढ़े-लिखे और कम सुसंस्कृत व्यक्ति को झेलना पड़ेगा। परन्तु जैसे ही लिंकन के भाषण ने गति पकड़ी तो श्रोताओं की गलतफहमी

दूर होने लगी। उन्होंने श्रोताओं के सामने तत्कालीन राजनीति में जितने भी विकल्प थे, उनका ब्यौरा बड़े ही कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया। लिंकन ने कहा कि कौन कहता है कि केन्द्र सरकार को राष्ट्रीय क्षेत्रों में दास प्रथा रोकने का अधिकार नहीं है? उन्होंने संविधान निर्माताओं से अपनी बात के समर्थन में उदाहरण लिये और फिर डगलस के पैरों के नीचे की जमीन खिसका दी।

लिंकन ने डगलस की उस दलील की धज्जियाँ उड़ा दीं, जिसमें उसने कहा था कि केन्द्रीय सरकार को राष्ट्रीय क्षेत्रों में दास प्रथा रोकने का अधिकार नहीं है। पूर्व के लोगों ने कभी नहीं सोचा था कि पश्चिम का एक वकील-राजनीतिज्ञ आकर उनके सामने नये तथ्य प्रस्तुत करेगा और संविधान के विषय में उनकी आंखें खोलेगा। पूर्व के लोगों को ऐसी ही दलीलें प्रभावित कर सकती थीं, न कि शब्दों के मकड़जाल द्वारा पेश की गयी लफ्फाजी। संविधान और कानून पर लिंकन की पैनी दृष्टि देखकर पूर्व के बुद्धिजीवी चकित रह गये।

लिंकन ने आगे कहा कि रिपब्लिकन पार्टी ही ऐसी पार्टी है जिसका दास प्रथा उन्मूलन का रास्ता किसी से भी बेहतर है। रिपब्लिकन पार्टी का रास्ता न तो अतिवादियों जैसा कड़ा है और न ही डेमोक्रेटिक पार्टी जैसा नरम। लिंकन के अनुसार इस कुप्रथा को समाप्त करने के लिये वे कानून का मार्ग सबसे अच्छा समझते हैं, जिससे सांप भी मरे और लाठी भी न टूटे। उन्होंने दावा किया कि इसका भरोसा रखना चाहिये कि अन्तिम विजय सिर्फ सत्य की होती है।

लिंकन ने दक्षिण-पंथियों की भर्त्सना की जिसमें उन्होंने कहा था कि अगर उत्तर से कोई व्यक्ति 1860 में राष्ट्रपति बनता है तो केन्द्रीय सत्ता भंग हो जायेगी और इसके उत्तरदायी उत्तरवासी ही होंगे। उन्होंने कहा कि फिलहाल इसका एकमात्र समाधान यह है कि रिपब्लिकन लोगों को इस बात के लिये कटिबद्ध हो जाना चाहिये कि वे नये क्षेत्रों में दास प्रथा की बुराई को पैर नहीं जमाने देंगे। और जो कोई इसका प्रयास करेगा, उसे नये क्षेत्रों में घुसने भी नहीं दिया जायेगा।

न्यूयार्क के इस भाषण की जनता में सकारात्मक प्रतिक्रिया हुई। लिंकन का यह भाषण न्यूयार्क वासियों को इतना भाया कि भाषण के दौरान उन्होंने खूब तालियाँ बजायीं। उन्होंने इसे समकालीन, राजनीतिक आवश्यक दस्तावेज बताया और जब उन्होंने अपना भाषण समाप्त किया तो लोग खड़े हो गये और हाथ में रूमाल या हैट लेकर जोरों से हिलाने लगे। अगले रोज न्यूयार्क के चार समाचार-पत्रों ने इसे अक्षरशः छापा। रिपब्लिकन पार्टी भी जोश में आ गयी और उन्होंने इस भाषण को अपने घोषणा-पत्र में शामिल कर लिया। अनेक लोगों ने इसे अभी तक सुना गया सर्वश्रेष्ठ भाषण बताया। लोगों ने इसे प्रेरणादायक उद्घोषणा बताया।

दरअसल यह सेवर्ड के घर में ही अपनी श्रेष्ठता साबित करना था। सेवर्ड न्यूयार्क से पार्टी प्रत्याशी थे। इस सब से लिंकन की मांग बढ़ गयी। लोग

उन्हें यहाँ वहाँ बुलाने लगे। न्यूयार्क की यह सभा अगले राष्ट्रपति चुनाव के लिये एक बड़ी सभा साबित हुई। धीरे धीरे लिंकन पार्टी में किसी दूसरे प्रत्याशी से आगे हो रहे थे। लिंकन ने कहा कि रिपब्लिकन पार्टी संविधान निर्माता की भावना के अनुरूप ही कार्य कर रही है, और अपने सपनों को साकार करना चाहती है। उनकी दलीलों में दम था और बातें तर्कसंगत थीं। एक आयोजन कर्ता ने उन्हें 200 डालर निर्धारित राशि देते हुए कहा कि यदि यह राशि 2000 डालर होती तो ज्यादा अच्छा था।

विलियम एच सेवार्ड न्यूयार्क के अच्छे राजनीतिज्ञ थे। उनकी लोकप्रियता काफी थी। उस समय उनकी आयु उनसठ वर्ष की थी और वे ये मान रहे थे कि इस बार जन्मदिवस के उपहार के रूप में रिपब्लिकन पार्टी उन्हें राष्ट्रपति का उम्मीदवार बनायेगी। वे इतने आत्मविश्वास से भरे थे कि उन्होंने सीनेट के अपने साथियों को अलविदा कहा और अपनी विदाई की पार्टी भी आयोजित की। तयशुदा दिन और समय पर यदि रिपब्लिकन पार्टी का आंतरिक मतदान होता तो सम्भवतया इतिहास बदल गया होता।

राजनीति उतनी सीधी नहीं होती जितनी दिखायी देती है। इतिहास के किसी भी कालखण्ड में इसमें सरल रेखा स्वीकार नहीं की गयी। एक ओर जहाँ सेवार्ड अतिविश्वास से भरे तो दूसरी ओर होरेस ग्रीन एक नई इबारत लिख रहा था। ग्रीन विलक्षण सा दिखने वाला व्यक्ति था। जिसका सिर खरबूजे के समान गोल-मोल था। वह बहुत बुद्धिमान था। उसने सेवर्ड को न्यूयार्क का गवर्नर बनने और सीनेटर बनने में खासी मदद की थी।

यही नहीं, सेवर्ड के प्रबन्धक थरलो वीड के लिये भी ग्रीन ने काफी काम किया था, जिसकी वजह से लोग 'वीड' को राज्य का राजनीतिक बॉस मानने लगे थे। कड़वाहट की वजह से ग्रीन ले स्टेट बनना चाहता था। लेकिन वीड ने यह जगह हथिया ली। इसी तरह के दो एक अवसर और आये, जब ग्रीन ले, वीड से सहायता की आशा कर रहा था, वो उसे मिली नहीं। इसके बदले में उसे अनादर मिला। ग्रीन ले से रहा नहीं गया। उसने सेवर्ड को एक कठोर चिट्ठी लिखी। चिट्ठी में उसने सेवर्ड के खिलाफ पूरी तरह से जहर उगला था। वह नवम्बर 1854 का दिन था। ग्रीन ले इंतजार में था कि उसे मौका मिले तो उन्हें सबक सिखाये। और इसके लिये उसे पूरे छः साल इंतजार करना पड़ा।

वह गुरूवार का दिन था, जिस दिन शिकागो में राष्ट्रपति पद के लिये नामांकन का सम्मेलन होना था। ग्रीन ले मौका चूकने वाला नहीं था। वह पूरी तरह से तैयार था और पूरी रात इस जुगत में लगा रहा कि उसे करना क्या है! सेवर्ड को कैसे मुंह की खिलानी है! वह लिंकन के लिये केवल मानसिक स्तर पर नहीं सोच रहा था, बल्कि वह अपने मन में दृढ़ निश्चय कर चुका था कि उसी का नाम राष्ट्रपति पद के लिये नामांकित हो।

ग्रीन ले अनेक प्रतिनिधि मंडलों से मिला, उनसे बहस की, उन्हें समझाया। समाचार-पत्र 'न्यूयार्क ट्रिब्यून' का पूरे उत्तरी क्षेत्र में खासा प्रसार था। जनता की राय तैयार करने में उस अखबार की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी।

ग्रीन एक प्रसिद्धि प्राप्त व्यक्ति था, समाज में उसका आदर था। उसके आते ही लोग उसके क्रिया-कलापों पर नजर रखने लगते थे। उसने सेवर्ड की आलोचना करते हुए कहा कि वह एक प्रतिबद्ध व्यक्ति नहीं है। न्यूयार्क गवर्नर के पद पर रहते हुए उसने सामान्य विद्यालय के राजस्व को खत्म किया और उससे विदेशियों के लिये एक अलग स्कूल बनवाया। उसने यह भी कहा कि यदि रिपब्लिकन पार्टी को जीतना है तो उसे किसी भी हाल में सेवर्ड को प्रत्याशी नहीं बनाना चाहिए।

लिंकन समर्थक प्रत्येक प्रतिनिधि से सम्पर्क कर रहे थे, ताकि सेवर्ड के बाद अगर लोगों में सहमति बने तो वह लिंकन के नाम पर हो। उनका मानना था कि डेमोक्रेटिक की ओर से डगलस की उम्मीदवारी तय है। ऐसे में उनका कोई मज़बूत प्रतिद्विन्द्वि यदि कोई हो सकता है तो वह लिंकन ही हैं। एक ऐसा व्यक्ति जिसने उत्तर-पश्चित के विकास के लिये वर्षों काम किया है। एक ऐसा व्यक्ति जो आम आदमी को समझता है, उनके साथ अपने मनुष्य होने को बाँटता है। ऐसा आदमी भला लिंकन के अलावा और कौन हो सकता है!

लिंकन के समर्थकों को लगा कि राजनीति की बाजी केवल भावुक वक्तव्यों से नहीं जीती जाती, इसमें सीधा-साधा परिकलन भी ज़रूरी है। इन लोगों ने यानि लिंकन समर्थकों ने इंडियाना के प्रतिनिधियों का मन यह कहकर जीत लिया कि वे वीन स्मिथ को काबीना में जगह दिलायेंगे। इसी तरह पेनसिलवेनिया के 56 वोटों को महज़ इस भरोसे पर अपने खेमें में कर लिया कि वे सीमेन केमरान का लिंकन का दाहिना हाथ बना देंगे।

शुक्रवार की सुबह को मतदान हुआ। करीब 10 हज़ार लोग सम्मेलन हॉल में और 30 हज़ार लोग सड़कों पर प्रतिक्षारत थे। पहले दौर में तो सेवर्ड ने बाज़ी मारी। लेकिन दूसरे दौर में पेन्सिलवेनिया के 52 वोट लिंकन के पक्ष में पड़े और तीसरे दौर की घोषणा ने तो भगदड़ मचा दी। हॉल में उपस्थित लोग जिस स्थिति में थे, जहाँ वह बैठे हो या खड़े हो शोर मचाने लगे। उत्तेजना, अविश्वास-विश्वास और रोमांच में भर कर वे हाथ हिला रहे थे। लोग-एक दूसरे को गले लगा रहे थे और कुछेक की आंखों में आंसू थे।

लगभग 24 घण्टे जश्न चलता रहा। 'शिकागो ट्रिब्यून' ने लिखा—"ऐसा हंगामा कभी नहीं हुआ।"

ग्रीन ले ने देखा कि कभी राष्ट्रपति बनने का सपना देखने वाला वीड अब खून के आंसू पी रहा है। आखिर ग्रीन ले ने अपने संमय की प्रतीक्षा करते हुए वीड से बदला ले लिया था।

❑



लिंकन प्रत्याशी बने

सन् 1860! रिपब्लिकन पार्टी का राष्ट्रीय सम्मेलन शिकागो में होना तय हुआ था। इस सम्मेलन में पार्टी के राष्ट्रपति प्रत्याशी को चुना जाना था। इससे पहले डेकाटर में इलिनाय का प्रान्तीय सम्मेलन हुआ। जिसमें लिंकन को प्रत्याशी बनाने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हुआ। रिर्पब्लिकन पार्टी का द्वितीय राष्ट्रीय सम्मेलन 16 से 18 मई को होना था। इलिनाय प्रतिनिधि मंडल के जो सदस्य शिकागो जाने से पहले स्प्रिंगफील्ड में रुके, उन्हें लिंकन ने बताया कि वे उन्हें एक उदारवादी दास प्रथा के रूप में प्रस्तुत करें न कि सेवर्ड की भाँति एक उग्र विरोधी के रूप में।

सेवर्ड के उग्र रूप को नम्र और रूढ़िवादी रिपब्लिकन लोग पसंद नहीं करते थे। सेवर्ड की स्थिति पूरब में तो मज़बूत थी, परन्तु वे पेन्सिलवेनिया, इंडियाना और इलिनाय में कमज़ोर स्थिति में थे। अन्य प्रत्याशी के दल अपने प्रान्त में ही मज़बूत थे।



चुनाव प्रचार करते लिंकन

जबकि उसके विपरीत लिंकन इलिनाय के तो निर्विरोध प्रत्याशी थे। अपनी आर्थिक नीतियों के कारण उनकी स्थिति पेन्सिलवेनिया में भी मज़बूत थी। दास प्रथा विरोधी, एक अच्छा वक्ता तथा पुराना व्हिग होने के कारण सभी प्रान्तों में उसके समर्थक थे। सम्मेलन में लिंकन की टीम के मैनेजर उनके पुराने स्प्रिंगफील्ड के मित्र डेविड डेविस थे। लिंकन समर्थकों ने सम्मेलन में व्यवस्थित ढंग से प्रचार कार्य किया। विभिन्न प्रतिनिधियों से सम्पर्क साधकर उन्हें सूचनाएं प्रदान कीं। अफवाहों का खण्डन किया। लोगों की शिकायतों को सुना। लिंकन के नाम को नैतिक समर्थन किया।

लिंकन के समर्थकों की यह कोशिश थी कि उन्हें पहले चक्र में 10 वोट अवश्य मिल जायें, ताकि ऐसा न लगे कि वे प्रतिस्पर्धा से बाहर हो गये हों। वे चाहते थे कि सेवर्ड को छोड़कर लिंकन को अन्य सभी प्रत्याशी से अधिक वोट मिलें। 'शिकागो प्रेस' एन्ड 'ट्रिब्यून' ने एक लेख छापा, जिसका शीर्षक "जीतने वाला प्रत्याशी : अब्राहम लिंकन" था। बड़ी संख्या में सेवर्ड समर्थक विशेष रेलगाड़ी से शिकागो पहुँचे। उधर इलिनाय की रेल कम्पनियों ने लिंकन समर्थकों के शिकागो पहुँचने के लिये टिकट की दर घटा दी।

सेवर्ड के समर्थकों ने प्रस्ताव किया कि यदि इलिनाय के प्रतिनिधि सेवर्ड को वोट दें तो उनके ससर्थक लिंकन को उपराष्ट्रपति पद हेतु समर्थन दे सकते हैं। इसके अलावा वे इलिनाय और इन्डियाना की रिपब्लिकन पार्टियों

को एक लाख डालर भी देंगे। लिंकन के कुछ समर्थकों ने भी ऐसे ही वादे करने को लिंकन से कहा। परन्तु लिंकन ने इससे साफ मना कर दिया।

लिंकन के इंचार्ज डेविस ने पेंसिल्वेनिया के प्रतिनिधियों से वादा कर लिया कि यदि वो लिंकन को वोट देते हैं तो उनके नेता कैमरान को कैबिनेट में स्थान मिलेगा। परन्तु सम्मेलन के बाद लिंकन ने इस बात का खण्डन किया और कहा कि वे शर्त के साथ नहीं चुने गये हैं।

17 तारीख को सुबह लिंकन चुपचाप शिकागो से स्प्रिंगफ्रील्ड आ गये। 18 तारीख की सुबह को लिंकन को पता चला कि प्रत्याशी हेतु उनका नाम पहुँच गया है। इस बीच लिंकन स्प्रिंगफील्ड के अपने कार्यालय में किसी प्रकरण की तह तक पहुँचने में तल्लीन हो गये। मगर यह तल्लीनता ज़्यादा समय तक न रह सकी। वे अन्यमनस्क हो गये। थोड़ी देर बाद लिंकन उठे और बिलियर्ड खेलने चले गये, मगर मन नहीं लग रहा था। वह शायद यह जानना चाहते थे कि रिपब्लिक पार्टी ने किसे उम्मीदवार बनाया है?

लिंकन वहाँ तो थे नहीं, लिहाजा वे स्प्रिंगफील्ड जर्नल लेने गये। ताकि ताजा खबर जान सकें। वहीं के दफ्तर में एक ऑपरेटर चिल्लाता हुआ आया—

"मिस्टर लिंकन, आपका नामांकन हो गया है।"

खबर को सुनते ही लिंकन का निचला होंठ कांपा और उनके गाल विवर्ण हो गये। कुछ पलों के लिये उन्होंने अपनी सांसें रोक लीं। यह उनके जीवन का सबसे नाटकीय क्षण था।

लिंकन का चुनाव

पांच प्रत्याशियों के पहले चक्र में लिंकन को 102 वोट मिले, जबकि उनके मुख्य प्रतिद्वंद्वि सेवर्ड को 173 वोट प्राप्त हुए। चुने जाने के लिये किसी भी प्रत्याशी को 233 वोटों की आवश्यकता थी। लिंकन नतीजा जानने के लिये घर पहुँच गये। दूसरे चक्र में सिल्वेनिया के वोटों के कारण लिंकन को 181 वोट मिले। फिर तीसरे चक्र का नतीजा जानने के लिये लिंकन फिर पत्रिका के कार्यालय में पहुँचे। सेवर्ड को छोड़कर सभी प्रत्याशियों के वोट कम हो गये। लिंकन को तीसरे चक्र में 231 वोट मिले। सेवर्ड अपनी पूर्व स्थिति में रहे।

लिंकन को अब केवल 1 वोटों की आवश्यकता थी। इस मोड़ पर चेज के चार ओहियो समर्थक लिंकन के साथ आ गये। अनेक अंन्य प्रतिनिधि भी लिंकन की ओर आ गये, लिंकन समर्थकों की संख्या 364 हो गयी। इस स्थिति को देखकर सेवर्ड ने अपना नाम वापस ले लिया, ताकि लिंकन निर्विरोध चुने जा सकें।

इस प्रकार लिंकन 1860 के राष्ट्रपति चुनाव हेतु निर्विरोध रिपब्लिकन प्रत्याशी चुन लिये गये। यह समाचार उन्हें स्प्रिंगफील्ड में पत्रिका कार्यालय में प्राप्त हुआ। वहाँ उन्हें बधाई देने वालों का तांता लग गया।

लगातार उन्नीस वर्ष तक जूझते रहने के बाद आज विजयश्री लिंकन के

कदम चूम रही थी। तेजी से घरों से निकल कर लोग इस खबर पर बातें कर रहे थे और अपनी-अपनी टिप्पणी दे रहे थे। देखते ही देखते यह खबर जंगल की आग की तरह चारों ओर फैल गयी। इस अवसर पर लिंकन के पुराने दोस्तों की हालत देखते ही बनती थी। कुछेक तो रोने लगे। कुछेक आधी बातें हंसते हुए बताते और फिर रोने लगते थे। कुछेक अपने हैट उतार कर एक-दूसरे का अभिवादन कर रहे थे।

खुशी का माहौल

लिंकन की राष्ट्रपति की उम्मीदवारी से चारों ओर खुशी का माहौल बन गया था। पूरे शहर में जश्न का सा महौल था। इस अवसर पर लिंकन ने अपने दोस्तों का अभिवादन स्वीकार करते हुए कहा– "प्रिय दोस्तों! आठवीं स्ट्रीट पर एक महिला है, जो शायद इस खबर को सुनने के लिये सबसे ज्यादा बेताब है।"

आठवीं स्ट्रीट उनके घर का पता था और वे मैरी अर्थात अपनी पत्नी को यह खबर सुनाना चाहते थे। मैरी को यह खुशखबरी देना सबसे जरूरी था। शायद इसलिये भी कि मैरी उनके जीवन की पहली ऐसी स्त्री थी, जिन्होंने लिंकन के राष्ट्रपति बनने की घोषणा ताल ठोंक कर की थी। लिंकन पार्टी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त करने के लिये शिकागो जाना चाहते थे। लेकिन डेविस ने मना कर दिया।

19 मई 1860 की पार्टी का एक प्रतिनिधि मंडल लिंकन से मिलने उनके स्प्रिंगफील्ड निवास पर आया और उन्होंने अधिकारिक रूप से उन्हें सूचित किया कि राष्ट्रपति चुनाव हेतु उन्हें पार्टी का प्रत्याशी चुन लिया गया है। प्रतिनिधियों के आने से ठीक पहले लिंकन का मैरी से झगड़ा हो गया। झगड़े का यह विवाद था कि मेहमानों को शराब प्रस्तुत की जाये अथवा नहीं। मैरी चाहती थी कि ऐसे मौके पर हमें मेहमानों को 'ड्रिंक्स' पेश करनी चाहिये। जबकि लिंकन ने इस बात के लिये साफ इंकार कर दिया। लिंकन ने कहा कि मेहमानों का स्वागत ठंडे पानी से किया जाये। उनका कहना था कि आदर व्यक्त करने के लिये शराब परोसना आवश्यक नहीं है।

पार्टियों की गतिविधियाँ

पार्टी (रिपब्लिकन पार्टी) के प्रतिनिधि प्रतीक्षा कर रहे थे कि लिंकन अपनी स्वीकृति दे दें। इस पर लिंकन ने सोचने के लिये चार दिन का समय मांगा। एक ऐसा पद जिसका सपना देखना भी बढ़प्पन माना जाता है। एक ऐसा पद जिसकी साध लिंकन के मन में वर्षों से पनप रही थी; उसके लिये पार्टी की ओर से चयनित होने के बाद भी लिंकन ने उसे स्वीकृति देने के लिये चार दिन का समय मांगा। चौथे रोज लिंकन ने उन्हें अपनी मंजूरी दे दी।

राष्ट्रपति का प्रत्याशी घोषित होने के बाद लिंकन का काम-काज इतना बढ़ गया कि उनका कार्यालय छोटा पड़ गया और उन्हें एक निजी सचिव रखना पड़ा। तब गवर्नर ने उन्हें अपने एक कार्यालय को प्रयोग करने की

अनुमति दे दी। उन्हें सैंकड़ों की संख्या में बधाई पत्र मिले। नौक्स महाविद्यालय ने उन्हें मानद एल.एल.डी. की उपाधि प्रदान की। अनेक स्थानों से फोटोग्राफर उनके फोटो लेने के लिये स्प्रिंगफील्ड आने लगे। अनेक कलाकार उनकी पेंटिंग तैयार करने के लिये स्प्रिंगफील्ड पहुँचे। बगैर किसी शिकवा-शिकायत के लिंकन उनके सामने चुपचाप बैठे।

अखबारों में लिंकन की जीवनी छपने लगी। लगातार जीवनी की मांग पर उन्होंनें एक संक्षिप्त जीवन-वृत अपने सचिव को लिखवाया। जिसे वह मांग पर भेज देता था। लिंकन की जीवनी कई प्रकाशकों ने छापी। करीब एक लाख से दो लाख की प्रतियाँ उनकी जीवनी की बिकीं। उस दौर में स्कैच और पेंटिंग का बड़ा प्रचलन था। चाहे वह फोटोग्राफर हो या पेंटर, लिंकन सभी से शांत भाव से मिलते थे।

मगर लिंकन के विरोधी शांत नहीं थे। वह किसी भी तरह लिंकन को फिर से शिकस्त देना चाहते थे। इसके लिये विरोधियों ने पहला काम यह किया कि उन्होंने जी भर कर लिंकन के विरुद्ध दुष्प्रचार किया। विरोधियों की अफवाहों का खण्डन करने के लिये लिंकन को खासी मेहनत करनी पड़ी। मेक्सिकन युद्ध के गड़े मुर्दे भी उखाड़े गये। मई में डेमोक्रेटिक पार्टी अपना कोई प्रत्याशी न चुन सकी और जून में तो यह पार्टी विधिवत विभाजित हो गयी। उत्तर और दक्षिण में बंटी इस पार्टी के प्रत्याशी भी दो हो गये। उत्तरी शाखा ने डगलस को अपना प्रत्याशी चुना, जबकि दक्षिण ने रिज को अपना उम्मीदवार बनाया।

रिज का गणित मजबूत था। उन्हें पता था कि यदि रिपब्लिकन पार्टी की एकता यथावत बनी रही तो लिंकन को चुनाव में कोई नहीं हरा सकता। अतः उन्होंने रिपब्लिकन पार्टी को दो फाड़ करने का अभियान चलाया। लिंकन को लेकर ओहियो, इन्डियाना और पेंसिल्वेनिया में भारी उत्साह था। जगह जगह होने वाली जन सभाएं और मशाल जुलूस लिंकन के चुनाव को बुलंदी दे रहे थे। लिंकन ने न्यूयार्क वालों को भरोसा दिलाया कि वे किसी के साथ नाइंसाफी नहीं करेंगे।

इस बीच अक्टूबर में विधान-सभा के चुनाव हुए। इस चुनाव में लिंकन की रिपब्लिकन पार्टी ने अपना परचम लहरा दिया। यह इस बात का प्रणाम था कि आगामी चुनाव में लिंकन की जीत सुनिश्चित है। विधान-सभा चुनावों के नतीजों ने एक बार फिर साबित किया कि प्रोटेस्टेंट पूरी तरह से लिंकन के साथ हैं। उनकी रिपब्लिकन पार्टी को अपना समझते हैं। कैथोलिक आरम्भ से ही लिंकन के विरोधी थे, उन्होंने इस बार भी अपना मन नहीं बदला था।

अगस्त माह में लिंकन ने स्प्रिंगफील्ड में एक विशाल जनसभा को सम्बोधित किया। इधर डगलस की उम्मीदवारी घोषित हो गयी। रणनीतिकारों में डगलस एक बड़ा नाम था। उन्होंने वे सारे दांव चले, जिससे लिंकन चुनाव न जीत सके। उन्होंने डेमोक्रेटिक पार्टी के धड़े बनाकर उसके अलग-अलग धड़ों से लिंकन के खिलाफ प्रत्याशी खड़े कर दिये। कई कोणीय मुकाबले में अकसर

ऐसा होता है कि वोटों का विभाजन कई बार जीतने वाले को हारने पर विवश कर देता है। इसी आधार पर डगलस ने यह चाल चली थी।

6 नवम्बर को चुनाव होने वाला था। हवा का रुख लिंकन के पक्ष में था। अतः आवश्यकता इस बात की थी कि किसी भी प्रकार का नया भाषण या बयानबाजी न की जाये, जिसे विरोधी तोड़-मरोड़ कर पेश कर सकें। विपक्ष अभियान पर लिंकन का विश्लेषण यह था कि उनका विजय अभियान आरम्भ हो गया है। उन्हें चिंता थी तो अपने गृह नगर की। इस के लिये एक समिति बनायी गयी। जो घर-घर जाकर पता करे कि लोग किसके पक्ष में मतदान कर रहे हैं। यह व्यक्तिगत सम्पर्कों के आधार पर लोकतान्त्रिक पद्धति से किया गया। यह अपनी तरह का पहला सर्वे था।

लिंकन ने जब उसका परिणाम देखा तो चौंक गये। उनकी आशंका सही साबित हुई। तेइस मन्त्रियों और कुछ अध्यात्मवादी विद्यार्थियों में महज तीन उनके पक्ष में थे। इस पर लिंकन ने बड़ी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा—

"ये लोग अपने को बाइबिल में आस्था रखने वाला कहते हैं, इन्होंने अपने मतों से यह जाहिर कर दिया है कि इन्हें इससे कोई सरोकार नहीं है कि इस सब से दासत्व बढ़ेगा या थमेगा। मगर मैं जानता हूँ कि ईश्वर और मानवता को दासत्व की चिंता है। उन्हें इसकी परवाह है कि यदि वे सब इस बात से अनभिज्ञ हैं कि ईश्वर को सभी की फिक्र है तो उन लोगों ने 'बाइबिल' को ठीक से पढ़ा नहीं है।"

चुनाव परिणाम

चुनाव के दिन लिंकन भी स्प्रिंगफील्ड में अपना वोट डालने गये। लोगों ने करतल ध्वनि से उनका स्वागत किया। आश्चर्य तो इस बात का था कि लिंकन की मां, उसके भाई और उसके सभी नाते-रिश्तेदारों ने लिंकन के विरोध में मत दिया था। मात्र एक वोट को छोड़ कर सभी लिंकन के खिलाफ थे। इसकी एक वजह यह भी थी कि वे सभी डेमोक्रेटिक थे।

चुनाव नतीजे वाले दिन शाम को लिंकन अपने समर्थकों के साथ टेली आफिस पहुँचे, जहाँ जन समूह चुनाव नतीजे सुनने के लिये इकट्ठा था। पहले इलिनाय में रिपब्लिकन पार्टी की जीत हुई, फिर इन्डियाना फतह हुआ। पश्चिमी राज्यों की खबरें भी जनता का उत्साह बढ़ा रही थीं। परन्तु पूर्वी राज्यों की कोई खबर नहीं मिली। लग रहा था कि सड़क पर केवल रिपब्लिकन बस गये हैं, डेमोक्रेटिक या तो हैं नहीं या फिर निराश होकर अपने घरों को चले गये हैं।

रात को लगभग दस बजे के आस-पास खबर आयी कि रिपब्लिकन पार्टी पेन्सिल्वेनिया में विजय पताका फहराने में सफल रही है। रात को दो बजे न्यूयार्क से समाचार आया कि वहाँ भी रिपब्लिकन पार्टी ने डेमोक्रेटिक पार्टी को करारी शिकस्त से दो चार किया है। अब लिंकन की जीत निश्चित थी। लिंकन घर आ गये। लेकिन उसके बाद वह ठीक से सो नहीं पाये,

क्योंकि वह अपनी नई जिम्मेदारियों को लेकर चिन्तित थे।

कुछ दिनों के बाद जब अन्तिम परिणाम सामने आया तो पता चला कि स्थिति निम्न प्रकार है—

प्रत्याशी	वोट	निर्वाचन क्षेत्रों में जीत
लिंकन	18,66,452	180
डगलस	13.76,957	112
रिज	8,49,781	72
बेल	5,88,879	39

एक को छोड़कर सभी मुक्त राज्यों में रिपब्लिकन पार्टी की जीत हुई। स्पष्ट था कि दक्षिणी राज्यों ने लिंकन को वोट नहीं दिया। दक्षिण के उत्तरी भाग में अर्थात वर्जीनिया, टेनेसी और केन्टकी बेल ने लिंकन को पीछे छोड़ा और बाकी दस राज्यों में रिज ने दावा ठोंका। डगलस मात्र मिसौरी में जीत पाये। न्यूजर्सी में उन्हें काफी वोट मिले। मगर वे वहाँ लिंकन के बराबर ही पहुँच पाये, आगे नहीं बढ़ सके। अलाबामा, आर्कांसास, फ्लोरिडा, जार्जिया, लुइसियाना, मिसीसिपी, उत्तरी केरोलिना, टेक्सास— इन जगहों से एक भी वोट अब्राहम लिंकन को नहीं मिला।

सन् 1839 में अमरीकन एन्टी स्लेवरी सोसायटी ने एक बुकलेट भी जारी की थी, जिसका नाम था 'अमरीकन स्लेवरी ऐज इट इज— द टेस्टीमोनी ऑफ 1000 विटनेस'। इसमें दासों के साथ होने वाली उस ज्यादती का जिक्र था जो उनके साथ घटती थी। उनके हाथों को खौलते हुए पानी में डाल दिया जाता। इस पर भी बात न बने तो उन्हें लोहे की गरम सलाखों से दाग दिया जाता। हब्शी औरतों को गोरे 25 डालर में अपने साथ सहवास करने को बाध्य करते।

खुद लिंकन ने डगलस के साथ हुई एक बहस के दौरान 1850 में घोषित किया था कि अमरीका में 4,05,751 गोरे-कालों के बच्चे हैं। इनमें सबकी माँ हब्शी हैं और पिता गोरा। इसलिये कि संविधान दास रखने वालों को सुरक्षा देता है।

लिंकन की 1860 की विजय के बाद दक्षिण प्रान्तों में बसने वाले मानने लगे कि अब दास प्रथा को जाना ही होगा। लिंकन के लिये अब भावी वर्षों के लिये 'व्हाइट हाउस' के दरवाजे खुल गये। परन्तु अपनी भावी जिम्मेदारियों को लेकर उनके मन में एक डर पैदा हो गया। विशेष तौर पर इसलिये, क्योंकि दक्षिणी राज्यों में उन्हें बिल्कुल भी समर्थन नहीं मिला। अभी तक जिन बातों को वे अपने भाषणों में कहते आये थे, उन्हें अंजाम तक पहुँचाने का समय आ गया था।

❑



लिंकन राष्ट्रपति के रूप में

लिंकन जहाँ एक ओर राष्ट्रपति पद की शपथ लेने की तैयारी में थे, वहीं दूसरी ओर देश बँटने की कगार पर पहुँच गया था। क्योंकि राष्ट्रपति चुनाव के नतीजों से यह स्पष्ट हो गया था कि पूरा देश विचारधारा, आर्थिक विकास तथा सामाजिक सम्बन्धों को लेकर में दो भागों में बंटा हुआ है—और वह दो भाग थे : उत्तर और दक्षिण।

उत्तर औद्योगिक तथा व्यापारिक क्षेत्र था, जो कि तेजी से आगे बढ़ रहा था। जबकि दक्षिण अभी भी कृषि प्रधान था। उत्तर के लोग अमानवीय दास प्रथा को खत्म करने पर आमादा थे, जबकि दक्षिण वाले उसे अपनी कृषि और अपने प्रभुत्व के लिये जरूरी मानते थे। लिंकन द्वारा राष्ट्रपति पद की शपथ लिये जाने के पहले ही 10 नवम्बर को दक्षिणी कैरोलाइना विधान-सभा में सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव पास हुआ कि संघ के साथ उसके सम्बन्धों पर विचार करने हेतु 6 सितम्बर 1860 को एक सम्मेलन बुलाया जाये। इसके बाद जार्जिया और फिर दक्षिण के अन्य संघ राज्यों ने भी ऐसे ही सम्मेलन बुलाने की बात कही। इसे उनके संघ से अलग होने के पहले कदम के रूप में देखा गया।

कुछ लोग दक्षिण-पंथियों को हिदायत देना चाहते थे, तो कुछ उनके साथ सख्ती से निबटना चाहते थे। सब की निगाहें चुने गये राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन की ओर थीं कि वे इस समस्या से कैसे निबटेंगे। जबकि लिंकन अभी स्प्रिंगफील्ड में ही थे और अपने पास आने वाली भारी डाक को निबटाने में व्यस्त थे। उनके निजी सचिव निकोल का काम इतना बढ़ गया था कि उसने एक सहायक भी रख लिया। लिंकन का सारा समय अपने कार्यालय में आगंतुकों से भेंट करने में ही व्यतीत हो जाता था। इलिनाय के लोग जानते थे कि एक बार शपथ लेने के बाद उनसे मिलना कठिन हो जायेगा। लिंकन का चेहरा इतना पतला था कि लोगों ने उन्हें दाढ़ी बढ़ाने की सलाह दी, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया।

लिंकन अभी तक के सबसे कम उम्र के अमरीकी राष्ट्रपतियों में से थे। जिस समय राष्ट्रपति पद के लिये उनका चुनाव हुआ, उस समय उनकी आयु केवल 51 वर्ष की थी। उनके अन्दर कभी न समाप्त होने वाली स्फूर्ति थी। राष्ट्रपति चुने जाने के तीन माह तक लिंकन ने न कोई बयान दिया और न ही वह सार्वजनिक रूप से प्रकट हुए। इस बीच उन्होंने केवल लोगों की बातें सुनीं और उनके विचारों को जाना। उन्होंने केवल अमरीकी भाई-चारे को बनाये रखने की बात कही।

जहाँ तक दक्षिण-पंथियों को देश को तोड़ने का सवाल था, लिंकन का मानना था कि दक्षिण में भी ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो देश की

एकता को बनाये रखना चाहते हैं, और वे किसी भी हाल में देश को टूटने नहीं देंगे। दक्षिण-पंथियों ने पहले भी देश को तोड़ने की धमकी दी थी, मगर वे सफल नहीं हुए थे।

राष्ट्रपति चुने जाने के बाद लिंकन का पहला काम अपनी भावी कैबिनेट के सदस्यों के नामों तथा उनके विभागों को अन्तिम रूप देना था। उन्हें एक संतुलित कैबिनेट बनानी थी, जिसमें सभी क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व हो और अलग-अलग विचारों के लोग एक साथ शामिल हो कर उनके सपनों को साकार करें। वे अपनी भावी कैबिनेट के सदस्यों से राय मशवरा करने में व्यस्त हो गये। लाख कोशिशों के बावजूद भी लिंकन एक संतुलित कैबिनेट की रूपरेखा बनाने में असफल रहे। इसका मुख्य कारण पार्टी के अन्दर अन्दरूनी खींचातान थी। फिर भी उन्होंने एक ऐसी कैबिनेट बनाई, जो क्षेत्रीय संतुलन के हिसाब से एक संतुलित कही जाने वाली कैबिनेट थी।

एक ओर लिंकन राष्ट्रपति की शपथ लेने की तैयारी में थे, तो दूसरी ओर देश टूटने की कगार पर बैठा था। 3 दिसम्बर को तत्कालीन राष्ट्रपति बुचानन की विदाई थी। राष्ट्रपति ने अपने भाषण में अलगाववादियों की भर्त्सना की, लेकिन साथ ही यह भी कहा कि इतिहास के कुछ कार्य ऐसे होते हैं, जिनमें सीधे हस्तक्षेप नहीं किया जा सकता। 20 दिसम्बर को दक्षिण कैरोलिना की विधान सभा ने घोषणा कर दी– राज्य अब संघ का हिस्सा नहीं है। जनवरी के अन्त तक फ्लोरिडा, मिसीसिपी, अलबामा, जार्जिया तथा लुसियाना राज्यों ने भी ऐसी ही घोषणा कर दी। इतना ही नहीं, फरवरी में इन लोगों का एक सम्मेलन अलबामा, मौंटगुमरी में हुआ। अलग होने की घोषणा के साथ ही उन्होंने वहाँ के किले और केन्द्रीय शस्त्रागार को अपने कब्जे में ले लिया। वाशिंगटन और उत्तर राज्य संयुक्त ाज्य अमरिका में बने रहे। वर्जीनिया अभी तक तटस्थ था।

वाशिंगटन में इस मामले को सुलझाने के लिये प्रतिनिधि सभा ने 33 लोगों की एक कमेटी बनायी। उसका काम सरकार को सलाह देना था। समिति प्रतिनिधि सभा की थी और उसमें डेमोक्रेटिक का बहुमत था। इस कमेटी में प्रत्येक राज्य से एक सदस्य था। लम्बी बहस के बाद समिति ने प्रस्ताव पास किया कि न्यू मैक्सिको को राज्य का दर्जा दिया जाये। भगोड़े गुलामों के कानून को शरण देने पर पाबन्दी लगा दी जाये। भविष्य में दास प्रथा के साथ किसी प्रकार की छेड़छाड़ पर रोक लगाने के लिये संविधान में संशोधन किया जाये।

सीनेट ने भी 13 सदस्यों की ऐसी ही एक कमेटी बनाई। जिसने उत्तर और दक्षिण के लिये अलग दास कानून बनाने की सिफारिश की। इस समिति ने भी भगोड़े दासों के लिए कानून सख्ती से लागू करने की सिफारिश की। वर्जीनिया विधायकों के शान्ति सम्मेलन ने भी भाषा का हेर फेर कर इसी तरह की बातें कीं। तीनों ही कमेटियों ने दक्षिण-पंथियों के साथ समझौते की बात कही।

मगर इसमें से किसी ने भी दोनों पक्षों का समर्थन नहीं किया। लिंकन

ने इन प्रस्तावों को अलगाववादियों को रिश्वत देने के बराबर बताया। उन्होंने कहा कि वे निजी रूप से किसी भी प्रकार के संविधान संशोधन के पक्ष में नहीं हैं। परन्तु अगर जनता यह चाहती है तो वे इसमें रोड़े नहीं अटकायेंगे। लिंकन ने कहा कि दूसरा तरीका सरकार बदलना है। मैक्सिकन युद्ध से ही लिंकन क्रान्ति के अधिकार के समर्थक थे। उनकी नजर में क्रान्ति का अर्थ था अधिक जागरूक होना, मौजूदा सरकार को हिला देना और फिर ऐसी सरकार की स्थापना करना, जो जनाकांक्षाओं को पूरा करे।

लिंकन का कहना था कि क्रान्ति का अधिकार एक नैतिक अधिकार है न कि कानूनी, अतः इसे नैतिक रूप से न्यायोचित होने पर ही प्रयोग में लाया जाना चाहिए। अनैतिक क्रान्ति क्रान्ति नहीं बल्कि मात्र ताकत का एक घृणित प्रदर्शन है। ऐसी क्रान्ति केवल अराजकता पैदा करती है और इसे कतई बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। अलगाववाद पर लिंकन ने कहा कि राष्ट्रपति का कर्तव्य है कि कानून का पालन सुनिश्चित करे और सरकार इसे बनाये रखने के लिये ठोस कदम उठाये। राष्ट्रपति विघटन या बंटवारे के किसी प्रस्ताव पर अमल नहीं कर सकता। उनका यह भी कहना था कि बिना दूसरे राज्यों की अनुमति के कोई भी राज्य कानूनी रूप से अलग नहीं हो सकता।

संघ को अपरिवर्तनीय रखने का लिंकन का संकल्प बिना किसी शर्त के था। अपनी युवावस्था से ही वे तर्क को अधिक महत्व देते थे। जब उन्हें यह लगा कि यह नाकाफी है तो तब वे कानून और संविधान को सर्वोपरि मानने लगे। देश की चिंता और एकता पर मंडराते संकट ने उनका वजन 40 पौंड कम कर दिया। लिंकन थोड़े अंधविश्वासी भी थे। जीतने की घोषणा के बाद वह घर लौटे तो सोफे पर लेट गये। सामने आइना लगा था। उसमें उन्होंने अपना प्रतिबिम्ब देखा। उसमें दो चेहरे दिखे। एक चेहरा कान्तिहीन, निस्तेज और पीला था, वे उठे तो भ्रम टूट गया। दोबारा लेटे तो उन्हें भूत जैसा कुछ लगा। उन्होंने मैरी (अपनी पत्नी) को बुलाया और बताया कि मैंने ऐसा देखा है। इस पर पत्नी की राय यह थी कि आप दूसरी बार भी विजयी होंगे। लेकिन उसके आगे शायद आपका जीवन नहीं है। लिंकन को पूरी आशंका थी कि वे वाशिंगटन से लौट नहीं पायेंगे।

सन 1861 में स्प्रिंगफील्ड के लोगों को यह एहसास हुआ कि लिंकन एक क्षमतावान और योग्य व्यक्ति हैं। वर्षों से वे उन्हें वहाँ टहलते हुए, गले तक शाल डाले, घरेलू सामान की बास्केट थामे देखते थे, मगर किसी ने सोचा नहीं था कि यह वह व्यक्ति है, जो भविष्य में अमरीका का राष्ट्रपति बन सकता है। वाशिंगटन रवाना होने से तीन सप्ताह पहले लिंकन ने अपने उद्घाटन भाषण की तैयारी कर ली थी। अकेलेपन और एकान्त की तलाश में उन्होंने अपने आपको एक कमरे में कैद कर लिया था। उनके अपने पास ज्यादा पुस्तकें नहीं थीं। उन्होंने हर्नडन से कहा कि वे उन्हें संविधान

की प्रति उपलब्ध करायें। इसके अलावा सन 1850 में दिये हेनरी क्ले के चर्चित भाषण के अलावा कुछ और संदर्भ भी मंगवाये।

लिंकन की मूर्ति

जनवरी 1861 में स्प्रिंगफील्ड में विश्वविख्यात मूर्तिकार डी जांस ने होटल के एक कमरे में लिंकन की मूर्ति बनानी आरम्भ की। उन्हें इस कमरे में काफी समय बिताना पड़ा। इससे वे आगन्तुकों की भारी भीड़ से बचे रहे, जिससे वे काफी उकता चुके थे तथा इसलिये भी कि वे राष्ट्रपति पद की जिम्मेदारियों के लिये अपने को तैयार करने में लगे थे। मैरी लिंकन बहुत उत्साहित थीं, उनका कहना था कि देखा—उनका सपना साकार हो रहा है। व्हाइट हाउस का सपना! अपने सपने को साकार होते देखकर वह भी इसकी तैयारी में जुट गयीं। इसके लिये उन्होंने जरूरी शॉपिंग की। लिंकन तो भेंट स्वीकार करते नहीं थे, मगर मैरी लिंकन ने आरम्भ में अनेकों उपहार स्वीकार किये। वे काफी प्रसन्न और उत्साहित थीं। उन्हें पता था कि मार्च 1861 से उनके पति को 25,000 डालर प्रति वर्ष मिलेंगे। यह रकम स्प्रिंगफील्ड में उनकी सालाना आमदनी से पांच गुना अधिक थी।



डी जांस द्वारा बनायी गयी लिंकन की मूर्ति

राष्ट्रपति की शपथ लेने से पहले लिंकन अपनी सौतेली माँ से मिलने कोल्स काउंटी गये। वह जगह बहुत दूर थी। इसलिये लिंकन को पहले रेल से, फिर मालगाड़ी से और घोड़ागाड़ी से यात्रा करनी पड़ी। वे अपनी माँ को 'मम्मा' कहते थे। सत्तर वर्षीय उनकी माँ ने उनसे गले लगते हुए कहा—"मैंने कभी नहीं चाहा कि तुम राष्ट्रपति का चुनाव जीतो, पता नहीं क्यों मुझे लगता है कि कोई अनहोनी घटना होने वाली है। शायद अब हम फिर कभी न मिलें। अगली मुलाकात शायद स्वर्ग में होगी।"

हालंकि लिंकन ने सुबकती हुई माँ की पीठ पर हाथ रखकर भरोसा दिलाते हुए कहा—"मुझे कुछ नहीं होगा। हम फिर मिलेंगे।"

❑



स्प्रिंगफील्ड से प्रस्थान

6 फरवरी को लिंकन परिवार के स्प्रिंगफील्ड स्थित निवास पर एक भव्य समारोह आयोजित हुआ। इस समारोह में लिंकन और श्रीमती लिंकन ने स्प्रिंगफील्ड तथा इलिनाय के वासियों से विदाई ली। विदाई समारोह सुबह सात बजे से आधी रात तक चला। कार्यक्रम में इलिनाय की सभी हस्तियों और फैशन परस्त महिलाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया। जाने से पहले उन्होंने अपने मकान को 350 डालर प्रति वर्ष किराये पर उठा दिया।

लिंकन अपने पूर्व पार्टनर हर्नडन से मिलने गये और उन्हें बताया कि वे नौकरी चाहने वालों की लम्बी कतार से काफी परेशान हैं। चलते समय उन्होंने अपनी फर्म 'लिंकन एण्ड हर्नडन' के बोर्ड की तरफ देखते हुए कहा— "इसे यहीं टंगा रहने देना, यदि वे जीवित रहे तो वापस आयेंगे और फिर से अपनी वकालत की प्रैक्टिस को आरम्भ करेंगे।"

11 फरवरी को जब लिंकन परिवार ने स्प्रिंगफील्ड को छोड़ा तो स्टेशन पर लिंकन परिवार को विदाई देने के लिये भारी संख्या में लोग एकत्रित हुए। पूरा स्टेशन लोगों से भरा पड़ा था। विदा लेते समय लिंकन अत्यन्त भावुक हो गये। उन्होंने अपने पड़ोसियों से अन्तिम अभिवादन के समय कहा—"स्प्रिंगफील्ड में मैंने अपने जीवन के 25 वर्ष बिताये हैं। यहीं मैं ज़वान से वृद्ध हो गया, यहीं मेरे बच्चों ने जन्म लिया, उनमें से एक की मृत्यु भी यहीं हुई। यहाँ सभी लोगों ने मुझे जरूरत से ज्यादा स्नेह दिया। मुझे नहीं पता कि अब मैं लौटूँगा भी या नहीं। मगर मैं अब एक बड़े काम के लिये जा रहा हूँ। ईश्वर के आशीर्वाद और आप लोगों के समर्थन से मैं अवश्य ही कामयाब होऊँगा।"

लिंकन की गाड़ी धीरे-धीरे वाशिंगटन की ओर चली। ट्रेन में तीन डिब्बे थे— एक में पत्रकार, दूसरे में लिंकन के सहायक और तीसरे में लिंकन का परिवार। इसके अलावा लिंकन का एक बॉडीगार्ड और तीन अन्य सुरक्षा अधिकारी भी थे। रेलगाड़ी इन्डियाना पोलिस होते हुए उत्तर में क्लीवलैंड गयी। वहाँ से न्यूयार्क, फिलाडेल्फिया होते हुए वाशिंगटन पहुँची। इस यात्रा में पूरे बारह दिन लगे। इस बात का विशेष ध्यान रखा गया कि कोई आतंकवादी घटना या दुर्घटना न हो। जगह-जगह लिंकन का जोरदार स्वागत हुआ। पूरे रास्ते भर लोग ट्रेन का करतल ध्वनि के साथ स्वागत करते और लिंकन की झलक पाने का प्रयास करते रहे।

ओहियो नगर में तो लोगों ने बैण्ड बजा कर लिंकन का स्वागत किया और उन्हें तोपों की सलामी भी दी। कोलम्बस जैसे छोटे शहर में 60,000 लोगों की भीड़ इकट्ठा हो गयी थी। इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि लिंकन का बड़े शहरों में कैसा स्वागत हुआ। बफैलो में तो इतनी अधिक

भीड़ थी कि उसको नियन्त्रित करने में लिंकन के एक सुरक्षा अधिकारी के कंधे की हड्डी ही टूट गयी।

लिंकन ने जानबूझ कर इस लम्बे रास्ते को चुना था। इसका कारण यह था कि वे ज्यादा से ज्यादा लोगों के सम्पर्क में आयेंगे और विरोधियों को भी पता चल जायेगा कि उन्हें कितना बड़ा जन समर्थन मिल रहा है। उनकी सोच यह थी कि जितने लोग इकट्ठा होंगे, विपक्षियों की हालत उतनी ही खराब होगी। जनता के अभिवादन का जवाब देते हुए लिंकन ने कहा कि चुनाव में जीत उनकी व्यक्तिगत जीत नहीं थी, बल्कि यह जनता की जीत है। लिंकन वाशिंगटन जाते हुए विभिन्न स्थानों पर रुके और उन्होंने वहाँ भाषण दिये। लोग उन्हें सुनना चाहते थे। लगातार बोलते रहने से उनका गला इतना खराब हो गया कि कई बार तो वे बोल ही नहीं पाये।

अभी यात्रा चल ही रही थी कि खबर आई कि जोफर्सन डेविस को सम्मिलित राज्य अमरीका का कार्यवाहक राष्ट्रपति बना दिया गया है। डेविस ने उसी दिन संयुक्त राज्य अमरीका की सभी सैनिक चौकियों को अलगाववादियों के हवाले कर दिया। लिंकन पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उन्होंने संघ को बचाने के संकल्प को दोहराया।

न्यूयार्क में लिंकन ने अमरीकी ध्वज को हाथ में लेकर प्रतिज्ञा की कि वे सदा इसके साथ खड़े रहेंगे। उन्होंने अपील की कि जनता भी इसके साथ खड़ी रहे। जब यात्रा दक्षिण की ओर चल रही थी तो खुफिया तंत्र को सूचना मिली कि बाल्टीमोर में लिंकन की हत्या का षड्यन्त्र रचा जा रहा है। बाल्टीमोर में दक्षिणी उग्रवाद के समर्थक अधिक संख्या में थे।

लिंकन इस प्रकार की चेतावनी से घबराते नहीं थे। उनसे कहा गया कि वे यात्रा का समय परिवर्तन कर लें या फिर रास्ता ही बदल लें। लिंकन ने इससे इंकार कर दिया। उन्होंने कहा कि न तो रास्ता बदला जायेगा और न ही बाल्टीमोर से ट्रेन के गुजरने का समय। मैं तयशुदा कार्यक्रम के अनुसार फिलाडेल्फिया के स्वतन्त्र हॉल में 22 फरवरी को भाषण दूँगा। उन्होंने कहा कि स्वतन्त्रता के घोषणापत्र के अनुसार, हमें देश की रक्षा करनी चाहिये। अगर हम राष्ट्र को घोषणापत्र के अनुसार बचा नहीं सकते तो हमें शर्म आनी चाहिये।

खुफिया तंत्र के मुखिया पिंकर्टन थे। उन्हें एक बार इस बात की पुष्टि हुई कि षड्यन्त्र- कारी घात लगाये बैठे हैं। पिंकर्टन ने लिंकन से पुनः चर्चा की और सुझाया कि वे दूसरी ट्रेन से अकेले वाशिंगटन पहुँचें। थोड़े विचार विमर्श के बाद लिंकन मान गये और अपना हैट बदल कर हैरिसबर्ग से फिलाडेल्फिया के लिये रवाना हुए। वहाँ की तार संदेश वाहक लाइनों में अवरोध डाला गया, ताकि षड्यन्त्रकारी किसी भी प्रकार का संदेश कहीं भेजा न जा सके। फिलाडेल्फिया से पिंकर्टन भी लिंकन के साथ हो लिये। ये तीनों ट्रेन की एक स्लीपिंग कार में चढ़े और बाल्टीमोर पार करके अपनी विशेष रेलगाड़ी पर सवार हो गये। सभी लोग एक साथ वाशिंगटन पहुँचे। इस योजना को अत्यन्त गोपनीय रखा जाना था। मगर ऐसा हुआ नहीं।

लिंकन का असाधारण कद इसमें बाधा बन गया और लोगों ने उन्हें पहचान लिया।

वाशिंगटन में लिंकन का स्वागत

वाशिंगटन पहुँचने के दस दिन बाद लिंकन का राष्ट्रपति के रूप में पहला उद्घाटन भाषण होना था। उसके बाद उन्हें राष्ट्रपति पद की शपथ भी लेनी थी। यह दस दिन उनके जीवन के सर्वाधिक व्यस्त दिन रहे। पहले दिन वे वहाँ राष्ट्रपति बुचानन से मिलने गये। बुचानन ने लिंकन को अपने कैबिनेट सदस्यों से मिलवाया। फिर वे टोड के साथ वाशिंगटन की सड़कों पर एक घंटा घूमे और लोगों से मिले। वापस होटल आये तो उनसे मिलने के लिये भावी मंत्री-मण्डल सदस्य आ गये। रात्रिभोज उन्होंने राज्य सचिव बनने वाले सेवर्ड और चुने गये उपराष्ट्रपति हेमलिन के साथ किया।

लिंकन होटल में वापस आये तो उनसे मिलने वालों और बधाई देने वालों का तांता लग गया। उनमें कई सांसद भी थे। न्यूयार्क के प्रसिद्ध व्यापारी डॉज थे; जिन्होंने लिंकन को चेतावनी देते हुए कहा—"यदि दक्षिण-पन्थियों को रियायतें न दी गयीं तो देश दिवालिया हो जायेगा। दक्षिण में खेती अधिक होती है। यदि ये कृषि प्रधान देश हमसे अलग हो गया तो क्या हम न्यूयार्क की सड़कों पर घास उगायेंगे?"

लिंकन ने उनका समुचित उत्तर देते हुए कहा—"हम संविधान की रक्षा के लिये कृत संकल्प हैं। इसके लिये घास चाहे खेतों में उगे या मैदानों में, लेकिन संविधान की रक्षा अवश्य करेंगे।"

लिंकन से मिलने वालों में उनके घोर प्रतिद्वन्द्वी डगलस भी थे। मगर इस बार की भेंट अनूठी थी। यहाँ बहस का कोई मौका नहीं था। लिंकन ने सभी संसद सदस्यों के लिये स्वागत समारोह आयोजित किया। वे सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश से भी मिले। वाशिंगटन के मेयर ने औपचारिक रूप से नगर में लिंकन का स्वागत किया। डगलस की राय थी कि दक्षिणी प्रांतों को समझाते हुए देश की एकता को किसी भी तरह बचाया जाये।

लिंकन से जो लोग भी मिलने आते थे, उन्हें पहले स्काट से मिलना होता था। उम्रदराज स्कॉट सदैव फौजी वर्दी में लिंकन के कक्ष के बाहर तैनात रहते थे। होटल के कक्ष या हाल में मैरी और लिंकन लोगों से मिलते। लिंकन को देखकर लोग तरह-तरह की बातें करते। कुछ तो उनके चेहरे-मोहरे को देख कर मखौल उड़ाते। उनके अनुसार, लिंकन के व्यक्तित्व में वैसी चमक नहीं थी जैसी अमरीकी राष्ट्रपति में होनी चाहिए। कोई उनको असभ्य मानता तो कोई उनके व्यक्तित्व से अत्यन्त प्रभावित होता।

लिंकन को जब इसकी सूचना मिली तो उन्होंने कहा था कि विरोध स्वाभाविक वृत्ति है। लोग काम करते देखेंगे तो धीरे-धीरे सब ठीक हो जायेगा। इन सब बातों से लिंकन को सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि वे देश पर मंडराते संकट पर विभिन्न लोगों के विचारों से अवगत हो गये। वे डगलस के इन विचारों से विशेष प्रभावित हुए कि दक्षिण-पंथियों को मनाने की

पूरी कोशिश करके देश की एकता को बनाये रखा जाये। डगलस ने लिंकन से कहा कि देश की एकता को बचाने में वे लिंकन का पूरा साथ देंगे और इसका राजनीतिक लाभ उठाने का प्रयास नहीं करेंगे।

लिंकन से मिलने वालों में सैंकड़ों ऑटोग्राफ लेने वाले और भिखारी भी शामिल थे। एक ने तो उनसे पैंट की मांग कर दी। उनके पास आने वालों में अधिक संख्या उन लोगों की थी जो नौकरी चाहते थे। लिंकन के पास रोज़ हज़ारों की संख्या में प्रार्थना-पत्र आते थे। लेकिन लिंकन उनका दसवां हिस्सा भी नहीं देख पाते थे। यहां तक कि उन्हें भोजन करने में भी देरी होने लगी। लोग छोड़ते ही नहीं थे। फिर भी उन्होंने जनता से मिलना बन्द नहीं किया।

इन दस दिनों में लिंकन ने कैबिनेट को भी अन्तिम स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने एक संतुलित कैबिनेट बनाई और राज्य सचिव सेवर्ड को पूरी तरह से हावी होने दिया। इसलिए भी क्योंकि यह उनका विशेषधिकार था और ऐसा इसलिये भी कि ऐसा करने से सेवर्ड अपने को अपरिहार्य समझने लगता। इसलिये उन्होंने चेज़ को वित्त सचिव बना दिया। सेवर्ड, चेज़ को पसंद नहीं करते थे। चेज़ का नाम आने पर सेवर्ड ने यहाँ तक कह दिया कि यदि उन्हें मौका दिया जाता है तो वह हट जायेंगे। इस पर लिंकन पशोपेश में पड़ गये। न्यूयार्क के इस प्रभावशाली रिपब्लिकन नेता को वह छोड़ना नहीं चाहते थे। परन्तु वे अपनी नीति में कोई परिवर्तन करने को तैयार नहीं थे। अन्त में उन्होंने यह एहसास दिलाया कि सेवर्ड अपरिवर्तनीय नहीं हैं, नीतियाँ अपरिवर्तनीय हैं। उन्होंने सेवर्ड के स्थान पर डेटन को राज्य सचिव बनाने की बात कहना आरम्भ कर दिया। यह बात सेवर्ड को पता चली तो उन्हें बहुत नागवार गुज़री और उन्हें झुकना पड़ा। उन्हें इस बात को मानना पड़ा कि उनका काम राष्ट्रपति और कैबिनेट की नीतियों को क्रियान्वित करना है, न कि उन पर अपनी नीतियों को थोपना। इस तरह के टकराव से उन्हें हमेशा के लिये बाहर रहना पड़ सकता है, जोकि वे नहीं चाहते थे।

लिंकन ने शपथ ली

4 मार्च 1861 को लिंकन ने राष्ट्रपति पद की शपथ ली। उस दिन लिंकन निवर्तमान राष्ट्रपति बुचानन के साथ एक खुली बग्घी में सवार होकर होटल से राष्ट्रपति भवन (व्हाइट हाउस) की ओर रवाना हुए। जनरल स्कॉट ने रास्ते में सुरक्षा के पुख्ता इंतज़ाम किये। राष्ट्रपति भवन में उपराष्ट्रपति हैमलिन भी शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हुए। उसके बाद लिंकन ने सारगर्भित राष्ट्रपति उद्घाटन भाषण पढ़ा। इसके बाद चौरासी वर्षीय मुख्य न्यायाधीश टैनी ने उन्हें पद और गोपनीयता की शपथ दिलायी।



राष्ट्रपति पद की शपथ ग्रहण करते

उद्घाटन भाषण में लिंकन ने दक्षिण के विषय में अपनी नीतियों का खुलासा नहीं किया। वह जानते थे कि खुलासे से कोई खुश होगा तो कोई नाराज़। हालांकि अपने भाषण में उन्होंने यह बात स्पष्ट कर दी कि संघ को बरबाद नहीं किया जा सकता, अलगाववाद गैरकानूनी है, पर वे कानून की रक्षा अवश्य करेंगे। उन्होंने कहा कि कानून के परिवृत्ति में जितनी भी ताकत है, उसका उपयोग वे उन सारी सम्पत्ति को वापस लेने में करेंगे जिस पर दूसरे लोगों ने कब्ज़ा कर लिया है।

लिंकन ने यह भी कहा कि नागरिक निश्चिंत रहें, तब तक कोई खून-खराबा नहीं होगा जब तक राष्ट्र की संप्रभुता को चुनौती नहीं दी जायेगी। अलगाववादियों को उन्होंने कहा कि गृह-युद्ध होगा या नहीं, यह उन्हें तय करना है। आप लोगों को यह तय करना है कि हम सब दोस्त हैं, दुश्मन नहीं।

लिंकन के भाषण पर अलग-अलग समाचार-पत्रों ने अलग-अलग राय पेश की। उनका भाषण दक्षिण के अलगाववादियों को सम्बोधित तो करता था, लेकिन उसमें राष्ट्रपति की सम्पूर्ण नीति का पता नहीं लगता था। उन लोगों ने इसका अनुवाद कुछ इस तरह से किया— "अब गृहयुद्ध को टाला नहीं जा सकता है। वह होकर ही रहेगा।"

लिंकन विरोधी अखबारों ने भी इसे कमोबेश इसी भावार्थ के साथ प्रकाशित किया। सिर्फ रिपब्लिकन अवधारणा रखने वालों ने इसे विधायी रूप में देखा और सराहना की।

शपथ लेने के अगले रोज से ही लिंकन के सिर पर संकट के बादल मंडराने लगे। ऐसा संकट जिसका हल लिंकन को जल्दी खोजना था। उन्हें मेजर राबर्ट एण्डर्सन का यह संदेश मिला कि समटर किले में उनकी सेना की टुकड़ी के पास मात्र छः सप्ताह का राशन बचा है। किले को अलगाववादियों ने घेर रखा था। इस अवधि में वहाँ पर आपूर्ति नहीं की गयी तो उन्हें आत्मसमर्पण करना पड़ेगा। लिंकन को अभी पूरी तौर से कार्यभार भी नहीं मिला था। उनके कैबिनेट सदस्यों ने भी अभी कार्यभार ग्रहण नहीं किया था।

लिंकन की कैबिनेट की पहली बैठक छः मार्च को हुई। परन्तु यह मात्र औपचारिकता थी। समटर जिले के सम्बन्ध में लिंकन कोई जल्दबाजी वाला कदम उठाने से कतरा रहे थे। 9 मार्च को इस विषय पर फिर कैबिनेट की बैठक हुई। किले को बचाने के लिये 25 हजार सैनिकों की आवश्यकता थी। जबकि उस समय अमरीकी सेना में नियमित थल सैनिकों की संख्या मात्र सोलह हजार थी। जिनमें से बड़ी संख्या रेड इन्डियन सीमा-क्षेत्र पर लगी थी। इस मामले में सेवर्ड असहयोग का रुख अपनाये हुए थे। लिंकन उन्हें जो भी विकल्प सुनाते, सेवर्ड उनका विरोध करते थे। हालांकि डगलस ने घोषणा की कि राष्ट्र के सवाल पर वे लिंकन के साथ हैं। लिंकन ने एक दूत किले के कमाण्डर एण्डरसन के पास गुप्त रूप से भेजा, ताकि वह वहाँ जाकर जनआकांक्षाओं का ठीक-ठाक पता लगा कर आये। दूसरा गुप्त दल उन्होंने

दक्षिण कैरोलाइना भेजा, ताकि वहां भी जन-आकांक्षाओं का सही-सही पता चले। समटर का किला दक्षिण कैरोलाइना के समुद्र तट पर स्थित था।

सेवर्ड के विरोध के बावजूद यह फैसला लिया गया कि 6 अप्रैल को न्यूयार्क से नौसेना की एक टुकड़ी समटर किले के लिये आपूर्ति लेकर जाए, ताकि किला सेना के हाथ से न निकले। उधर फ्लोरिडा के मिकेन्स किले को भी बचाने के प्रयास चल रहे थे। समटर को बचाने की कार्यवाही जलसेना कर रही थी, जबकि मिकेन्स की कार्यवाही थलसेना कर रही थी। दोनों कार्यवाहियाँ अति गुप्तरूप से चलाई जा रही थीं।

उन स्थितियों में राज्य सचिव सेवर्ड; लिंकन के साथ सहयोग नहीं कर रहे थे और अपना-अलग राग अलाप रहे थे। 12 अप्रैल को अमरीकी जलसेना जब समटर किले के पास पहुँची तो दक्षिणी सेना ने किले से बमबारी शुरू कर दी। यह गृहयुद्ध का प्रारम्भ था, जो दक्षिण पन्थियों की ओर से हुआ था। 34 घंटे के बाद मेजर एण्डरसन तथा उनकी सेना की टुकड़ी ने आत्मसमर्पण कर दिया।

इससे पहले जब इण्डियाना, ओहियो, मैनी और पेन्सिल्वेनिया के गवर्नरों ने अपने-अपने राज्य के अर्ध-सैनिक बलों को युद्ध के लिये तैयार रहने की स्थिति में रखने के लिये लिंकन से अनुमति मांगी, तो लिंकन ने इसके लिये हामी भर दी। शायद उन्हें पहले ही पता था गृहयुद्ध अवश्यम्भावी है। परन्तु वे ये भी चाहते थे कि युद्ध की पहली गोली संघीय न चलायें, बल्कि दक्षिण-पन्थी चलायें। इससे जनता को यह संदेश जायेगा कि लिंकन की सरकार व्यर्थ के रक्तपात को बढ़ावा नहीं दे रही है। वैसे यह सलाह ब्राउनिंग ने दी थी। ब्राउनिंग का कहना था कि ऐसा करने पर सरकार अपने कदमों को न्यायोचित ठहरा सकेगी।

लिंकन के अनुसार, देश एक किले से कहीं अधिक बड़ा होता है। शपथ लेने के बाद उन्होंने युद्ध टालने का भरसक प्रयास किया, परन्तु दक्षिणपन्थी देश को तोड़ने पर आमादा थे। वे युद्ध की पूरी तैयारी कर रहे थे तथा बीच के राज्यों को भी अपनी ओर मिलाने का प्रयास कर रहे थे। लिंकन को अब दक्षिण के अन्य किलों को बचाने के लिये सैनिक कार्यवाही करने का हक प्राप्त हो गया। राजनीति की दृष्टि से उस समय किलों का बहुत महत्व होता था। लिंकन के अनुसार, "अब यह कोई नहीं कह सकेगा कि युद्ध उन्होंने शुरू किया है।" युद्ध के लिये उन्हें संसद को भी विश्वास में लेना आवश्यक था। अतः उनकी यह नीति पूर्णतः सफल रही। संसद ने युद्ध के लिये अपनी मंजूरी आसानी से दे दी। लिंकन को युद्ध के लिये आवश्यक जन-समर्थन भी मिल गया।

गाँव में पैदा हुए एक अपेक्षाकृत कम शिक्षित इंसान ने यह साबित कर दिया कि उसके अन्दर जो राजनीतिक कौशल है, वह दूसरे राजनीतिज्ञों में नहीं। लिंकन के ऊपर यह आरोप न लगा कि भाई-भाई का खून (गृह-युद्ध) बहाने में उन्होंने पहल की।

❑



गृह-युद्ध का प्रारम्भ

समटर किले पर हमले से प्रशासन को कार्यवाही करने हेतु एक दिशा मिल गयी। उसने लिंकन प्रशासन को चुस्त-दुरुस्त कर दिया और पूरे देश में राष्ट्रभक्ति का जज्बा पैदा कर दिया। प्रशासन का कार्य अब विद्रोह कुचल कर संघ की रक्षा करना था। हजारों स्थानों पर जन सभाएं हुईं, ध्वजारोहण हुआ और लोग सेना में भर्ती होने लगे। क्योंकि समटर किले के बचा न पाने के पीछे सैनिकों की कमी भी एक कारण थी। दस सप्ताह में लगभग दस लाख लोग भर्ती हुए; मगर केवल सेना की संख्या से काम नहीं चलता। काम चलता है उसकी अगुआई से, नेतृत्व से। और उस समय सेना में केवल एक नाम था, राबर्ट ई. ली।

राबर्ट दक्षिण प्रांत का रहने वाला था, मगर उसकी देशभक्ति पर किसी को संदेह नहीं था। खासकर लिंकन तो उस पर अत्याधिक विश्वास करते थे। इसीलिये उन्होंने संघीय सेना की कमान ली को सौंपने को कहा।

वर्जीनिया के होने के नाते ली में वहाँ की एक अवधारणा कूट-कूट के भरी थी। वर्जीनिया के लोग अपने राज्य को राष्ट्र से ऊपर रखते थे। ली का भी ठीक यही विचार था। उसमें भी स्थानीयता के प्रति समर्पण ज्यादा था। इसी कारण उसने सेना की कमान सम्भालने से इंकार कर दिया। ली का तर्क था कि मैं अपने ही घर, परिवार और रिश्तेदारों के खिलाफ कदम उठाने का साहस नहीं रखता।

ऐसी स्थिति में लिंकन के पास जर्नल विनफील्ड स्कॉट के अलावा कोई विकल्प नहीं था। वे उन्हीं से इस समस्या पर विचार-विमर्श कर सकते थे। स्काट वैसे भी एक उम्रदराज और अनुभवी व्यक्ति थे। सन 1812 के युद्ध में उन्होंने पर्याप्त यश बटोरा था।

समटर किले के आत्मसमर्पण के अगले ही दिन 15 अप्रैल 1861 को राष्ट्रपति लिंकन ने एक घोषणा पत्र जारी किया, जिसमें यह कहा गया कि दक्षिण के सात राज्यों में कानून का पालन अवरुद्ध हुआ है। यह उन लोगों के द्वारा हुआ है जिन्हें साधारण कानूनी प्रक्रिया द्वारा नहीं दबाया जा सकता। उन्होंने राज्यों से कहा कि वे पिछहत्तर हजार अर्ध सैनिक बल की व्यवस्था करें, ताकि दक्षिण के इस गठबंधन को दबाया जा सके और कानून का



अपने साथियों के साथ विचार-विमर्श करते लिंकन

पालन सुनिश्चित किया जा सके।

इस घोषणा के बाद लिंकन ने 4 जुलाई 1861 को संसद का एक विशेष अधिवेशन भी बुलाया। उत्तर के सभी राज्यों में लिंकन की इस घोषणा का उत्साहपूर्वक स्वागत हुआ। लोग दक्षिण-पंथियों से इतने नाराज थे कि वे चाहते थे कि वे उन्हें सबक सिखाने के लिये कड़ी से कड़ी कार्यवाही की जाये। सभी शहरों में जनता ने सभाएं करके अपने सभी मतभेद भुलाकर देश की अखण्डता और एकता बनाये रखने का संकल्प लिया। डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन दोनों ही राष्ट्रपति के साथ थे। इस अवसर पर डगलस ने भी घोषणा की कि वे पूरी तरह से राष्ट्रपति के साथ हैं।

डगलस और ब्राउनिंग ने यह अवश्य कहा कि लिंकन ने बहुत कम अर्धसैनिक बलों की मांग की है, उन्हें 2 या 3 लाख बल की मांग करनी चाहिये थी।

परन्तु लिंकन जानते थे कि जितना बड़ा बल होगा, उतनी ही आपूर्ति भी चाहिये, उतने ही हथियार, उतना ही धन भी चाहिये। साथ ही इतने बड़े बल के साथ यह संदेश भी जायेगा कि वे दक्षिण पर कोई बहुत बड़ा हमला करने वाले हैं। लोगों में इतना उत्साह था कि इतने स्वयं-सेवक तो आसानी से इकट्ठा हो जाते। पूरे देश में देशभक्ति और स्वतन्त्रता की रक्षा की लहर दौड़ गयी।

परन्तु दक्षिण और उत्तर के बीच के चार राज्यों में तो दूसरी ही हवा चली। ये चार राज्य थे वर्जीनिया, टेनेसी, एक्रन्साज और उत्तरी कैरोलाइना। ये चारों राज्य जल्द ही संघ से अलग हो गये और पृथकतावादियों के साथ आ गये। अब प्रथम दक्षिणी राज्यों की कुल आबादी 50 लाख से बढ़ कर 90 लाख तक पहुँच गयी। वर्जीनिया के दक्षिण में चले जाने से अलगाव वादियों का कब्जा वाशिंगटन की दक्षिणी सीमा तक हो गया। कन्टेवी और मिसीसिपी के गवर्नरों ने भी लिंकन का साथ देने से इंकार कर दिया। डेलावेयर के गवर्नर ने खुद मिलीशिया भेजने से मना कर दिया, परन्तु कहा कि जो स्वयंसेवक जाना चाहे, वह जा सकता है।

राष्ट्रीय राजधानी वाशिंगटन उत्तर की ओर से मैरीलैन्ड से मिली हुई थी। 19 अप्रैल को जब छठी मैसाचुसेट्स रेजीमेंट राजधानी वाशिंगटन की रक्षा करने हेतु तैनात की जा रही थी तो एक भीड़ ने बाल्टीमोर में उस पर हमला बोल दिया। चार सैनिक और कुछ नागरिक उस हमले में मारे गये। अन्त में यह तय हुआ कि कोई भी सेना की टुकड़ी बाल्टीमोर से नहीं गुजरेगी, बल्कि उसकी बगल से निकलेगी।

मैरीलैन्ड का गवर्नर हिक्स इतने पर ही संतुष्ट नहीं था। उसने लिंकन से कहा कि कोई सेना की टुकड़ी उसके राज्य से होकर न गुजरे। हिक्स ने लक्ष्मण रेखा पार कर ली थी। बाल्टीमोर की एक समिति लिंकन से मिलने आयी और उसने कहा कि मैरीलैन्ड के रास्ते कोई सेना न ले जायें और अलगाववादियों से शान्तिपूर्ण समझौता करें।

इस पर लिंकन ने उत्तर देते हुए कहा— "हमें हर हाल में राजधानी

वाशिंगटन की रक्षा करनी है, इसके लिये सेना मंगानी होगी और यह काम मैरीलैन्ड के रास्ते ही हो सकता है। हमारे आदमी कोई चूहे नहीं हैं, जो जमीन के अन्दर रास्ते बना लें, या फिर कोई पक्षी नहीं हैं जो हवा में उड़कर यहाँ चले जा सकें। अपने आदमी से कह दो कि वे हमारे ऊपर हमला न करें, यदि वो ऐसा करते हैं तो हम भी करारा जवाब देंगे।"

लिंकन के पास वाशिंगटन को बचाने के लिये सेना काफी नहीं थी। अतः राजधानी एक सप्ताह तक विरोधियों से घिरी रही। मैरीलैन्ड वासियों ने उत्तर को जोड़ने वाली रेल लाइन पर बने पुल को नुकसान पहुँचाकर रेल आवागमन अवरुद्ध कर दिया तथा टेलीग्राफ की लाइन भी काट दी। लिंकन रोज नई फौजी टुकड़ियों का वाशिंगटन आने का इंतजार करते, परन्तु कोई नहीं आयी। अन्त में 25 अप्रैल को सातवीं न्यूयार्क रेजीमेंट के आने से पूरी तस्वीर ही बदल गयी। जनरल बटलर ने चेसायीक खाड़ी से नावों द्वारा सातवीं न्यूयार्क रेजीमेंट को एनापालिस भेज दिया, जहाँ से वे रेल द्वारा वाशिंगटन पहुँच गये। मैरीलैन्ड वासी उत्तर के मार्ग की निगरानी में व्यस्त रहे, जबकि पूर्व के मार्ग से सेना वाशिंगटन पहुँच गयी। 13 मई को जनरल बटलर ने पूरे बाल्टीमोर पर कब्जा कर लिया।

इसी के साथ लिंकन पहले की अपेक्षा और सख्त हो गये। उन्होंने 21 अप्रैल को यह आदेश पारित कर दिया कि कोई भी व्यक्ति अलगाववादियों का साथ देता पाया गया या इस बारे में फौज को कोई सूचना मिली कि किसी का सम्बन्ध इन लोगों से है तो उसे तत्काल गिरफ्तार कर लिया जायेगा। ऐसी स्थिति में गिरफ्तार व्यक्ति को अनिश्चित काल तक हिरासत में रखा जा सकता है और गिरफ्तार करने वाला अधिकारी इस सम्बन्ध में किसी न्यायाधीश के आदेश को मानने को भी बाध्य नहीं है। एक फौजी अधिकारी ने जान मैरीमेन को कोर्ट के आदेश के बावजूद छोड़ने से मना कर दिया तो मुख्य न्यायाधीश और लिंकन के बीच ठन गयी। लिंकन ने न्यायाधीश के आदेशों को नजरअंदाज कर दिया। उनका कहना था कि अभी हालात ठीक नहीं हैं। इसके बाद न्यायालय के आदेशों की बिल्कुल भी परवाह नहीं की गयी।

कंटेवी एक तथस्थ राज्य था। परन्तु उसकी स्थिति बहुत दयनीय थी। कंटेकी में दास प्रथा का प्रचलन था, जिसे वे वर्चस्व का जरूरी अंग मानते थे। लिहाजा वे दास प्रथा जारी रखने के समर्थकों के हक में थे। यह लिंकन की चिंता का मुख्य कारण था। वे नहीं चाहते थे कि ओहियो नदी का दक्षिणी किनारा विद्रोहियों के हाथ में चला जाये। इसके लिये लिंकन ने एण्डरसन को कंटेकी का कमांडर बना कर भेजा। इस बीच संघीय विचारधारा और अलगाववादियों दोनों ने कंटेकी में अपनी स्थिति मजबूत करने में कोई कसर नहीं उठा रखी। बावजूद इन हालातों के, एन्डरसन ने जल्दी ही पूरे प्रान्त को अपने कब्जे में ले लिया।

परन्तु लिंकन का मिसौरी अभियान इतना सफल नहीं रहा। मिसौरी राज्य की भौगोलिक स्थिति ऐसी थी कि वहाँ से ओहियो, मिसीसिपी तथा मिसौरी

नदियों के जलमार्ग के आवागमन पर नियन्त्रण रखा जाता था। मिसीसिपी नदी के पश्चिम में बसे सेंट वुड्स का सामरिक महत्व था। इसका परिणाम यह हुआ कि दक्षिण-पंथी सेना इस नगर के बाहर इकट्ठा हो गयी, जबकि संघ समर्थक शहर के भीतरी हिस्से में एकत्र हो गये। संघीय सेना के कमांडर नाथनील लेयान की सड़कों पर झड़प हो गयी जिसमें 28 लोग मारे गये। लिंकन दोनों पक्षों में समझौता कराने में असफल रहे और मिसीसिपी राज्य पर कब्जे के लिये युद्ध छिड़ गया।

वर्जीनिया के लोग इन सबमें सबसे ज्यादा समझदार थे। इन लोगों में भी दोनों ही तरह के लोग थे– अर्थात अलगाववादी भी थे और संघीय विचारधारा को मानने वाले भी। इन लोगों ने ठीक-ठाक बंटवारा करके पूर्वी और पश्चिमी वर्जीनिया बना लिया। पूर्वी वर्जीनिया के लोग अलगाववादियों के साथ थे, जबकि पश्चिम के लोग संघीय व्यवस्था के साथ थे। दोनों की अलग अलग राजधानी बनी। लिंकन ने पश्चिमी वर्जीनिया को पूर्ण राज्य की मान्यता दी। वर्जीनिया का उत्तरी भाग वाशिंगटन से लगा हुआ था, लिहाजा इस पर पहले से ही संघीय व्यवस्था का अधिकार था।

सेना में बढ़ोत्तरी

सीमान्त राज्यों की स्थिति साफ करने के बाद लिंकन ने उत्तरी राज्यों की ओर ध्यान दिया। उत्तरी राज्यों की ओर देखना जरूरी भी था। इसके लिये उन्होंने संयुक्त राज्य अमरीका की सेना में बढ़ोत्तरी की। 3 मई को उन्होंने अतिरिक्त स्वयंसेवकों की तीन वर्ष के लिए मांग की। उसमें 18 हजार नौसैनिकों की भरती की। इससे पहले 19 अप्रैल को उन्होंने सात सम्मानित राज्यों के बंदरगाहों की नाकेबंदी कर दी। नौसैनिक भर्ती में उन्होंने 8 बंदूक रेजीमेंट, 1 घुड़सवार रेजीमेंट और 1 तोप रेजीमेंट को भी बढ़ाया। सेना की भरती के लिये उन्होंने किसी प्रकार की संसद की मंजूरी का इंतजार नहीं किया।

लिंकन ने उत्तरी कैरोलाइना और वर्जीनिया के बंदरगाहों की नाकेबंदी के भी आदेश दिये। दो दिन बाद उन्हों कैलिफोर्निया से आने वाले सोने से लदे जहाजों की सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किये। यह सोना उनकी सरकार के युद्ध के लिये बहुत जरूरी था। बगैर किसी संसद की अनुमति के, उन्होंने बोस्टन, न्यूयार्क और फिलाडेल्फिया नौसेना के पांच जंगी जहाजों को खरीदने के आदेश दिये, ताकि वाशिंगटन आने-जाने हेतु जलमार्ग की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

4 जुलाई को लिंकन ने संसद में अपने भाषण में युद्ध शुरू करने के लिए दक्षिणपंथियों को दोषी ठहराया। उन्होंने यह भी बताया कि उनकी युद्ध लड़ने की क्या योजना है। अपने भाषण में लिंकन ने इसे गृहयुद्ध के बजाये 'विद्रोह' कहा। पूरे युद्ध के दौरान पकड़े गये सैनिक और नौ सैनिकों को अलग जेल कैम्पों में रखा गया, न कि साधारण जेलों में। मतलब साफ

था—लिंकन उन्हें युद्धबंधी मानते थे, न कि अपराधी।

लिंकन ने दक्षिण में बनी सम्मिलित सरकार को भी मान्यता नहीं दी। वे पूरे दक्षिण को संघ का हिस्सा मानते थे। अतः उनके साथ किसी प्रकार की वार्ता या शान्ति समझौते का सवाल ही न था। उनके अनुसार विद्रोह तो मात्र कुछ व्यक्तियों की करतूत है, जिसकी सजा पूरे राज्य को नहीं दी जा सकती। युद्ध में विजयी होने के बाद अन्य राज्यों की भांति दक्षिण राज्य भी संयुक्त राज्य अमरीका का हिस्सा बने रहेंगे। उनके साथ कोई भेदभाव नहीं होगा। लिंकन ने संसद के संवैधानिक अधिकारों का सम्मान करते हुए कहा कि युद्ध में जो भी कदम बगैर संसद की अनुमति के उठाये गये हैं, वे सभी आपातकालीन कार्य जन आकांक्षाओं के अनुरूप और जनता के लिये तथा राष्ट्रहित में किये गये। वे तब भी और अब भी आशा करते हैं कि संसद उन आपात कार्यों को मंजूरी देगी।

'हैबियस कार्पस' के अधिकार को स्थगित किया जाना उनके लिये एक कठिन कार्य था। उन्होंने माना कि इसका अधिकार संसद को है। परन्तु राष्ट्रपति को भी है कि नहीं, यह एक विवादित विषय है। लिंकन के अनुसार, एक विकट परिस्थिति में जब संसद का अधिवेशन नहीं चल रहा है, मुख्य कार्यकारी (राष्ट्रपति) यह कदम जनहित में उठा सकता है। उनके अनुसार, इसमें किसी कानून को नहीं तोड़ा गया। यदि हैबियस कार्पस (प्रत्यक्षीकरण) की स्वतन्त्रता के अधिकार का उस समय पालन होता तो सरकार खण्डित हो जाती और जनता के अन्य सभी कानूनी अधिकार स्थगित हो जाते।

युद्ध के पहले नौ महीनों में आंकड़ों के अनुसार 864 लोगों को बिना मुकदमा चलाये नजरबंद किया गया, तब यह अधिकार राज्य सचिव को था। फरवरी, 1862 को जब यह अधिकार युद्ध सचिव के अधिकार क्षेत्र में आ गया, तब ऐसे नजरबंदियों की संख्या और भी बढ़ गयी। जो लोग नजरबंद किये गये, उनमें अधिकतर दुश्मन के जासूस, तस्कर, अनाधिकार प्रवेश-कर्ता, जब्ती सामान ले जाने वाले विदेशी नागरिक थे। राजनैतिक बंदियों की संख्या बहुत कम थी। युद्ध के दौरान संसद के पहले भाषण में लिंकन ने यह स्पष्ट कर दिया कि युद्ध जीतना उनकी पहली प्राथमिकता है, नागरिक अधिकारों की रक्षा उसके बाद आती है।

❑



गुलामी के विरुद्ध तेज संघर्ष

3 जून 1861 को लिंकन के घोर विरोधी रहे डेमोक्रेटिक नेता डगलस की मृत्यु हो गयी। दक्षिण राज्यों के सांसदों ने संसद का बहिष्कार कर दिया। इस प्रकार दोनों सदनों में रिपब्लिकन पार्टी का बहुमत हो गया। राष्ट्रपति के भाषण को करतल ध्वनि के साथ सराहा गया। लिंकन ने संसद से गुजारिश की कि वे चार लाख की सेना खड़ी करने के लिये 40 करोड़ डालर की मंजूरी दे। इस पर उत्साहित सांसदों ने 5 लाख की सेना के लिये 50 करोड़ डालर की अनुमति दे दी। इसका कारण था कि हर सांसद यह चाहता था कि सरकार किसी भी तरह से युद्ध जीते। पूरे देश में लिंकन के भाषण का स्वागत हुआ। संसद ने उनके तथा कथित सारे असवैधानिक कार्यों को मंजूरी देकर उन्हें सवैधानिक बना दिया।

युद्ध में रणनीति क्या हो, इस पर जनरलों में मतभेद था। वे अलग-अलग दृष्टिकोण से इस युद्ध को देख रहे थे। आरम्भ के कुछ महीनों में संघीय सेना को कुछ झटके लगे। तैयारी पूरी न होने के कारण लिंकन किसी न किसी तरह से बड़े युद्ध को टाल रहे थे। परन्तु वर्जीनिया में इस युद्ध को टाला न जा सका। जून में लिंकन, जो सेना के सर्वोच्च कमान्डर भी थे, सेना को वर्जीनिया पर हमला बोलने का आदेश दिया। यह हमला जनासाज पर बोला गया, जहाँ से वाशिंगटन को लगातार खतरा था। इस हमले की बागडोर लिंकन ने 42 वर्षीय युवा जनरल इटविन मैकडावेल को दी। उनसे कहा गया कि 9 जुलाई तक हमला कर दें। इसमें उन्होंने एक सप्ताह की देरी कर दी। तब तक हमले की खबर दुश्मन तक पहुँच गयी और वह चौंकन्ना हो गया। उसने कुछ और सेना भेज दी। परिणामस्वरूप हमला नाकाम हो गया। लिंकन परेशान हो गये। वे रात भर सो न सके। वाशिंगटन पर खतरा बढ़ गया। परन्तु अगले दिन पता चला कि मैकडावेल ने अपनी सेना को पीछे हटा लिया था। जिससे सेना बरबाद होने से बच गयी। राजधानी वाशिंगटन को बचाने के लिये उन्होंने दक्षिण में पुनः किलेबंदी कर दी। अब वाशिंगटन को कोई खतरा नहीं था।

युद्ध में पहली लड़ाई में मिली नाकामी का नतीजा यह हुआ कि संसद के दोनों सदनों ने राष्ट्रपति को अपना समर्थन दोहराया। एक सांसद ने प्रस्ताव रखा कि युद्ध संविधान और संघ की अस्मिता के लिये लड़ा जा रहा है। सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के लिये लिंकन वाशिंगटन की रक्षा हेतु चारों ओर तैनात सेना की टुकड़ियों से मिलने गये और उन्हें आश्वासन दिया कि उन्हें आवश्यक आपूर्ति बनाये रखी जायेगी। इतना ही नहीं, वाशिंगटन की रक्षा हेतु लिंकन ने वहाँ नये जनरल की नियुक्ति की।

मैकलेन की विफलता ने लिंकन को यह सोचने पर विवश कर दिया कि

देश और इतिहास उन्हें क्या कहेगा। फिर उन्होंने जान पोप पर भरोसा किया। पोप और मैकलीन में दो समानतायें थीं। पोप भी मैकलीन के समान खूबसूरत और बड़बोले थे। अपनी सैन्य शिरकत के पहले ही पोप ने कहा—"आप सभी एक नम्बर के दब्बू और डरपोक हैं। यह बात आपके पूर्व में काम करने से साबित होती है। अब मैं आ गया हूँ, और आप जल्दी ही सैन्य जादूगरी का कमाल देखेंगे।"

मैकलेन, पोप से अत्यधिक घृणा करता था। आखिर पोप उनके स्थान पर आया था। पोप को वर्जिनिया रवाना होना था और युद्ध के विस्तृत होने के आसार थे। लिहाजा पोप भी अपनी तैयारी में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते थे। वे चाहते थे कि जितना अधिक सैन्य बल मिल जाये, उतना ही अच्छा है। युद्ध के मैदान में जबरदस्त रक्तपात हुआ। उस समय स्थिति इतनी गम्भीर हो गयी थी कि लगता था कि राजधानी हाथ से निकल जायेगी। वाशिंगटन को बचाने का आग्रह हर नागरिक से करना पड़ा।

लिंकन, मैकलेन को व्हाइट हाउस तलब कर चुके थे और बता चुके थे कि लोग उन्हें क्या मान रहे हैं।

मैकलेन के बारे में लोगों का मानना था कि वे पृथकतावादियों के हाथों वाशिंगटन का पराभव देखना चाहते हैं। वास्तविकता तो यह थी कि लिंकन सोच ही नहीं पा रहे थे कि सेना की कमान किसके हाथों में दी जाये।

लिंकन को यह भी कहते हुए सुना गया कि मैकलेन को दोबार अवसर दिया जाये। वह स्वयं नहीं लड़ता, लेकिन दूसरों को तो युद्ध में प्रेरणा दे सकता है। उसमें शायद युद्ध की भावना जगाने वाला मंत्र है। इस बात पर लिंकन की तीव्र भर्त्सना हुई। उनकी काबीना के स्टेनटन और चेज ने कहा कि शायद ली का वाशिंगटन को कब्जा लेना उतना बुरा नहीं होगा जितना देशद्रोही मैकलेन को दोबारा सेना की कमान सौंपना। इस निंदा से लिंकन विचलित हो गये। उन्होंने प्रस्ताव दिया कि यदि काबीना चाहता है तो वे पद से इस्तीफा देने के लिये तैयार हैं।

श्रीमती लिंकन फिलूजखर्ची

लिंकन का परिवार व्हाइट हाउस में था। समय निकाल कर कभी कभी लिंकन भी बच्चों के साथ खेलते थे। एक खास बात यह थी कि लिंकन का आवास हर खास और आम के लिये सदा खुला रहता था। ऐसा किसी पूर्व राष्ट्रपति के काल में नहीं हुआ था। अमरीका के इतिहास में पहली बार नागरिकों ने यह महसूस किया कि उनका राष्ट्र उन्हीं में से एक है, न कि कोई ऊपर से आया हुआ फरिश्ता!

देश की प्रथम महिला होने के नाते मैरी लिंकन अपने दायित्व को बखूबी निभा रही थी। व्हाइट हाउस की हालत अच्छी नहीं थी, फर्नीचर टूटा-फूटा था, दीवारों की ऊपरी सतह झड़ रही थी, कालीन फटे हुए थे। तहखाने के ग्यारह कमरे गंदे थे और उनमें चूहों का रैन बसेरा था। श्रीमती लिंकन के आग्रह पर संसद ने व्हाइट हाउस के रख-रखाव के लिये चार वर्ष में 20,000

डालर खर्च करने की अनुमति दी। रख-रखाव का काम मैरी लिंकन को ही करना था।

श्रीमती लिंकन 1861 की गर्मी में फिलाडेल्फिया और न्यूयार्क, व्हाइट हाउस के लिये फर्नीचर खरीदने के लिये गयीं। जब वे वहाँ से वापस आयीं तो उन्होंने वहाँ रंगाई-पुताई, सफाई, पेन्ट आदि का काम करवाया। इस बीच न्यूयार्क से नया बढ़िया फर्नीचर, नई कालीनें, नई क्राकरी पर्दे और दीवार पर लगाया जाने वाला कागज आदि पहुँच गया। सभी महंगा और बेहतरीन गुणवत्ता का था।

परन्तु वर्ष के अन्त में जब बिल आये, तो उन्हें पता चला कि उन्होंने बजट से कहीं अधिक खर्च कर दिया है। बजट तो पूरे चार वर्ष का था। उन्होंने पुराने फर्नीचर को बेच कर इसकी भरपाई करने का प्रयास किया। परन्तु उससे कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ा। अन्त में मैरी ने सब कुछ सार्वजनिक इमारतों के कमिश्नर को सच- सच बता दिया। उन्होंने लिंकन से कहा कि वे संसद से इसके लिये अतिरिक्त मंजूरी लें।

लिंकन को जब इस बात का पता चला तो उन्हें अपने आप पर अधिकार न रहा और वह क्रोध में भड़क गये। परन्तु अब क्रोध करने से हो भी क्या सकता था। विवश हो कर उन्हें शांत होना पड़ा और उन्होंने संसद से अतिरिक्त मंजूरी ले ली।

इस बीच विद्रोह लम्बा खिंचने से लोगों में उकताहट और घबराहट फैलने लगी। अब तक लिंकन को मिलने वाला समर्थन भी डांवाडोल होने लगा। डेमोक्रेटिक दो भागों में विभक्त हो गये– एक युद्ध समर्थक तथा दूसरे शान्ति समर्थक। शान्ति समर्थकों का कहना था कि इस निरर्थक और अप्राकृतिक गृह-युद्ध को किसी भी शर्त पर तुरन्त समाप्त कर दिया जाना चाहिये। जबकि युद्ध समर्थक तो लिंकन के ही साथ थे।

लिंकन को यह महसूस हो गया था कि डेमोक्रेटिक्स के समर्थन के विद्रोह को दबाया नहीं जा सकता है। यही वजह थी कि उन्होंने डेमोक्रेटिक लोगों को अपने प्रशासन में पूर्ण पदों पर नियुक्त कर रखा था। लिंकन ने संघर्ष को 'संघ बना भंग' का नाम दिया। उन्होंने इसे फिलहाल 'स्वतन्त्रता बनाम गुलामी' बनाने से इंकार कर दिया और कहा कि अभी इसके लिये समय नहीं आया है।

दूसरी ओर रिपब्लिकन सांसदों में असंतोष बढ़ता जा रहा था। उनके अनुसार लिंकन बहुत धीमी गति से काम कर रहे हैं। सेण्ट लुडस स्थित पश्चिमी कमान के कमान्डर फ्रीमौन्ट के सब्र का बांध ही टूट गया और उन्होंने दक्षिण-पश्चिम की ओर से अलगाववादियों के आक्रमण तथा गुरिल्ला युद्ध से निबटने के लिये पूरे मिसौरी प्रांत में मार्शल ला लगा दिया और घोषणा कर दी कि यदि कोई नागरिक हथियार लेकर निकलता पाया गया तो उसे मार्शल ला का दोषी मानते हुए गोली से उड़ा दिया जायेगा।

फ्रीमौन्ट की घोषणा वाशिंगटन से बगैर सलाह मश्विरे के की गयी थी जो लिंकन की घोषित नीति से मेल नहीं खाती थी। लिंकन ने उन्हें आदेश

में संशोधन करने को कहा। उन्होंने फ्रीमौन्ट से कहा कि अगर वे उनके आदमियों को गोली से उड़ाते हैं तो दुश्मन भी हमारे आदमियों को गोली से उड़ा देंगे। उनका यह भी कहना था कि जबरन दासों को रिहा करने से सामाजिक समस्याएं बढ़ेंगी और दक्षिण के लोग हमसे स्थायी क्रम से दूर हो जायेंगे।

फ्रीमौन्ट लिंकन से सहमत नहीं थे। वे स्वयं युद्ध का संचालन कर रहे थे एवं दिक्कतों का सामना कर रहे थे। उन्हें मिसौरी राज्य की सुरक्षा स्वयं करनी थी, क्योंकि केन्द्र उनकी किसी भी प्रकार की सहायता करने में असमर्थ था। केन्द्र न उन्हें सैनिक दे रहा था, न हथियार और रसद ही दे रहा था। फ्रीमौन्ट ने अपनी बात मनवाने के लिये अपनी पत्नी जेसी को लिंकन के पास भेजा। 10 सितम्बर को रात नौ बजे उन्होंने लिंकन से भेंट की। जेसी ने व्हाइट हाउस पहुँचकर अपने पति के द्वारा दिया गया पत्र लिंकन को दिया।

परन्तु लिंकन टस से मस नहीं हुए और फ्रीमौन्ट को किसी भी प्रकार का समर्थन देने से इंकार कर दिया। उन्होंने कहा कि ऐसी स्थिति में यदि मैं फ्रीमौन्ट का समर्थन करता हूँ तो जनता में एक ही संदेश जायेगा कि अमरीका में तानाशाही है। यहाँ कोई चुनी हुई सरकार नहीं है। लिहाजा मैं समर्थन नहीं दे सकता। उन्होंने फ्रीमौन्ट को अपनी घोषणा बदलने के लिखित आदेश दिये।

परन्तु फ्रीमौन्ट भी बड़ा जिद्दी और झगड़ालू आदमी था। वह पहले मिसौरी के गवर्नर, उनके सहायकों और मंत्री मोंटगुमरी ब्लेयर के परिवार से झगड़ा कर चुके थे। ब्लेयर ने तो लिंकन से लिखित शिकायत कर निवेदन किया था कि फ्रीमौन्ट को हटा दिया जाये। लेकिन लिंकन नहीं माने और उसे एक मौका दिया और विश्वास जताया कि फ्रीमौन्ट भविष्य में ऐसा कुछ नहीं करेंगे।

मगर फ्रीमौन्ट तो अपनी ही ज़िद वाला आदमी था। उसने बिना वाशिंगटन को विश्वास में लिये अधिनायकवादी आदेश प्रसारित किया। लिंकन इसे सहन नहीं कर पाये और 2 नवम्बर को उन्हें हटाकर उनके द्वारा पारित सभी प्रकार के आदेशों को निरस्त कर दिया। कंटेकी के लोगों ने लिंकन की कार्यवाही का समर्थन किया, जबकि पश्चिम और उत्तर-पश्चिम वालों के अनुसार फ्रीमौन्ट का अनुसरण करके ही युद्ध जीता जा सकता था। उन्होंने लिंकन के फैसले की कटु आलोचना की।

अपनी आलोचनाओं के जवाब में लिंकन ने कहा कि ऐसा करना आवश्यक था। इसलिये कि फ्रीमौन्ट के आदेश बने रहते तो हमें केंटुकी खोना पड़ता। केंटुरी चला जाता तो मिसौरी व मैरीलैन्ड को बचाना कठिन हो जाता। दूसरी बात यह कि गुलामों को रिहा करने या न बचाने सम्बन्धी आदेश मिलिट्री का जनरल कैसे दे सकता है? और यह मामला पूरी तरह से राजनीतिक है। यहाँ संविधान है, चुनी हुई सरकार है और लोकतन्त्र है। लिहाजा, इस तरह के फैसले इसी ढांचे के तहत लिये जा सकते हैं।

खरगोश की तरह दौड़ने वाले फ्रीमौन्ट की ओर से लोगों का मोहभंग हो गया। अब सबका ध्यान मैक क्लेनन की ओर हो गया, जो कछुए की भांति धीरे-धीरे तथा ठोस कदम उठाकर लम्बे खिंचने वाले युद्ध को जीतने की तैयारी कर रहे थे। मैक क्लेनन लिंकन के विश्वास-पात्र थे, नौजवान थे, जोश में कोई अनावश्यक कदम नहीं उठाते थे। जुलाई में उन्होंने वाशिंगटन की रक्षा करके अपनी योग्यता साबित कर दी थी। सभी को एहसास हो गया था कि वे एक असाधारण जनरल हैं। उन्होंने मजबूत किलेबंदी करके वाशिंगटन की सुरक्षा सुनिश्चित कर दी। उन्होंने 90 दिन वाले सैनिकों को हटाकर तथा तीन साल वालों को व्यापक ट्रेनिंग देकर सेना की मजबूत टुकड़ी बनायी। वे कुर्सी पर बैठ कर कार्य करने वालों में से नहीं थे, बल्कि एक-एक सैनिक के पास पहुँचते और उनका हाल-चाल पूछते थे। वे सैनिकों का ख्याल रखते थे और बदले में सैनिक भी उन्हें इतना प्यार देते थे कि उनके आदेश पर जान की बाजी लगा सकते थे।

पहली नवम्बर को लिंकन ने बूढ़े जनरल स्कॉट को अमरीकी सेना के प्रमुख कमाण्डर के पद से हटा कर युवा मैकक्लेनन को उनके स्थान पर अमरीकी सेना का सर्वोच्च कमान्डर बना दिया। परन्तु जल्दी ही मैकक्लेनन अन्य सदस्यों को मूर्ख समझने लगे और उन्हें नजरअंदाज करने लगे। लोगों को उनकी विश्वसनीयता संदिग्ध लगने लगी। परन्तु लिंकन उन्हें जल्दी हटाने के पक्ष में नहीं थे।

अपनी तमाम व्यस्तताओं, संकटों के बाद भी लिंकन अपने दोनों बेटों टेड और विली को पर्याप्त समय देते थे। वे दोनों भी व्हाइट हाउस में शोर मचाये रखते थे। शैतानी भी वे कम नहीं करते थे। कभी नौकरों के साथ लेकर ड्रिल करते तो कभी कुछ और। यदि कोई लिंकन से मिलने के लिए आता तो वे उनके कागजात लेकर सीधे लिंकन के पास पहुँच जाते और आगन्तुक की मदद करते। एक दिन लिंकन काबीना की बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। बैठक में जरूरी मसले पर विचार-विमर्श चल रहा था कि दोनों बच्चे धड़धड़ाते हुए उस कक्ष में चले गये। वहाँ पहुँच कर उन्होंने लिंकन को बताया कि तलघर में एक बिल्ली ने अभी-अभी छोटे-छोटे बच्चों को जन्म दिया है।

लिंकन बच्चों को कुछ नहीं कहते थे। इससे उनकी काबीना के लोग भी परेशान थे। एक बार चेज़ किसी आवश्यक मुद्दे पर लिंकन को सहमत करने की कोशिश में लगे थे, तभी टेड वहाँ कूदता-फांदता आया और लिंकन के कंधे पर चढ़ गया। फिर एक टांग लिंकन के गले की तरफ और दूसरी टांग दूसरी तरफ डाल कर बैठ गया। इस पर चेज़ झुंझला उठा, मगर लिंकन निर्विकार भाव से बातें करते रहे।

विली सर्दी में भी अपनी शैतानी हरकतों से बाज नहीं आता था। हांड़ कंपा देने वाली सर्दी में विली बारिश में भीग गया और उसे बुखार हो गया। बहुत कोशिशों के बाद भी उसे बचाया नहीं जा सका। इस पर लिंकन सुबक-सुबक कर रोये। उन्होंने कहा—

"मेरा बच्चा इस धरती के लिये बहुत अच्छा था। ईश्वर ने उसे अपने घर बुला लिया। मगर यह ज्यादती है...उसे इस रूप में देखना ज्यादती है।"

मैरी लिंकन इसके बाद ऐसे गहरे अवसाद में चली गयीं कि वे बिली की अंत्येष्टि में भी नहीं गयीं। वे उसकी तस्वीर की तरफ देख नहीं सकती थीं। यहाँ तक कि उसे जो भी पसंद था, उसकी तरफ भी नहीं। उन्होंने उसके सारे खिलौनों को बांट दिया। इतना ही नहीं, जिस अतिथि कक्ष में विली ने अन्तिम सांसें लीं, उसे उन्होंने फिर नहीं खोला।

राष्ट्रपति के रूप में लिंकन का पहला 'राज्यों के संघ' का संदेश 3 दिसम्बर 1861 को कोंग्रेस (संसद) में दिया गया। इसमें उन्होंने एक कृषि विभाग बनाये जाने की घोषणा की। उन्होंने कांग्रेस से दो काले प्रजातान्त्रिक देशों—होइती और लाइबेरिया—को मान्यता देने की सिफारिश की। उन्होंने अपने भाषण में मुक्त समाज में पूंजी और मजदूर के सम्बन्धों की व्याख्या की और कहा—"संघ जिस संघर्ष में उलझा हुआ है, वह आज के लिये नहीं, बल्कि आने वाले लम्बे समय में भी शोषण के विरुद्ध ऐसा संघर्ष लगातार जारी रहेगा।"

निश्चित रूप से लिंकन का संदेश मार्क्सवाद के उस सिद्धान्त की ओर था जिसमें पूंजी और मजदूर के बीच के सम्बन्धों को लम्बे खिंचने वाले वर्ग संघर्ष की संज्ञा दी गयी थी।

ब्रिटेन से तनातनी

लिंकन ने अपनी विदेश नीति का कार्य राज्य सचिव सेवर्ड को सौंप रखा था। सेवर्ड द्वारा ब्रिटेन के विरुद्ध सख्त रवैया अपनाने के कारण लिंकन विदेश नीति के मामले में समनर से विचार-विमर्श करने लगे; जो सीनेट की विदेश सम्बन्धी कमेटी के अध्यक्ष थे। समनर दस वर्षों से सीनेटर थे तथा उच्च शिक्षा प्राप्त राजनीतिक थे। वे लिंकन को ईमानदार, परन्तु अनुभव हीन व्यक्ति मानते थे। लिंकन भी समनर का सम्मान करते थे। लिंकन और समनर की नजदीकियाँ सेवर्ड को फूटी आंख नहीं सुहाईं। वे दबी जबान में कहने लगे—"पता नहीं वाशिंगटन के कितने राज्य सचिव हैं!"

लिंकन को समनर से पता चला कि ब्रिटिश जहाज की तलाशी के विरुद्ध बड़ा आक्रोश है। ब्रिटेन उस समय विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक तथा सैनिक शक्ति था। अमरीका और दो दक्षिणी राजनयिकों की दो सौ गिरफ्तारी से, ब्रिटेन में अमरीका, अपने गृह युद्ध के कारण कमजोर स्थिति में था। ऐसे में अमरीका को ब्रिटेन की दुश्मनी मंहगी पड़ सकती थी। गृह युद्ध की आग में झुलस रहे अमरीका में ब्रिटेन भी अपने हाथ जलाना नहीं चाहता था। ऐसे में लिंकन ने समनर की यह सलाह मान ली कि मामले को पंचनिर्णय हेतु सौंप दिया जाये। इस बीच ब्रिटेन सरकार ने 23 दिसम्बर को अमरीका में अपने राजदूत द्वारा, दोनों राजनीयिको को छोड़े जाने और अमरीका द्वारा माफी मांगने की मांग रखी।

इसके लिये पत्र में सात दिन का समय दिया गया। मांगें पूरी न होने पर

अमरीका में ब्रिटिश दूतावास बंद करने और राजदूत वापस बुलाने की चेतावनी दी गयी। मामला गम्भीर था। अतः विचार करने के लिये लिंकन ने 25 दिसम्बर को कैबिनेट की बैठक बुलायी। इस बैठक में समनर को भी आमंत्रित किया गया। सभी ने महसूस किया कि इस ऐतिहासिक घड़ी में ब्रिटेन के साथ तनाव का कोई औचित्य नहीं है। लिंकन ने भी कहा कि दो युद्ध एक नहीं साथ नहीं लड़े जा सकते। सेवर्ड ने प्रस्ताव का विरोध किया। लिंकन भी प्रस्ताव से पूर्ण सहमत नहीं थे। अन्त में तय हुआ कि फैसला लेने के लिये अगला दिन मुकर्रर कर दिया जाये। अगले दिन सेवर्ड का प्रस्ताव लिंकन और कैबिनेट ने मंजूर कर लिया। इस प्रकार अमरीकी गृह-युद्ध के अन्तर्राष्ट्रीयकरण होने का खतरा टल गया।

अपने अनुभवहीन होने का एहसास खुद लिंकन को भी था। फिर राष्ट्रपति बनने के साथ ही जिस प्रकार की परिस्थितियाँ उनके सामने आ रही थीं, उन परिस्थितियों में किसी भी बेहतर सलाहकार और सहायता करने वाले की मदद दरकार होती है। लिंकन को भी हुई। उन्होंने अपने सहायकों से मदद ली, मगर उससे उनकी परेशानियाँ कम होने के बजाय बढ़ती चली गयीं। इस बीच पूरे वाशिंगटन में यह दुष्प्रचार फैल गया कि प्रशासन सेवर्ड ही चलाते हैं, लिंकन तो मात्र एक मुखौटा हैं।

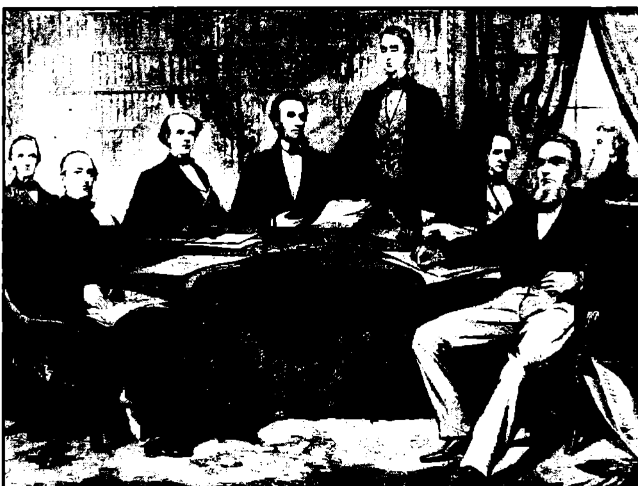
जब मैरी ने इस बात को सुना तो वे बौखला गयीं। उनका गर्व आहत हुआ और उन्होंने लिंकन को सलाह देते हुए कहा कि वे विधायी रूप में कुछ जरूरी कदम उठायें, ताकि स्थिति स्पष्ट हो सके। लिंकन ने मैरी को विश्वास दिलाते हुए कहा कि तुम चिंता मत करो, मैं प्रशासन चलाऊँ या नहीं चलाऊँ, लेकिन यह तय है कि अब सेवर्ड प्रशासन नहीं चलायेगा।

राष्ट्रपति पद की शपथ लिये लिंकन को दस महीने हो गये थे। युद्ध सचिव केमेरान और लिंकन के बीच किसी बात को लेकर मतभेद हो गया, लिंकन ने युद्ध सचिव से इस्तीफा मांग लिया। लिंकन को मालूम था कि देश का भविष्य उनके इस चयन पर टिका हुआ है। वे बिल्कुल द्वन्द्व में नहीं थे और उन्होंने स्टेनटन को युद्ध सचिव नियुक्त कर दिया। स्टेनटन भारी लेकिन मझौले कद और बलवान शरीर का स्वामी था। उसके पिता डाक्टर थे, जिनके बाहरी कक्ष में नर कंकाल टंगा रहता था। उन्हें लगता था कि एक दिन उनका बेटा भी डाक्टर बनेगा। हालाँकि ऐसा नहीं हुआ।

लिंकन ने तय किया कि वे स्टेनटन के दिमाग में किसी भी प्रकार की दखलअंदाजी नहीं करेंगे। स्टेनटन ने भी युद्ध सचिव बनने के बाद लिंकन को धोखा नहीं दिया। वे दिन-रात काम करते। यहाँ तक कि वे भोजन भी युद्ध मैदान में करते और सोने के लिये घर भी नहीं जाते थे। हालाँकि स्टेनटन भी ऐसे सैन्य अफसरों से घिरे थे जो नितान्त अयोग्य और अकर्मण्य थे। उन्होंने उनकी कसकर परेड ली। उनसे कांग्रेस के अनेक सदस्य भी भयभीत रहते थे। उनके लिये संविधान ईमान था। उसके उल्लंघन पर स्टेनटन ने कई जनरलों को भी नहीं बख्शा। उन्होंने मैकलेन से भी कह दिया था कि यदि वे सेना का कार्य-भार देखना चाहते हैं तो उन्हें लड़ना ही होगा।

लिंकन ने 27 जनवरी को राष्ट्रपति का युद्ध आदेश जारी कर दिया, जिसमें देश की सारी थल सेना को आदेश दिया गया कि वे 22 फरवरी से आगे बढ़ना आरम्भ कर दें। उन्होंने किसी निश्चित योजना का खुलासा नहीं किया। परन्तु इस आदेश ने सेना को एक झटका दिया और निष्क्रियता तोड़ने पर विवश कर दिया। 22 फरवरी के पहले ही पश्चिम की सेनाओं ने नये क्षेत्र जीतने आरम्भ कर दिये। इससे पहले 19 फरवरी को संघीय सेना ने पूर्व केन्टकी में पृथकतावादियों की आपूर्ति रेखा काट दी।

6 फरवरी को सेना ने नौसेना की सहायता से हेनरी फोर्ट (टेनेसी नदी पर स्थित) पर कब्जा कर लिया। डोनेन्सन किले पर भी सेना ने ग्यारह दिन बाद अधिकार कर लिया। अलगाववादियों ने केन्टेकी प्रान्त छोड़ दिया और 25 फरवरी को टेनेसी प्रान्त पर भी संघीय सेना का कब्जा हो गया। हेनरी कोर्ट पर कब्जा करने वाले कमाण्डर ग्राण्ट का प्रमोशन करके लिंकन ने उन्हें मेजर जनरल बना दिया। 5 फरवरी को राष्ट्रपति भवन (व्हाइट हाउस) में एक भव्य रात्रि भोज का आयोजन हुआ। इसमें श्रीमती लिंकन ने 500 लोगों को आमन्त्रित किया। वे दिखाना चाहती थीं कि उन्होंने व्हाइट हाउस को कितना चमका दिया है।



समारोह में केटरिंग की व्यवस्था न्यूयार्क के "मिलाईस" को दी गयी, जो उस समय देश का सबसे महंगा केटरर था। इस समारोह को व्हाइट हाउस में अब तक हुए समारोहों में सबसे भव्य माना गया।

मार्च में संघीय सेना ने कुछ सफलतायें अर्जित कीं। 6 से 8 मार्च को पीरिज और रिज (अरकेन्साज) को जीतने की सुरक्षा सुनिश्चित की। लिंकन के आदेश ने मैकक्लेनन को भी मजबूर किया कि वे अपनी रणनीति पर

उनसे विचार करें। दोनों के मतभेद सामने आये। कलेनन चाहते थे कि सम्मिलित राज्यों की राजधानी रिचमौण्ड पर पूर्व की ओर से हमला किया जाये ताकि नौसेना मनासाज पर हमला कर पहले उनकी छवि को रौंद दे।

जब मैकक्लेनन नहीं माने तो लिंकन ने चार दिन बाद पोरोमैक सेना को आदेश दिया कि वो मनासाज पर 22 फरवरी या उससे पहले कर लें। क्लेनन ने एक 22 पेज का पत्र युद्ध मंत्री स्टेनटन को लिखा, जिसमें उन्होंने लिंकन की योजना का विरोध किया और रिचमौन्ड पर हमले की बात दोहराई। इस पर लिंकन ने जनरल से अनेक सवाल पूछे। उत्तर में क्लेनन ने कहा कि वे अपनी जान की बाजी लगाकर भी इस युद्ध में सफलता हासिल करेंगे। लिंकन उसकी बात पर संतुष्ट तो नहीं हुए, लेकिन उन्होंने सब कुछ क्लेनन पर छोड़ दिया।

जनरल मैक क्लेनन को कुछ लोग गद्दार कहते थे। मगर लिंकन ऐसा नहीं कहते थे। पर वे उनकी गतिविधियों पर नजर जरूर रखते थे। अलगाववादी सेना मनासाज से पीछे हटने लगी। तब क्लेनन एक लाख बारह हजार सैनिकों को लेकर वहाँ पहुँचे। वहाँ मुश्किल से 50 हजार लोग थे, जिन्हें पहले जनरल एक लाख बता रहे थे और किसी भी तरह से स्वयं को युद्ध से बचा रहे थे। हंसी तो तब ज्यादा उड़ी जब यह पता चला कि विरोधियों ने लकड़ियों के लट्ठे पेंट कर कुछ इस तरह से लगा दिये थे कि वे तोप नजर आयें और क्लेनन ऐसा समझते भी थे।

सब जानते थे कि युद्ध का प्रमुख कारण दास प्रथा है, फिर भी लिंकन दास प्रथा पर टिप्पणी नहीं कर रहे थे। इस बात को चिल्ला-चिल्लाकर नहीं कह रहे थे। रिपब्लिकन पार्टी के उनके साथी इसी पर नाराज थे। यद्यपि वे एक के बाद एक ठोस कदम उठा रहे थे, जिससे कि दास प्रथा को चोट पहुँचे। वे दक्षिण राज्यों में प्रचलित दास प्रथा में किसी भी प्रकार की दखलअंदाजी करने से मना कर रहे थे क्योंकि उनका मानना था कि दास प्रथा के उन्मूलन से पहले देश की एकता को सुनिश्चित करना अति आवश्यक है। यदि उत्तर में दास प्रथा को खत्म कर दें और दक्षिण में यह जारी रहे तो इससे फायदा क्या? परन्तु अब पार्टी तथा कांग्रेस के दबाव में यह आवश्यक हो गया कि लिंकन को संविधान और कानून के अन्तर्गत ही काम करना था।

❑



विजय और हताहत

युद्ध क्षेत्र के समाचार ज्यादा उत्साहवर्धक नहीं थे। पिट्सबर्ग के पश्चिम में टिनेसी नदी पर हुई लड़ाई के अन्त में संघीय सेना की विजय तो हुई, परन्तु इसमें संघ के 13,000 जवान हताहत हुए। दूसरी ओर मैकक्लेनन के व्यवहार से सभी नाराज थे। लिंकन और क्लेनन के मतभेद बढ़ते जा रहे थे। राष्ट्रपति ने 64 वर्षीय भूतपूर्व सैनिक कमान्डर हिचकाक को अपना सलाहकार नियुक्त किया। क्लेनन हमला करने के लिये बहुत अधिक सेना चाहता था और हमला करने में वक्त भी लगा रहा था। वह राजधानी वाशिंगटन तक की सुरक्षा को नजरअंदाज कर देता था। लोग उसे गद्दार तक कहते थे। क्लेनन उन्हें सफलता का झूठा आश्वासन देता रहता था।

3 मई को लिंकन को पता चला कि यार्कटाइन से सम्मिलित सेना पीछे हट गयी है और मैकक्लेनन पेनिनसुला की ओर बढ़ रहे हैं, तब लिंकन ने तय किया कि रणभूमि में पहुँचकर निरीक्षण करना चाहिये। इस विचार के साथ ही लिंकन, चेज़ और स्टेनटन जनरल विले की सुरक्षा में 'मियामी' स्टीमर पर सवार होकर चल पड़े। दूसरे दिन वे लोग मोनरो के किले में पहुँचे। इसकी सुरक्षा का दायित्व अठहत्तर वर्षीय जनरल वुल के हाथ में था। वहीं उन्हें ज्ञात हुआ कि मैकक्लेनन का यहाँ पहुँचना सम्भव नहीं है, क्योंकि उनकी सेना ने विलियम्स बर्ग में सेना को मात दी है और उसे रिचमौन्ड की ओर धकेल रहे हैं। राष्ट्रपति और उनके साथियों का विचार बना कि यही वक्त है नारफाक को मुक्त कराने का। वहाँ 'मैरी मैक' नाम का एक जहाज भी खड़ा था। वह कभी भी संघीय सुरक्षा के लिये खतरा बन सकता था। बुल की राय थी कि बिना बड़ी सेना के वहाँ जाया जाये। लेकिन चेज एक सुरक्षा नाव में सवार होकर नारफाक तक चले गये। बाद में लिंकन और स्टेनटन भी वहाँ पहुँच गये। यह सुनिश्चित कर लेने पर कि वहाँ जमीन पर पहुँचना सम्भव है, लिंकन मोनरो किले में वापस आ गये।

शाम को लिंकन को पता चला कि चेज कैसे संघीय सेना लेकर वहाँ पहुँचे और नारफाक का आत्मसमर्पण करा लिया। वहाँ पर खड़े मैरी मैक जहाज पर विस्फोट करके, उसे बेकार कर दिया गया। खतरनाक जहाज मैरी मैक पर हुए धमाके की आवाज दूर से लिंकन ने भी सुनी। चेज ने इस सफलता का सेहरा लिंकन की हिम्मत और सूझ-बूझ को दिया। इसके बावजूद भी लिंकन मैकक्लेनन के विरुद्ध कुछ सुनने को तैयार नहीं थे।

दूसरी ओर क्लेनन का लिंकन के प्रति व्यवहार बदलता चला गया। उसके व्यवहार में सम्मान का शब्द गायब होने लगा। वह लिंकन के फैसले को

नकारता रहा और अपने अधीन सैनिकों की कमी का रोना रोता रहा। वह वाशिंगटन से बहुत सैनिकों की मांग करने लगा। इस बीच एक और अच्छी खबर यह आयी कि दूर दक्षिण में मिसीसिपी के मुहाने पर बसे न्यू आरलीन्स नगर पर संघीय सेना का कब्जा हो गया है।

युद्ध के लिये पर्याप्त आर्थिक सुविधा जुटाने के कारण संघ की वित्तीय स्थिति नाजुक हो गयी थी। वित्त मंत्री चेज ने कांग्रेस से कागजी मुद्रा जारी करने की अनुमति मांगी। अपनी व्यापारिक जरूरतों को पूरा करने के लिये यूरोपीय ताकतों ने सम्मिलत राज्यों की सरकार को मान्यता देना आरम्भ कर दिया। कांग्रेस में अब लिंकन को कोई समर्थन नहीं दे रहा था। इस बीच विद्रोहियों की राजधानी रिचमौन्ड को रौंदने के ख्याल से क्लेनन उसकी ओर बढ़ रहे थे। लेकिन बिना दूरदर्शिता के उन्होंने यह काम कुछ इस तरह से किया कि वाशिंगटन के लिये खतरा पैदा हो गया। मुख्य सेनापति यदि अपनी जिम्मेदारियां ठीक से न निबाहते तो उसे किसी न किसी को तो निभाना पड़ता। लिहाजा लिंकन और स्टेनटन को सेना का दैनिक प्रशासन देखना पड़ रहा था और कमान्डरों को आदेश देने पड़ रहे थे। इन दोनों को ही सेना के संचालन का न तो कोई प्रशिक्षण था और न ही कोई अनुभव था। यह काम क्लेनन का था।

मैकक्लेनन रिचमौन्ड की ओर मात्र दो मील प्रति दिन की रफ्तार से आगे बढ़ रहे थे। वह विद्रोहियों को तैयारी का पूरा समय दे रहे थे। नतीजा यह हुआ कि विद्रोही प्रभावी हो गये। उन्होंने मैकक्लेनन की पोटोपैक सेना पर हमला कर दिया। यह हमला 31 मई को हुआ। पोटोमैक सेना ने इस हमले को निरस्त कर दिया और दुश्मन को पीछे हटने पर विवश कर दिया।

परन्तु इस हमले में पोटोमेक सेना के 5,000 जवान हताहत हुए। अब तो लिंकन को अतिरिक्त बल भेजने की उसकी मांग को मानना पड़ा। उन्होंने तुरन्त एक डिविजन सेना की सहायता भेजी। उसके पास अब एक लाख तीस हजार सैनिक हो गये थे। इससे पहले कि पोटोमैक सेना रिचमौन्ड पर हमला बोले, विद्रोही सेना ने एक बार फिर उस पर हमला बोल दिया और उसे चिकहोमिनी नदी के पार खदेड़ दिया। लिंकन ने उत्तरी वर्जीनिया की सारी टुकड़ियों को जोड़कर, एक नई इकाई का गठन किया और उसे 'वर्जीनिया सेना' का नाम दिया। इसकी बागडोर उन्होंने जापोप को सौंपी। रणभूमि के समाचार अभी भी उत्साहपूर्वक नहीं थे। क्लेनन की विशाल सेना पेनिनसुला में निष्क्रिय पड़ी थी। न तो वह हमला कर रही थी और न ही पीछें हट रही थी। मैकलेनन उसके स्थान पर हेनरी हैलेक को सेना का प्रमुख बनाये जाने से अन्दर ही अन्दर कुढ़ रहा था। लिंकन को भरोसा था कि क्लेनन कभी रिचमौन्ड पर हमला नहीं करेगा और सेना की कमी का बहाना बनाता रहेगा। उन्होंने सेना के प्रमुख हैलेक को कह दिया कि वे चाहें तो क्लेनन को हटा सकते हैं, उन्हें कोई आपत्ति नहीं होगी। हैलेक

का सोचना था कि यदि राष्ट्रपति चाहते हैं कि क्लेनन को सेना के उच्च पद पर नहीं रखना चाहिये तो उन्हें इसका फैसला खुद करना चाहिये।

लिंकन की सारी आशा पोप की सेना पर टिक गयी, जो मनसाज से दुश्मन को खदेड़ने के लिये आगे बढ़ रही थी। लिंकन ने क्लेनन को आदेश दिया कि वो पोप की सेना की सहायता करें। परन्तु क्लेनन ने इस आदेश की अवहेलना की और पोप की कोई सहायता नहीं की। पोप अपने अभियान में असफल रहा। यदि पोप की सेना जीत जाती तो पृथकतावादियों की राजधानी रिचमौन्ड संघ के कब्जे में आ जाती और दुश्मन युद्ध हार जाता। परन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ।

तब लिंकन ने मैक को आदेश दिया कि वह वाशिंगटन आकर उस सेना की बागडोर सम्भाले, जो राजधानी की सुरक्षा के लिये तैनात है। इस पर स्टेनटन उखड़ गये। उन्होंने अन्य केबिनेट सदस्यों के साथ लिंकन को एक ज्ञापन दिया कि जनरल मैक क्लेनन को अमरीका की किसी भी सेना की बागडोर देना खतरे से खाली नहीं है।

लिंकन की चारों ओर आलोचना हो रही थी। क्योंकि उसकी सेना एक के बाद एक युद्ध हार रही थी। उसका संचालन भी ठीक प्रकार से नहीं हो रहा था। उन्होंने कहा कि अब सब कुछ मैक क्लेनन और विद्रोही सेना के बीच युद्ध के नतीजे पर निर्भर है।

अन्त में 17 सितम्बर को क्लेनन की जीत हुई। 22 सितम्बर की कैबिनेट की बैठक में लिंकन ने अपनी घोषणा का प्रारूप प्रस्तुत किया। इसके तहत 1 जनवरी 1863 से दक्षिणी राज्यों के सभी दास मुक्त माने जायेंगे। लिंकन ने यह भी कहा कि उनकी घोषणा की सफलता संदिग्ध है क्योंकि दक्षिणी राज्य अभी तक उनके नियन्त्रण से बाहर हैं। इससे दिक्कतें और बढ़ गयीं। रिपब्लिकन, डेमोक्रेटिक और सीमान्त राज्य के नेताओं में इसी मुद्दे पर एकता थी, वह बिखर गयी। एक ओर जहाँ उत्तर वालों ने इसका गर्मजोशी से स्वागत किया, वहीं अलगाववादियों ने इसे अलग राष्ट्र बनाने की बात को सही साबित करने के रूप में लिया। दक्षिण के संघ समर्थकों ने भी इसे 'धोखा' करार दिया।

24 सितम्बर को राष्ट्रपति ने एक अन्य घोषणा करके अपने द्वारा प्रस्तुत की गयी दास मुक्ति योजना के विरोध को समाप्त कर दिया। अब लोगों का ध्यान इस नई घोषणा पर था— जिसके द्वारा पूरे देश में प्रत्यक्षीकरण याचिका (हैबियस कार्पस) के अधिकार को समाप्त कर दिया गया। कोई व्यक्ति यदि राष्ट्र के प्रति वफादार नहीं पाया जाता या फिर यह पाया जाता है कि वह विद्रोहीं की मदद कर रहा है या उन्हें शरण दे रहा है, तो उसे बिना मुकदमा चलाये अनिश्चितकालीन अवधि तक नजरबंद किया जा सकता है।

सन 1862 के अंत में गवर्नरों और संसद के चुनावों में लिंकन की

रिपब्लिकन पार्टी को जनता का गुस्सा झेलना पड़ा। पार्टी को असफलता का मुंह देखना पड़ा। अंतहीन दिखयी देता युद्ध लोगों की चिंता का विषय बन गया। युद्ध में भारी खर्चा हो रहा था और बड़ी संख्या में लोग मारे जा रहे थे। नागरिकों के मूल अधिकार पर अंकुश लगाने से रिपब्लिकन पार्टी को भारी क्षति उठानी पड़ी। लिंकन की लोकप्रियता का ग्राफ घटता जा रहा था। मैक क्लेनन और लिंकन एक दूसरे से नाराज थे और एक दूसरे को शक की दृष्टि से देखते थे। दोनों की नज़रों में दोनों की निष्ठाएं संदिग्ध थीं। क्लेनन ने अपने एक साथी पिंकर्टन को लिंकन के पास भेजा ताकि वह लिंकन के मन की थाह ले सके। परन्तु लिंकन भी कच्ची गोलियाँ खेलने वालों में से नहीं थे। उन्होंने उल्टे ही पिंकर्टन के मुंह से बहुत सारा सच उगलवा लिया। आखिर लिंकन फौजदारी के वकील रहे थे।

इस बीच लिंकन के सामने एक जनरल का बयान आया। बयान युद्ध से सम्बन्धित था। लिंकन जनरल के उस वक्तव्य से इतना नाराज हुए कि उन्होंने उसे तत्काल प्रभाव से बरखास्त कर दिया। इसका नतीजा यह हुआ कि मैक क्लेनन भयभीत हो गया और उसने लिंकन की आलोचना करना बंद कर दिया। क्लेनन की वफादारी का सही-सही अंदाजा लगाने के लिये 1 अक्टूबर 1862 को लिंकन वाशिंगटन से चुपचाप गायब हो गये। वे सीधे क्लेनन के पास पहुँचे, जो उन्हें एण्टीराय की युद्ध-भूमि में ले गया। यहाँ पर सम्मिलित सेना के साथ युद्ध 17 सितम्बर को लड़ा गया। शाम तक वे सेना कैम्प से वापस आ गये। जहाँ उन्होंने रात को विश्राम किया। उनका तथा क्लेनन का कैम्प अलग-अलग था। सुबह होते ही वह आपने साथी हैच के साथ एक ऊँचाई पर चढ़ गये और वहाँ से पूरी पोटोमैंक सेना को देखकर बोले—"यह तो जनरल मैक क्लेनन के सुरक्षा गार्ड हैं।" इसका सीधा सा यही अर्थ था कि वे मैक क्लेनन को आसानी से बरखास्त नहीं कर सकते थे।

लिंकन ने वहाँ जाकर यह देख लिया कि सैनिक मैक क्लेनन के प्रति वफादार हैं, अतः उन्होंने अपनी राय का कोई ख़ुलासा नहीं किया। बल्कि लौटने पर क्लेनन को वह सब कुछ दिया जो वह मांग रहा था।

क्लेनन भी लिंकन के प्रति वफादारी साबित करने का प्रयास करने लगा। उसने किसी भी प्रकार के विद्रोह के लक्षण नहीं दिखाये। प्रकट रूप से यह माना कि जन-प्रशासन सेना से ऊपर होता है। इस प्रकार लिंकन ने पोटोमैक सेना के सैनिकों और अधिकारियों का विश्वास जीत लिया। अब उन्हें भरोसा हो गया कि यदि वे अब क्लेनन को पद से हटाते हैं तो पोटोमैक सेना किसी प्रकार का विद्रोह नहीं करेगी। फिर भी उन्होंने जल्दबाजी में कोई कदम नहीं उठाया। लिंकन उसे एक अवसर और देना चाहते थे। वह बराबर क्लेनन को हमला करने के आदेश भेजने लगे। परन्तु वह उनकी अनदेखी करता रहा।

24 अक्टूबर को तीन गवर्नरों की शिकायत पर तथा आदेशों का पालन न करने पर लिंकन ने एक और जनरल बुल को भी निलम्बित कर दिया और उसके स्थान पर रोज क्रैन्स को नियुक्त कर दिया। इसी समय क्लेनन ने लिंकन को सूचित किया कि वह ली की सेना पर हमला नहीं बोल सकता, क्योंकि उसके घोड़े बहुत थके हुए हैं और उनकी हड्डियाँ निकल आयी हैं। लिंकन को क्लेनन की इस दलील पर बहुत गुस्सा आया और उन्होंने 5 नवम्बर को क्लेनन को निलम्बित कर दिया। उसके स्थान पर उन्होंने बर्न साइड को पोटोमैंक की कमान सौंप दी।

लिंकन पर अब बुल और क्लेनन से मुक्ति मिल गयी थी। उन्हें लगा कि वे अब दूसरी समस्याओं की ध्यान केन्द्रित कर सकेंगे। वैसे भी ढांचागत विकास उनके मस्तिष्क में घूमता रहता था। परन्तु वे जो सोच रहे थे, ऐसा कुछ नहीं हुआ। अक्टूबर माह में मिसीसिपी नदी के उत्तर पश्चिम में स्थित मिनोसोटा में रेड इन्डियनों का विद्रोह भड़क उठा। उन लोगों को जमीन के बदले नौकरशाही से रकम मिलती थी। सरकार का प्रतिनिधित्व नौकरशाह ही करते थे। उन लोगों ने रकम अदायगी में इतनी देरी कर दी कि जन-जातीय लोग भुखमरी के कगार पर पहुँच गये। इससे आहत और क्षुब्ध होकर आदिवासियों ने अंडे के गोदाम पर हमला बोल दिया, उसे लूटा और पांच श्वेतों को मार डाला। समस्या दो रूपों में बंट गयी। गोरे मान रहे थे कि रेड इन्डियन उनका शोषण कर रहे हैं। इतना ही नहीं, उनकी नारकीय स्थिति के लिये गोरे ही जिम्मेदार हैं। गोरों के विरोध में विद्रोह भड़क गया। भूख और शोषण की आग में जलते आदिवासियों ने गोरों को मारना आरम्भ कर दिया। पूरे मिनेसोटा राज्य में गोरों के लिये कोई जगह सुरक्षित नहीं थी। 350 गोरे विद्रोह और क्रोध की ज्वाला में जल कर भस्म हो गये। लिंकन ने आदेश दिया कि एक भी विद्रोही को उनकी जानकारी के बिना फांसी की सजा न दी जाये।

8 नवम्बर को सेना ने लिंकन को उन आदिवासियों की सूची को सौंपा, जिन्हें वह मौत की सजा सुना चुकी थी। लिंकन ने हर व्यक्ति के बारे में विस्तार से जानकारी चाही कि आखिर उन पर किस प्रकार के आरोप हैं। इस बीच पोप, गवर्नर और सीनेटर को लगा कि लिंकन कुछ ज्यादा ही दरियादिली दिखा रहे हैं। उन्होंने अपने पत्र में लिखा कि आदिवासियों के हमलों से गोरे बहुत नाराज हैं। यदि समुचित कार्यवाई न की गयी तो वे पूरी जनजाति को ही मौत के घाट उतार देंगे। बावजूद इसके लिंकन ने सारे मामले को विस्तार से सुना और महज 39 लोगों को मृत्यु-दण्ड दिया गया। यह भी अमरीकी इतिहास की पहली घटना है, जिसमें सामूहिक रूप से इतने लोगों को मृत्यु दण्ड दिया गया।

1 दिसम्बर 1862 को लिंकन ने अपने वार्षिक संदेश में दास प्रथा के लिये तीन संशोधन पेश किये। कहा गया—जो राज्य 1 जनवरी 1900 तक

अपने राज्य से दास प्रथा उन्मूलन करने का वादा करते हैं, उन्हें संयुक्त राज्य अमरीका से बाँड दिये जायें और गुलामों की मुक्ति को स्थाई बनाये जाने के प्रबन्ध किये जायें। यह काम उनके परिजनों को मुआवजा देकर किया जाये, बशर्ते उन्होंने अलगाववादियों का साथ न दिया हो। तीसरा व अन्तिम संशोधन यह था कि मुक्त हुए काले दासों को यदि उनकी इच्छा हो, तो अमरीका से बाहर बसाने के लिये खर्च की व्यवस्था कांग्रेस करे। हालाँकि इन तीनों के तत्काल कांग्रेस से पारित होने की सम्भावना नहीं थी।

13 दिसम्बर को जनरल बर्नसाइड द्वारा एक ऐसी गलती कर दी गयी जिससे संघीय सेना की उनकी टुकड़ी बरबाद हो गयी। लिंकन की सलाह के विरुद्ध उन्होंने मैरी पहाड़ियों की ओर सेना को बढ़ने को कहा। विद्रोही सेना उनका इंतजार कर रही थी। शाम तक बर्नसाइड की सेना के 10 प्रतिशत जवान हताहत हो गये। सम्मिलित सेना का नुकसान इससे आधा हुआ। अमरीकी सेना के इतिहास में यह उसकी सबसे बड़ी हार थी। यह हार उन बड़ी असफलताओं का एक हिस्सा थी, जो उस समय संयुक्त राज्य में घटित हो रही थीं। शिकागो ट्रिब्यून ने टिप्पणी की कि सेना की असफलता, करों का बोझ, मुद्रा स्फीति, कपास की कमी, बढ़ते राज्य ऋण, सैनिकों की मौत, सफलता की कोई उम्मीद न होना, मिसीसिपी नदी का लगातार बंद रहना। सब मिलाकर जो स्थिति बनती है, वह है अंधकार और निराशा।

लिंकन प्रशासन की चारों ओर आलोचना हो रही थी, विशेष तौर पर उनकी कैबिनेट की। कैबिनेट सदस्यों में आपसी तालमेल की कमी थी। असफलताओं का ठीकरा फूटा मुख्य सचिव सेवर्ड के सिर पर। इससे खीज कर सेवर्ड ने इस्तीफा दे दिया। दो दिन बाद ही सेवर्ड के विरोधी चेज ने भी त्याग पत्र लिंकन को भेज दिया।

लिंकन ने दोनों के इस्तीफों को नामंजूर कर दिया। उन्होंने कहा कि वे बचपन में दो बड़े कद्दू अपने घोड़े पर लाद कर ले जाते थे, ताकि दोनों तरफ वजन बराबर रहे और वे घोड़े की सवारी आराम से कर सकें। यही उन्होंने काबीना के लिये भी किया है। दो धुर विरोधियों को उसमें जगह दी; इसलिये नहीं कि वे अपने विचार लिंकन पर थोपते रहें, बल्कि इसलिये कि लिंकन के प्रशासन को बेहतर तरीके से चलाने में उनकी सहायता करते रहें।

लिंकन अपने कार्य में संशोधन और समायोजन करने में भी कुशल थे। यूँ तो वे कार्य को तत्परता से निबटाने में अबाध होने में कतई संकोच नहीं करते थे; लेकिन इन सारी घटनाओं के बाद उन्होंने अपनी कार्य शैली में औपचारिकता की जगह तय कर दी। औपचारिक प्रतिवेदन और चर्चाओं के जरिये उन्होंने लोकतन्त्र को और मजबूत करने की दिशा में भी साथ-साथ अनेक कदम उठाये।

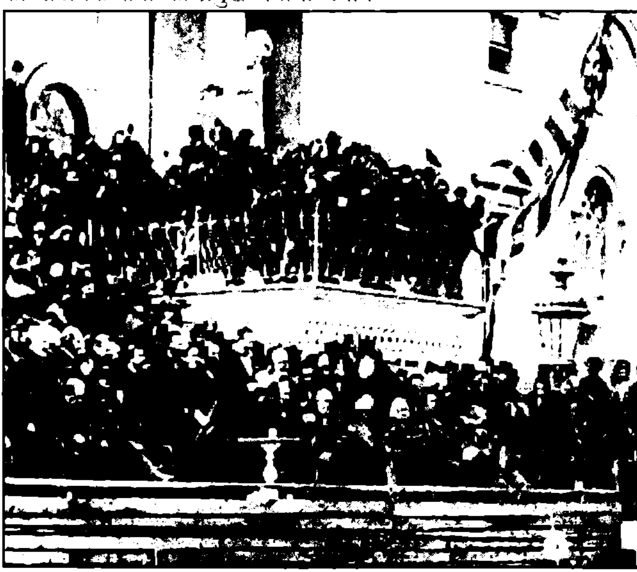
❑



ऐतिहासिक घोषणा पत्र

व्हाइट हाउस में 1863 के नववर्ष के दिन एक स्वागत समारोह आयोजित किया गया। इसमें कुछ पारम्परिक औपचारिकतायें निभाई गयीं। राज्य सचिव ने अपनी कैबिनेट के सदस्यों तथा आला नागरिक तथा सैनिक अधिकारियों का राष्ट्रपति लिंकन तथा प्रथम महिला मैरी लिंकन से परिचय कराया। इस परेड के बाद लिंकन उन कार्यालय में गये, जहाँ सेवर्ड ने उन्हें यह घोषणा पत्र दिखाया जो उन्होंने दास प्रथा पर देना था। लिंकन ने इस ऐतिहासिक घोषणा पत्र पर अपने हस्ताक्षर किये।

इसमें प्रमुख बात यह थी कि वे सभी राज्य जो विद्रोहियों के हाथ में हैं, वे आज से 'दास प्रथा मुक्त' किये जाते हैं। वर्ष के प्रारम्भ से ही युद्ध के मोर्चे से अच्छी खबरें प्राप्त नहीं हो रही थीं। पूरब, पश्चिम सभी ओर नाकामयाबियाँ मिल रही थीं। पोटोमैंक सेना की स्थिति तो और भी खराब थी। फ्रेडरिफ वर्ग की हार के बाद इसके अफसरों में मतभेद बढ़ गये थे। कुछ अफसर तो अपने जनरल के खिलाफ विद्रोह पर उतारू थे। आखिरकार बर्नसाइड की लिंकन को छुट्टी करनी पड़ी। उसके स्थान पर जोज हूकर को पोटोमैंक सेना का प्रमुख बनाया गया।



इस बीच नेपोलियन (तृतीय) दक्षिण की भरसक मदद करने की सोचने लगा। उसे लग रहा था कि यदि सम्मिलित सेना को जीत मिलती है तो यह उसके साम्राज्य के लिये लाभकारी होगी। लेकिन यदि विभिन्न स्वतन्त्र राज्यों का संघ इस लड़ाई में बाजी मार लेता है तो मैक्सिको से फ्रांसीसी तत्काल हटा दिये जायेंगे। दूसरी बात यह थी कि नेपोलियन की दक्षिण क्षेत्रों में होने वाली कपास पर नजर थी।

दक्षिणी राज्यों ने नेपोलियन तृतीय को प्रस्ताव दिया कि यदि वह अमरीकी संघ की रोक को हटवा देगा तो वे उसे 1 करोड़ 20 लाख डालर की कपास देंगे। वे युद्ध के कारण परेशान थे। वे न तो कपास बेच पा रहे थे, न बंदूकें खरीद पा रहे थे, और न अन्य कोई हथियार ही हासिल कर पा रहे थे। ऐसे में नेपोलियन ने 1863 के शुरूआत में लिंकन प्रशासन को प्रस्ताव दिया कि संयुक्त राज्य और सम्मिलित राज्य के प्रतिनिधि किसी तटस्थ स्थान पर बैठ कर मामले का शांतिपूर्ण समाधान करने का प्रयास करें।

लिंकन ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। फिर भी नेपोलियन रूस और इंग्लैंड को सहमत करने में लगा रहा कि सभी मिलकर सम्मिलित राज्यों को मान्यता दे दें। उनकी रुचि अमरीका के विभाजन में थी। वे उसकी एकता से जलते थे। कपास इंग्लैंड की भी एक भौतिक जरूरत थी। कपास की खेप के इंग्लैंड न पहुँचने से त्राहि-त्राहि मच गयी थी। अनेक फैक्टरियाँ बंद हो गयी थीं। लाखों लोग बेरोजगार हो गये थे। बच्चों के लिये भोजन जुटाना मुश्किल हो गया था। इस सबका मात्र एक ही हल था कि संघीय सरकार की रोक को खत्म करवाया जाये। मगर यदि ऐसा हो जाता तो अमरीका का क्या होता? दक्षिणी राज्यों को बंदूकें मिल जातीं, उनके शस्त्रों का भंडार बढ़ जाता। इस सब के अलावा उनके आत्मविश्वास में जबरदस्त बढ़ोतरी हो जाती और उत्तरी राज्यों को स्थायी दुश्मन मिलते। इससे स्थिति तब तो बिगड़ती ही भविष्य में भी उसके सुधरने के आसार न होते।

लिंकन देख रहे थे कि युद्ध के बारे में यूरोप का दृष्टिकोण बदलना चाहिये और वे जानते थे कि यह कैसे होगा। यूरोप में करीब 10 लाख लोगों ने 'लिंकन टाम्स केबिन' पढ़ी थी, और वे दास प्रथा पर आँसू बहा चुके थे। लिंकन जानते थे कि यदि वे अपनी मुक्ति की घोषणा कर देते हैं तो युद्ध को यूरोप दूसरे परिप्रेक्ष्य में देखने लगेगा। ऐसे में कोई भी यूरोपीय हुकूमत दक्षिण को मान्यता देने के बारे में सोच भी नहीं सकती।

जुलाई 1862 में लिंकन ने तय किया कि वे मुक्ति की घोषणा करेंगे। लेकिन मैक क्लेलन और पोप ने उन्हें लज्जित करवा दिया।

लिंकन ने पश्चिम के असंतोष को दबाने के उद्देश्य से बर्नसाइड को वहाँ भेजा। बर्नसाइड ने वहाँ पहुँचते ही एक आदेश जारी किया—कि जो भी देश के दुश्मनों को किसी भी तरह की मदद पहुँचायेगा, उसे गिरफ्तार कर लिया जायेगा। उसके साथ एक गद्दार की तरह का व्यवहार किया जायेगा। एक डेमोक्रेटिक बेलंडिगम ने इसका विरोध करते हुए बर्नसाइड को अधिनायकवादी करार दिया। उन्होंने राष्ट्रपति लिंकन को 'सम्राट लिंकन'

कहा, जो कालों की आजादी के लिये युद्ध लड़ रहे थे। लेकिन बर्नसाइड ने वेलेंडिगम को गिरफ्तार कर लिया। लिंकन प्रत्यक्ष रूप से बर्नसाइड को कुछ नहीं कह सके। क्योंकि वे आदेश की प्रतिलिपि राष्ट्रपति को भेज चुके थे। इधर वेलेंडिगम की गिरफ्तारी से उफान आ गया। लोगों ने कहा कि इससे हमारी बोलने की आजादी, संविधान, देश सब कुछ समाप्त हो गया। जनमत के विरोध के आगे लिंकन को झुकना पड़ा और उन्होंने वेलेंडिगम की सजा माफ कर दी और आदेश दिया कि उन्हें सम्मिलित राज्य क्षेत्र में भेज दिया जाये।

बर्नसाइड ने एक बार फिर अपनी उद्दण्डता दिखाते हुए पहली जून को युद्ध विरोधी 'शिकागो टाइम्स' को बंद कर दिया। लिंकन ने फौरन बर्नसाइड के इस आदेश को निरस्त कर दिया। आपसी गुटबाजी के बावजूद संसद के 1862-63 अधिवेशन में रिपब्लिकन पार्टी कुछ महत्वपूर्ण कानूनों को पास करवाने में सफल रही, जिनके द्वारा अमरीका के इतिहास में दूरगामी परिणाम आने वाले थे। इनमें शामिल था :

केन्द्र को यह अधिकार होगा कि वह सभी सक्षम पुरुषों, जिनकी आयु 20 से 25 वर्ष है, को सेना में भरती के लिये बुला सकता है।

देश में राष्ट्रीय बैंकिंग का कानून बनाया, जिसके द्वारा पहली बार देश में राष्ट्रीय मुद्रा चलाई जाये और राष्ट्रीय बैंकों के निर्माण को अनुमति दी जाये।

युद्ध में लगातार मिल रहीं असफलताओं के कारण लिंकन प्रशासन की लोकप्रियता घटती जा रही थी। चारों ओर हो रही आलोचना से लिंकन विचलित थे और उनका स्वास्थ्य गिरता जा रहा था। उनके हाथ कांपने लगे थे। अब उन्होंने हंसी-मजाक करना भी छोड़ दिया था और गम्भीरता की चादर चेहरे पर ओढ़ ली थी। मैरी से भी उन्हें किसी प्रकार का नैतिक समर्थन नहीं मिल रहा था, क्योंकि वे अभी भी अपने पुत्र के गम से उबर नहीं पाई थीं। वे तान्त्रिकों के चक्कर में पड़ चुकी थीं, जो उन्हें अपने स्वर्गीय पुत्र की आत्मा से मिलाने का वादा करते थे। अब व्हाइट हाउस की शान-शौकत से उनका कोई लेना-देना नहीं था। राजनीतिक मामलों में भी अब उनकी तनिक भी रुचि नहीं थी।

लिंकन को सांत्वना देने वाला उनका सबसे छोटा बेटा टैड था, जो रात को उनके पास ही सोता था। बड़ा पुत्र राबर्ट कालेज में पढ़ाई कर रहा था। लिंकन को गर्व था कि वे राबर्ट को अच्छी से अच्छी शिक्षा दे रहे हैं। पर वे राबर्ट की शिक्षा का खर्च बड़ी मुश्किल से जुटा पाते थे।

लिंकन जानते थे कि जनता की एकमात्र आकांक्षा युद्ध में सफलता है, ताकि युद्ध जल्दी समाप्त हो और शान्ति स्थापित हो। वे अपने जनरलों को वो सब देने की कोशिश कर रहे थे, जिनकी वे मांग करते थे। अब उनके सामने जो मुश्किल निकट भविष्य में आने वाली थी, वो भी सैनिकों की कमी। पुराने सैनिकों की अवधि समाप्त होने वाली थी और नये सैनिकों की भर्ती हो नहीं पा रही थी। अब सेना में एकमात्र भर्ती का जरिया था

अमरीका में बसे अफ्रीकियों (कालों) की भर्ती।

उन्मूलनवादी नेता इसके लिये लिंकन पर युद्ध के प्रारम्भ से ही दबाव डाल रहे थे। परन्तु वे अभी तक इसे टालते आ रहे थे। वे चाहते थे कि काले लोग खेतों में काम करें और गोरे युद्ध-भूमि में जायें। परन्तु कालों को सैनिक बनाने के लिये आन्दोलन ने जोर पकड़ा। अनेकानेक जनरलों ने तो यह काम गुप्त रूप से कर दिया था। उपराष्ट्रपति हैमलिन भी इस के पक्ष में थे। युवा सैनिक अफसर भी इसके पक्ष में थे। वक्त की नजाकत को देखते हुए लिंकन कालों को सैनिक बनाने पर सहमत हो गये। अपनी अन्तिम 'मुक्त' घोषणा में उन्होंने कहा कि पूर्व गुलामों को सेना में भर्ती किया जायेगा। परन्तु अभी उन्होंने इनकी सेवाओं को कुछ सीमा में बांध दिया। उन्होंने कहा कि इनकी सेवाएं किले की रक्षा करना, संस्थानों की रक्षा करना, स्टेशनों आदि की रक्षा करना होगा। वे सभी प्रकार के जल वाहनों को संचालित करेंगे।

लिंकन ने कालों के अमरीका से बाहर की योजना को त्यागा और उन्होंने इस बात की मान्यता दी कि काले अफ्रीकी अमरीका में अपना भविष्य बना सकते हैं। इस आदेश के बाद लिंकन पूरे जोशो-खरोश के साथ अफ्रीकन-अमरीकन सेना बनाने के अभियान में जुट गये। कालों का सबसे बड़ा स्त्रोत दक्षिण में था, अतः लिंकन ने अपने जनरलों को दक्षिणी राज्यों में भेजकर वहाँ पर कालों की भर्ती कर अभियान चलाने को कहा। वर्ष 1863 के अंत तक 20 रेजीमेंटों के लिये काले लोगों की भर्ती कर ली गयी। लिंकन यह भी चाहते थे कि सैनिकों की भर्ती के अलावा उन्हें अत्याधुनिक हथियार भी दिये जायें। मगर उनके इस विचार के आगे कुछ बूढ़े जनरल रोड़ा बन कर आ खड़े हुए। वे हर नई खोज को शंका की दृष्टि से देखते थे। लिंकन खुद नई खोज के प्रयोग में विश्वास करते थे, अतः वे नई खोज करने वालों के पक्ष में थे। नई खोजों का परीक्षण कभी वह व्हाइट हाउस के पीछे वाले घास के मैदान पर जाकर करते थे तो कभी पोटोमैक नदी पर स्थित वाशिंगटन के नौसैनिक पार्क में जाकर नये हथियार और बारूद का परीक्षण कराते। वे सप्ताह में एक बार इस पार्क में जरूर जाते थे। उन्होंने फ्रांस के शोधकर्ता रैचता द्वारा बनायी गयी राइफल का परीक्षण स्वयं देखा। इस मशीन का निशाना अचूक निकला।

मार्च, 1864 तक कांग्रेस का अधिवेशन चला। जाड़े का मौसम होने के कारण लड़ाई कम हुई। लिंकन अधिवेशन में व्यस्त हो गये। परन्तु यह शान्ति वसन्त ऋतु में आने वाले तूफान का पूर्व संकेत थी। अलगाववादियों पर हमले की योजना बना ली गयी। योजना के अनुसार सेना के बेहतरीन ताल-मेल के साथ दक्षिण स्थित अलगाववादियों की सेना पर एक साथ चारों ओर से हमला बोलना था। दो वर्ष के युद्ध के संचालन से लिंकन का रणनीतिक ज्ञान बढ़ गया था। एक-एक जनरल को वे भली-भांति समझ चुके थे। गद्दार जनरल को निकालकर लिंकन ने सेना पर अपनी पकड़ मजबूत बना ली थी।

लिंकन ने वाशिंगटन के पास स्थित पोटोमैक सेना पर विशेष नजर रखी। अप्रैल के आरम्भ में पोटोमैक सेना के प्रमुख हूकर के बुलावे पर लिंकन अपनी पत्नी मैरी और छोटे पुत्र टैड के साथ इस सेना के उत्तरी वर्जीनिया स्थित मुख्यालय पहुँचे। उनके साथ मुख्य अधिवक्ता तथा कुछ मित्र भी थे। 6 अप्रैल को लिंकन ने घुड़सवार सेना का निरीक्षण किया, जिसे हूकर ने अभी हाल ही में पुनर्गठित किया था। बेटे टैड ने वहाँ टट्टू की सवारी की। लिंकन वहाँ तीन दिन रहे और लगभग 60,000 सैनिकों से मिले। वे घोड़े पर सवार होकर विभिन्न छावनियों में गये। लिंकन ने देखा कि सैनिकों की वर्दी साफ सुथरी थी तथा उनके हथियार उन्नत थे और चमचमा रहे थे। सभी तैयारियों को देख कर लिंकन को भरोसा हो गया कि सेना युद्ध में बेहतरीन कार्य करेगी।

सात अप्रैल को जब लिंकन पोटोमैक सेना का निरीक्षण कर रहे थे, तब उन्हें पता चला कि उनकी नौसेना की एक इकाई ने समटर किले पर धावा बोल दिया है। दिन भर चली इस लड़ाई में नौसेना के सात में से पांच लोहे के जंगी जहाज क्षतिग्रस्त हुए। हमला विफल रहा।

लिंकन की सारी आशा पोटोमैक सेना पर टिक गयी। 28 अप्रैल, 1863 को हूकर 70,000 सैनिकों को लेकर ली की विद्रोही सेना पर चढ़ाई करने के लिये निकला। लिंकन की सलाह को दरकिनार करते हुए उसने पूरी सेना इस अभियान में एक साथ नहीं झोंकी। ली की सेना संख्या में कम होते हुए बेहतर रणनीति के कारण परास्त नहीं की जा सकी। अभियान असफल रहा। हूकर की सेना को पीछे हटना पड़ा। रिचमौंड पर कब्जा जमाने का उसका सपना, सपना बन कर रह गया।

पोटोमैक की इस हार के बाद के कुछ सप्ताह लिंकन के राष्ट्रपति पद के सबसे धूमिल सप्ताह थे। सब कुछ गलत ही हो रहा था। सभी मोर्चों पर संघीय सेना को असफलता का मुंह देखना पड़ रहा था। रिपब्लिकन पार्टी के नरम दल और गरम दल दोनों ही असंतुष्ट थे। कुछ जनरल कालों को मुक्त करने से नाराज थे। ऐसे समय में लिंकन पर मायूसी के बादल छाने लगे, उन्होंने उदासी में भर कर कहा– "यह देश का दुर्भाग्य है जो मुझ जैसे आदमी को राष्ट्रपति चुना गया।"

पिछले छः माह से मिल रहीं असफलताओं ने लिंकन को यह सोचने पर विवश कर दिया कि पोटोमैक सेना को कैसे प्रयोग में लाया जाये। पहले तो यह तय करना था कि पोटोमैक की इस घातक हार का जिम्मेदार कौन है। वे मुख्य सेनाध्यक्ष के साथ 6 मई को वर्जीनिया स्थित मुख्यालय में पहुँचे। उन्हें यह जानकर खुशी हुई कि सेना का मनोबल अभी भी ऊँचा है। परन्तु हूकर से बात करके उन्हें प्रसन्नता नहीं हुई। लिंकन को यह जानकर दुःख हुआ कि युद्ध जीतने की कगार पर थे कि अचानक मुख्यालय पर तोप का गोला गिरा। लिंकन ये सोचने लगे कि अच्छा होता जो ये गोला हूकर के सिर पर गिरा होता। क्योंकि तब संघीय सेना जीत जाती।

लिंकन ने निश्चय किया कि वे हूकर की गतिविधियों पर नजर रखेंगे।

इस बीच उन्हें पता चला कि ली की सेना उत्तर की ओर बढ़ रही है। उसे कैसे रोका जाये, इस पर लिंकन और हूकर में सहमति नहीं हो पायी। ली की सेना वाशिंगटन के पश्चिम तक पहुँच गयी। तभी किसी ने अफवाह फैला दी कि लिंकन अपनी कैबिनेट के सदस्यों के साथ स्टीमर पर सवार होकर भागने की फिराक में हैं। परन्तु वास्तव में ऐसा कुछ नहीं था।

लिंकन चाहते थे कि संघ की भूमि में घुसी ली की सेना को तहस-नहस करके पूरी की पूरी सम्मिलित सेना को परास्त किया जाये। यह काम पोटोमैक सेना कर सकती थी, परन्तु इसके लिये एक योग्य कमाण्डर की आवश्यकता थी। उन्हें शंका थी कि हूकर भी उसी गलती को दोहरायेंगे जो क्लेनन ने की थी। हूकर को कुछ सेना कमान्डर हटाने की मांग कर रहे थे। लिंकन ने हूकर को आदेश दिया कि वह प्रमुख सेनाध्यक्ष के आदेशों का उल्लंघन न करें। इस प्रकार वे हैलेक की पोटोमैक सेना पर पूर्ण नियन्त्रण रखने में सफल हुए।

लिंकन की दूसरी चिंता का कारण देश का जनरल था। अभी तक की राष्ट्रपति की परम्परा यही थी कि वे जनसभाओं को सम्बोधित नहीं करते थे। न ही जनता से सीधा सम्पर्क रखते थे। यहाँ तक कि राष्ट्रपति कांग्रेस में अपना संदेश स्वयं नहीं पढ़ते थे, बल्कि किसी अन्य से पढ़वाते थे। 1863 की गर्मियों में लिंकन ने महसूस किया कि ऐसा कुछ करना चाहिये कि जनता उनकी नीतियों को भली भांति समझे। विशेष रूप से मानवाधिकार उल्लंघन मामलों को, जिसके द्वारा सैनिक अधिकारियों को यह अधिकार दे दिया गया था कि देशहित में वे किसी को भी बगैर मुकदमा चलाये नजरबंद रख सकते हैं।

इसके लिये लिंकन ने एक खुला पत्र जारी किया, जिसे उन्होंने समाचार-पत्रों को तथा मुख्य रिपब्लिकनों को भी भेजा। 12 जून 1863 को भेजे गये इस पत्र में उन्होंने समझाया कि संविधान उन्हें यह अधिकार देता है कि विद्रोह या हमले के समय जनता के मूल अधिकारों को समाप्त किया जा सकता है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि देश, इतिहास के सबसे नाजुक दौर से गुजर रहा है। अतः देश को बचाने के लिये मानवाधिकार की बलि चढ़ाई जा सकती है। इस खुले पत्र की पांच लाख प्रतियाँ जनता में बांटी गयीं, जिन्हें लगभग एक करोड़ लोगों ने पढ़ा।

जब युद्ध में ली की सेना पोटोमैक नदी के साथ-साथ उत्तर की ओर बढ़ रही थी, तब लिंकन का हूकर से किसी बात पर मतभेद हो गया। हूकर ने तुरन्त अपना इस्तीफा सेनाध्यक्ष हैलेक के पास भेज दिया। उसका विचार था कि ऐसे नाजुक अवसर पर उसका त्याग-पत्र स्वीकार नहीं किया जायेगा और वह अपनी मनमानी करने के लिये आजाद होंगे।

मगर ऐसा कुछ न हुआ।

लिंकन ने हूकर का इस्तीफा मंजूर कर लिया और जनरल मीड को पोटोमैक सेना का प्रमुख बना दिया। मीड अपनी सेना में लोकप्रिय थे। लिंकन ने इस नये सैनिक कमान्डर को किसी प्रकार की सलाह नहीं दी और उसे

अपने विवेक से काम करने की छूट दी। इस बीच लिंकन ने केवल पोटोमैक सेना पर ही अपना ध्यान केन्द्रित नहीं किया, बल्कि उन्होंने जनरल ग्राण्ट के अभियान पर भी नजर रखी। दूरी के कारण लिंकन ने मिसीसिपी पर स्थित ग्राण्ट को कभी रणनीति समझाने का प्रयास नहीं किया।

लिंकन की आशाओं पर पूरा उतरते हुए ग्राण्ट ने मिसीसिपी राज्य के भीतर साम्मिलित सेना को कई स्थानों पर परास्त कर दिया और उसे विक्सबर्ग के भीतर धकेल दिया तथा विक्सबर्ग को चारों ओर से घेर लिया। जब लिंकन को इस युद्ध के पूरे समाचार मिले तो उन्होंने वाशिंगटन में बैठे-बैठे ही ग्राण्ट की पीठ थपथपाई और कहा कि ग्राण्ट दुनिया के सर्वश्रेष्ठ सैनिक कमान्डर हैं।

4 जुलाई 1863 को लिंकन को वह समाचार मिला जिसका उन्हें बहुत दिनों से इंतजार था। उन्हें पता चला कि पिछले तीन दिनों से पेंसिलवेनिया के गेटसवर्ग में भी भीषण युद्ध चल रहा है। फिर पता चला कि ली की सेना हार गयी है और पीछे हट रही है। लिंकन ने तुरन्त ही एक प्रेस वक्तव्य जारी करके कहा कि संघ के स्थायित्व के लिये यह भारी सफलता है।

तीन दिन के बाद एक और समाचार आया। समाचार के अनुसार, नौसेना की मदद से मिसीसिपी के विक्सबर्ग पर भी संघीय सेना का कब्जा हो गया है। इस समाचार के मिलते ही लिंकन खुशी से उछल पड़े। विक्सबर्ग में दुश्मन के 30,000 सैनिकों ने आत्मसमर्पण कर दिया था और अब पूरे मिसीसिपी राज्य पर संघीय सेना का कब्जा हो गया था।

इधर पूर्व में ली की सेना को नेस्तनाबूद करने के लिये मीड को केवल एक लड़ाई लड़नी बाकी थी। क्योंकि ली आगे बढ़ती हुई पोटोमैक सेना और नदी के बीच में फंस गया था। जो गर्मी की वर्षा के कारण पूरे उफान पर थी। परन्तु मीड ने आगे बढ़ने में चुस्ती दिखायी और ली जान बचाकर वर्जीनिया चला गया। लिंकन को जब इसका पता चला तो उन्हें बहुत निराशा हुई, साथ ही गुस्सा भी बहुत आया।

❑



उत्तर-दक्षिण का समन्वय

गेटिसबर्ग से लौटने पर लिंकन बुखार से पीड़ित हो गये। परीक्षण से पता चला कि उन्हें चेचक है। तीन सप्ताह तक उन्हें अलग कमरे में रखा गया और आराम की सलाह दी गयी। कम ही लोगों को उनसे मिलने की अनुमति थी। कांग्रेस को दिये जाने वाले अगले वार्षिक संदेश को अब लिखने का समय मिल गया। यह संदेश इसलिये महत्वपूर्ण था क्योंकि इसमें शर्तों की व्याख्या होनी थी। जिन पर दक्षिणी राज्यों को पुनः संघ में शामिल किया जाना था।

लिंकन के लिये यह अभी तक का सबसे कूटनीतिक कार्य था। सैन्य दृष्टि से लिंकन की सेना की स्थिति अब पहले से अधिक मजबूत थी। नवम्बर में टिनेसी राज्य पर कब्जा होने के बाद संघीय सेना के लिये जार्जिया प्रान्त प्राप्त करने का रास्ता खुल गया था।

लिंकन प्रशासन को एक और सफलता तब मिली जब रूस की सेना के जंगी जहाजों को जो रैम ब्रिटेन में बना रहे थे, उन्हें ब्रिटिश सरकार द्वारा जब्त कर लिया गया।

अपने वार्षिक संदेश के समय इस बार राष्ट्रपति को नई चुनी हुई संसद का सामना करना था। अमरीका की अड़तीसवीं संसद का पहला अधिवेशन दिसम्बर 1863 में होना था, और इसमें 1862 में चुने गये प्रतिनिधि शामिल होने वाले थे। 1862 में रिपब्लिकन पार्टी चुनावों में अधिक सफलता नहीं प्राप्त कर सकी थी, अतः डेमोक्रेटिक पार्टी के सदस्यों की संख्या अधिक थी।

जब लिंकन को पता चला कि प्रतिनिधि सभा का क्लर्क एथरिज नये रिपब्लिकन सदस्यों के शपथ ग्रहण में अड़ंगा लगाने की योजना बना रहा है। लिंकन ने कह दिया कि यदि एथरिज ने ऐसा कोई गैरकानूनी काम करने का प्रयास किया तो उसे उठा कर बाहर फैंक दिया जायेगा। समारोह में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी को रोकने के लिये लिंकन ने सेना की एक टुकड़ी को भी तैयार रहने को कहा। लिंकन की 'घुड़की' का पूरा असर हुआ। एथरिज और उसके समर्थकों ने किसी भी प्रकार की गड़बड़ी करने का जरा भी प्रयास नहीं किया।

दक्षिणी राज्यों को संघ में शामिल करने के लिये लिंकन के सामने तीन योजनाएं थीं :

पहली योजना—डेमोक्रेटिक सांसदों द्वारा प्रस्तुत वह योजना जिसमें राष्ट्रपति से कहा गया था कि वे अपना घोषित 'मुक्ति घोषणा-पत्र' वापस ले लें और विद्रोहियों को आप क्षमादान दे दें।

दूसरी योजना—नरमपंथी रिपब्लिकन सांसदों द्वारा प्रस्तुत की गयी थी। जिसके अनुसार विजित दक्षिणी राज्यों को शामिल करने के लिये उदार शर्तें रखी गयीं। इसमें इन राज्यों को वापस लेने के लिये सिर्फ एक शर्त रखी गयी कि वहाँ स्वेच्छा से दास-मालिक अपने दासों को मुक्त कर दें। इसके नेता मौण्टगुमरी ब्लेयर कालों को निश्चित रूप से वहाँ भेजने के पक्ष में थे, जहाँ (अफ्रीका) से लाये गये थे।

तीसरी योजना—चरमपंथी रिपब्लिकन सांसदों की थी। इसके अनुसार, विद्रोही दक्षिणी राज्यों को संघ में शामिल करने के पहले उनका सामाजिक और आर्थिक ढांचा पुनर्गठित करना था। इनके नेता समनर तो चाहते थे कि केन्द्र ने इन राज्यों को जीता है, अतः इन्हें केन्द्र के अधीन कर दिया जाये। वे पूरे क्षेत्र में दास-प्रथा उन्मूलन के पक्ष में थे।

इन मुद्दों को लेकर नरमपंथी ब्लेयर और चरमपंथी समनर के बीच खुली बहस छिड़ गयी। हालाँकि लिंकन खुद नरमपंथी नीति को मानते थे, परन्तु उन्होंने दोनों के झगड़े में प्रकट रूप से तटस्थता बनाये रखी। अपने बिस्तर पर पड़े-पड़े लिंकन ने जो संदेश तैयार किया, उसमें दोनों योजनाओं की उपेक्षा थी।

लिंकन ने पहले तो यह कहा कि देश में एक नये जीवन की शुरूआत होने वाली है। परन्तु इस नये जीवन के बारे में विस्तार से कुछ नहीं बताया। न ही उन्होंने 'धन्यवाद दिवस' के बारे में कुछ कहा। यह दिवस नवम्बर माह के प्रत्येक अन्तिम सप्ताह में मनाया जाता है। उन्होंने वाशिंगटन में कैपिटल में नया संसद भवन बनाये जाने के विषय में भी कुछ नहीं कहा। इसके अलावा उन्होंने थामस क्रॉफार्ड की उन्नीस फीट ऊँची, हाथ में मशाल लिये स्वतन्त्रता की मूर्ति के विषय में भी कुछ नहीं कहा, जो न्यूयार्क में 2 दिसम्बर 1863 को स्थापित की गयी थी।

राष्ट्रपति लिंकन ने युद्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिये कालों के विषय में कहा कि आज 1,00000 से अधिक काले सेना में कार्यरत हैं। उन्होंने अपने काले मित्र फ्रेडरिक डगलस के बारे में भी कुछ नहीं कहा, जिन्होंने उत्तर में नीग्रो सेना खड़ी करने में उनकी महत्वपूर्ण सहायता की थी। अपने भाषण में उन्होंने बीती बातों के बजाये भविष्य की रूपरेखा पर अधिक समय दिया।

आम माफी की घोषणा करते हुए लिंकन ने कहा कि उन्हें 'पूरी माफी दी जाती है।' दासों को छोड़कर, उनकी सम्पत्ति पर सारे अधिकार पुनः स्थापित होंगे। अंत में लिंकन ने घोषणा की कि जब तक वे इस पद पर विद्यमान हैं, वे अपनी मुक्ति घोषणा से पीछे नहीं हटेंगे। न ही उसमें कोई परिवर्तन करेंगे। उन्होंने जोर देकर कहा कि जो दास मुक्त हो गये हैं, उन्हें फिर कभी गुलाम नहीं बनाया जायेगा।

1863 के प्रारम्भ में जब राष्ट्रपति लिंकन को पुनः राष्ट्रपति के रूप में दोबारा नामांकन करने को कहा गया तो वह इस प्रश्न को टाल गये और कहा कि अभी उनके पास इस पर विचार करने का समय नहीं है। परन्तु

1863 के अंत में उनका रुख सकारात्मक हो गया। उनका कहना था कि वे राष्ट्रपति के रूप में दोबारा चुने जाने का स्वागत करेंगे, क्योंकि इससे वे अपने अधूरे काम (दास प्रथा उन्मूलन) को पूरा कर सकेंगे। परम्परा के अनुसार वे अपने पुनः नामांकन के लिये स्वयं कोई कोई प्रचार नहीं कर सकते थे। परन्तु ज्यों-ज्यों नामांकन की तिथियाँ पास आने लगीं, त्यों-त्यों 1863-64 की शीत ऋतु में व्हाइट हाउस में सामाजिक गतिविधियाँ तेज हो गयीं। 1864 का नववर्ष व्हाइट हाउस में पूरे हर्षोल्लास से मनाया गया। इसके अलावा वहाँ पर अनेकों रात्रिभोज भी आयोजित किये गये।

इन समारोहों में श्रीमती लिंकन ने विशेष रूप से भाग लिया। वो पूरे उत्साह के साथ इन समारोहों में शामिल हुयीं। इन समारोहों में समनर की भी विशेष आवभगत हुई। रिपब्लिकन पार्टी के ये सीनेटर चरमपंथी दास-प्रथा उन्मूलनवादी थे, जिन्होंने पहले लिंकन प्रशासन की आलोचना की थी। अपने पुनः नामांकन में लिंकन को रिपब्लिकन पार्टी के चरमपंथियों का सर्वाधिक सामना करना पड़ा था, अतः समनर को मनाना आवश्यक था। लिंकन के पुनः नामांकन पर बाकी लोगों का विरोध व्यक्तिगत कारणों से था। वो लोग चेज को अगले राष्ट्रपति के रूप में रिपब्लिकन पार्टी का प्रत्याशी बता रहे थे। परन्तु लिंकन को चेज़ का कोई भय नहीं था, वह चेज़ की कमियों से बखूबी परिचित थे।

22 फरवरी 1864 को रिपब्लिकन पार्टी की राष्ट्रीय समिति की बैठक वाशिंगटन में हुई। इस बैठक में पांच से चार सदस्यों के अनुपात में लिंकन को पुनः नामांकन के लिये प्रस्तुत किया गया। यह भी तय हुआ कि पूर्व राष्ट्रीय सम्मेलन 7 जून को बाल्टीमोर (वाशिंगटन के पास) में हो, जहाँ इस विषय पर अन्तिम प्रस्ताव पारित किया जाये। अनेक राज्य स्तरीय सम्मेलनों में भी लिंकन के नाम को पुनः नामांकन के लिये प्रस्ताव पारित किये गये। इन प्रस्तावों से चेज़ इतने निराश हुए कि उन्होंने 5 मार्च को राष्ट्रपति नामांकन की दौड़ से अपना नाम वापस लेने की घोषणा कर दी।

1 फरवरी 1864 को लिंकन ने 5,00,000 सैनिकों को भर्ती के आदेश दिये। क्योंकि गेटिसबर्ग की विजय के बाद सैनिकों के भाग आने और हताहत हो जाने के कारण उनमें कमी आ गयी थी और शिथिलता भी आ गयी थी। इसके लिये नये सैनिकों की आवश्यकता थी। इसके बाद 14 मार्च को लिंकन ने 2,00,000 सैनिकों की अनिवार्य भर्ती के आदेश जारी कर दिये। सभी समझते थे कि लड़ाई बहुत लम्बी खिंच गयी है, अतः लिंकन चाहते थे कि यह जल्दी से जल्दी समाप्त हो। सम्मिलित राज्यों ने धमकी दी कि वे पकड़े गये सैनिकों को गोली से उड़ा देंगे। इसके जवाब में लिंकन ने कहा कि युद्ध नियमों के विरुद्ध अगर संयुक्त राज्य का कोई सैनिक मारा जाता है तो वह बदले में ऐसा ही करेंगे। परन्तु लिंकन के ये आदेश कोरी धमकी के सिवाय कुछ नहीं थे। क्योंकि उन्होंने बदले की कार्यवाही करने से मना कर दिया था।

युद्ध को शीघ्र समाप्त करने के लिये लिंकन ने रिचमौन्ड पर जांबाज

हमला करने की योजना बनायी। योजना के अनुसार मजबूत व्यूह रचना तोड़कर सेना रिचमौन्ड में पूर्व और पश्चिम दोनों ओर से पहुँचेगी और बदनाम बेल एसले कारागार से संघीय सेना को छुड़ा लायेगी। 28 फरवरी को किया गया प्रथम प्रयास असफल रहा। दूसरी ओर पोटोमैक सेना भी ली की विद्रोही सेना पर निर्णायक विजय प्राप्त नहीं कर पा रही थी। इसके कमान्डर मीड सुस्त साबित हो रहे थे।

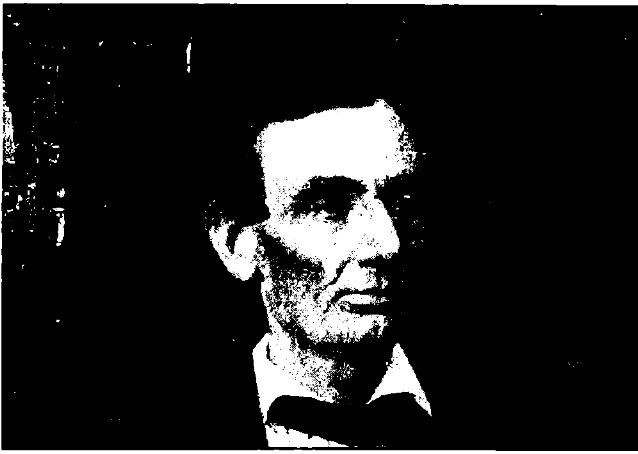
लिंकन ने ऐसे में सेना के पुनर्गठन की योजना बनायी। उन्होंने पश्चिमी मोर्चे पर तैनात जनरल ग्रान्ट को वाशिंगटन बुलाया और उन्हें सेना में 'लेफ्टीनेंट जनरल' के पद पर नियुक्त किया। 19 मार्च 1864 को ग्रान्ट को सेना का जनरल-इन-चीफ बना दिया। जबकि हैलैंक चीफ आफ स्टाफ हो गये। ग्रान्ट को सेना प्रमुख बनाने के लिये ग्रान्ट को पूरी छूट ही नहीं दी बल्कि उन्हें पूरा सहयोग भी दिया। ग्रान्ट ने अपना मुख्यालय पोटोमैक सेना के निकट बनाया।

लिंकन और ग्रान्ट में इस बात पर पूर्ण सहमति थी कि सम्मिलत राज्य की सेना पर अन्तिम प्रहार करने के लिये चारों ओर से एक साथ हमला बोला जाये। सम्मिलित राज्य के मुकाबले में संयुक्त राज्य की संघीय सेना की ताकत बहुत ज्यादा थी। अतः इस योजना के सफल होने की प्रबल सम्भावना थी।

बुधवार 4 मई 1864 को पोटोमैक सेना ने इस अभियान का प्रारम्भ किया। इस दिन यह सेना उत्तरी वर्जीनिया की ओर बढ़ गयी। अगले रोज जनरल बटलर अपनी सेना लेकर पीटर्सबर्ग की ओर रवाना हुए और 7 मई को जनरल शर्मन एटलान्टा पर कब्जा करने के लिये निकले। पूरी कार्यवाही अत्यन्त गोपनीय ढंग से और तेज गति से हुई। लिंकन तक को कोई खबर नहीं पहुँच रही थी। शुक्रवार के दिन लिंकन को ग्रान्ट का यह संदेश मिला कि सब कुछ योजनानुसार चल रहा है। अगले रोज एक संवाददाता लिंकन से मिलने आया और उसने लिंकन को ग्रान्ट का यह संदेश दिया कि जनरल ग्रान्ट ने कहा है कि वे कभी पीछे नहीं हटेंगे।

इन प्रारम्भिक समाचारों के बाद बुरी खबरें वाशिंगटन पहुंचने लगीं। ग्रान्ट ने अपनी सेना के 1,00,000 जवान ली की उससे छोटी टुकड़ी के खिलाफ झोंक दिये। दो दिन की भीषण लड़ाई के बाद ग्रान्ट की सेना के 14,000 सैनिक हताहत हुए। ली की सेना मैदान में डटी रही। ग्रान्ट ने पुनर्गठित होकर दूसरा हमला पूर्व की ओर से बोला। 10 से 14 मई तक फिर भीषण युद्ध हुआ। इसमें भी पोटोमैक को अपने 17,500 सैनिकों का नुकसान उठाना पड़ा। इस प्रकार दो सप्ताह के भीतर पोटोमैक सेना ने 32,000 से अधिक सैनिक या तो गंवा दिये या फिर घायल हो गये। हजारों लापता हो गये।

परन्तु ग्रान्ट पिछले कमान्डरों की तरह हिम्मत हारने वालों में से नहीं थे। भारी नुकसान उठाने के बावजूद भी उन्होंने ली का पीछा नहीं छोड़ा। ग्रान्ट के इस हौसले को देखकर लिंकन ने राहत की सांस ली।



लेकिन उसकी परेशानी खत्म नहीं हुई थी। उनकी परेशानी सेना में सैनिकों की कमी को लेकर थी। तीन साल के लिये जो सैनिक भर्ती किये गये थे, उनकी अवधि समाप्त होने को थी। अतः उन्होंने 3,00,000 की अनिवार्य भर्ती के लिये आदेश तैयार किये। लेकिन इस आदेश के जारी होने से पहले ही दो व्यापारिक पत्रों द्वारा देश में यह खबर फैल गयी कि लिंकन चार लाख सैनिकों की नयी भर्ती करने वाले हैं। इस अफवाह से न्यूयार्क में सोने के भाव अचानक 10 प्रतिशत बढ़ गये।

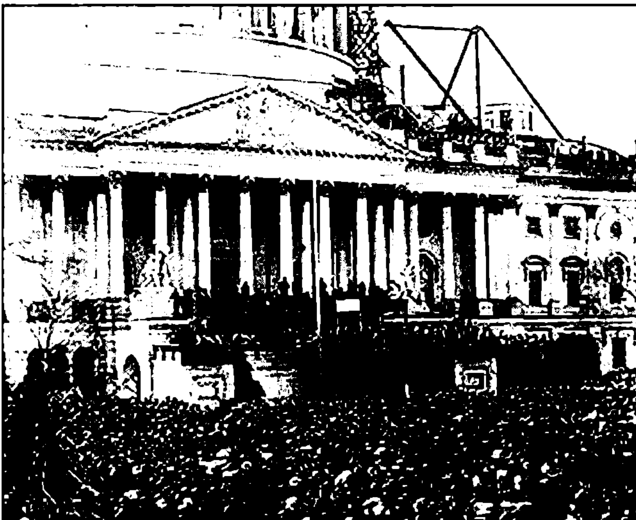
लिंकन इस राष्ट्रविरोधी कार्यवाही से इतने नाराज हुए कि उन्होंने दोनों पत्रों को सख्त आदेश दिये। दोनों कार्यालयों पर सेना ने कब्जा कर लिया और उनके सम्पादकों और मालिकों को गिरफ्तार कर लिया गया। परन्तु बाद में पता चला कि दो संवाददाताओं ने लिंकन के फर्जी आदेश तैयार करके पत्रों को दिये थे, जिसके आधार पर उन्होंने ये समाचार छाप दिया। इन दोनों संवाददाताओं को गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया गया और सम्पादकों तथा मालिकों को रिहा कर दिया गया।

❑



पुनः राष्ट्रपति प्रत्याशी

रिपब्लिकन पार्टी ने जून में अब्राहम लिंकन को दूसरी बार राष्ट्रपति पद के लिये प्रत्याशी घोषित कर दिया। लेकिन जल्दी ही पार्टी को लगा कि उससे गलती हो गयी है। पार्टी के कुछ वरिष्ठ नेताओं ने लिंकन को सलाह भी दे डाली कि स्वयं अपना नाम वापस ले लें। वे लोग एक और सम्मेलन बुलाना चाहते थे, जिसमें कहना चाहते थे कि लिंकन असफल रहे हैं, लिहाजा उनका नामांकन निरस्त किया जाता है। तब लिंकन के प्रिय दोस्त ओरविल ब्राउनिंग ने अपनी डायरी में लिखा—"देश की सबसे बड़ी जरूरत है कि उसके शिखर पर योग्य नेता ही बैठे।"



लिंकन खुद भी समझने लगे कि उनका मामला निराशाजनक है। वे असफल रहे हैं। उनके जनरल असफल रहे हैं और लोगों को उनके नेतृत्व पर से विश्वास उठ गया है। सन् 1864 की गर्मियों के आते-आते लिंकन के अंदर भारी बदलाव आया। उनके गाल अंदर को धंस गये। चुटकुलों

की जगह गम्भीर वक्तव्यों ने ले ली। उन्होंने अपने एक मित्र से कहा—"अब शायद मैं कभी जीवन में प्रसन्न नहीं हो पाऊंगा।"

'अंकल टाम्स केबिन' की लेखिका श्रीमती स्टोव से उन्होंने कहा था—"इस देश में शान्ति देखने के लिये शायद मैं जीवित नहीं रह पाऊंगा।"

लिंकन राजनीतिक पैंतेरबाजी को समझने में बेहद कुशल थे। वे हल्की-सी राजनीतिक हरकत की पदचाप भी सुन लेते थे। एक बार लिंकन से 'न्यूयार्क ट्रिब्यून' के सम्पादक ग्रीली ने कहा कि उन्हें सम्मिलित सरकार के प्रतिनिधियों से चर्चा के लिये जाना चाहिये। ग्रीली भी फ्रांस की तरह किसी तीसरे स्थान पर चर्चा के पक्षधर थे। लिंकन तुरंत भांप गये कि ये डेमोक्रेटिक्स की चाल हो सकती है। यह ऐसा प्रस्ताव था जिसको अस्वीकार करना भी बदनामी थी और स्वीकार करना पिछले चार वर्षों के कठोर परिश्रम को व्यर्थ करना था। उन्होंने सम्पादक के नाम एक खुला पत्र लिखा। पत्र में उन्होंने इच्छा प्रकट करते हुए कहा—"मैं चाहता हूं कि ग्रीली ही संघ प्रतिनिधि की हैसियत से चर्चा करें, ताकि संघ की एकता और दास प्रथा उन्मूलन पर वार्ता हो सके।"

ग्रीली इसमें फंसना नहीं चाहते थे। उन्होंने इंकार कर दिया। लिंकन ने ऐसे प्रस्ताव रखे थे कि जिन्हें पृथकतावादी मान ही नहीं सकते थे। मानते तो तय हो जाता कि वे निरर्थक युद्धोन्माद में लड़ाई लड़ रहे हैं। लिंकन के प्रस्तावों में संयुक्त राज्य अमरीका की एकता और दास प्रथा के पूर्ण उन्मूलन की बात कही गयी थी। इसे मानना अलगाववादियों की सैद्धान्तिक हार होती। लिंकन पर कोई और आरोप इस बारे में लगता, तब तक उन्होंने पृथकतावादियों के प्रमुख डेविस के संदेश को सार्वजनिक कर दिया। उसे डेविस के दूतों ने लिंकन तक पहुंचाया था। उसमें था कि युद्ध तब तक जारी रहेगा जब तक इस पीढ़ी का अन्तिम व्यक्ति उनके पद चिन्हों पर चलता रहेगा और जब तक राष्ट्रपति लिंकन स्वशासन को मान्यता नहीं दे देते। इस संदेश के उजागर होते ही युद्ध विरोधियों की बोलती बंद हो गयी।

चेज ने अपना नाम तो वापस ले लिया, लेकिन वह लिंकन विरोधी गुट के नेता बन बैठे। वे लोग राष्ट्रपति के नामांकन पर फिर से विचार करने की मांग कर रहे थे। 18 अगस्त को न्यूयार्क में जो बैठक बुलाई गई, उसमें चेज़ और समनर ने भाग नहीं लिया। 30 अगस्त को डेमोक्रेटिक पार्टी का राष्ट्रीय सम्मेलन शिकागो में हुआ। इस सम्मेलन में पार्टी के राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी का चुनाव होना था। इसमें जनरल (भूतपूर्व) मैक क्लेनन का नाम पार्टी प्रत्याशी हेतु चुना गया। सम्मेलन में प्रस्ताव पास किया गया कि चार वर्ष तक संघ की रक्षा करने में असफल रहने के बाद न्याय, मानवता, स्वतंत्रता तथा जनहित की यह मांग है कि वैमनस्यता समाप्त की जाये। युद्ध की आलोचना करने तथा लड़ाई समाप्त करने की मांग के कारण 'शिकागो आत्मसमर्पण' के नाम से बदनाम हो गया। घबराकर मैक क्लेनन ने जल्दी ही युद्ध समाप्ति के इस प्रस्ताव से अपना नाता तोड़ लिया।

डेमोक्रेटिक पार्टी के इस युद्ध विरोधी प्रस्ताव की तब धज्जियां उड़ गयीं

जब 14 सितम्बर 1864 को युद्ध क्षेत्र से हार्मन का यह संदेश प्राप्त हुआ कि एटलान्टा अब हमारा हो गया है, लगभग जीत लिया गया है। दूसरा संदेश नौसेना के जनरल 'टियर एडमिरल फरागुट' से प्राप्त हुआ कि मोवील पर संघीय सेना का कब्जा हो गया है। एटलान्टा और मोवील की जीत ने युद्ध का नक्शा ही बदल दिया। इन समाचारों को सुनकर लिंकन खुशी से झूम उठे। लम्वे अरसे बाद उन्हें शुभ समाचार मिले थे।

पहले इस दिवस को 'धन्यवाद दिवस' मनाने की घोषणा की गयी, लेकिन बाद में ली सरकारों ने इसे 'मजदूर दिवस' के रूप में मनाने का फैसला किया। आज भी सितम्बर माह का पहला सोमवार अमरीका में 'मजदूर दिवस' के नाम से मनाया जाता है। संघीय सेना की इस सफलता ने रिपब्लिकन पार्टी के अन्दर और बाहर लिंकन विरोधियों की कमर तोड़ दी।

अब लिंकन अपना ध्यान आने वाले राष्ट्रपति चुनाव की ओर दे सकने की स्थिति में थे। लिंकन ने इस स्थिति का लाभ उठाने के लिये पहले रिपब्लिकन पार्टी में एकता लाने का बीड़ा उठाया। उदारवादी लिंकन की, उग्रवादी उनके विरुद्ध टिप्पणी करने से बाज नहीं आते थे। इन लोगों ने क्रीमौन्ट को लिंकन के विरुद्ध तैयार किया। लिंकन जानते थे कि क्रीमौन्ट और मांटगुमरी ब्लेयर में कभी भी आपस में नहीं बनी। लिंकन ने उनके पास खबर भिजवा दी कि यदि वे अपना नाम वापस ले लेते हैं तो ब्लेयर को हटा दिया जायेगा। यूं भी ब्लेयर को लोग पसंद नहीं करते थे। क्रीमौन्ट ने यह कहते हुए नाम वापस ले लिया कि वे नहीं चाहते कि रिपब्लिकन पार्टी की फूट का लाभ प्रतिक्रियावादी मैक क्लेनन को मिले।

चुनाव प्रचार में गर्मी आने लगी। डेमोक्रेटों ने भांप लिया कि इस बार भी लिंकन को हराना सम्भव नहीं है। लिंकन के चुनाव अभियान को तेज



गति पकड़ते देखकर और पूरे उत्तर में जुलूसों और सभाओं का तांता लगा देखकर डेमोक्रेटिक पार्टी के सदस्य इतने बौखला गये कि उन्होंने अपनी बातें तो करनी छोड़ दीं और उन्होंने लिंकन का चरित्र हनन करना आरम्भ कर दिया। डेमोक्रेट नेता कभी उनके नीग्रो प्रेम का मजाक उड़ाते तो कभी उन्हें भद्दे मजाक करने वाला जोकर कहते। इन लोगों ने अफवाह फैलायी कि लिंकन चाहते हैं कि काले और गोरे आपस में विवाह करें।

उन दिनों की परम्परा के अनुसार लिंकन क्योंकि कुर्सी पर विराजमान थे, इसलिये चुनाव प्रचार खुद नहीं कर सकते थे और न ही इन आलोचनाओं का मुंहतोड़ जवाब दे सकते थे। उन दिनों ऐसा करने को सरकारी पद का दुरुपयोग माना जाता था। लिहाजा लिंकन इस बात का प्रयास करना लगे कि समाचार-पत्र उनके पक्ष में लिखें या फिर उनका विरोध कम से कम करें।

एक बात तय थी कि 8 नवम्बर 1864 को होने वाले राष्ट्रपति चुनाव में जोरदार टक्कर होने वाली थी। अनेक राज्य जैसे कौलोरैडो, नेब्रास्का, नेवाडा ऐसे थे, जिन्हें कानूनन अभी संघ में शामिल किया गया था, या फिर कुछ विद्रोही दक्षिणी राज्य ऐसे थे जिन पर संघ का कब्जा तो हो गया था, परन्तु वैधानिक रूप से उनका विलय नहीं हुआ था। यदि लिंकन इन राज्यों को वोट देने का अधिकार दे देते तो उनकी जीत सुनिश्चित थी। फिर भी लिंकन ने ऐसा नहीं किया, क्योंकि संवैधानिक रूप से यह कांग्रेस का अधिकार था।

लिंकन चाहते तो युद्ध के चलते चुनावों को टाल भी सकते थे, परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया, क्योंकि इसे वे अलगाववादी अपनी विजय बताते। लेकिन युद्ध सैनिकों को वोट देने के लिये घर आने से मना करके लिंकन ने यह जता दिया कि युद्ध और चुनाव के बीच उनके लिये युद्ध अधिक महत्वपूर्ण है। अक्तूबर माह में विराक्यूज में काले लोगों के राष्ट्रीय सम्मेलन में मेसाचुसेट्स के काले वकील जॉन रॉक ने लोगों से कहा कि देश में केवल दो पार्टियां हैं, पहली लिंकन की पार्टी है, जिसका उद्देश्य स्वतंत्रता और जनतंत्र है, दूसरी मैक क्लेनन की पार्टी, जिसका उद्देश्य कालों को देश-निकाला और गुलामी है।

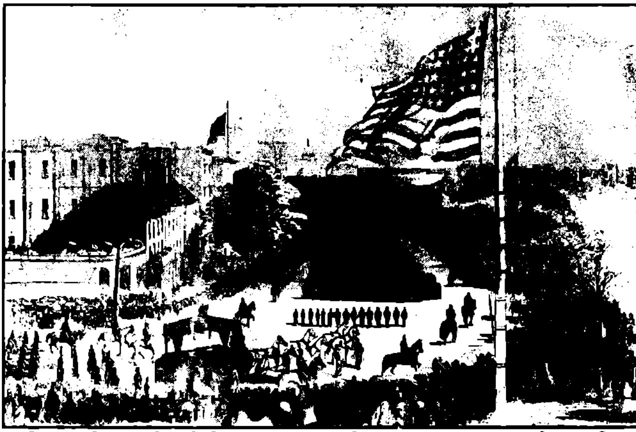
कुछ दास प्रथा विरोधियों का मानना था कि अनेक गलतियों के बावजूद भारी संख्या में गुलामों को आजाद कराने का श्रेय लिंकन को जाता है। उन्मूलनवादी इस बात से आश्वस्त थे कि लिंकन दास-प्रथा को जड़ से समाप्त करना चाहते हैं।

इन सब समर्थकों के बावजूद लिंकन पुनः निर्वाचन हेतु पूर्ण रूप से आश्वस्त नहीं थे। अक्तूबर में हुए राज्य विधान सभा चुनाव में कांटे की टक्कर रही। परन्तु इन्डियाना और ओहियो में आशा से अधिक समर्थन मिलने तथा कमान्डर शेरी डान द्वारा अलगाववादी सेना के क्रूर कमाण्डर अंर्ली की टुकड़ी को मार भगाने के कारण हवा का रुख लिंकन के पक्ष में हो गया। लिंकन

ने आदेश जारी करके सैनिकों को युद्ध-भूमि में ही वोट डालने की सुविधा दी। युद्ध के बावजूद चुनाव व्यवस्थित ढंग से सम्पन्न हुआ।

चुनाव में पुनः विजय

प्रारम्भिक चुनाव नतीजे रिपब्लिकन पार्टी के लिये उत्साहवर्धक रहे। अन्तिम परिणाम में डेमोक्रेटिक पार्टी के मैक क्लेनन को 45 प्रतिशत और रिपब्लिकन पार्टी के अब्राहम लिंकन को 55 फीसदी वोट मिले। लिंकन की जीत से पूरे देश ने राहत की सांस ली, क्योंकि मैक क्लेनन जैसा व्यक्ति यदि राष्ट्रपति बन जाता तो देश का बेड़ा गर्क होना निश्चित था। प्रजातन्त्र पर से लोगों का विश्वास उठ जाता।



लिंकन ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा—"चुनाव ने यह दिखा दिया कि जनता की सरकार एक बड़े गृह-युद्ध के दौरान भी एक राष्ट्रीय चुनाव का बोझ उठा सकती है। अभी तक दुनिया में यह माना जाता था कि यह असम्भव है। परन्तु जनता ने असम्भव को सम्भव करके दुनिया को दिखा दिया है।"

अपनी इस दूसरी जीत पर राष्ट्रपति लिंकन को दुनिया भर के बधाई संदेश मिले। इनमें से एक बधाई-पत्र कार्ल मार्क्स का भी था, जो उन्होंने 1864 के नवम्बर माह में लिंकन को भेजा था। अंतर्राष्ट्रीय कामगार संघ की ओर से लिखे गये पत्र में मार्क्स ने लिखा—"हम आपके भारी मतों से विजयी होने पर अमरीकी जनता को बधाई देते हैं। अगर दास-शक्ति से लोहा लेना आपके पहली बार चुने जाने का कारण था तो आपके पुनर्निर्वाचन का कारण युद्ध में हुई जीत से है। यह दास-प्रथा उन्मूलन की पुकार थी।"



लिंकन की हत्या का षड्यंत्र

लिंकन की पुनः जीत के बाद लिंकन विरोधी परेशान थे कि अब उन्हें लिंकन को आने वाले चार वर्षों तक और झेलना पड़ेगा। ऐसे में दक्षिण में लिंकन की हत्या के बजाय उनके अपहरण पर अधिक मंथन चल रहा था। इससे उन्हें कई फायदे नजर आये। यदि लिंकन का अपहरण करके उन्हें रिचमौंड लाया जाता तो उन्हें मजबूर किया जाता कि वे सम्मिलित सरकार से वार्ता करें। जनरल ग्रान्ट को बर्खास्त करें, ताकि उनके भीषण आक्रमणों से दक्षिण बच सके, तथा लिंकन को छोड़ने के लिये यह शर्त रखी जा सके कि संघीय सरकार दक्षिण के उन 2,00,000 सैनिकों को रिहा करे जो वहां जेलों में सड़ रहे हैं।

सितम्बर, 1864 को सम्मिलित सरकार का एक दूत, अपने तीन साथियों के साथ लिंकन का अपहरण करने के उद्देश्य से वाशिंगटन आया। परन्तु तब तक उनकी सुरक्षा व्यवस्था इतनी मजबूत कर दी गयी थी कि उन्हें ऐसी कोई हरकत करने का साहस नहीं हुआ। इसका मुख्य कारण यही था कि लिंकन की सुरक्षा समिति को पहले ही लिंकन के एक शुभचिंतक का पत्र मिल चुका था कि उनकी हत्या का प्रयास होने वाला है। अगस्त में किसी ने लिंकन पर गोली चलायी थी। लिंकन बच गये, क्योंकि गोली उनके ऊंचे हैट को लगी थी। लिंकन ने एक पत्रकार को उन्हें भेजे गये ऐसे 80 धमकी भरे पत्र दिखाये और कहा—

"मुझे मालूम है कि मेरी जान को खतरा है। लेकिन मैं ऐसी धमकियों की परवाह नहीं करता हूं।"

दोबारा राष्ट्रपति चुने जाने के बाद लिंकन के यहां पार्टी कार्यकर्ताओं की लम्बी लाइन लग गयी, जो कि सरकारी नौकरी पाने के इच्छुक थे, परन्तु कोई रिक्ति न होने के कारण उन सभी को निराश होना पड़ा। लिंकन ने केवल अपने दोनों साथियों को उनके उत्तम कार्य के लिये पुरस्कृत किया। एक को उन्होंने पेरिस में राजदूत बनाया, तो दूसरे को उसी दूतावास में एक उच्च पद दिलवा दिया।

चुनाव के बाद और मार्च 1865 में शपथ के पहले लिंकन को अपनी कैबिनेट के लिये चार नये मन्त्रियों की भी आवश्यकता थी। वे पहले ही डेनिसन को नया पोस्ट मास्टर जनरल बना चुके थे। प्रमुख सरकारी वकील जो अब इकहत्तर वर्ष के हो चुके थे, ने अपना इस्तीफा दे दिया। उनके स्थान पर कण्टेवी स्पीड को नियुक्त किया गया। 8 मार्च को अशर ने भी अपना इस्तीफा दे दिया। लिंकन ने उनके स्थान पर सीनेटर हर्लन को यह पद दिया। हर्लन की बेटी की सगाई लिंकन के बेटे राबर्ट के साथ हो गयी थी। हर्लन, लिंकन की नीतियों का सीनेट में भारी समर्थन करते थे। नये

वित्त सचिव फैसेन्डन भी अपना पद छोड़कर सीनेट में जाना चाहते थे। उनके स्थान पर मैक कुलोक को यह पद दिया गया।

लिंकन के लिये दिसम्बर 1865 का महीना अत्यन्त शुभ साबित हुआ। दूसरी बार राष्ट्रपति चुने जाने के कारण संसद में उनकी नीतियों को अत्यधिक समर्थन मिला। युद्ध क्षेत्र में मिली सफलताओं ने उनकी खुशी में चार चांद लगा दिये। 25 दिसम्बर को हर्मन का तार लिंकन को मिला कि वे उन्हें क्रिसमस के तोहफे के रूप में नगर दे रहे हैं, जिसके पास 150 भारी तोपों के अलावा बड़ी मात्रा में गोला-बारूद है, साथ में 25000 कपास की गांठें हैं।

सम्मिलित राष्ट्र के उपराष्ट्रपति स्टीकैन्स के नेतृत्व में एक तीन-सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल से लिंकन तथा सेवर्ड की बातचीत फरवरी 1865 को हुई। वार्ता प्रारम्भ करते हुए स्टीफेन्स ने लिंकन से पूछा—"क्या वर्तमान गतिरोध समाप्त करने का कोई तरीका है?"

लिंकन ने उत्तर देते हुए कहा —"मुझे एक ही तरीके का पता है, और वह है कि जो लोग संघ के कानूनों को नहीं मान रहे हैं, वे अपना विद्रोह समाप्त कर दें।"

स्टीफेन्स ने अगला सवाल किया —"क्या उन्हें यह बात मंजूर होगी कि दक्षिणी और उत्तरी सेनाएं मिलकर मैक्सिको पर कब्जा करने वाली फ्रांसीसी सेना को वहाँ से खदेड़ दें?"

इसका लिंकन ने उत्तर देते हुए कहा—"यह बात हमें तभी मंजूर होगी जब दक्षिणी राज्य संघ में शामिल हो जायें।"

लिंकन की बात को स्पष्ट करते हुए सेवर्ड ने कहा —"लिंकन का दास-मुक्ति घोषणा-पत्र नहीं बदल सकता, न ही जो दास मुक्त हो चुके हैं, उन्हें दोबारा दास बनाया जा सकता है।"

एक प्रतिनिधि, हण्टर ने जब यह कहा कि इग्लैंड के सम्राट चार्ल्स प्रथम ा अपने विद्रोहियों से वार्तालाप किया था। इस पर लिंकन ने उत्तर देते हुए कहा —"अन्त में चार्ल्स का सिर कलम कर दिया गया था।"

जहाँ तक युद्धबंदियों को छोड़ने का सवाल था, लिंकन ने प्रतिनिधि मंडल को बता दिया कि उन्होंने इस सवाल को पूरी तरह से जनरल ग्रान्ट पर छोड़ दिया है।

5 मार्च 1865 को लिंकन ने दूसरी बार राष्ट्रपति पद की शपथ ली। उन दिनों वाशिंगटन में लगातार कई रोज से मूसलाधार बारिश हो रही थी। सड़कों पर भयंकर कीचड़ थी। उपराष्ट्रपति जानसन के बाद जैसे ही लिंकन अपना राष्ट्रपति भाषण देने को खड़े हुए, बादलों को चीरकर सूरज की किरणें जमीन पर आ पड़ीं। अनेकों दिनों से वर्षा से परेशान वाशिंगटन वासियों ने इसे शुभ संकेत माना और कहा कि इसी प्रकार युद्ध के बादल भी छँट जायेंगे और नया सवेरा आयेगा।

लिंकन ने जोरदार आवाज में अमरीकी इतिहास का सबसे संक्षिप्त उद्घाटन भाषण पढ़ा। इसमें मात्र लगभग 700 शब्द थे। उन्होंने कहा कि पिछले

चार वर्षों से युद्ध के दौरान उन्होंने अपने विचारों को जनता के सामने रखा है, उन्हें बार-बार दोहराने से कोई लाभ नहीं है। वे कुछ नई बातों को जनता के सम्मुख रखेंगे, उनके अनुसार सभी लोग इस लम्बी चलने वाली लड़ाई से उकता गये हैं और चाहते हैं कि युद्ध शीघ्र समाप्त हो जाये। युद्ध में एक पक्ष (दक्षिण) यह चाहता है कि युद्ध जारी रहे, ताकि देश समाप्त हो जाये। जबकि दूसरा पक्ष (उत्तर) यह चाहता है युद्ध समाप्त हो जाये, ताकि देश बचा रहे। दोनों ओर के लोगों में अनेक समानताएं हैं, वो एक ही बाइबिल को पढ़ते हैं, एक ही ईश्वर की प्रार्थना करते हैं, और उसी ईश्वर से सहायता भी मांगते हैं। फिर लिंकन ने बताया कि युद्ध इतना लम्बा क्यों खिचा। इसके लिये वे स्वयं की जिम्मेदारी से भी पीछे नहीं हटे। फिर उन्होंने कहा कि शायद ईश्वर की यही इच्छा थी।

लिंकन ने अपने भाषण में यह भी कहा कि ईश्वर अब दास प्रथा समाप्त करना चाहता है। अतः उसने उत्तर, दक्षिण दोनों को यह युद्ध करने पर विवश कर दिया, जिससे उन लोगों को परेशान किया जा सके, जिन्होंने दास प्रथा जैसा जघन्य अपराध किया है, अर्थात यह युद्ध ईश्वर का शाप है, जिसे हम झेल रहे हैं।

यह लिंकन द्वारा कहा गया अब तक का कटु सत्य था, इसमें गुलामी के पाप के लिये और खून-खराबे के लिये उत्तर, दक्षिण दोनों को दोषी ठहराया गया था। लिंकन ने मरने वाले सैनिकों को श्रद्धांजली दी तथा उनकी विधवाओं और बच्चों की देखभाल का वादा किया। भाषण के अन्त में लिंकन ने कहा कि किसी को किसी के प्रति दुर्भावना नहीं रखनी चाहिये। प्रत्येक के प्रति सद्भावना होनी चाहिये, क्योंकि ईश्वर ने हमें सत्य परखने की क्षमता दी है।

अपने उद्घाटन भाषण के बाद लिंकन का स्वास्थ्य [illegible] गिर गया कि उन्होंने बिस्तर पकड़ लिया। काम के बोझ और दिमागी तनाव के कारण वे कई दिनों से अपने आप को थका हुआ महसूस कर रहे थे। उनका वजन भी घटता जा रहा था। छप्पन वर्ष की आयु में ही वो बूढ़े लगने लगे थे।

20 मार्च 1865 को पत्नी की सलाह पर, जनरल ग्रान्ट ने राष्ट्रपति लिंकन को "सिटी प्वाइंट" पर सेना के मुख्यालय आकर कुछ दिनों रहने तथा स्वास्थ्य लाभ करने के लिये न्यौता दिया। लिंकन ने यह न्यौता स्वीकार कर लिया और कहा कि उनके साथ उनकी पत्नी और छोटा बेटा टैड भी आयेगा। इसके अलावा मैरी की नौकरानी, व्हाइट हाउस का सुरक्षा गार्ड तथा सेना का एक कैप्टन भी लिंकन के साथ थे। ये लोग 23 मार्च को 'रिवर क्वीन' नामक स्टीमर पर बैठकर पोटोमैक नदी में नीचे की ओर चले और सिटी प्वाइंट पर पहुँच गये। वहाँ पर उन्हें बड़े बेटे राबर्ट से मिलने की आशा थी। रास्ते में छोटे बेटे टैड को सबसे अधिक मजा आया। सभी नाविकों से उसकी दोस्ती हो गयी थी और वह सभी से घुल-मिल गया।

सिटी प्वाइंट में लिंकन ने अपने जनरलों से विद्रोहियों पर अन्तिम विजय प्राप्त करने की वार्ता की। ग्रान्ट, पीटर्सबर्ग पर अन्तिम प्रहार करने की

तैयारी में थे। इसी तरह हार्मन भी उत्तरी कैरोलाइना तथा दक्षिणी कैरोलाइना पर अपनी सेना आगे बढ़ाने की योजना बना रहे थे। इसी सम्बन्ध में लिंकन ने रिवर क्वीन पर तीन कमांडरों के साथ 28 मार्च को बैठक की। जिसमें उन्होंने अपनी बात रखते हुए कहा कि वह चाहते हैं कि युद्ध जल्द समाप्त हो। युद्ध समाप्ति पर विद्रोहियों के विषय पर उन्होंने कहा कि वे चाहते हैं कि सैनिक अपने हथियार डाल दें और अपने घरों को वापस चले जायें। बस इस बात का ध्यान रखा जाये कि वो दोबारा हथियार न उठाने पायें। वे किसी को सजा देना नहीं चाहते।

सिटी प्वाइंट की यात्रा के बाद जब लिंकन वापस आये तो वे पहले से ज्यादा तरोताजा थे। उनके स्वास्थ्य में भी सुधार था। सैनिकों का ऊँचा मनोबल देखकर तथा अन्तिम विजय शीघ्र मिलने की आशा ने उनमें एक नई स्फूर्ति भर दी।

9 अप्रैल की शाम को जब लिंकन वाशिंगटन पहुँचे, तब वहाँ के लोग रिचमौण्ड पर कब्जे की खुशियाँ मना रहे थे और आशा कर रहे थे कि जनरल ली शीघ्र ही आत्मसमर्पण कर देगा। लिंकन सेवर्ड के पास पहुँचे। राज्य सचिव गाड़ी से गिर जाने के कारण बुरी तरह से घायल हो गये थे, उनके हाथों की हड्डियाँ और जबड़े की हड्डियाँ टूट गयी थीं। लिंकन ने उनके कान में कहा—"रिचमौण्ड पर हमारी सेना का कब्जा हो गया है और वे 'धन्यवाद दिवस' की घोषणा करने वाले हैं।"

रात को लिंकन को पता चला कि ली ने ग्रान्ट के सामने आत्मसमर्पण कर दिया है। अगले रोज प्रातःकाल होते ही 500 तोपों की सलामी ने पूरे वाशिंगटन वासियों को यह समाचार पहुँचाया। लोगों ने घंटियाँ बजाकर, झण्डे हिलाकर तथा हर्षोल्लास के साथ इस खबर का स्वागत किया। हजारों की संख्या में लोग व्हाइट हाउस के सामने इकट्ठा हो गये। बैन्ड अपनी धुन बजाने लगे और लोग गीत गाने लगे। लिंकन ने अपने पुत्र टैड को देखा, जो ऊपरी खण्ड में खड़ा हाथ में सम्मिलित सरकार का झण्डा लहरा रहा था।

11 अप्रैल को पूरी राजधानी में जीत का जश्न मनाया जा रहा था। सभी सरकारी भवनों में रोशनी की गयी, अनेक निजी भवन भी जगमगाये। शाम को भारी संख्या में जन समूह व्हाइट हाउस के सामने इकट्ठा हो गया। लिंकन ने उनके सम्मुख अपना भाषण पढ़ा। भाषण में उन्होंने कहा कि हमारी यह विजय शीघ्र और सही रूप से शान्ति की स्थापना करेगी। उन्होंने जनरल ग्रान्ट और उनके योग्य तथा बहादुर अफसरों को धन्यवाद दिया।

लिंकन का अन्तिम समय

11 अप्रैल को जब लिंकन ने अपने भाषण में, कालों को वोटिंग अधिकार देने की बात कही तो उनका घोर विरोधी जान विल्कीज बूथ आपे से बाहर हो गया। वह क्रोध में उबल पड़ा। उसे लगा कि जो लोग आज तक पैरों के नीचे बैठते आये हैं, उन्हें सिर पर किस प्रकार बिठाया जा सकता है?

उसके नजदीक उसके दो षड्यन्त्रकारी साथी भी खड़े थे। उसने अपने दोनों साथियों से कहा—"यह लिंकन का आखरी भाषण है, इसके बाद यह कोई भाषण नहीं दे पायेगा।"

यह कहने के बाद बूथ ने अपने एक साथी से गोली चलाकर लिंकन को वहीं ढेर करने को कहा। परन्तु ऐसा करने से उसने इंकार कर दिया। तब वह अपने दूसरे साथी की ओर देखकर बोला—"ईश्वर कसम, मैं इसे ठिकाने लगा दूंगा।"



बूथ ने पिछले जाड़ों के मौसम में भी लिंकन के अपहरण की योजना बनाई थी। लेकिन वह सफल न हो सका था। वह लिंकन का अपहरण न कर पाने के कारण निराश था, इसीलिये 4 मार्च को उसने लिंकन को गोली मारने का मन बना लिया। यह विचार उसे तब आया, जब वे कैपिटौल (संसद) के पोर्च से अपना दूसरा भाषण देने जा रहे थे। बूथ ने सोचा कि यह लिंकन को मारने का सुनहरा अवसर है। उसके सिर पर लिंकन को खत्म करने का भूत सवार था।

14 अप्रैल का दिन लिंकन के लिये अत्यन्त व्यस्त था। 11 बजे कैबिनेट की मीटिंग से पहले ही उन्होंने सुबह सात बजे से अपने काम निबटाने आरम्भ कर दिये। सबसे पहले उन्होंने मिशीगन राज्य में रेड इन्डियन विभाग में अधिकारी के रूप में हॉवेल की नियुक्ति की, पूरा ब्यौरा विस्तार से बताया। वे अपने कार्यालय गये, वहाँ फरियादियों की लाइन उनसे मिलने के लिये खड़ी थी। वहाँ वे कुछ लोगों से मिले और कुछ दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने के बाद जब वे तीन बजे उठे तो अपनी पत्नी मैरी के साथ खुली बग्घी में हवा खाने निकले।

व्हाइट हाउस पहुँचने पर लिंकन ने देखा कि उनसे मिलने के लिये कुछ और लोग प्रतीक्षा कर रहे थे। सबसे मिलने के बाद उन्होंने डिनर जल्दी से लिया, क्योंकि शाम को उन्हें फोर्ड थियेटर में हास्य नाटक देखने जाना था। मैरी ने नाटक देखने जाने में आना-कानी की, क्योंकि उनके सिर में दर्द हो रहा था। परन्तु लिंकन के जोर देने पर अंत में उन्हें अपने पति के साथ

जाना ही पड़ा।

लिंकन के बॉडीगार्ड किसी सरकारी काम से रिचमौण्ड चले गये थे। परन्तु जाने से पहले उन्होंने लिंकन को चेतावनी दी थी कि वे थियेटर न जायें, क्योंकि वहाँ उनकी जान को खतरा है। लिंकन ने उनकी चेतावनी को नजरअंदाज कर दिया और यह सुनिश्चित किया कि वे थियेटर अवश्य जायेंगे। सुरक्षा सचिव स्टैन्टन ने भी उन्हें थियेटर में भीड़ के साथ घुलने-मिलने से मना किया। थियेटर में खतरा इसलिये और बढ़ गया क्योंकि यह अफवाह फैल गयी कि गृहयुद्ध के हीरो रहे ग्रान्ट भी लिंकन से मिलने फोर्ड थियेटर के राजकीय बाक्स में पहुँच रहे हैं।

यद्यपि ग्रान्ट वहाँ नहीं पहुँचे, स्टेन्टन भी थियेटर नहीं पहुँचे, परन्तु स्टेन्टन ने लिंकन को कहला भेजा कि उन्हें वहाँ नहीं जाना चाहिये, क्योंकि वहाँ बहुत खतरा है। जान विल्कीज बूथ, 11 अप्रैल से ही लिंकन की हत्या करने के फिराक में था। 14 अप्रैल की दोपहर में उसे पता चल गया कि राष्ट्रपति लिंकन फोर्ड थियेटर में चल रहे नाटक का रात्रि शो देखने आने वाले हैं। रात आठ बजे उसने अपने तीन षड्यन्त्रकारी साथियों को हर्नडन हाउस बुलाया। उसने अजेटाट को आदेश दिया कि वह उपराष्ट्रपति जानसन की हत्या करे। उस जर्मन युवक ने आनाकानी करते हुए कहा कि उसे केवल लिंकन के अपहरण की जिम्मेदारी सौंपी गयी है। वह किसी को नहीं मारेगा।

बूथ ने जब उसे डराया-धमकाया तो वह विचार करने के लिये राजी हो गया। बूथ ने दूसरे षड्यन्त्रकारी पैने से राज्य सचिव सेवर्ड को मारने को कहा। वह इसके लिये आसानी से राजी हो गया। बूथ ने तीसरे षड्यन्त्रकारी हेरल्ड को पैने के साथ जाकर उसे सेवर्ड के निवास का रास्ता दिखाने को कहा। राष्ट्रपति को मारने का जिम्मा बूथ ने स्वयं अपने ऊपर लिया। तीनों हत्याएं रात को 10 बजकर 15 मिनट पर होनी थीं।

हाजेसट और पैने के काम पर निकलने के बाद बूथ खुद भी फोर्ड थियेटर पहुँच गया। वह एक प्रसिद्ध अभिनेता था, अतः उसे नाटक के दौरान ऊपर की मंजिल पर पहुँचने में कोई दिक्कत नहीं हुई। किसी ने उस पर शक भी नहीं किया और न ही तलाशी ली। जो पुलिस अधिकारी राष्ट्रपति की सुरक्षा के लिए तैनात था, वह तब गलियारे में चला गया। राष्ट्रपति की सुरक्षा व्हाइट हाउस के गार्ड चार्ल्स फोर्ब्स के हाथों में थी। जब बूथ ने अपना कार्ड दिखाया, तो उसने उसे राष्ट्रपति बाक्स में जाने की अनुमति दे दी। बूथ सीधा बाक्स में घुस गया और राष्ट्रपति लिंकन के पीछे जाकर खड़ा हो गया।

लम्बे लिंकन थोड़ा आगे की ओर झुके बैठे थे। उनका दाहिना हाथ ठोढ़ी पर था और बायां हाथ खम्भे पर। दो फीट की दूरी से बूथ ने लिंकन के बायीं ओर से उनके सिर का निशाना लेकर गोली चलायी।

थियेटर में उस समय हंसी का दृश्य चल रहा था और पब्लिक के ठहाकों में गोली की आवाज दब गयी। नाटक के दौरान ही इतिहास के एक और बड़े नाटक का समापन हो गया। यह घटना 14 अप्रैल 1865 को रात के

10 बजकर 13 मिनट पर घटी।

मेजर राठबोन जो लिंकन के पास वाली सीट पर बैठे थे, ने बूथ को पकड़ने की कोशिश की तो बूथ ने उन पर हमला करके बुरी तरह से घायल कर दिया और वहाँ से भाग निकला।

लिंकन की आंखें बंद हो गयी थीं और उसका सिर छाती की ओर झुक गया था। श्रीमती लिंकन ने उनका सिर हाथों से ऊपर उठाया तो वहाँ बहती खून की धार को देखकर वह बुरी तरह से चिल्लाने और रोने लगीं। उनके पास जो डाक्टर सबसे पहले पहुँचा, वे थे सेना के डाक्टर लीले। तब लिंकन में जान बाकी थी और उनकी नाड़ी धीमी गति से चल रही थी। उन्होंने लिंकन को वहीं फर्श पर लिटाकर देखा कि जख्म कितना गहरा है, घाव सिर के पृष्ठ भाग में था। उन्होंने लिंकन को कृत्रिम श्वांस देने की प्रक्रिया की, जिससे उनके हृदय ने जरा सा काम करना आरम्भ कर दिया और रुक-रुक कर उनकी सांसें चलने लगीं। जैसे ही पता चला कि लिंकन के अन्दर जान बाकी है, उन्हें वहाँ से ले जाने की तैयारी होने लगी।

व्हाइट हाउस तक जाने का रास्ता बहुत ऊबड़-खावड़ था, इसलिये डाक्टर लीले ने उन्हें वहाँ ले जाने से मना कर दिया। अतः उन्हें पास के मकान में ले जाया गया, जो कि विलियम पीटर्सन का मकान था, वो एक व्यापारी थे। यहाँ उन्हें पीछे के कमरे में जमीन पर गद्दा डाल कर तिरछा लिटाया गया, ताकि उनकी लम्बी टांगें बाहर न निकलें। उनके डाक्टर की सलाह पर गरम पानी की बोतलों को पैरों के पास रख दिया गया।

अगले नौ घंटों तक लिंकन वहाँ लेटे रहे। उनके पारिवारिक चिकित्सक डाक्टर स्टोन रात को लगभग ग्यारह बजे वहाँ पहुँचे। रात में ही प्रमुख अधिकारी तथा सम्माननीय नागरिक भी वहाँ पहुँचे। डाक्टर स्टोन को चिकित्सा टीम का प्रमुख बनाया गया। उन्होंने अमरीका के प्रमुख सर्जन डाक्टर बर्न्स से भी सलाह मश्विरा किया। सभी इस बात पर सहमत थे कि लिंकन के बचने की कोई सम्भावना नहीं है। चिकित्सकों का मानना था कि इतनी गम्भीर चोट यदि आम व्यक्ति के लगी होती तो वह दो घंटे से अधिक जीवित नहीं रह सकता था। मगर यह लिंकन की इच्छा शक्ति और और जीवन-शक्ति का कमाल था कि इतना शक्तिशाली प्रहार सहने के बाद भी वह अभी तक जिंदा हैं। गोली लगने के बाद से उन्हें होश नहीं आया था।

अपने पिता के गोली लगने की सूचना पाकर लिंकन का बेटा राबर्ट, सेवेटर समनर के साथ वहाँ पहुँच गया। मैरी तो पूरी रात ही वहीं रहीं। लेकिन डाक्टरों की सलाह पर उनके छोटे बेटे टैड को वहाँ नहीं लाया गया। टैड का अपने पिता से अत्यधिक लगाव था, उनकी बिगड़ती हालत को देखकर उसके मस्तिष्क पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता था। मैरी की बढ़ती हुई बेचैनी को देखकर उन्हें भी लिंकन के पास से हटाकर दूसरे कमरे में भेज दिया गया।

वाशिंगटन की सड़कों पर अफवाहों का बाजार गरम था। दहशत का

तांडव हो रहा था। फोर्ड कह रहा था कि स्टेन्टन को मार दिया गया। कोई ग्रान्ट के गोली लगने की बात कर रहा था। अधिकतर लोगों का तो यह मानना था कि अलगाववादियों का काम अभी खत्म नहीं हुआ है, अभी और खून-खराबा होगा।

सेवर्ड पर भी सीधा निशाना साधा गया था। उसकी भी हालत खराब थी। इसलिये प्रशासन की सारी जिम्मेदारी स्टेन्टन ने संभाल रखी थी। वही आदेश जारी कर रहा था और उसने ही तत्काल गिरफ्तारियाँ करवायी थीं।

बूथ ने लिंकन पर जो गोली चलायी थी, वह लिंकन के कान के नीचे को होती हुई दिमाग को भेद गयी थी। डाक्टर लीले लिंकन का हाथ अपने हाथ में लिये बैठे रहे। वह लिंकन की नाड़ियों को बार-बार चेक कर रहे थे। सात बजकर बाइस मिनट पर जब लिंकन की नाड़ियों ने काम करना बंद कर दिया तो उन्होंने उनके बाजुओं को मोड़ दिया। डाक्टरों ने मैरी को बताया कि सब कुछ खत्म हो चुका है। राष्ट्रपति अब दुनिया में नहीं रहे।

छोटे से कमरे में लिंकन के पार्थिव शरीर के पास सब पहुँच गये। पादरी गर्ली ने वहाँ प्रार्थना की। राबर्ट को फूट-फूट कर रोते देखकर समनर ने उसे गले से लगा लिया। स्टेन्टन ने सबसे पहले राष्ट्राध्यक्ष को सैल्यूट किया। उपराष्ट्रपति जानसन को आनन-फानन में राष्ट्रपति पद की शपथ दिलाई गयी। लिंकन के पार्थिव शरीर को व्हाइट हाउस में रखा गया, जहाँ से 19 अप्रैल को पूरे सैनिक सम्मान के साथ उसे विशेष रेलगाड़ी द्वारा स्प्रिंगफील्ड ले जाया गया। ट्रेन के इंजन को काले कपड़ों से ढका गया। उस पर चांदी के सितारे झिलमिला रहे थे।

ट्रेन जब फिलाडेल्फिया पहुँची तो वहाँ अपार जन समूह उपस्थित था। आदमियों की जैसे एक दीवार खड़ी हो गयी थी। सारे आदमी एक दूसरे से सटे खड़े थे और दस घंटों तक अपने नायक का इंतजार करते रहे कि एक पल के लिये ही सही, लेकिन अपने नायक का चेहरा देख लें।

सात दिन तक यही नहीं तय हो पाया कि लिंकन की अंत्येष्टि स्प्रिंगफील्ड में हो या फिर वाशिंगटन में। अंत में स्प्रिंगफील्ड को ही चुना गया। वाशिंगटन से स्प्रिंगफील्ड की शव-यात्रा के लिये वही मार्ग चुना गया जिससे चल कर 1861 में राष्ट्रपति बनने पर लिंकन स्प्रिंगफील्ड से वाशिंगटन पहुँचे थे। स्प्रिंगफील्ड में उन्हें ओकरिज कब्रिस्तान में दफनाया गया।

26 अप्रैल 1865 को सेना ने उत्तरी वर्जीनिया के एक खेत में हत्यारे बूथ को ढूंढ निकाला, जो बाद में सैनिकों से मुठभेड़ में मारा गया। स्टेन्टन ने तय किया कि बूथ की अंत्येष्टि तत्काल और गोपनीय तरीके से की जाये। ताकि लोग उसके शव को लेकर किसी प्रकार की राजनीति न कर सकें। पूरा देश जानना चाहता था कि बूथ के शव का क्या हुआ। केवल आठ लोगों को वास्तविकता का पता था। ऐसे आठ लोग, जो सिर्फ राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्ध थे और जिन्होंने गोपनीयता की सौगन्ध ली हुई थी।

कई प्रकार के भ्रम और उहापोहों के बीच अफवाह फैली कि सैनिकों ने गलत आदमी को बूथ समझ कर गोली मार दी है। बूथ तो अभी तक फरार



है। इस खबर ने ऐसा रंग दिखाया कि सरकार को मजबूर होकर 15 फरवरी 1869 को उसकी कब्र से निकालकर राष्ट्रपति के आदेश पर एक बार फिर उसकी शिनाख्त करायी गयी। सभी ने माना कि यह बूथ ही है। बूथ के दाहिये हाथ के गोदने से, नेशनल होटल के चार्ल्स डावरान ने पहचाना था . बूथ के एक नजदीकी दोस्त हेनरी क्लेफोर्ड ने भी उसके बूथ होने की पुष्टि की थी।

इसके साथ ही अमरीका के इतिहास का वह अध्याय समाप्त हो गया जो पिछले 250 वर्षों की कालों के साथ अमानवीय क्रूरता से भरा पड़ा था और अमरीकी इतिहास के महानायक का शरीर पंचतत्वों में विलीन हो गया। दास-प्रथा की समाप्ति के लिये अब्राहम लिंकन ने जो प्रयास किये, वे अमरीकी इतिहास में ही नहीं, बल्कि विश्व इतिहास में हमेशा याद रखे जायेंगे। उनके मानवता के हित के कार्यों ने उन्हें अमर बना दिया।

—समाप्त—



अब्राहम लिंकन का नाम
विश्व इतिहास
के पृष्ठों में स्वर्णिम अक्षरों
में इसलिए
भी अंकित है क्योंकि धरती पर से
काले और गोरों का भेद मिटाने के
लिए उन्होंने पहली बार
आवाज़ उठायी।
अमेरिका की धरती
से गुलामी प्रथा के
विरुद्ध कानून पास
करके भेदभाव
का खात्मा किया।
इसलिए भी, क्योंकि
अपने ही देश में गुलामी प्रथा के
समर्थकों के विरुद्ध
हथियार उठाकर
युद्ध किया। उत्तरी और दक्षिणी
अमेरिका को बंटने न दिया।
राष्ट्रपति के पद पर
रहते हुए सीने पर
गोली खायी।
अंतिम सांस तक
मानवीयता पक्ष
पर डटे रहे।

ravi
रवि पॉकेट बुक्स
उच्चस्तरीय साहित्यिक पुस्तकों के प्रकाशक

A.H.W. RAVI SERIES
S-443
ISBN 81-7789-223-1
₹ 20/-